।। श्री गोकुलेश जयति ।।
।। श्री रमणीजी जयति ।।

श्री कल्लोल जी ग्रन्थ

तृतीय, चतुर्थ व पंचम

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधानिधिः)

मूल
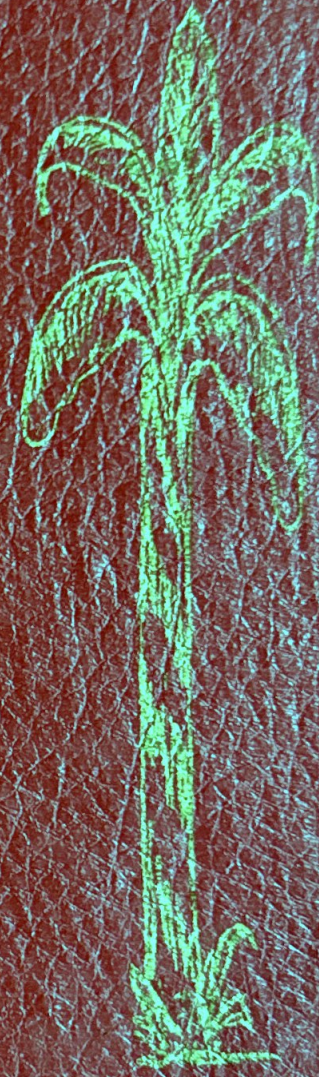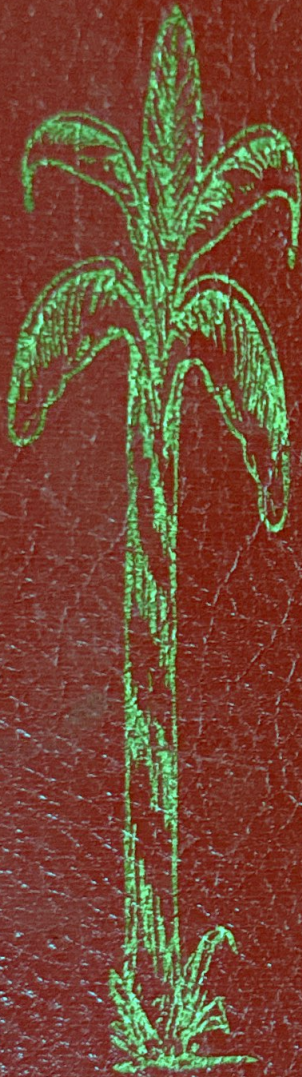
श्री कल्याण भट्ट मठपतिजी

टीकाकार

पंडित लोकनाथजी (गोकुलिया)

श्रीमहामहोत्सव १९९९

॥ श्री गोकुलेशो जयति ॥

॥ श्री रमणेशो जयति ॥

श्री कल्लोल जी ग्रन्थ

तृतीय, चतुर्थ

(श्रीमद् गोकुलेश लीलायां रसाब्धी सुधासिंधौ)

-- मूल --

श्री कल्याण भट्ट मठपति जी

-- टीकाकार --

पंडित लोकनाथ जी (गोकुलिया)

लैया वासी

श्री महामहोत्सव
संवत् २०५६

न्यौछावर १२५) रु.

कल्लोलजी तृतीय

अनुक्रमणिका

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग पहलो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

श्री गोकुलेश लीला सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले प्रथम स्तरंग भासामती मीये समृं ।।१।।

अथ तीसरो कल्लोल श्री कल्याण भट्टजी कहेत हैं सो लिख्यते ।।

श्लोक -- **श्री गोकुलाधीश भक्तानां पदां भोजरजास्यहं ।।**
नमामि तेन में सर्व सिद्धमे वसमिहितः ।।१।।
गोकुलेश रसांमोधी लोल कल्लोल विद्रुमि ।।
सुमुह त्कृपया सिक्तः तित्कृ ।। कल्लोला - भाषया ब्रुंवे ।।२।।

याको अर्थ -- श्रीमद् गोकुलपति के परम कृपापात्र रसिक अंतरंग रसात्मक स्वतंत्र रसभोक्ता भक्तप्रवर कल्याणभट्टजी ने लोकवेदातीत महागंभीर उच्छलित महा रससिंधुमय श्रीमद् गोकुलपति के परम रस स्वरूपात्मक चरित्र रूप कल्लोल आपके कृपापात्र जीवन कूं अनुभव करायवे कूं प्रगट किये हैं तामें श्री आपु के ही केवल प्रमेय बल सूं ही भाषांतर कूं हों करूँ हूँ तामें प्रथम मंगलाचरण में कल्याण भट्टजी यह दो श्लोक कहे हैं के :--

श्री गोकुलभूषाया सुद्रश रूपा खिलोपरी विराजत्या ।।
प्रतीरी वरस सर्वसं भृत्य गणो मन्यता नाम ।।१।।

साधारण जे भृत्यगण हैं सो वे सर्वस्व रूप श्रीजी कूं सुन्दर दृष्टि जैसे सर्व के ऊपर विराजमान जे श्री गोकुल की भूषण रूप अन्यपूर्वा विनके पति जैसे माने हैं सो माने परन्तुं हों तो विनकूं सर्वस्वरूप ही श्रीजी कूं जानूं हूं। तामें हेतु कूं कहे हैं कि --

''भुक्तं ययेती तस्या वल्लभ एवत्च शेये मिदं अन्यपादत्त प्रेम्णानु भवति सतुनाश्यलेशम पिवेति ।।२।।

जासूं जो अन्य पुर्वा ने श्रीजी कूं सगरो रस भोग कियो है अनुभव कियो

है वाके वल्लभ श्रीजी ही सगरो यह सर्व स्वरूप है और वा अन्य पुर्वा ने दान किये सगरे रस कूं प्रेम सूं अनुभव कियो है अथवा अन्य पूर्वा ने अपने कृपा बल सूं जा जीव कूं दान कियो है सोई जीव हू श्रीजी के या सगरे रस कूं प्रेम सूं अनुभव करे है और जे साधारण भृत्य हैं अथवा अन्य पुर्वा के कृपाकटाक्ष सूं परोक्ष हैं वे तो या रस के लेश कूं हू नहीं जानें हैं । जासूं सो अन्य पुर्वान में मुख्या को रस भरी अन्य पूर्वा मेरे ऊपर हू अपने प्रमेय सूं कृपा करे ऐसे वस्तु रूप निरूपणात्मक मंगलाचरण कूं करके अब प्रसंग कूं वर्णन करे हैं ।

अथ श्री मथुरामेष प्रप्रिया सुरभूततः कृपाशक्ति प्रेरणयात तस्यान्वियपविषु स्तयं ॥१॥

यासूं प्रथम कल्लोल में कहे अनुसार श्री गोकुल में सुख सूं विराजमान हू श्रीजी कितनेक दिन पीछे ता गोकुल सूं कृपाशक्ति की प्रेरणा सूं अपने स्वरूप बल सूं ही मथुरा निवासी जीवन कूं पवित्र ही करिवे की इच्छा वारे भये थके अपनी इच्छा ही सूं महावन में रहिवे वारे दुष्ट यवनों के संबंधी ग्रामीण दुष्ट लोकन सूं किये भये चोरी रूप बड़े उपद्रव कूं अपने लोकन में निमित्त बनाय के अपने आगम उत्सव सूं विलक्षण शोभावारी मथुराजी में पधारवे की इच्छावारे होते भये हैं यद्यपि विन दुष्ट चोरन कूं शिक्षा करिवे में समर्थ हू हैं तथापि स्वयं तो भगवान पुरुषोत्तम हैं कहा के आप कूं सहेन तो स्वाभाविक धर्म ही है और मथुरावासी जीवन कूं पवित्र करवे की इच्छा हू है तासूं १६२२ वर्ष में माघ मास शुभ तिथि में मथुराजी के निवासी जीवन के दृष्टि रूप बड़े बड़े पात्रन में अपने माहा शोभावारे श्रीमुख के उच्छलित शोभारूप समुद्रन कूं भरत ही वा मथुरां जी में प्रवेश करते भये हैं ॥६॥ तहां यद्यपि यह श्री गोकुलपति अत्यंत प्रिय संपूर्ण पुरुषोत्तम हैं और कर्तु अकर्तुम अन्यथा कर्तु समर्थ है और अचित्य शक्ति के निधान हैं और परमेश्वर हैं तथापि अपार जे मधुरता के हजारन सिन्धु हैं विनसूं भीजे भये और बड़े बलवान और जिनके समान और अधिक नहीं हैं ऐसे जो वा श्री गोकुलपति के गुण हैं विनसूं बढ्यो भयो जो तेज है ऐसे श्रीजी में वा मथुरा निवासी भक्तन को प्रेम है सो वा श्रीजी के जहां कहां प्रसिद्ध भये हू तैसे ऐश्वर्य कूं आच्छादन करत भयो है ॥१०॥ तासूं श्री महाप्रभुजी श्रीजी के पिता श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी हू श्रीजी के अनिष्ट दूर करिवे की इच्छा सूं और अनेक मनोरथ सिद्ध करिवे की इच्छा सूं कितने एक अपने

कृपापात्र सेवकन कूं श्रीजी निकट राख के प्रेरणा हू करें हैं के जा प्रकार सूं श्री वल्लभजी सुखी रहें तैसे करनो और जो आज्ञा करे सो वेग ही करनो ऐसे अपने सेवकन कूं आपकी सेवा में सावधान करें हैं । और आपु निरन्तर तीर्थ यात्रादि में और देवता जे श्री गोवर्द्धननाथादि हैं विनके आराधन आदि में और हू तिस तिस उपयोगी कार्यों में सावधान रहें हैं और बहुत वार द्वारका में जायकें हू तहां सूं आयकें फेर हू द्वारका के प्रति पधारते भये हैं । जासूं अपने प्रिय पुत्र के और हू अनन्त सुखन कूं वांछा करें हैं ॥ और सहित परिवार के घर के जितने कृत्य हैं तैसे सगरे दासन के और श्रेष्ठ भक्तन के और भ्रात वर्ग के तैसे स्वजनों के और सगरे वैष्णवन के जे कृत्य हैं तैसे श्रीनाथद्वार के जे कृत्य हैं वे तो सगरे ही या विराजमान महाप्रभु रूप पुत्ररत्न श्री वल्लभजी में सिद्ध ही है । यासूं बड़े भाग्य वारेन में हू श्रेष्ठ जे श्री गुसांईजी हैं सो सब कार्यन सूं निश्चिन्त हैं तासूं द्वारिका के प्रति फेर हू गमन करत भये हैं ॥ और महाप्रभु जे श्रीजी हैं सो हू तैसे शोभायमान घर में विराजमान भये थके तिन तिन लीला सूं अपने भक्तन कूं अत्यन्त सुखी करत और श्री नाथद्वार में हू तिस तिस अवसर उत्सव पर्वादि में तिस तिस उत्सवादि कूं करत विराजमान हैं ॥ तासूं अत्यन्त इच्छा करत हू यह श्रीजी बहुत दिन पर्यन्त श्री गोवर्द्धनजी पर पधारवे में अवकाश कूं नहीं प्राप्त भये हैं ॥ तब श्री गोवर्द्धनधर जी हू श्री गोकुल के सर्वस्वरूप श्रीजी में जो प्रेम है ताके आनन्द के भार सूं प्राप्त भई जा जड़ता कूं श्रीजी की करुणा के विना चेतनता सूं और कोई धीमान ही धारण करवे में हू समर्थ न होय । ऐसी वा जड़ता कूं धारण करत एकादश वन कूं त्याग के और नंदीश्वर कूं हू छोड़िके तैसे वृन्दावन और यमुनाजी के तट और हू अपने प्रिय स्थानन कूं त्याग के श्री गोवर्द्धन गिरि है सो मेरे प्रिय श्री गोकुलेशजी कूं प्रिय है या निश्चय सूं श्री गिरिराज के ऊपर ही विराजमान भये हैं ॥ सो श्रीजी श्री गोवर्द्धनधर वा प्रिय श्रीजी के दरसन विना या प्रिय के प्रिय श्री गोवर्द्धन पर्वत में निवास करत हू ऐसे सो श्री गोवर्द्धनधर और उपायन सूं न दूर होयवे वारे ऐसे अधिक ताप कूं प्राप्त भये हैं ॥२४॥ या प्रकार अत्यन्त ताप वारे श्री गोवर्द्धनधर कूं देखकर याकी प्राणन सूं हू प्रिय जो राधा पद सूं प्रसिद्ध मुख्य श्री स्वामिनीजी हैं सो कबहू कहूं एकान्त स्थल में या श्री गोवर्द्धनधर कूं कहे है ॥ के हे प्राणनाथ, हे अनन्त गुण, हे रसार्णव, हे

कृपानिधे, हे वृज वल्लभ काहे कूं तुम सदैव अपनी प्रिय गायन के चरायवे में हू प्रथम जैसे उत्साह कूं नहीं करो हो ।। काहे कूं सदैव संगवारे जे श्रीदाम सुवलादि हैं जे प्राणन सं हू अधिक प्रिय सखा हैं विनमें हू तिहारी तैसी प्रीति नहीं है ।।२८।। और काहे कूं तिस तिस निकुंजन में विहार परायण अपने ब्रज भक्तन के संग अथवा अपने अंतरंग सखी गणन के संग विहार कूं नहीं करो हो ।।२९।। और बहुत दिन गुजरे हैं तुमकूं श्री यमुनाजी के तट ऊपर हू विहार करत नहीं देखूं हूं तासूं मेरो मन व्याकुल है ।।३०।। और नंदरायादि गुरु जनन की उपासना विधि में हू तुमकूं सिथिल देखे हैं तासूं हम बहुत चिन्तित होवें हैं ।। विचार करें हैं यह कहा है ।।३१।। और मातृचरण श्री यसोदाजी ने बहुत प्रेम सूं विविध प्रकार सूं सिद्ध कियो अर्पण कियो जो विविधि भोजन है वाकूं काहे कूं देखो हू नहीं हो ।।३२।। बाल अवस्था में जाकूं स्वयं चोरी करके आरोग्यो है सो आज भक्तन नें अर्पण किये हू वा माखन में प्रसन्न काहे कूं नहीं होवो हो ।।३३।। जो तिहारो अधरामृत हमकूं हू कबहू कहूं हू प्राप्त होयवे वारो हतो सो या मुरली कूं तो सदैव ही सुलभ हतो सो आज तो या मुरली कूं हू काहे कूं अत्यन्त दुर्ल्लभ होय रह्यो है ।।३४।। और गान नृत्य वाद्य तो सदैव तिहारे निकट ही रहिवे वारे हते सो तुमारो विनमें अब काहे कूं कोप है ।। जासूं वे हू दूर हू रहे हैं ।।३५।। जा अत्यन्त प्यारी के विना तुम एक क्षण हू प्राण धारण नहीं कर सकते सो ऐसी वा रासलीला कूं स्मरण कराये भी तुम काहे कूं स्मरण नहीं करो हो ।।३६।। और जा गोपीजनन कूं तिहारो अधरामृत सुधा समूह रूप हतो और तिहारो मंद हास्य हू जीवन रूप हतो सो विन गोपीन के लिये वाकूं न प्रगट करत तुम वाकूं काहे कूं छिपावो हो ।।३८।। और सगरी गोपीन में हू जो तुमकूं एक ही अत्यन्त प्रिया हती ऐसी वा मोकूं आज तुम स्निग्ध दृष्टि सूं देखिकें काहे कूं नहीं अनुमोदन करो हो ।।३८।।

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले प्रथम स्तरंग भाषामती मीये समृं ।।१।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग बीजो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्वितीय तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **एवं व्रुषाणामत्या र्त्या स गोपीजन वल्लभः गोवर्द्धन धरः ।। श्री मानक्षण स्थित्वा प्रवीदम् ।।१।।**

याको अर्थ -- या प्रकार अत्यन्त आरत सूं कहि रही या प्यारी कूं सो श्री गोपीजन वल्लभ श्रीमान गोवर्द्धनधरजी क्षण एक रहिकें कहें हैं के ।।१।। ''हे प्रिये यह बात तो अत्यन्त गोप्य ही है परन्तु तुमने पूछी है तासूं हों कहूं हूं जासूं प्रिया है सो अत्यन्त सुन्दर प्रेमवारी वस्तु की गोप्यता कूं दूर ही करे है ।।२।। सो हे प्रिये कोटि कंदर्प सूं हू सुन्दर और कोटि चन्द्रमा सूं हू अधि जाकी मनोहर सुन्दर कांति है ऐसे जे श्रीमान श्री गोकुलनाथजी हैं वाकूं न देखत हों व्याकुल होय रह्यो हूँ ।।३।। जे श्री गोकुलनाथजी श्री रुकमणीजी के गर्भ के रत्न हैं और जे श्रीमद् विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के नन्दन हैं वा संपुरण पुरुषोत्तम श्री गोकुलेश जी के विना हों सुख कूं नहीं प्राप्त होवुं हुं ।।४।। जे श्री गोकुलेश्वर सर्वावतारी हैं के सगरे अवतारन के अवतारी हैं मूल रूप हैं और प्रवर हैं तैसे सगरे अवतारन के शिरोमणी रूप हैं और जो सर्व गुणन के समुद्र हैं वाके विना मोकूं आनन्द नहीं होय है ।।५।। और सगरे माधुर्य के समुद्र रूप वा चन्द्र वदन श्रीजी के विना पदपद में हों दुःखी होवुं हूँ मेरे क्षण कल्प के समान होय हैं ।।६।। हे प्रिये अर्वुद श्रृंगार रस के सार सर्वस्व को सागर रूप वा श्री गोकुलाधीश कूं न देखत हों अत्यन्त तम में गाढ़ दुःख में प्रवेश करूं हूँ ।।७।। जे कलियुग में अधम जीव हैं जिनको उद्धार हों हूँ नहीं कर सकूं हूँ ऐसे विन जीवन के ऊपर कृपा करिवे कूं जो कृपा सूं प्रगट भये हैं वाके विना मोकूं दुःख ही है ।।८।। और जो उदार हैं और शरणागत जीवन कूं रक्षा करिवे वारो है और **ब्रहमराय** है तैसे कृपा कूं तो सागर है और सदैव जो प्रसन्न वदन हैं वाके विना मोकूं कहां सुख होय ।।९।। जो मेरी भक्ति कूं

प्रचार रूप है एक मुख्य महाकार्य कूं निरन्तर हू ऐसो है और मेरी भक्ति प्रचारार्थ ही अपने महात्म्य कूं हू छिपावे है मेरो मन तो सदैव वामें ही है ॥१०॥ अलौकिक आनंद धन रूप जे अपनी लीलारूप करोड़न समुद्र है विनमें जीवन कूं निमर्ज्जन कराय के जो उद्धार करे है ऐसे वा श्री गोकुलपति को हों कब दर्शन करुंगो ॥११॥ और सगरे सौंदर्य के जे निधि हैं तैसे सगरी समर्थावारे हैं और जे सगरे श्रेष्ट गुण महात्म वारे हैं और अखंड आनन्द के सागर हैं और जिनकी कथा हू ब्रह्मादिकन कूं दुर्ल्लभ है और जिनकूं तत्व हू सगरे साधनन सूं हू दुर्ज्ञेय हैं ऐसे अपने चरण कमल संबंधी रज है विनमें नम्र है सिर जाकूं ऐसे जीवन कूं करके विन जीवन कूं या कलियुग में हू करोड़न वैकुण्ठ हू विनके चरणकमल की रज पर हू निमर्द्धन कियो जाय ऐसो जो सगरे धामन में मुख्य धाम अपनो निवास श्री गोकुलधाम है वामें विन जीवन कूं जो श्री गोकुलपति जी प्राप्त करें हैं सो वा श्री गोकुलेशजी के दर्शन रूप जो अमृत को समुद्र है वाके पान के विना मेरी दृष्टि कूं निरन्तर बढ़ि रह्यो जो ताप है सो शान्त होयवे वारो है कहा कि किन्तु वाके दर्शनामृत के पान विना शांत नहीं होयगो कब सो चन्द्रवदन श्रीजी अत्यन्त उत्साह सहित मेरे कान रूप दोनान में अपने वचनामृत रूप सागरन कूं प्रवेश करावेंगे कहेंगे मेरे रोम रोम में बढ़ि रह्यो जो तापरूप विन्ध्याचल है सो वा श्री गोकुलपति के हस्त स्पर्श रूप अगस्त सूं हू स्थगित होयगो के बढ़वे सूं निवर्त होयगो जो श्री गोकुलाधीश जी प्रभातकाल में पौढ़ रहे मुझ कूं सर्व सूं प्रथम ही प्राप्त होय के प्रबोध के पाठ रूप अमृत की माधुरी कूं पान करावत ही वेणुं वीणा कोकिलादि के शब्दन कूं और निकट प्राप्त होय रही रसवारी कमल समान नैंनवारी स्त्रीजनों के मणित कहा रति कुंजन कूं और विनके नूपुरों के शब्दन कूं जो तुच्छ ही करे है ऐसे श्री गोकुलपति के विना मोकूं कहां सुख होय ॥ सुगंधित तैल के मिश सूं अपने हस्त स्पर्श के अमृत समुद्रन सूं जे श्रीजी मेरे अंगन कूं अभ्यंग करें हैं वा श्री गोकुलपति को हौं फेर कब दर्शन करूंगो जे श्रीजी शीतल होये विन और ऊष्ण जल सूं मेरे कूं स्नान करावत ही मेरे अंगन सूं पोंछवे की मिस सूं अपनी वियोगाग्नि की ज्वाला संबंधि तापन कूं अपने हस्त कमल संबंधी स्पर्श की सुगन्धी सूं शोभायमान उज्ज्वल मार्जन करें हैं वा श्री गोकुलपति के विना जीवन हू मृत्यु समान है और मेरे में अनेक प्रकार के वागे वस्त्रन कूं धारण करत मेरे मुख

में जा शोभा कूं प्रगट करें हैं वा श्री गोकुलाथ के श्री मुख में वा शोभा कूं सदा ध्यान करिवे वारो जो हों हूँ ऐसे मोकूं याके विना कैसे सुख होय और कुंडल पाघ तिलक कर्ण पुष्पादिकन सूं जा श्रीजी ने मेरो मुख अलंकृत कियो है फेर मेरे दिखायवे अर्थ जा श्रीजी के हस्त कमल के स्पर्श वारो तासूं बड़े भाग्यवारो धन्य जो दर्पण है वामें देख रहे या जे श्रीजी की दृष्टि है वे हू धन्य है वा श्रीजी को जो श्रीमुख कमल है सो आनन्द के जल की वर्षा कूं करत ही अपने मुख के दर्शन सूं प्रफुल्लित भये मुझ में अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करे है, फेर मोकूं दर्प्पण दिखाय के जासूं सो श्रीजी मेरे मुख की शोभा के दर्शनानंद सूं शोभित होय रही जा मुख कमल की शोभा सूं अत्यंत शोभित होय है, वाके विना प्रायः मोकूं दुःख ही है और जो श्रीजी मेरे नाम कूं उपदेश करिके मोसूं हू जिनको उद्धार दुर्लभ है ऐसे जीवन को उद्धार करे है वामें ही मेरो मन लगि रह्यो है और या श्रीजी ने ही सगरे भूषणन सूं अलंकृत किये मेरे सुन्दर स्वरूप सूं हूं जाको स्वरूप महा अलौकिक परमानन्द सूं शोभित है जो मेरे चित्त की गति कूं और ठौर जायवे में पंगु भाव कूं हू सिद्ध करे है वा सुन्दरवर श्री गोकुलेशजी के विना मोकूं कछु नहीं रुचे है और सगरे भक्त जाको ध्यान करें हैं ऐसे हू जो श्रीजी सदैव मोकूं हू ध्यान करें हैं, हे प्रिये सो वाकी अलौकिक प्रीति कूं हों तो सदैव ही ध्यान करूं हूं और जो श्रीजी मेरे ही भोगन कूं अपनो भोग रूप जानें हैं और मेरे ही श्रृंगार कूं अपनो श्रृंगार रूप जानें हैं और मेरे ही सुख कूं सदैव अपनो सुख मानें हैं ऐसे श्री गोकुलाधीश कूं मेरी दृष्टि कब दर्शन करेगी ॥३२॥ हे प्रिये श्री गोकुलाधीश के पिता जे श्री विट्ठलाधीश श्री गोस्वामीजी हैं विनकूं हों कहा कहूँ जासूं जे श्री गोस्वामीजी श्री वल्लभजी हैं सो तो बहुत चतुर नहीं हैं अभी छोटी अवस्था वारे हैं तासूं बाल हैं और लीला में परायण हैं, सकुमार हैं तैसे कोमल हैं आपके चित्त के ही अनुसार चलवे वारे हैं और मथुरावासी जे खल कुटिल दुरात्मा हैं विनके चित्त कूं नहीं जानें हैं और अत्यन्त घोर कलियुग है सोहू नष्टप्राय है वाके सम्बन्ध सूं अत्यन्त दुष्ट हैं, चित्त और वचन जिनके ऐसे जे मथुरावासी हैं विनके अधिक प्रपंच वारे तिन तिन व्यवहारन में हू अत्यन्त कुशल नहीं है और जाकी माता हू निकट विराजमान नहीं है ऐसे श्री वल्लभजी कूं इहां सब कछु सौंप के पधराय के स्वयं श्री गोस्वामीजी दीर्घ काल सूं प्राप्त

होयवे वारी द्वारिकाजी में मेरे स्वरूप विशेष उपासना की इच्छा सूं वृथा ही पधारे हैं । और जब श्री रुक्मिणीजी अन्तरध्यान भये हते तब या बालक श्री वल्लभजी के पालनादि के अर्थ श्री गोस्वामीजी ने बल सूं ही श्री पद्मावतीजी सों ब्याह कियो है । सो पद्मावती हू श्रीजी की सेवा में कैसे है अनुकूल है के नहीं यह हों नहीं जानूं हूं तैसे और जो मेरे अपने भक्त दिन रात्रि ही वाकी सेवा अर्थ राखें हैं सो हू कहा वा श्रीजी कूं प्रसन्न राखें हैं के नहीं । हे प्रिये मेरे अन्तरंग जे भक्त हैं विनकूं नित्य हों भक्त ही जानूं हूं जासूं जे मेरे या प्रिय श्री वल्लभजी के भक्त हैं सो बेई ही मेरे अन्तरंग भक्त हैं । और अधिकार वारेन में हू कौन से कौन से अधिकारी कर्म, मन, और वाणी सूं प्रेम सूं वा श्रीजी के अनुकूल हैं जे अनुकूल हैं वे तो बड़े भाग्यवारे हैं और हू जे जाति वारे बंधु दास सुहृदे वैष्णव हू कौन से तो वाके अनुकूल हैं और कौन से नही हैं यह हौं तो नहीं जानूं हूं ॥४२॥ हे प्रिये जे श्री गोकुलेशजी के संग द्रोह करे है अनुकूल नहीं वर्ते है वे मेरे सूं दंड के योग्य हैं और ताड़ना के योग्य हैं । तैसे सर्व प्रकार सूं पीड़ा के योग्य हैं'' ॥

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले द्वितीय स्तरंग समाप्तम् ॥२॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग त्रीजो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तृतीय तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **द्रष्टुमुत्कंठे चेतो ममतान् भाग्यवत्तमानू विहाय सर्वं येमा - वतमेवोपास ते सदा ॥१॥**

याको अर्थ -- फेर हू श्री गोवर्द्धनधरजी कहें हैं ''के हे प्रिये जे परम भगवदीय सर्व कूं त्याग के तैसे मोकूं हू त्याग के केवल वा श्री गोकुलाधीशजी कूं ही उपासना करे है विन बड़े भाग्यवारेन कूं मेरो चित्त देखवे कूं उत्साह वारो है ॥१॥

हे प्रिये तैसे हों तुमारे में हू प्रसन्न नहीं होवुं हूं और अपने में हू प्रसन्न नहीं होवुं जैसे मोकूं हू त्याग के वा श्री गोकुलपति कूं जे आश्रय करें हैं विनमें प्रसन्न होवुं हूं तैसे और में नहीं होवुं हूं ॥२॥ हों तो विन गोकुलपति के जे भक्त हैं विनके नाम कूं हू सुनिकें अत्यन्त रोमांचित होय जावूं हूं और हर्ष के जल कूं नेत्रन सूं वर्षा करत तैसे नाचूं हूं जैसे रास में हू नहीं नाचूं हूं ॥३॥ जो मेरे प्रिय श्रीजी अपने पधारवे सूं मार्ग कूं पवित्र करें हैं और भूषित करें हैं ऐसे वा श्रीजी कूं इहां निरन्तर ही देखवे की इच्छा करूं हूं सो श्रीजी जिन वृक्ष गुल्म लतादिकन कूं हू देखत ही पधारे हैं वे अत्यन्त ही धन्य हैं विनकूं हों निरन्तर ही आलिंगन करिवे कूं उत्साह करों हों ॥५॥ सो मेरे अत्यन्त प्रिय श्रीजी मार्ग में हू प्राप्त भये महाभाग्य के निधि रूप जा जा स्थल में क्षणमात्र हू सहित चाहना के चरण कमल कूं धारण करें हैं सो स्थल मेरे मन में हू द्रगत रूप है कहा के दृष्टि कूं है अंतफल जामें ऐसो है के वा स्थल कूं हू देख के नयन सफल होय हैं जासूं सो स्थल वैकुंठ सूं हू सुन्दर है, हे प्रिये यद्यपि मैंने बारंबार ही मधुपुरी श्री मथुराजी प्रथम देखी हू है तथापि मेरे प्रिय श्री वल्लभजी के निवास सूं जो सर्व सूं अधिक रूप कूं प्राप्त भई है सो कर्पूर की सलाका जैसे कब मेरे नयनन कूं शीतल करेगी अहो जे जन श्रीजी सूं अत्यन्त सुन्दर शोभावारे होय रहे हैं श्रीजी के सुन्दर भवन कूं दर्शन कर रहे हैं वे बड़े सुकृति हैं और सर्व के ऊपर ही विराजमान होयवे वारे हैं और जे जन वा सुन्दर भवन में प्रवेश करिवे कूं हू उद्यम सहित हैं विनके हू भाग्यन के समूहन कूं कौन वर्णन करि सके है और कौन कूं वैसे भाग्यन की चाहना न होय और जे आपके कृपापात्र तो स्वच्छंद ही वा सुन्दर भवन में प्रवेश करें हैं वे तो अत्यंत धन्य हैं कृतार्थ हैं और बड़े भाग्यवारे जे जीव हैं विनके हू समूह जिनकूं वंदना करें हैं और वे त्रिलोकी कूं हू पवित्र करिवे वारे हैं ॥११॥ और जे या श्रीजी के मन्दिर में प्रवेश करत हू द्वारपालन सूं वे त्रणादी प्रहारन सूं निवारण किये जाये हैं विनके चरण कमलन कूं हों नमन करूं हूं ॥१२॥ जा श्रीजी के मन्दिर में हों प्रवेश करके वा श्री गोकुलपति के मुख की माधुरी कूं नयनन सूं पान करुंगो यह निश्चय है वा श्रीजी के मंद हास्य रूप क्षीर सागर में मेरे दृष्टि रूप मीन अत्यन्त हू ताप कूं निवर्त्त करेंगे अत्यन्त ही आनंदित होंयगे और जो श्रीजी कूं मेरे दर्शन के न होयवे में भयो जो महाकष्ट है वाकूं

जो छिपाय रहे हैं सो तहीं जायके वा कष्ट ताप कूं प्रगट दिखावत और अपने मन कूं प्रसन्न करत वा श्रीजी के दर्शन रूप अमूल्य रत्नन की राशि कूं अत्यंत लुंटन करूंगो कहा ।।१६।। हे प्रिये वा श्रीजी के बड़े भाग्यवारे विन भक्तन कूं आलिंगन करवे कूं मेरे में अत्यन्त ही उत्कंठा बढ़ रही है ।।१७।। जे भक्त प्रातःकाल ही आनन्दात्मक निश के पर्यंक सूं उठे भये अत्यंत प्रिय सगरे श्रेष्ट गुणन के सागर अपने प्रभु के दर्शन की इच्छावारे भये थके अपने पुत्र बहु कलत्र सम्बन्धी पुत्र परिवार दासी दास गणन सूं मिले भये ही डेढ़ प्रहर रात्रि शेष में बड़े आदर सहित जागकें उठकें अपने घरन सूं आयके जा श्री गोकुलनाथजी के द्वार, के भूमि की रज कूं सेवा करे है विन भक्तन की चरण रज हू, बड़ो खेद है के महा पुरुषन कूं हू दुर्ल्लभ है ।।२०।। जा काल में सो प्रिय श्रीजी अपने भक्तन के नयनन में हर्ष के समुद्रन की वर्षा करत स्वयं जागें हैं वा काल कूं रसात्मक जे मृगाक्षी हैं के मृग जैसे सुन्दर नयनवारी सुन्दरी गण हैं सो रात्रि में जागत ही अपेक्षा करत हैं ।।२१।। और जे भक्तजन अपने पतिन कूं तो तृण जैसे त्याग के और पुत्रादिकन कूं तो भस्म जैसे त्याग के प्रभातकाल में गिर रहे हैं वस्त्र और भूषण जिनके ऐसी भयी थकी तैसे रसीले रति के चिह्नवारे रस रत्नाकर रूप श्रीजी प्रिय कूं दरसन करवे अर्थ जे सगरे लौकिक वैदिक कूं तृण जैसे मानत ही दौड़ें हैं विनके समान भाव की जो प्राप्ती है सो तो अत्यंत दुर्ल्लभ है याके अर्थ महापुरुष हू मनोरथ कूं करत हू वाके स्वरूप कूं जो जान तो जाय है परन्तु विनकी समता कूं तो नहीं प्राप्त होय है और जो कमल समान नयन वारी सुन्दरी द्वार के उघाड़ने पर वा श्रीजी के सुख निंद्रा घर कूं प्रथम ही प्रवेश करे है वा सुन्दरी को जो नाम है सो महा भाग्यन की जो निधि रूप महा पुरुष है विनके कर्ण में प्राप्त भये थके अमृत के सागरन कूं प्रगट करे है और जो महा भाग्यवती परम सुन्दर मन्द हास्यवारे मुख कमल कूं नेत्रन सूं पान करत भई है के चरणन को आश्रय करत अधम हू सर्वोपर विराजमान होय जाये है ।।२८।। वाकी जो महिमा है सो सर्वोपर है वाकूं मेरे आगे हू सगरे वेद शास्त्रादि हू सूचना करवे कूं समर्थ नहीं हैं । और आज दिन पर्यन्त जो प्रातः समय उठिके मेरे प्रिय श्रीजी प्रतिदिन मेरे आगे प्रणाम करें हैं सोहू मोसूं नहीं सहन करी जाये जासूं सो सहस्त्र वदन वारी होयके मोकूं अत्यंत व्याकुल करें हैं । ऐसे प्राणप्रिय मेरे प्रभु होयके हू

मोकूं प्रणाम करें हैं सो कहा कहूँ और हे प्रिये चौदह लोक में तथा वैकुण्ठ वासीन में हू वे भक्त महाभाग्य निधि हैं जे या श्रीजी के चरण कमल कूं पखार कें वाकूं सहित स्नेह के गिर्‌यो जो अद्‌भुत और सगरे स्वाद वारेन कूं चक्रवर्ती रूप जो मकरंद है रस है वाकूं जो मुख सूं पान करें हैं विनके जे उच्छलित स्वरूपामृत के समुद्र हैं विनकूं अपने नयन कमल रूप पात्रन सूं हौं पान करवे कूं चाहना करूं हूँ ॥३२॥ और जे कृपासिन्धु श्री गोकुलाधीश जी पुष्प तैल के अभ्यंग सुख की मिस सूं जिन भक्तन कूं हस्त कमलन में अपने अलौकिक शोभा वारे श्री अंग के स्पर्शामृत रूप समुद्रन के समूहन सूं अभ्यंग करावे हैं वे जे भक्त हैं सो अत्यन्त दुर्ल्लभ जो श्री अंग कूं स्पर्श है वाकी निधि के समूह जामें ऐसे होय रहे हैं सो भक्त अत्यन्त संकोच कूं प्राप्त होय रह्यो है चित्त जाको ऐसे मोकूं सहित स्नेह के आलिंगन कूं करेंगे कहा ॥३६॥ और या श्रीजी के ला स्नान में जे जल है वे या श्रीजी के सगरे अंगन के स्पर्श सूं प्रगट भये हर्ष के समुद्रन कूं अत्यन्त अनुभव करके सो अपने ले आने वारे और रक्षा करिवे वारे तैसे तपायवे वारे और अर्चन करवे वारे और पान करवे वारे भक्तन कूं चौदह लोक और सगरे वैकुंठन के हू पवित्र करवे वारो करे है विन भक्तन को जो भाग्य है सो अत्यन्त ही दुर्ल्लभ है भाग्यन सूं ही प्राप्त होय है और विन कर्पासन ने हू क्षेत्रन में अत्यन्त भलो निरन्तर ही तप कियो है जासूं जे तन्तु रूप सूं दुर्ल्लभ याके के अंग वस्त्र भाव कूं प्राप्त होय है जा परमानन्द सागर की बिन्दु मात्र हू सगरे महापुरुषन कूं हू दुर्ल्लभ है ऐसे सगरे अंगन के गाढ़ आलिंगन सूं प्रगट भये परमानन्द के समुद्रन कूं प्रतिदिन ही हजारन वार अथवा हजारन रूपन सूं ही पान करे है और जा वृक्ष के काष्ट कूं यह पीठ है जो गादी बिछोना सूं सुन्दर शोभित होय रह्यो है सो ऐसे वाकूं जो प्रिय विलासवारी बैठवे की लीला सूं पावन करे है के विराजमान होय है ऐसी जो पीठ है सो महाभाग्यन के समूहन सूं वंदित पूजित है चरणकमल जाके ऐसे जाके भाग्यन कूं वर्णन करवे में कौन समर्थ होय सके ॥४३॥ और या श्रीजी को जो लिलाट है के श्री मस्तक है जो मांन समय में प्रियागणों के बड़े भाग्यवान चरणकमल संबंधी महावर सूं कबहू कहूं आलिंगन करवे कूं प्राप्त होय है के मांन समय में बारंबार प्रणाम करवे सूं जाके ऊपर प्रियागणों के चरणकमल संबंधी महावर को संबंध होय है ऐसे वा मस्तक कूं के श्रेष्ठ

कुमकुम कूं और चन्दन तिलक रूप कूं धारण करके आलिंगन कर रहे हैं और शोभित कर रहे हैं विन श्रेष्ठ चन्दन और कुमकुम के कृपालु सेष सूं जिन भक्तों के श्री मस्तक अत्यंत कृतार्थ किये जाय हैं वे भक्तराज कब मेरे नयनों में परमानन्द के समूहन कूं वर्षा करेंगे और वा श्रीजी के सेवा रस के आवेश सूं सगरे दासन ने हू जे संध्योपासनादि कर्म त्याग हू कर दिये हैं परन्तु जो श्रीजी मर्यादा मार्गीय लोकन के उपकार के अर्थ विन संध्योपासनादि कर्मन कूं हू सर्व प्रकार सूं आदर देवे हैं तासूं वे कर्म हू सर्वदा जय कूं प्राप्त होय रहे हैं सो कब मेरे नयनन कूं शीतल करेंगे और मेरे मन्दिर कूं आवेश करिके बहुत प्रकार सूं विहार करते वा श्रीजी के प्रायःलोकन कूं सुख के प्राप्त करिवे वारे जे वे वे चेष्टा हैं विहार हैं मेरे हृदय में निरन्तर ही रूपन कूं सकुंचित करत के संकोचवारो करके प्रवेश करत यह विहार केवल वा श्रीजी ने ही किये हैं या भाव सूं ही मेरे नयनन में कब प्रवेश करेंगे और मेरे हृदय कूं चन्दन सूं लेपित जैसे होय तैसे अत्यंत शीतल कब करेंगे और जो श्रीजी आरति के भ्रिमायवे की मिस सूं जलों की प्रीति सूं त्रिलोकी की शोभा रूप जैसे होय तैसे धारण करें हैं वा निरूपाधिक निरहेतुक प्रीति के ऊपर हों अपने आप कूं वारण करूं हूं और जो श्रीजी मेरे आगे खट्रस वारो सुन्दर अद्भुत चार प्रकार के भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य रूप भोजन सामग्री कूं सहित प्रेम के अर्पण करे हैं सो वा श्रीजी के मुख सूं वाकूं आरोगत वा श्रीजी के वियोग रूप एकादशी में उपवास वारो जो मैं हूं कब पारणां कूं करूंगो नागवल्ली के दल जैसे पान हैं विनको अत्यन्त तप नहीं कियो है हों तो जानूं हूं विननें तो अत्यन्त अधिक ही ताप कियो है जासूं बारंबार वा श्रीजी के अधरामृत कूं पान करके हम कूं हू जो दुर्ल्लभ है ऐसी दंताक्षत संबंधी माधुरी कूं लूटकें फेर हरिण समान जिनके नयन हैं ऐसी जे श्रीजी की भक्त स्त्री रत्न हैं विनके मुख कमलों में या अधरामृत के रस कूं निरन्तर ही वर्षा करें हैं और विश्राम मन्दिर में जिन स्त्री रत्नों की और श्रीजी की वो वो लीला विहार चारों ओर जय कूं प्राप्त होय है, वा श्रीजी के और वाके भक्तगणों के दर्शन में मोकूं महा आवेश सदैव ही बढ़ि रह्यो है और वा मन्दिर में आपके विराजवे कूं सुन्दर मूढ़ा है तामें जो तुल जैसे परम कोमल आसन है जो अमोल्य वस्त्रन सूं वेष्टित है रत्न खचित जो कंबल है वाकूं हू शोभित करि रह्यो है और सब के आश्रय रूप जे श्रीजी

हैं ऐसे प्रिय के हू आश्रय रूप होयवे सूं अत्यन्त प्रकर्ष की काष्टा कूं जो प्राप्त होय रह्यो है सो ऐसो आसन कब मेरे नयन रूप पट्टों में उछल्लित हर्ष के समुद्रन कूं परिवेषण करेगो परोसेंगे ।।५१।। और जो श्रीजी के वाकयामृत हू बड़े भाग्य वारेन के कानों में प्रवेश करके हृदय में हू प्रवेश करके रोम रोम में हू निरन्तर परमानन्द के समूहन कूं वर्षा करे है ऐसे वाकयामृत कूं हों कब प्राप्त होवुंगो'' ।।५३।।

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले तृतीय स्तरंग समाप्तम् ।।३।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग चौथो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्थ तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **इत्येवमादि निगद भुच्छलत्प्रेम सागरः तमेकमेव मनसिदधान इतरत्खलु दंडे ।।१।।**

याको अर्थ -- उच्छलित होय रह्यो है प्रेम को समुद्र जामें ऐसे जो श्री गोवर्द्धनधरजी हैं सो इत्यादि प्रकार सूं कहेत और वा श्रीजी कूं ही मन में धारण करत वासूं और जितनो सुख मात्र है वाकूं तिणका जैसे त्याग करके उठे भये सो श्री मथुराजी में स्वयं प्रस्थान करत भये हैं ।। १६२३ संवत् में पधारे वा श्री गोवर्द्धनधरजीकूं सुनिके हर्ष सूं प्रफुल्लित होय रह्यो है श्रीमुख जिनको और उच्छल्लित होय रह्यो जो प्रेम समुद्र है वाके प्रवाहन सूं विकास कूं प्राप्त होय रहे हैं नयन कमल जाके ऐसे भगवान श्री गोकुलेश्वर जी हैं सो अपने भक्तन के सहित दूर पर्यन्त आगे जाय के निमेष रहित ही भली प्रकार प्रसन्नता सूं श्री गोवर्द्धनधरजी कूं दरसन करत भये हैं ।।४।। वा समय में श्री गोकुलेश्वरजी के नयनन में प्राप्त कियो है सुख जाने ऐसो जो तिस तिस अवतार की उत्कृष्ट शोभा कूं जीतवे वारी जाकी कांति है ऐसो जो श्री गोवर्द्धनधारी कूं श्रीमुख है सो जय कूं प्राप्त होय रह्यो है तब श्री गोकुलेश्वरजी के स्वरूपामृत सागरन कूं दर्शन करत और आलिंगन करत और चुंबन करत

वैसे प्रणाम करत तैसे स्पर्श करत और तैसे इच्छापूर्वक ग्रहण करत और लूटत तैसे पान करत और विनमें मज्जन करत तैसे तरत और विनसूं उन्मंज्जन करत और तिस तिस अर्थ कूं पूछत और विनमें ऐसे कहत वा श्रीजी के स्वरूपामृत सागरन सूं उत्साह ताप आदि के अर्थ समाधान किये और भली प्रकार दर्शन किये और अत्यन्त क्षमा कराये और स्पर्श कराये और आलिंगन किये और चुंबन किये ग्रहण किये और लुच्छे और उन्मंज्जन किये तराये उन्मंज्जन किये और पूछे भये और तैसे वा वा वार्ता कूं कहि रहे जे श्री गोवर्द्धनधरजी के नयन हते विनके आनंद संभ्रम और आश्चर्य के निवास रूप और उत्साह तैसे विलास सूं मिली भई अपरमित अनिरवाच्य कछु अवस्था प्रगट होती भई है ॥११॥ वा श्रीजी के अंग और वाके संबंधी माला और केसरी वस्त्र अरु अगर चंदन के पंक सूं संपूरण प्रसर रही सुगंधी रूप समुद्रन के शत कोटि हते सो वा श्री गोवर्द्धनधर के घ्राणपुट युग्म के नासिका द्वारा मन में प्रवेश करके सो सुन्दर क्षेत्र में आनन्द समुद्रन के परार्द्धन कूं सो चिर पर्यन्त वर्षा करत भये हैं तब श्री गोवर्द्धनधरजी के श्री अंग में पुलक कूं समुद्र रूप उदधि सूं अनेक प्रकार सूं वृद्धि कूं प्राप्त होते भये हैं और परमप्रिय विन दोनों के नयनों सूं जे हर्ष जल सूं बंधे समुद्रन के समूह विस्तार कूं प्राप्त होते भये हैं विनमें भये हू जिन भाग्यवान भक्तन की दृष्टि मग्न भई है विनके शरीर में हू आधि दैविक आध्यात्मिक आधि भौतिक रूप तीनों प्रकार कूं हू अत्यन्त दारुण ताप स्थित होयवे कूं समर्थ न होतो भयो है यह श्रीजी और श्री गोवर्द्धनधर यह दोनों आपस में गाढ़ आलिंगन करके एकता कूं कहा के अभेद कूं प्राप्त होय जायेंगे या प्रकार के भय सूं विनकूं रोकत ही विनकी लीला में लोभी बड़ो विचारवान् जो स्तंभ ये सो वा अभेद कूं प्राप्त होयवे न देतो भयो है और आपस में अत्यन्त प्रिय इन दोनों कूं ही अत्यंत रहस्य जो कछु वक्तव्य तो सो सगरो ही इन नयनों ने ही विस्तार सूं कह दियो है या विषय में कछु कहवे सूं पुनरुक्ति कूं करत हों इनकी अपराध वारीय होय जावुं या बात कूं जानत ही रसना जो हती सो तो मौन कूं ही ग्रहण करत भई है ॥१८॥ नमन करते या श्रीजी के श्री मस्तक ने वा गोवर्द्धनधरजी के वे चरण कमल अलंकृत किये हैं मानो रंजित किये हैं और अत्यन्त सर्व के ऊपर ही किये हैं और चिन्तामणि के हजारन समुद्रन सूं पूर्ण भरे हैं और चारों तरफ सूं अमृत सागर के शतन सूं सिंचन

किये हैं प्रेम रूप सुगंधी दूर पर्यन्त जासूं प्रसर रही है ऐसो जो श्री गोवर्द्धनधर को हृदय है वाकूं प्रभु श्रीजी महापुष्ट करत भये हैं तासूं अत्यन्त प्रसन्न भये श्री गोवर्द्धनधर हू वा श्रीजी में तैसे नमनादि कूं ही करत भये हैं और आपस में जो श्री गोवर्द्धनधर को आवनो और श्रीजी को आगे आवनो रूप भारी रूण दियो है सो वाकूं विशोधन करवे कूं दोनों ही समर्थ न होते भये हैं सो प्रथम अनुभव कियो है वियोगाग्नि कूं ताप जिनने ऐसे वे दोनों प्रियतम सर्वात्म भाव सूं संयोग रूपा अमृत के समुद्र में मग्न भये थके ही चिरकाल पर्यन्त और कछु हू नहीं जानत भये हैं तब विनकूं सुन्दर जो वाहन हते सो यह अपने वांछित देस कूं वेग ही ले आवते भये हैं ।।२५।। अब श्री गोकुलाधीशजी श्री गोवर्द्धनधर जी कूं, जाके चरण कमल की रज के कणिका पर हू करोड़न वैकुण्ठ न्योछावर किये जांय ऐसे अपने उत्तम घर में बड़े प्रेम सूं आदर सूं प्रवेश कराय के अमूल्य मणि मुक्तादि सूं जटित अमोल्य सुवर्ण को जो शुभ दीप्यमान सिंघासन है वामें पधराय के सगरे भ्रातगणन के संग और तैसे भक्त और दासन के संग ही और महाभाग्यवती जो अपने मन के अनुकूंल निरदोष श्री अंग भाववारी अपनी प्रिया है वाके संग ही सदैव अनेक प्रकार के पंखा और अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य और सुधा सूं हू अधिक मीठे लेह्य तैसे चोष्य उप सामग्री सूं और अनेक प्रकार के वीड़ा और सुन्दर आछे मीठे औटे दूधन सूं और वाकी धैया सूं और नाना प्रकार के फलादिकन सूं और कर्पूर तांबूल शीतल जलादिकन सूं और कर्पूर तांबूल धूप दीप आरती पुष्प मालादिकन सूं और नाना प्रकार के वस्त्र और भूषण मणी मुक्तादिकन सूं तैसे गान वाद्य नृत्य स्तुति आदिकन सूं और शैय्या सिराहनो गेंदुआ तूल विछौना प्रछंद पट आदि सूं सुख सामग्री सूं और मणी मुक्तान सूं जटित जिनके दंडक हैं ऐसे चमर और अनेक प्रकार के मनोहर छत्रन सूं और सुवर्णमय भोजन पात्र और तैसे सुन्दर पान पात्रन सूं और अमोल्य जल के पात्रन सूं और अनेक प्रकार के पीकदान रूप पात्रन सूं और शोडष उपचार तैसे चतुष्टी उपचारन सूं और हू जे असंख्यात लोकवेद सिद्धि और लोकवेदातीत उपचार सेवा सामग्री है विनसूं समयानुसार ही बड़े हर्ष सूं रस सागर सम्पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी श्री गोवर्द्धनधर नाथजी कूं साढ़े दो मास पर्यत सेवा करत भये हैं सो या श्री गोकुलाधीशजी की लीला को दर्शन करके तैसे अनुभव करके और श्रवण करके और भली प्रकार आदर भाव सूं कीरतन करके

और स्मरण करके जीव करोड़न संसार सागर सूं उतरके वा श्रीजी के चरण कमल कूं विना यत्न के प्राप्त भये हैं, और तैसे अब हू प्राप्त होय रहे हैं और प्राप्त हू होयेंगे यामें संशय नहीं है । श्री गोकुलाधीशजी जा सुख कूं श्री गोवर्द्धनधारीजी प्रति दान करत भये हैं और जा सुख कूं वे श्री गोवर्द्धनधारी या श्रीजी के प्रति दान करत भये हैं । पंड़ित हू होय परन्तु वा सुख कूं को जान सके है अपितु कोई नहीं जानें है ॥ अब सो प्रिय श्रीजी श्री गोवर्द्धननाथजी के अर्थ शुभ क्षण कूं सम्मति करिके विन भ्रात और भक्तगणन के संग ही श्री गोवर्द्धननाथजी के शुभ प्रस्थान विषय में निर्णय करत भये हैं वा समय में सुख और विरह संबंधी दुःख भयो है वाकूं हों नहीं जानूं हूं नहीं रात्रि और दिन कूं जानत वा दोनों प्रिय श्रीजी, श्रीगोवर्द्धननाथजी के यह साढ़े दोनों मास क्षण जैसे ही गुजर जाते भये हैं अब श्री गोकुलाधीशजी निर्णय किये शुभ क्षण में बहु मंगल पूर्वक श्री गोवर्द्धनधारी कूं प्रस्थान करायके और श्री गोवर्द्धनजी पे पोहोंचाय के तहां कछुक दिन विराजमान होयके अनेक प्रकार के वस्तुन कूं उपायन करिके भेंट करके बड़े यत्न सूं आज्ञा मांगि के बड़े यत्न सूं प्राप्त भई है आज्ञा जिन कूं ऐसे श्रीजी ही शीतल आंसून की वर्षा करत करावत मथुरा कूं प्राप्त होय के भक्तवृन्दन के संग ही विनसूं कीर्तन होय रह्यो है यश और गुण जाको ऐसे सो श्रीजी अपने मन्दिर में ही प्रवेश करत भये हैं ॥४६॥ तब कितने एक दिन पीछे श्री विट्ठल प्रभु श्री गोस्वामीजी द्वारका सूं यहां पधारके पुत्र जे श्री गोकुलेशजी हैं वाके दरशन कूं प्राप्त भये हैं तहां गिरिराजधारी कूं जो इहां पधारनो और घर में जो निवास करनो तासूं भयो जो महा सुख है जे श्री गोकुलपति के श्रीमुख कमल संबंधी मधुर रस सूं सिंचित है जो महा स्वाद है और शीतल है ऐसे विन सुखन कूं कर्ण और हाथन सूं हृदय में धारण करिके ही सो परम चतुर श्री गोस्वामीजी आनंद की परम काष्टा कूं प्राप्त होते भये हैं सो या श्री गोकुलपति जो श्री गोवर्द्धनधारी के संग प्रवर्त भई अखंडित प्रेम लीला है वाकूं जो नर अथवा नारी श्रवण करे अथवा भक्ति सूं कीर्तन करे है सो वा श्री गोकुलाधीश कूं वेग ही प्राप्त होय है ॥४९॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले चतुर्थ स्तरंग समाप्तम् ॥४॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग पांचमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पांचमो तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **श्रीमद् विठ्ठलसुतुर्यो गोकुलेशो महाप्रभुः सपुरुषोत्तमः पूर्णस्तस्य वंदेपदांबुजे ॥१॥**

याको अर्थ -- श्रीमद् विठ्ठलनाथ श्री गोस्वामी जी के पुत्र जे श्री गोकुलेशजी हैं सो महाप्रभु हैं पूर्ण पुरुषोत्तम हैं वाके चरणकमलों कूं वन्दना करू हूँ ॥१॥ जा श्री गोकुलेशजी की माता है सो श्रीरुक्मणीजी हैं बड़े भाग्य वारीन में हू श्रेष्ट हैं ऐसे परमेश्वर वा श्री गोकुलेशजी के विवाह कूं हों वर्णन करूं हूँ ॥२॥ श्री यमुनाजी के तट पै जो श्री मथुरा नाम वारी नगरी है जामें कंस के नाश करवे सूं स्वयं साक्षात् श्री कृष्ण निवास करत भये हैं ॥३॥ वा मथुराजी में सो श्री विठ्ठलनाथ भगवान सहित कुटुम्ब परिवार के और श्री गोकुलेशजी पुत्र के संग ही निवास करत भये हैं ॥४॥ सो मथुरापुरी में निवासी जे स्त्री पुरुष हते सो सगरे ही प्रतिदिन आयकें वा श्री गोकुलपति के श्री मुख कमल कूं नेत्र रूप अंजन सूं पान करत भये हैं ॥५॥ मथुरा पुरवासी जे भक्त हते सो वे गुणन के सागर रूप श्री गोकुलेशजी कूं मूर्त्तिमान महोत्सव रूप ही निश्चय सूं मानते भये हैं ॥६॥ सो श्री गोकुलेशजी पंचदश वर्ष के अवस्थावारे हैं । वासूं उछल्लित किशोर अवस्था सूं प्रकाशमान होय रहे हैं करोड़न काम सूं हू अधिक सुन्दर हैं और पूर्णचन्द्र सूं हू सुन्दर श्री मुखवारे और विशाल जिनको वक्षस्थल है और घोंटू पर्यन्त लंबमान जाकी भुजा है और प्रफुल्लित कमल जैसे जाके नयन हैं और दर्प्पण जैसे स्वच्छ कपोलन की शोभा जाकी है और प्रवाल जैसे लाल और मधुर हैं अधर जाके और दंत पंक्ति सूं विजय कियो है अनार के बीज की पंक्ति जाने और कबु समान है कंठ जाको और सिंह जैसी है कटि जाकी और गंभीर है नाभी जाकी और कृश है उदर जाको और कल्पवृक्ष के लाल नवीन दल जैसे शोभायमान हैं चरण कमल जाके ऐसे सो श्री गोकुलेशजी अपनी मंद हास्य सूं और सुन्दर अवस्था सूं और आकार सूं

तैसे मंद गति सूं और चंचल क्रिया सूं और गुणन सूं और प्रेम सूं हास्य वचनन सूं और हू तिस तिस स्वरूप संबंधी कलान सूं सगरी स्त्रीन के मन कूं हर लेते भये हैं सो श्री विट्ठलनाथजी हू वा अपने प्रिय पुत्र श्री गोकुलेशजी के अद्‌भुत किशोरावस्था कूं देखकर और तृण जैसे तुच्छ किये हैं असंख्य कामदेव जानें ऐसे उपमा रहित महा अलौकिक दिव्य रूप कूं हू देखकर अपने जनों के संग विचार करत भये हैं के या श्री गोकुलपति के अनुरूप योग्य कन्या पृथ्वी तल में कहा संभवे है। तिरस्कार कियो है अश्विनी कुमार को हू रूप जाने ऐसे जा श्रीजी कूं यह रूप दर्शन दे रह्यो है। सो वा चन्द्रमा के चन्द्रिका भाव कूं कौन आश्रय करे और या रस सागर के सरिता भाव कूं तैसे पारसमणि माणिक्यन के कांति भाव कूं कौन प्राप्त होय ।।१४।। या स्वरूप के दासी भाव कूं प्राप्त होयवे में हू रती हू उत्साह कूं धारण नहीं करे है तो और स्त्री तो दूरस्थित हैं विनकी कहा गणना होय ।।१५।। सो या प्रकार चित्त सूं विचार करत यह श्री गोस्वामीजी त्रिलोकी में अपने प्रिय पुत्र श्री गोकुलेशजी के योग्य धन्य कहिये श्रेष्ठ बड़े भाग्यवारी कन्या कूं प्राप्त होते भये हैं ।।१६।। या अन्तर में ब्राह्मणन में श्रेष्ठ जे भट्ट जाति वेणाभट्टजी हैं जाकी परम पतिव्रता रुक्मिणी नाम स्त्री है सो वेणा भट्टजी हू ईश्वर की इच्छा सूं मथुराजी में निवास कूं करत भयो है सो वा वेणा भट्टजी के घर में अत्यन्त सुन्दर और सात वर्ष की जाकी अवस्था है और मनोहर जाको रूप है और श्री गोकुलेशजी के जो योग्य है और गुणन सूं पूर्ण और जो पार्वती ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध है ऐसो दिव्य और माधुर्य, विनय, दिव्य शोभा तैसे श्रेष्ठ स्वभाव लक्षणन सूं मिल्यो कन्या रत्न हतो वा श्री पार्वतीजी के श्रीमुख को दर्शन करिके जे वर के पक्षवारे हते श्रीजी के योग्य ही याकूं जानते भये हैं और जे कन्या के पक्षवारे हते वे हू श्री वल्लभजी को दर्शन करके वाके योग्य श्रीजी कूं ही जानत भयो है और वेणा भट्टजी तो निरन्तर चिन्ता रूप समुद्र में ही मग्न हैं सो या प्रकार को विचार हू करे है यह जो सगरे श्रेष्ठ गुण वारी मेरी कन्या है याके योग्य वर या भूमि तल में तो नहीं नजर आवे है। जासूं निरन्तर चतुराई सूं हू मैंने यद्यपि विचार्यो है, अन्वेषण कियो है तो हू सो नहीं मिले है जो या कन्या के विवाह में योग्य होय ।।२३।। जासूं ईश्वर कूं हू याको विवाह करिवे में योग्यता नहीं है। यह कन्या गुण उदारता स्वभाव वाली लीला रसादिकन सूं और उत्कृष्ट

चातुर्य माधुर्य शोभा विनय आदिकन सूं और अपने प्रभावन सूं अर्बुद लक्ष्मीन कूं हू उल्लंघन करिके वर्तमान है । तब सो यह कन्या कैसे इन्द्र कूं अथवा काम कूं विवाह योग्य होय, अपितु नहीं है और याकी अवस्था तो अब विवाह के योग्य ही है ॥२४॥ सो यामें हों कहा करुंगो । सो याहू अर्थ में अपने हृदय में व्याकुल होय रहे मेरे कूं कौन सुहृद ऐसे बुलाय के अत्यन्त हित कूं कहै ॥२८॥ ऐसे विचार करत सो वेणा भट्टजी हू तैसे रूप गुणन सूं मिल्यो श्री गोकुलाधीशजी कूं देख करके निश्चय करत भयो है के सर्व प्रकार सूं मेरी कन्या के योग्य वर यह श्री वल्लभजी ही है । सो बड़ो विचारवान भट्टजी यह निश्चय करके बड़ो हर्ष वारो होतो भयो है तामें हू फेर विचार कर श्री गोकुलाधीशजी के प्रति हों तो कन्यादान करूं तामें वा श्री वल्लभजी कूं पिता और माता और बहेन और मामा और हू सगरे सगे बांधव का प्रकार सूं अनुमोदन करें अथवा न करें या प्रकार सूं विचार करत व्याकुल होतो भयो है ॥३०॥

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले पंचम स्तरंग समाप्तम् ॥५॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग छट्ठो ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षष्टम् तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **इत्थमेनं विषिदंत कन्याया मातुलान्यवक् विमृश्यनितरां सर्व वेणाभटजी विचक्षणां ॥१॥**

याको अर्थ -- सो या प्रकार चिन्ता सूं व्याकुल होय रहे वेणा भट्टजी कूं कन्या की जो मातुलानी हती सो बड़ी चतुर हती तासूं विचार करके वेणाभट्ट के प्रति सगरो वृत्तांत कहिवे लगी ॥१॥ के यह जो श्री गोकुलाधीश है सो सगरे गुणन सूं शोभित है जाके चरण कमल की रज ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है और जो पतितन कूं पवित्र करिवे वारो है कंदर्प कोटि लावण्य है साक्षात् ही श्री पुरुषोत्तम है और अपार करुणा को सागर है तैसे सर्व कूं सुख देवे

वारो है ॥३॥ और निरुपाधि प्रेम वारे भक्तजन जाके चरण कमल कूं सेवा करें हैं सर्वज्ञ हू सगरे श्रेष्ठ स्वभाववारो है सो यह श्री गोकुलपति तिहारी कन्या के योग्यवर मोकूं निश्चय होय है ॥४॥ जासूं भक्ति कर भक्त तुलसीदल हू समर्पण करे है सो यह भगवान निरभिमानी है सो प्रेम सूं हू अंगीकार करे है । सो यह प्रभु तिहारे और तिहारी कन्या के निष्कपट हृदय कूं जानें है तासूं कदापि कन्या को निरादर नहीं करेंगे यदि यह निरादर हू करे तथापि हों तो नमन करत या कन्या कूं जायकें आप कूं समर्पूंगी तो हू मेरी हांसी नहीं होयगी जासूं यह वर श्री गोकुलेशजी पुरुषोत्तम है सो याकूं छोड़ि के विषाद कूं जो करवो है सो तो कार्य सिद्धि में विघ्न रूप ही है तासूं श्री गोकुलेशजी के मातुल गोविन्द भट्टजी हैं वाकूं तुम सुन्दर सौभाग्य लक्षणवारी कन्या कूं अर्पण करवे लिये कहो यत्न करों सो हों तो यह निश्चय जानूं हूं कि या पार्वतीजी को जो रूप है वा श्री गोकुलेशजी कूं प्राप्त होय के ही स्थित होयगो, के अवश्य ही श्री वल्लभजी कूं प्राप्त होयगो । सो या प्रकार वाके वचन कूं सुनकर बड़ो चतुर वेणा भट्टजी विषाद कूं दूर करके भलो भलो कहकें कोई एक सुहृद कूं श्री विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी के मन्दिर कूं पठावतो भयो है के तुम श्री गोकुलनाथजी की जन्मपत्री कूं युक्ति सूं ले आवो । इतनो सुनके सो हू तैसे करत भयो है सो श्री वल्लभजी की जन्मपत्री कूं श्री गोस्वामीजी सूं लेकर वेणा भट्टजी प्रति देवत भयो है, सो वेणा भट्टजी वाकूं देखत भयो है, सो वेणा भट्टजी हू वाकूं देखकें बड़ो प्रसन्न होतो भयो है । तब अपनी कन्या की मातुलानी कूं कहवे लग्यो कि हे कमलाक्षी जो हों कहूं वाकूं सावधान होय के सुनो सो जैसे सगरे लोकन में प्रसिद्ध है और जैसे हमारो हू अनुभव है तैसे ही यह जन्मपत्री हू सगरे योगन की प्रकर्षता कूं दूर करके या श्री वल्लभजी के सर्वोत्कर्ष कूं हू निरन्तर कहे है और या कन्या की जो जन्मपत्री है सो हू सर्वोत्कृष्ट वर की प्राप्ति कूं कहेत ही स्पष्ट ही या कन्या के श्री गोकुलेशजी के सर्वोत्कृष्ट पत्नी भाव कूं निश्चित कहे है ऐसे वा वेणा भट्टजी के वचन कूं सुनकें सो हू बड़ी चतुर बहुत प्रसन्न होती भई है । फेर वेणा भट्टजी तो अपने सुहृद कूं पठाय के श्री गोकुलेशजी के मातुल गोविन्द भट्टजी कूं बुलावत भयो है । तब अपने घर में पधारे वा गोविन्द भट्ट जी कूं प्रत्युत्थान कहा के आगे उठनो और आसनादि सूं और पूजा तैसे विविध स्तोत्र और प्रणामन सूं प्रसन्न करत भयो

है ।।१८।। तब प्रसन्न भये गोविन्द भट्टजी कूं देखिकें एकांत में वेणा भट्टजी यह कहत भये हैं कि तुम तो सर्व गुणन सूं पूर्ण हो और दयालु हो तैसे मेरे में प्रितिमान हू हो और श्री गोकुलपति के मातुल हू हो और मोकूं प्रिय हू हो तैसे आपको मेरे साथ भ्रात भाव हू सर्व प्रसिद्ध है तासूं तुम हू मेरे मित्र हो और बांधव हो और सर्व प्रकार सूं उपकारी हू हो तासूं हों कछु मनोरथ कूं धार के तिहारी शरण कूं प्राप्त भयो हूं । हे सर्वज्ञ तुम तो सगरी वार्ता जानो ही हो और श्री विट्ठलहरी जे श्री गोस्वामीजी हैं विनकूं प्रिय हो । तासूं वा मेरे मनोरथ कूं पूर्ण करो । सो या प्रकार श्रीजी के मातुल जी वा वेणा भट्टजी की या प्रकार की विज्ञप्ति कूं सुन करके कहवे लग्यो के आपके मनमें जो मनोरथ होय सो निशंक होयकें कहिये । जो तुम कहोगे सो यदि न बनिवे कूं होयगो तो तबहू करुंगो । ऐसे गोविन्द भट्टजी के थोरे अक्षर वारे और बहुत अर्थ वारे वाक्यन कूं सुनके सो बड़ो बुद्धिमान वेणा भट्टजी कहवे लग्यो के यह मेरी कन्या है या सुन्दर भले स्वभाववारी कूं जैसे श्री गोकुलाधीशजी अंगीकार करें तैसे तुम करो ।।१५।। ऐसे विज्ञापना कर के वा कन्या कूं या गोविंद भट जी की गोद में विनके आगे अत्यंत प्रणाम करके बैठावतो भयो है, तब गोविंद भटजी हू करोडन लक्ष्मीन सूं हुं अधिक रूपकूं धारण करत वा कन्या को दर्शन करिके मन में कहिवे लग्यो के यह कन्या प्रभुन के ही योग्य है यह मान के भीतर अत्यंत प्रसन्न होतो भयो है तब वेणाभटजी कूं कहवे लगे के हे सखे अत्यन्त थोड़े से दिनन में हूं या तुमारे कार्यकूं हों सिद्ध करूँगो तुम चिन्तारूप समुद्र में मत डूबो ।।२२।। या प्रकार गोविंदभटजी कहे के तेसी कन्या के दर्शनसूं बड़ो उत्साहवारो होय के प्रसन्न होय के श्री गोस्वामीजी के निकट जातो भयो है तैसे गोविंदभटजी के वचन कूं वेणाभटजी तो सुनके अपने घरमें अपने साले की स्त्री के सहित अत्यंत हर्षित होवते भये है तब गोविंदभटजी जान्यो है सगरो अर्थ जिनने ऐसे श्री गोस्वामीजी कूं ऐकांत में विज्ञप्ति करके सो श्री गोकुलेशजी के विवाह के अर्थ वेणाभटजी की या कन्या कूं अंगीकार करावत भयो है तब श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी विनके संग प्रणाम करके अपने परिवार कूं तहां बुलावत भये हैं तब सो तहां श्री गिरधरजी और प्रसन्न होते गोविंदजी तैसे बालकृष्णजी और रघुनाथ और यदुनाथ यह सगरे तहां पधारते भये है और श्री गोस्वामीजी की जे बेटी हती शोभा, यमुना, देवका, कमला यह महा हर्ष

सूं पूरण मनवारी भई थकी तहां पधारती भई है और तहां वर जे श्री गोकुलेशजी है वाकी जननी जे श्री रूकमीणीजी है वाके समान जो श्री पद्मावती जी हती सो अत्यंत प्रसन्न चित्त होय के स्वयं हूं तहां पधारती भई हैं ।।३६।। और श्री गोस्वामीजी के भ्राता श्री गोपीनाथजी की जे बेटी लक्ष्मी और सत्या हती सो आनंद सूं स्वयं ही पधारत भई है ।।३७।। और गदाधर द्विवेदी तैसे गोविंददास और चाचा हरीवंशजी और ब्रजदास तैसे गोपीनाथ दास यह हू प्रसन्नता सूं तहां पधारते भये है और पछा त्रिवाडी हू प्रसन्न होयके और श्री आचार्य जी के कृपापात्र और श्री गोस्वामीजी के आदर पात्र ऐसी कृष्णादासीजी हूं तहां पधारी है और प्रभुन कूं प्रिय गोरबाई और दामोदर दासी हूं पधारी है, और तैसे मातुल और पितृव्य और भ्राता के पुत्र और भानेज यह सगरे श्री गोस्वामीजी के निकट पधारे हैं सो जैसे वेणाभटजी ने कह्यो हतो तैसे गोविंदभटजी पधारे भये सगरे संबंधी कृपा पात्रन के आगे श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी कूं विज्ञापना करत भयो है तब जे सगरे तहां पधारे हते तब बड़े प्रसन्न होते भये है ।।४९।। सो विनमें कितने ऐक तो भले भले ऐसे कहते भये है और कितनेक तो ऐसे ठीक है ऐसे कहत भये हैं । और विनमें कितने ऐक तो गोविंदभटजी की प्रसंशा करत भये हैं और कितने ऐकतो बाके सालाकी स्त्री की स्तुति करत भये है और कितने ऐक तो वा कन्या के भाग्यन कूं प्रसंशा करत भये है और कितने ऐक तो वाके अद्‌भुत रूप कूं ही प्रसंशा करत भये है और कितने ऐक तो वाके गुणन कूं और कितने ऐक तो वाकी बुद्धि कूं तैसे शीलकूं प्रसंशा करे हैं विनमें और कहे है के हमारे श्री गोकुलेशजी हू सर्व प्रकार सूं वाके विवाह अर्थ योग्य हैं और इतरतो कदापि नहीं है और कितने ऐक तो ऐसे कहै है के या श्री वल्लभजी के कलत्र भावकूं धारण करिवे में केवल यह पार्वतीजी ही समर्थ है और तो लक्ष्मी हूं समर्थ नहीं है और श्री महाप्रभुजी श्रीजी की जो शोभानाम बहेन हती सो तो स्पष्ट कहेवे लगी के वेणाभट के कुल हू श्लाधनीय है और वेणाभटजी को गृह हू श्रेष्ट है और वेणाभटजी की विद्याबुद्धि कीर्ति सगरी हूं प्रसिद्ध है श्रेष्ठ है और याके वे सगरे संबंधी हूं श्रेष्ठ है, और स्वयं हूं यह वेणाभटजी जे सदाचार ज्ञानवान वैदिक है, विन सबनसूं हूं अधिक है सो वासूं जो इहां संबंध भयो है सो दुर्ल्लभ हतो सो या प्रकर के संबंध में केवल भगवद् इच्छा ही कारण है ।।४८।। सो इहांसूं कोई अत्यंत चतुर बुद्धिमान

पुरुष हूं पठायो जाय जो जाय के सहित विनय के मधुर अक्षरन सूं भटजी के आगे कहे के आप के यहां सूं पधारके श्री गोविंदभटजी ने जो कछु कह्यों है सो वाकूं सहित परिवार के हम अत्यंत ही अनुमोदन करे है ॥५१॥ तैसे महागुणवान तिहारी लक्ष्मी के रूपकूं हू विजय करिवेवारी सगरे श्रेष्ठ गुणवारी या धन्य कन्या कूं कौंन है जो बहुतमान नहीं देवे ॥५२॥ सो जैसे या भाव कूं प्राप्त होय के हम अत्यंत प्रसन्न एवं सुखी होय रहे हैं । सो तैसे तुम हूं श्री गोकुलेश जी जमाई कूं प्राप्त होयके सुखी होवो सो या प्रकार के शोभाजी के वचनन कूं सुनकर सो श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी सराहना करी के अत्यंत प्रिय सुहृद दूत कूं पठाय के तैसे ही करत भये है सो तिस दूत के तैसे मधुर अक्षरवारे वचननकूं सुनकर दूर होय गयो है सगरो कलेश जाको ऐसो सो वेणाभट्टजी अत्यंत प्रसन्न होतो भयो है ॥५४॥

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां श्री गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले षष्टम स्तरंग समाप्तम् ॥६॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग सप्तम् ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तम् तरंग लिख्यते ॥

श्लोक -- **अथ श्री विट्ठल हरिराय दृम गण कान्वहून १६२४ युग नेत रसर्क्षे शोन्मिनेविक्रमभूषतेः ॥१॥**

याको अर्थ -- वाके अनंतर श्री विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी बहुत गणक जे ज्योतिषः शास्त्र के वेत्ता है विनकूं बुलाय के विक्रम राजा के १६२४ वर्ष में आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में गुरुवार द्वितिया तिथि में अपने सगरे बंधु युक्त जो प्रिय पुत्र श्री वल्लभजी हैं वाके शुभफल देवेवारे विवाह के लग्न कूं और हू तिस तिस कार्य के शुभदायक समयन कूं निश्चय करत भये है ॥३॥ तब ही प्रभुन कूं कन्यारत्न के लाभकूं दक्षिण नेत्र के उदय होय रहो अधिक स्फुरणोने कह्यो के आपकूं व्याह होय है ताके पीछे श्री गोस्वामीजी अपनी ज्ञाति की

रीति सूं अपने मंदिर सूं अपनी भार्या श्री पद्मावतीजी और अपनी बेटी जी शोभाजी तैसे और हू तेसी भाग्यवारी स्त्री जनकूं संध्या समय में वेणाभटजी के घर में कन्या कूं याचना लिये और वाकी प्रतिष्ठा करायवे कूं पठावते भये है ॥१३॥ तब ज्ञाति और बंधुजनों की स्त्री सहित वे सगरी सगरे आभरणनसूं शोभित भई थकी सुंदर वस्त्रनकूं पहिर के अत्यंत प्रसन्न जिनके मुख है और कंदर्प कोटी लावण्य जे श्री गोकुलेश्वर है वामें जे अनुरागवारी है ऐसी जे सगरी भक्तन की स्त्री है सो वेहु अपने हस्त कमलों में सुंदर नवीन तिस तिस देश के जे सुंदर वस्त्र है विनकूं धारण करके और गंध अक्षतयुत पात्र कूं हू हस्त कमल में लेके और मांगलिक जो नारीके फल है और पुष्पन की माला कूं समूह है और बीड़ा को समूह है सुंदर सुवर्ण के भूषणन के जे भरे भये पात्र है विनकूं हाथन में ले के सुंदर मंगल गीतन को गांन करत ही भेरी दुंदुभी के शब्दन सूं वेणु वीणा के शब्दन सूं और घूघरी गोमुखन के शब्दनसूं तैसे मृदंगादि के शब्दन सू मिली भई और पटह आनक के शब्दन सूं तैसे ही वेणाभटजी के घर प्रति प्रस्थान करत भई है सो या प्रकार पधारी और प्रेमसूं गानकर रही विनसूं वेणाभटजी को जो गृह हतो सो महा शोभाकूं प्राप्त होतो भयो है तब कन्या के पक्षवारे विन स्त्री गणन कूं बड़ो मान देती जो हती सो सुंदर बिछाये भये अमूल्य विचित्र आसनो के ऊपर विराजमान होती भई है ॥१४॥ विराज के तब कन्या के लिये जे वस्त्र भूषणादिक ले आई हती विनकूं तहां स्थापन करिके तब अपनी ज्ञाति की रीति अनुसार जैसे कर्तव्य हतो सो तैसे करके वेणाभटजी के स्यालाकी जो भार्या हती वाकूं हर्षसूं धन्य जो पार्वती नाम कन्या है वाकूं सहित विनय के याचना करत भई है सो तब सो हूं अत्यंत हर्ष के भारसूं नम्र होयके कन्या के योग्य वा श्री गोकुलेशजी वर कूं मानती भई है तब वंधु जनन की स्त्रीयों के सहित पधारी भई वर पक्षवारी बिन सगरीन को यथोचित ही सत्कार करती भई है तब कियो है स्नान जाने ऐसी सुंदर उज्ज्वल और श्रेष्ठ वस्त्र और भूषणन सूं शोभायमान जो धन्य कन्या है वाकूं तहां पधराय के सो वाकी मातुलानीजी पद्मावतीजी की गोद में वेठावती भई है, फेरि शोभाजी की गोद में हूं सहित आदरके बैठावती भई है तब वा श्री पार्वतीजी कूं जो रति को हूं जीतवेवारो रूप है वाकूं देख रही है वे सगरी वर पक्षवारी है विनकूं रंभा तिलोत्तमादिकन कूं जो सौन्दर्य हतो सो तृण जैसे ही निश्चय भयो तब

तहां भक्त और जे स्त्री हती सो अने मनमें कहेवे लगी के या परम सुंदर भार्याकूं प्राप्त होय के सो जो परम सुंदर प्राणनाथ है सो सर्व प्रकारसूं हू प्रसन्न होयगो ऐसे कहेत प्रफुल्लित होय गये है, मुख कमल जिनके, ऐसी वे तहां अत्यंत प्रसन्न होती भई विनमें और जे भक्त स्त्री हती सो हर्ष सूं पूर्ण होयके मनके भीतर कहिवे लगी के यह श्री पार्वतीजी काम की रचना हू नहीं है और विधाता की रचना हू नहीं है किन्तु वा प्रिय के मनोरथन की ही रचनारूप है । यामें संशय नहीं है और पद्मावतीजी आदि जे हते सो तो कन्या के मुख कमल को दर्शन करिके जैसे निधि कूं पाय के होय तैसे ही अत्यंत प्रसन्न होती भई है तब वे सगरी वर पक्षवारी वा कन्या की मातुलानी जी कूं मान देकर बड़े उत्साह सूं प्रसन्न जिनके मुख हैं सो अनेक प्रकार के गीतन कूं गान करत फिरि अपने घरकूं प्राप्त होती भई है तब श्रीमान पुरूषोत्तम श्रीजी है सो महाप्रभु भावसूं और तैसे अपने चित्तसूं हू तैसी वा कन्या रत्न के रूप गुणशील विनय अवस्थाकूं निरंतर विज्ञापना करे भये हू सो सुंदर शिरोमणी श्री वल्लभजी अपने काकाजी श्री विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी के तिन तिन आनंद के समूहन सूं और दादाजी श्री गिरधरजी के मुखकमल के प्रफुल्लितता सूं और बालकृष्णजी के अधिक संतोष सूं और रघुनाथजी के हर्ष जलसूं और पद्मावतीजी के रोमांचनसूं तैसे शोभाजी और यमुनाजी के अत्यंत मनोहर हर्ष सूं और देवका जी तैसे कमलाजी के अत्यंत अधिक उत्साहसूं और गोविंदभटजी की प्रतिक्षण प्रसर रही प्रसन्नता सूं और सत्याजी के निरंतर बढ़ रहे हर्षनसूं और लक्ष्मीजी के वृद्धि कूं प्राप्त होय रहे अधिक प्रमोद सूं और चाचा हरिवंशजी के बढ़ रहे परम आनंद सूं और गौरबाई तैसे कृष्णदासीजी के प्रकट मंद हास्यनसूं और वा दामोदर दासीजी के मंद हास्यनसूं और अपनी स्फुरित होय रही दक्षिण चक्षु और दक्षिण भुजा सूं हू निवेदन किये सो सुंदर वर रसिक राय श्रीजी अपने चित्तमें अत्यंत प्रसन्न होते भये हैं तामें कल्याणभटजी हूं भावोंदक सूं प्रगट भये स्त्री भाव सूं कहे हे के जे माद्रशी मो सरीखी हती सो तो मुखकमल में हूं प्रसन्न होती भई है ॥३८॥

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले सप्तम् स्तरंग समाप्तम् ॥७॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग अष्टम् ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टम् तरंग लिख्यते ।।

श्लोक -- **अथ श्री विट्ठल हरिराधिका रिवरीन्मुदा आहस्ययूं** कुरुत **विवाह पिंवकहुंत ।।१।।**

याको अर्थ -- अब श्री विट्ठलहरी जे श्री गोस्वामीजी हैं सो बड़े हर्ष सूं अपने जे श्रेष्ठ अधिकारी है विनकूं आज्ञा करते भये है के तुम विवाह के योग्य जो कछु भूषणादिक है सो सगरे ही सिद्ध करो ऐसे श्री महाप्रभू जी के वचनन कूं सुनिके सो अधिकारी कहेत भयो है के सब सिद्ध है तैयार है आपकूं आनके दिखावत हूं भये है मुकुट है और बड़ो सुंदर चंचल चूड़ामणी है और वाला पाश्या है तैसे नूपुर है और ललाटिका है तैसे कणिका जे अवंतस है कुंडल है कंठा भरण है और लांबो हार है और हृदयंगम हार है तैसे उर सुंत्रिका है गुछा तथा अर्धगुछा है और अमूल्य मुक्ता का है देवबंद कहिये शतयष्टि हार है की याकी शतसरी है ऐसो माणिकन को हार है के गौ स्तनहार है के गौ के स्तन जैसे जाके गुछा होय ऐसो चोसर हार है और दिव्य ऐकवली है ऐकनद हार है और नक्षत्र माला है के ।।२७।। सप्तविशेति मोतीन सूं रचनावारो हार है और वलय है तैसे बाजुबंद है मुद्रिका है और अभिकाक्श के तरंग जैसे प्रकाशमान मुद्रिका अथवा छल्ला है और कंकण है तैसे कांच कहीय चन्द्रहार कटि में धारण करिवे कूं एकसरी है और श्रृंखला है तैसे किंकिणी कहिये क्षुद्र घंटिका है और सीमंत भूषण है रत्न तिलक है चतुष्टिका है और चरण संबंधी अंगुष्ट और अंगुलि के मुद्रिका भूषण हैं नित्या है दर्पण मुद्रा कहा आरसी है तैसे मोतिन के कंकण हैं और ब्रकोष्ट स्थल कूं आभरण है और दिव्य उपकंकण है और हथ सांकल है और त्रिमणिका है तैसे कंठसरी है और धुगधुगी है नवरत्न वारी मुद्रिका है तैसे कंठ माला है मुक्तासर है और पदक है और वेणी मंड है और नासा मोती है और मोहनमाला है तैसे नासा मयूर है और नासा नवरत्नी है और त्रिरेखिका है तैसे कर्णोत्पल और कर्णमणी और कर्णपद्म है

और कर्ण पुष्प है तैसे शीशफूल है और मोहन वल्लरी है तैसे दिव्य सारसन कहिये कटि मेखला है और रेशमी वस्त्र है और राकव वस्त्र है के मृग की रोम सूं सिद्ध भये कोमल वस्त्र और क्षौभ कहिये शण सूं सिद्ध भये वस्त्र हैं और कंवल है और उत्तरीय है तैसे कंचुक है और चन्द्रातक है कहा के वर और स्त्रीन के धारण करवे योग्य आधी उरस्थल पर्यंत पहेरवे योग्य वस्त्र है और निशार है कहा के कनात है और वितान कहिये चंदुवा है और वस्त्र वेश्म कहिये वस्त्र सूं सिद्ध भये घर हैं तम्बू आदि हैं और प्रतिसरा कहा के परदा है और कटिबंध वस्त्र है तैसे कर्पूर है और कुंम कुंम है और सुवर्ण मुक्ता रत्नादि सूं खचित माला है और हू देश देश की विविधि वस्तु है ये सगरी श्री गोस्वामीजी कूं दिखावत भये हैं तब भक्त जे स्त्रीगण हैं सो मंगलमय गीतन कूं गान करत बड़े हर्ष सूं मिले भये ही तिस तिस करवे योग्य कार्यन कूं करत भई हैं और तहाँ तहाँ घर के द्वारन पै सुन्दर आंब के और अशोक के नवीन पत्रन सूं बड़े प्रेमवारी स्त्री गणन ने सुन्दर बंदनवार माला बांधी है और जे स्त्रीजन हैं सो कमल जैसे सुन्दर हाथन सूं सुन्दर लेपन किये कुमकुम के कीचन सूं विलास घर के भीतन में हाथ छापा कूं करत भई हैं । अब श्री विट्ठल प्रभु श्री गोस्वामीजी अपने कुल में प्रसिद्ध व्यवहार सिद्ध जो निश्चय तांबूल नाम उत्सव है बाकूं करिवे अर्थ बड़े आदर सूं अपने संबंधी बंधु जाति के और वैष्णव सेवक प्रभुन के भक्त और भक्तिवारी स्त्री गण और विप्र और पंडित और हू तिस तिस परिचय वारेन कूं बड़े हर्ष सूं बुलावत भये हैं तब पूर्ण जो परमेश्वर श्रीजी हैं वाके पिता श्री गोस्वामीजी सूं बुलाये भये वे सगरे ही अत्यन्त धन्य हैं ऐसे आपकूं मानत बड़े हर्ष सूं मिले भये ही प्रफुल्लित होय रही है पलक जिनकी और प्रफुल्लित होय रहे हैं मुखकमल जिनके ऐसे वे सगरे ही रात्रि के दो मुहूर्त गुजरने पर महाराजाधिराज श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के राजद्वार में स्थित होते भये हैं तब प्रभुन के दर्शनार्थ आये विनकूं बड़े आदर सूं प्रेम सूं तिस महा महोच्छव में तिस तिस शुभ आसन में विनकूं बैठावते भये हैं ॥२८॥ तब तहाँ श्री गोकुलेश महाप्रभुन के सेवकनने हजारन थारी अनेक फूलन सूं भरके आगे धरी हैं तामें कितनी एक तो द्राक्षा फल और अखरोट और प्रियाल जैसे इलायची पिस्ता खुवानी आदि सूं भरी हैं और खर्जूर नारिकेल मातुलंग मखाना सो कितनीएक भरी हैं और सिहाड़े और करहाट तैसे वाताक

और खांड में पगे कमल बीज और तैसे बड़े उत्तम खस के बीज और खांड में पगे पेठा के बीज और ईष के खंड हैं और नारंग फल है और हू अनेक प्रकार के बीज हैं श्वेत खांड में पगे हैं नाल केर है और चक्र है तैसे पुंगफल है और बीड़ा है । इन सबन सूं कितनीएक थारी भरी हैं तैसे और हू खांड के रचना किये वृक्ष हैं नाना प्रकार के घोड़ा हैं हाथी हैं मेघ हैं मोर हैं ऊँट हैं व्याघ्र हैं हरिण हैं शुक हैं पारावत हैं बक और हंस सारस चसके हैं सो इनसूं बहुतेक थारी भरी हैं और कितने एक तो जल के भाजन और तैसे भोजन के पात्र हैं तैसे क्षरन भये हैं और शकट है विनसूं भरी थारी है तैसे तांबूल है वस्त्र है आभरण है पुष्प माला है अनेक प्रकार के और हू मंगल द्रव्य सूं भरी भयी अनेक थारी हैं और हजारन स्वर्णमय रूप कांस्यमय जाके दंड हैं और पवनादि सूं जे निवारण होयवे वारे नहीं हैं और सुगंधी तैल जिनमें है और कर्पूर और महावर्ती सूं जो रचना किये हैं ऐसे जे करोड़न ही दीपदंड हैं सो अनापित धारण कर रहे हैं ॥३३॥ याके अनन्तर उच्छलित होय रहे प्रेमसिन्धु संबंधी तरंगन के अर्बुदन के हैं समूह जिनमें ऐसे जे भक्तजन के समूह हैं जे प्रफुल्लित जे इन्द्रीवर हैं विनके दल तुल्य हैं सुन्दर नयन जामें ऐसे जो वा श्रीजी कूं विलक्षण शोभावारो मुख कमल है वाकूं चिरकाल सूं अपने नयनों के भाग्यन की कोटि सूं निरन्तर ही दरसन करवे की इच्छावारे हैं और जो अपनी माधुर्यतासूं परा हू जे सुधा के सिन्धु हैं विनकूं विना यत्न के कालकूंट जैसे भाव कूं प्राप्त करे है ऐसो जो वा श्रीजी को वचनामृत है जो कोकिला वीणा वेणुन के समूहन के शब्दन कूं गणना हू नहीं करे है ऐसे वा वचनामृत कूं जे भक्त अपने कानों के पुण्यन के समूहन सूं श्रवण करवे की इच्छावारे हैं और कल्पवृक्षन के नूतन पत्र जैसे कोमल लाल प्रकाशमान तल जाके और सदैव ही जो सर्व भक्तन कूं सगरे अर्थ कूं देवे वारो है और सगरे भक्तन के सगरे अनिष्ट कूं दूर करिवे वारो है और जो पद पद में आनन्द रस के समूहन कूं चारों ओर सूं वर्षा करे है और जो करोड़न लक्ष्मीन सूं सेवित है ऐसे वा श्रीजी के चरणकमल कूं सदैव ही जो भक्तजन सुन्दर पुण्यन के समूहन सूं मस्तकन सूं नमस्कार करवे की इच्छावारो है और अत्यन्त जे दीनों के समूह हैं विनमें हू श्रेष्ठ कहिये महादीन जे मुझ सरीखे हैं विनके अर्थ तब तब तहां तहां जो उच्छल्लित होय रही है और जो पापन के समूहन कूं दूर करिकें

और अधिक गुणन कूं धारण करके और जो कलि के जे जीव हैं जे अयोग्य हैं विनकूं योग्य करिके जे अधम हैं विनकूं निरंतर उद्धार करि रही है ऐसी जो अपनी कृपा है वा कृपा शक्ति ने द्राक्षारस के समुद्रन में और दुग्ध समुद्रन के शतन में और मधु के हजारन समुद्रन में और अमृत के कोटिन समुद्रन में और परार्द्ध चन्द्र लोकन में और कर्पूर के पर्वतन में और चिन्तामणि के समूहन के पद्मन में और कल्प वृक्षन के शत कोटिन में और परार्द्ध शिव ब्रह्म लोकन में तो तैसे वैकुण्ठ के अर्बुदन समुद्रन में और अवतारन के जे सहस्त्र पद्म खर्व के करोड़न हैं विनमें हू निरन्तर तृण के टुकड़ा जैसे जिनकी बुद्धि कहा के जे पूर्वोक्त कहे जे द्राक्षारस समुद्रादि अवतारन के खर्वन को कोटि पर्यन्त हैं विनकूं तुच्छ जैसे गिने है कदाचित हू भी जिनको मन लग्यो है जिनके मन और नयन केवल श्रीजी के ही रूप में आशक्त हैं ऐसी जो मृगनयनी हैं विनके केवल अपने सूं ही निवारण योग्य जो महाताप हैं विन तापन सूं करोड़न काम के हू जीतवे वारे सुन्दर रूप कूं जो धारण करि रह्यो है ऐसो जे श्रीमद् गोकुल के सगरे कार्य करवे वारो रसिक राय प्रभु श्री वल्लभजी हैं सो विस्तृत वा सभा में तब वा कृपाशक्ति ने ही प्रकट कियो है ।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले अष्टम् स्तरंग समाप्तम् ॥८॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग नवमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ नवम् तरंग लिख्यते ॥

याको अर्थ -- तब वे तहां वैष्णव और सेवक भक्तबंधु और ज्ञातिवारे ब्राह्मण और राजा तैसे राज किये और धनी भिक्षुक महानुभाव और धर्मज्ञ पंडित कवि हू जे आये हते वे सगरे ही श्रीजी के दरशन करिकें ही ठाड़े होते भये हैं उच्छल्लित होय रही है भक्ति जिनमें ऐसे वे सगरे दंडवत जैसे प्रणाम कूं हू करत भये हैं सो जोड़े हैं दोनों हाथ जिनने और नम्र भये थके निमेष रहित

दृष्टिवारे होयके प्रभुन कूं देखत और सहित रोमांच के हर्ष के जल कूं वर्षा करत ही यथा मति अपने अपने भावानुसार यथाशक्ति जैसे जैसे प्रभुन की कृपा है वाके अनुसार वा श्रीजी की स्तुति करवे कूं प्रारम्भ करते भये हैं परन्तु विनको जो गद्‌गद् कंठ भाव है सो स्तुति करवे में रोकतो भयो है ।।६।। तब श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी हू प्रिय पुत्र श्री गोकुलपति कूं तहां पधार्यो देखके हर्ष सूं वेग ही ठाड़े होयकें प्रेम सूं गाढ़ आलिंगन करके सुन्दर आसन में बैठावते भये हैं ।।९।। जे तहां चन्द्रमुखी स्त्री हतीं सो तो श्रीमद् गोकुल के मंडन श्री गोकुलेशजी को दरसन करके जय जय ऐसे मन में ही कहती भई हैं न के मुख सूं कहती भई हैं जासूं गदगद कंठ होय रह्यो है किशोर स्वरूप श्रीमद् गोकुल के सर्वस्व श्री रुकमणीनंदन रसनिधि पुरुषोत्तम प्रभुन को दरशन कर रही जे स्त्रीजन हैं विनको जो हर्ष को समुद्र जैसो जितनो और जा प्रकार सूं और जिन भावन सूं बढ़्यो है सो वाकूं हू सम्पूर्णता सूं वे स्त्रीजन नहीं जानती भयी हैं और सो श्रीजी हू नहीं जानत भये हैं ।। और तहाँ सूत और मागध बंदीजन तैसे चारण हू वे सगरे वा श्रीजी महाराज कूं स्तुति करत भये हैं और जय जय ऐसे कहते भये हैं तब वा समय में बड़े चतुरजन बीणा और वेणु तैसी सारंगी पिनाक गौमुख और मुरज और भेरी और दुंदुंभी तैसे शंख और मृदंग पणव आनक पटह मर्दल ठक्का और छोटे दुंदुभी और अक्य और आलिंग और उर्द्दक जे वाजा है और कास्या के ताल घूंघरिका और हू हुडक डमरू मुडंगु डिमडिम और झर्झर यह सगरे वाद्य विशेषन कूं बजावत भये हैं याके अनन्तर तहां पधारे भये सगरेन सूं श्री गोस्वामीजी के कहिवे सूं जो भाणेज भट्ट हते सो गंधाक्षतादिकन सूं और तांबूल वस्त्र पुष्प मालादिकन सूं यथायोग्य आदर सूं ही पूजन करते भये हैं सो पूजित भये जिन बहुत पुरुष और स्त्रीजन के सहित श्री गोस्वामीजी ज्ञातिबांधव और श्री महाप्रभुजी श्रीजी के जे भक्त है विनके हाथन में पूर्वोक्त थारीन कूं ग्रहण करायके कहाके उठवाये के बड़े प्रसन्न भये थके तेसी रीति के अनुसार गान वाद्यन के शब्दन सहित वेणांभट्टजी के घरकूं प्राप्त होते भये है सो कैसो है घर के द्वार तोरण सूं शोभायमान है और तहां तहां उज्ज्वल वर्णवारी सुधा सूं धवल रूप ही कियो है और चतुर वंधुजनन की स्त्री गणोंने जहां अनेक चित्र रचना करी है और अमूल्य अनेक प्रकार के आभ्रणन सूं शोभायमान है आंगण जाको और चारों तरफ वाद्य शब्द

और मंगलगान सूं शोभित है ऐसे वा घर में प्राप्त भये है तब श्री गोस्वामीजी के आगे ही वेणाभट और वाके सगरे संबंधी हूं उठिके ठाड़े होते भये हैं और प्रणाम हुं करत भये है तब बडो विनसूं अत्यंत बड़े सत्कर कूं विनयसूं और आदर सूं प्राप्त भये थके सो श्री गोस्वामीजी परम अमूल्य उँचे आसन के ऊपर विराजमान होते भये है तब वेणाभटजी हूं जामात जे श्री महाप्रभु श्रीजी है विनमें अत्यंत प्रेम सूं आपके भक्तन कूं और वंधुन कूं यथोचित ही हर्ष सहित भये थके आदर सूं सुंदर आसनों में स्वयं ही बेठावतो भयो है तब वा वेणाभटजी के घर के चंदुवान सूं शोभित सुंदर विस्तारवारे आंगण में प्रभुन ने पठाइ भयी वे सगरी थारी आपके सेवकन ने यथोचित धरी भई ही बड़ी शोभायमान होती भई है तहां वेणाभटजी के बंधुजन हते सो हूं सहित विस्मय के और सहित प्रेम सूं वारंबार विनकूं देख रहे है तब दोनों पक्ष में बाजे हू बाज रहे हैं अनेक स्त्रीजन हूं गान कर रही है और ब्राह्मण हू तिन तिन मंत्रन कूं पढ़ि रहे है और जे दास है सो श्री महाप्रभुनके तिन तिन गुणनकूं कीर्तन कर रहे है और मागद सूत वंदीजन चारण हूँ आपके चरित्रन कूं स्तुति कर रहे हैं सो या महोत्सव में सगरो विश्व ही मंगल शब्दन सूं पूर्ण ही होय जातो भयो है अब श्री गोस्वामीजी के इच्छाकूं देखके दासनने भारी जो कोलाहल होय रह्यो हतो सो निवारण कियो है ॥२८॥ तब वेणाभटजी को कोई एक बुद्धिमान संबधी ठाडो होयके श्री गोस्वामीजी के अभिप्राय कूं जानत हू ज्ञाति की रीति कूं अनुसरण करिके हंसत हंसत ही सहित नर्म के प्रसन्नतासूं विनकूं विज्ञापना करत भयो है हे प्रभो आपु रात्रि के समय में वाद्य के शब्द सहित और गानके सहित और बंधुज्ञात अपने दास सहित नरनारी और ब्राह्मण तैसे भारी वेद के शब्द सहित आप काहे कूं पधारे वे यह आपके हृदय के वृतांत कूं हम नहि जाने है तासु याकु जानवेकी इच्छावारे हम हैं हमकूं जताइये ॥३३॥ तबही कोई एक बुद्धिमान वर पक्षवारो सुहृत ठाडो होयके हसत ही कन्यापक्ष वारेन कूं कहेत भयो है के हमने सुन्यो है के आपके घर में कन्यारत्न है सो वाकूं श्री गोकुलेशजी के अर्थ प्रार्थना करिवे कूं इहां आये है ॥३५॥ तब सो कन्या पक्षवारो कहिवे लग्यो के कन्या और वर दोनों के विवाह में उपयोगी ग्रहमेत्री आदी श्रेष्ठ है सो ज्योतिषीन सूं पूछो है के नहि तब सो वरपक्ष वारो कहे है के सो ज्योतिषिन सूं पुछो है, सो कहे है सो ग्रह मैत्री आदि सगरो ही दोनों कूं श्रेष्ठ है ऐसे

सुनिके जे कन्या पक्ष वारे हते सो सगरे ही साधु-साधु ऐसे कहते भये है सो फेर ही वाजे सब बाजते भये हैं सो प्रसन्न होयके मृगनयनी जे स्त्रीगण हते सो सोहू प्रसन्न होयके अनेक प्रकार के मंगल गान कूं करत भई है तब भक्तन कूं......... पृथ्वीतल में महापरमानंद व्याप्त होय जातो भयो है ।।४०।।

इति श्री गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां श्री गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले नवम् तरंग समाप्तम् ।।९।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग दसम ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ दसम तरंग लिख्यते ।।१०।।

श्लोक -- **''अथ श्री विट्ठलहरी वेणाभटश्च पीढयो उपविश्यमुदा युकतो चक्रतु स्तिलकंमिथः''** ।।१।।

याको अर्थ -- याके पीछे श्री विट्ठलहरि श्री गोस्वामीजी और वेणाभट दोनों सन्मुख ही पीढान के ऊपर विराजमान होयके आपस में हर्षसूं मिले भये ही तिलक कूं करत भये हैं ।१। तब सबन के तब देखत सहित आनंद के रोमांच के वेणाभटजी श्री गोस्वामीजी के श्री हस्त में नवपुंगी फलोंकूं देकर कहेत भयो है के तिहारे पुत्र श्री गोकुलेश्वरजी के अर्थ हूं कन्याको दान करूँ हूं तब श्री विट्ठलनाथ गोस्वामीजी हू हमने तिहारी कन्या अपने पुत्र श्री गोकुलेशजी के अर्थ ग्रहण करी सो निश्चयभयो ऐसे कहैत ही बड़े हर्षवारे श्री गोस्वामीजी एकादेस पुंगीफल वा भटजीके हाथमें देते भये है ।। तब सो दोनों ही श्री विट्ठलनाथजी गोस्वामीजी और वेणाभटजी हूं अपने-अपने वस्त्रनके अंचल में मंगल रूप विन नव पुंगीफल और ग्यारह पुंगीफलनकूं बाँधते भये है वा समय में तब पिता वेणाभटजी ने पूर्ण परमेश्वर श्री गोकुलेशजी के विवाहार्थ तुमकूं इच्छा करी है या प्रकार कहेत ही मानो वा कन्या कूं महा प्रसन्नता प्राप्त होती भई है ।।६।। तब आपस में प्रीति वारे दोनो श्री गोस्वामीजी और वेणाभटजी ने बड़े हर्षसूं ब्राह्मणन के प्रति देयवे कूं भूयसी दक्षिणां को संकल्प कियो ।।७।।

तब नवीन सगरे वस्त्रनसूं और आभरणनसूं और अनेक विधि सूं सुंदर पुष्पन सूं शोभित करिके कन्यारत्नकूं तहां पधरावते भये है तब सो कन्या, कन्या के पक्षवारे पुरुषन ने हर्षसूं श्री विट्ठलनाथजी गोस्वामीजी की गोद में बिराजमान करी है । सो हजारन लक्ष्मीके सौन्दर्यन कूं तिरस्कार करिवे वारी है नख की शोभा जाकी और श्री गोकुलेशजी के नयनों के असिंचनक रूपता कूं प्राप्त होय रही है । के जाके दरशन में तृप्ती कूं अंत न होय सो आसेचनक होय है सो वा भावकूं प्राप्त होय रही है, और महाभाग्यवती है ऐसी वा कन्याकूं श्री गोस्वामीजी देखके बडी सराहना करत भये हैं तब प्रफुल्लित होय रही है मुख कमल की शोभा जाकी ऐसे सो श्री गोस्वामीजी वा कन्या के श्री हस्तकमल में प्रेम सूं बारा टका तुल्य सुवर्ण मुद्रान कूं धारण करावत भये है तब सो कन्या के पक्षवारेन ने श्री पद्मावती जी के गोद में पधराये तैसे और हूं तैसे बहुत और स्त्रीन के गोद में पधरायी है सो सगरे ही यथायोग्य अमूल्य विविधी वस्त्रन कूं प्रसन्नता सूं देते भये है अब श्री गोस्वामीजी की आज्ञासूं भाणेज आदिकन के गंधाक्षतादिकन सूं जैसे जैसे ज्ञातिवारेन ने सुचना करी है तैसे तेसे पुजन कियो है ताके पीछे तहां आये भये सगरे ब्राह्मणनके अर्थ जो दक्षिणा संकल्प करी हती सो वा दक्षिणां कूं अपने सगे संबंधीन सूं हर्ष सूं सहित तांबुल के और विनय के बड़े उत्साहवारे महाशय श्री गोस्वामीजी और भटजी सो दोनों ही दिवावत भये है ताके अनंतर श्री गोकुलेशजी के दरशनमें वढ़ि रही है चाहना जाकूं ऐसे सो श्री विट्ठलनाथ गोस्वामीजी श्री वेणाभटजी सूं पीछे चले भये पहोंचाये भये ही, वा भटजी कूं तहां विसर्जन करिके पीछे पठायके सहित गान वाद्य के प्रस्थान करत भये है तब ज्ञातिबंधुजन स्त्रीजन और ब्राह्मणन सूं तैसे दास सेवक भक्त वैष्णवन सूं मिले भये बड़े भाग्यवारेन में श्रेष्ठ सो श्री गोस्वामीजी गृहकूं प्रवेश करते भये है तहां अद्भुत आसन के ऊपर किशोर स्वरूप हर्षसूं प्रफुल्लित मुखवारे और सखानके संग विविधि विहार कथाकूं करत जे प्रीयपुत्र श्री गोकुलेशजी है जे अपने स्वरूप सूं शोभित होय रहे है सर्व भूषणन सं भूषित है और जो सौन्दर्यामृत सर्वस्व के सार के ही सार रूप महासागरन के समूहन कूं भक्तन के नयनों में व्याप्त करिके भीतरके ताप कूं दूर कर रहे हैं और जो श्रीजी मंद हास्यसूं और दंतन की कांती के तैसे उल्लाससूं और दशो ही दिशा कूं व्याप्त होय रही श्री अंग की किरणन सूं और मानो श्रीअंग के स्पर्श

सूं प्रगट भये अमृत के समुद्रनकूं हूं वर्षा कर रही है ऐसे सगरे भूषणन के समूहन संबंधी रत्नन की कांतीके समूहन सूं भक्तीवारे स्त्रीगणनके सगरे मनोरथन कूं पूर्णकर रहे है ऐसे श्री गोकुलेश जी को श्रीगोस्वामीजी दरशन करत भये है और वा समय में वा श्री गोकुलेशजी को दरशन कर रह्यो जो भक्तनको समूह हैं विनके नयनों में और तैसे तिन तिन अंगों में हृदय में और रोमावली में जो परमानंदको समूह भयो है और वा श्री गोस्वामीजी कूं हूं जो परमानंदको समूह भयो है और जो मेरे वचनो के गोचर नहीं है सो वाकूं मों सदृश केसे कह शके ॥२६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां श्री गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले दसम तरंग समाप्तम् ॥१०॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ग्यारहमा ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ एकादश तरंग लिख्यते ॥११॥

श्लोक -- **अथ परदिने कृत्यं वदांम्युदयिकेमतं ॥ तदं कुशर्प्यणम्पि श्रीमद् गोकुल कामद ॥१॥**

याको अर्थ -- वाके अनंतर दूसरे दिनमें श्रीमद गोकुलके सकल कामना के पुरणकरिवेवारे श्रीजी के आगे करिके निश्चय कियो जो अभ्युदषिक नाम कृत्य और अंकुशर्ष्यण नाम कृत्य है वाकूं जब श्री गोस्वामीजी करत भये हैं तामें हूं सगरे और बांधव तैसे सुहृद और वैष्णव तैसे प्रभुनके जे भक्त हैं और जे श्री आप में भक्तीवारी स्त्रीजन हती सो वे सगरे ही ताहां आवते भये है और हू जे कवि सूत मागध विप्र और पंडीत है वंदीजन चारणादिक है वृद्ध है बालादिक हू हजारन ही प्रेमरूप समुद्रन के कल्लोलन के शत सहस्त्रन सूं प्रेरणा करे भये ही उदय होय रहे है हजारन मनोरथ जिनमें और प्रफुल्लित होय रहे है मुख जिनके ऐसे वे सगरे मंदहास्य वारो है श्री मुख जिनको और

रसके सागरन कूं जो रचना करि रह्यो है और जो श्री गोकुल रूप पद्म कूं जो भौंरा रूप है परम पुरुषोत्तम है सौंदर्य की निधी है ईश्वर है ऐसे श्री गोकुलपति रूप किशोरवर कूं देखवे अर्थ तहां आवते भये है और बड़े भाग्यवारेन में श्रेष्ठ वेणाभटजी हूं स्वजन ज्ञातिबांधव और विनकी स्त्रीगणन सूं और बड़े पुरुष तैसे साधारण पुरुष विनसूं मिल्यो भयो ही अपने जनन सूं नाना विधि पात्रन में अनेक सामिग्रीन कूं ग्रहण करायके साक्षात आनंद के निधी ईश्वररूप अपने जामाता श्री गोकुलेशजी को दर्शन करिवे अर्थ आवते भये है तामें पात्रन में जे सामिग्री है विनकूं कछु कहे है के मिसरी और धृत सूं सिद्ध भये और इलायची, लोंग, कपूर, मिरच और हूं सुंगंधित द्रव्यन सूं जे संस्कारवारे हैं और परम स्वाद वारे और कमल है ऐसे हजारन सो माठ है और पृथु मोदकन की अनंत सुखपूरी है और असंक्षात सो प्रिया कहे तैसे करोडन लाखन तो मेंदा के लड्डुवा है तैसे आछे उज्वल सेवके लड्डुवा है और सेंकडन तो चक्राकार है और हजारन फेंणी है अनेक ईंदरसा है और टपक रह्यौ है रस जिनसूं ऐसी आधी पकी भई करोडान जलेवी है और मूंग के चना के तंदुलो के लाखन और गेंहूं के और माखन के तैसे दुध के घृत मिसरी आदि सूं सिद्ध भये विविध प्रकार के लड्डुवा आदि सामग्री है और रूचि कूं प्रगट करिवेवारी करोडन तो तिलवडी है और तैसे करोडन मूंग की वडी है और माखनकी बडी और हूं अनेक प्रकार की हैं नोन जीरा हिंग क्षार मिरची सूं शोभायमान अरोचक के जीतिवे वारेन में बडे भटरूप अनेक पापड है और छूटे मूंग की दाल है और चावल है और असंक्षात गुड के पिंड है और मिसरी के हूं पिंड है और हू अनेक प्रकार के घृतादिकन सूं आछो पकायो भयो भक्ष है संख्या और परमाण जो रीतिको है वासूं हू बहुत अधिक है तैसे और हूं धृत है और तेल है हरिद्रा है और हींग है और अनेक रुचे शाक हैं और लवण मिरच है जीरा है सोंठ है ईखके खंड है और बीडा है और हू अनेक उत्तम वस्तु है सो इन सगरी वस्तुकूं आगे करिके गीतवाजे के शब्द के सहित ही भटजी तहां आवते भये है विशाल और अत्यंत बडो और सुधासुं आछी रीत सूं श्वेत झबक ही होय रह्यो और अनेक प्रकार के जामें चित्र लिखे है और देखवे वारेन के मनकूं हरिवे वारो है ऐसे श्री गोस्वामीजी के घर है वाको जो आंगण है जामें भली प्रकार करोडन रत्न खंचित कंबल विस्तृत होय रही हैं ऊपर हू नाना वर्ण के चंदरवा बांधे है ऐसे वा आंगण

में प्रवेश करत ही वामें सुंदर वेदिका है तामें मंगलमय तृणन सूं रचना कियो मंडप है तामें सुंदर जो वस्त्र विछायो है ऐसे सुंदर पीढा पर बिराजमान जो सर्व मंगल को मंगल रूप है और करुणारस के तो सागर है और किशोर स्वरूप है अत्यंत सुंदर करोडन चंद्र तुल्य जाको श्रीमुख है और देखवे वारेन के पाप और तापन के समुद्रन कूं अमृत सूं हू शीतल द्रष्टि सूं हरके विन सगरे भक्तनके मंद हास्य सूं हर्ष के समुद्र में क्रीडा कराय रहे है ऐसे श्रीजी को दरशन करत भये हैं तब सो वेणाभटजी आपनी उत्तम वस्तु सहित आदर के प्रेमसूं तैसे वात्सल्य सूं करुणा के समुद्रन के हूं जे सिंधु रूप है और सर्व प्रकार सूं जे पूर्णकाम है और जे केवल भाव कूं ही ग्रहण करिवेवारे है ऐसे जे श्री गोकुल के प्राणनाथ श्रीजी है वाके अर्थ लायो है सो वस्तु तो आप श्रीजी के अर्थ आयवे सूं हू बहुत और अमूल्य होय गयो है और अत्यंत परम उत्तमता कूं और विपुलता कूं प्राप्त होय रह्यो है सो याकूं न जानत भटजी अत्यंत संकोच कूं प्राप्त होवत ही लज्जा सूं आपकुं साक्षात् विज्ञापना करिवे में असमर्थ होयके श्री गोस्वामीजी के आगे अपने परम आप्त सूं सुहृद द्वारा विज्ञापना करत भयो है के हे प्रभो यह अत्यंत थोरो ही जो कछु उपायन रूप सूं आपके आगे मैंने निवेदन कियो है सो यह तो प्रभुन के छोटे से हूं दास के योग्य नहीं है तासूं आप केवल अपनी कृपासूं ही अंगीकार करे तामे मेरी ऐसी धृष्टताकूं क्षमा करे सो या प्रकार अत्यंत नम्र याकी विज्ञप्ती कूं सो परमेश्वर श्री गोस्वामीजी श्री विट्ठलनाथजी तैसे हसत श्रीमुख कमलसूं मान देते भये है और हसत हसत हू कहवे लगे के भटजी यह इतनी वस्तु जो तुमने आयके आगे धरी है सो तो हमारे विशाल बडे सगरे घरन में हू नहिं समावे है जो वस्तु घर में नहि समावे है तैसे वस्तुत आंगण में हू नहिं समावे है सो तुम इतनी वस्तु बहुत प्रेम सूं अर्पण करी है याको हमकूं बडो आश्चर्य है ऐसे पुरातन बडे पुरुष सगरे गुणन सूं और उदार चरित्रन सूं मिले भये पृथ्वी में चिर पर्यंत विराजे, भटजी तुम तो अपने असाधारण कृत्यन सूं हम सूं और विनकूं हूं अधिक होय के वर्त रहे हो सो यह तुमने अत्यंत अधिक प्रेम सूं अर्पण कियो है याकूं तिहारे प्रेम सूं हू हम अंगीकार करे है ऐसे श्री गोकुलेश महाप्रभुजी के पिता श्री गोस्वामीजी कहे कर तब जो भटजी के संगमें आये हते विनकूं तिलक तांबूल सुन्दर वाणी सूं सर्व को हू यथोचित सत्कार करत भये हैं याके पीछे प्रसन्न भये सगरे ज्ञातिबंधु ब्राह्मण

सुवैदिक विन विन मंत्रन कूं पठायके विनने दिये भये अक्षतन कूं सहित आदर के अपने उपरना के आंचल सूं ले करिके स्वयं हू श्री गोस्वामीजी अपने प्रिय पुत्र के शुभ आशीष कूं वांछा करत मेरे प्राणनाथ विभु के श्रीमस्तक में विन अक्षतन कूं प्रेम सूं हूं धारण करत भये है द्वार पर्यंत सगरे विन संबंधीनके पीछे पधारके परम चतुर मर्यादा के सागर स्वयं श्री गोस्वामीजी सहित विनयके विनकूं अपने घरमें विदा करत भये है ॥४३॥

इति श्रामद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां श्री गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले ग्यारहवा तरंग समाप्तम् ॥११॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग वारहमा ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ द्वादशामा तरंग लिख्यते ॥१२॥

श्लोक --

याको अर्थ -- वा दिन में जे अपने बांधव और ज्ञातिवारे हते वे सगरे और ब्राह्मण भक्त वैष्णव सेवक और स्त्रीगण बाल बूढे यौवन वारे और परिचित तैसे अपरिचित हू बुलायेभये करोडन विना बुलाये हू असंक्षात और राजा तैसे राजाके पुत्र और विनकी लाखन स्त्री और करोडन राजाओं के जन और भिक्षुक तैसे धन्य लोग हू अनंत श्री महाप्रभुन के घरमें प्रेमसूं तैसे प्रसादान्न कूं भोजन करिवे कूं आवते भये है सो वे सगरे ही स्नान करके सुंदर धोये कोरे वस्त्रन कूं पहेर के जलके पात्र लोटा लोटी हाथ में लेके चरणन कूं धोयके आचमन करिके यथायोग्य न्यारी-न्यारी पंकती की पंक्ती बैठ जाते भये है तब प्रथम ही प्रभुन के विन विन स्वजनों ने घृत की बूंदन सूं सुंदर चिकनी करी राखी जे पातल दोना है सो विनके आगे धरत भये है तब श्री गोकुलपती में प्रेमसूं सगरे अमूल्य वस्त्र आभरण जिनने पहेरे हैं ऐसे जे स्त्रीजन हते सो परोसवे कूं आवते भये है सो अनेक प्रकार के विचित्र व्यंजन है शाक है और सुंदर पगे है और घृत नोनसूं सिद्ध भये है ऐसे सहित हींग के वघार की मूंग है पापड है तेल

में भुंजे भुजेना वड़ावड़ी है जामें गाय को घी बहुत भर्यो है ऐसो अत्यंत श्वेत भात है और हु हजारन करोडन प्रकार सूं घी खांड में सिद्ध भये निष्तुष गेंहू के चूर्ण के प्रकार है और हू चणा है माखनके पदार्थ है दूध दहि सूं सिद्ध भई अनेक सामिग्री है और हू चामरन सूं भई अनेक सामिग्री है जलेबी है सुंदर पूरी है सुखपूरी है कर्पुरनाड़ी है और नाड़ी है विविध प्रकार के मोदक हैं माठ हैं मठरी हैं प्रियाक है और मालपुवा हैं और फेनी सब प्रकार की है तैसे इंदरसा है शकुली हैं थपरी पूरी है बूंदी के लड्डुवा हैं सुंदर ओट्यो सुगंधित आछो गाय को दूध है और सुगंधीत दही है कांजी में सिद्ध भये वड़ा है मठा है खनमंडा है तवा पूरी है श्रीखंड है खंडीका है सो विन सगरेन के आगे वे सगरी स्त्रीगण ही यथोचित परोसत भई हैं और ब्रह्मादिकन कूं हूं दुर्लभ जो शीतल निर्मल श्री यमुनाजी को जल है सो घृत है सो प्रभून के भक्तन ने अनेक प्रकार के जल के भाजनों में भर्यो है और हू सगरे अवतारन के जे अवतारी विन सूं हू श्रेष्ठ अत्यंत परमेश्वर हैं जे हमारे प्रभु श्री गोकुलाधीश्वर है सो आयके रसोई घर में जो जो भक्ष्य भोज्य चूस्य लेहय सिद्ध भयो है सो वाकु वर्षनके अच्युतन के अच्युतन सूं गणना करिवे को कोन बुद्धिमान समर्थ होय शके अपितु नहि होय शके है मेंने तो रसिक बुद्धीमानो के हर्ष के लिये वा सामग्री कूं थोरो सो अंशमात्र ही दिखायो है अब ताके पीछे जब सगरे बैठे है तब भाणेजन द्वारा विन सगरेन के मस्तको में कुंमकुंम सूं प्रभु तिलक करावते भये है जब श्री महाप्रभुजी ने भोज्यमस्तु ऐसे भोजन करिवे की आज्ञा दीनी है तब आपके वचनामृत सगरेन के कर्णन कूं स्पर्श करत भये हैं सो महाप्रभुन के प्रसाद को जो अन्न है सो करोडन सुधा सूं हूं अधिक मीठो है प्रिय है सो तृप्ति पर्यन्त ही भोजन कूं करिके सगरे प्रसन्न होयके उठते भये हैं वा भोजन समय में विनके आगे जैसे परोस्यो हतो सो भोजन कूं करिके विनके उठने पर हू वैसी की वैसी ही वस्तु परी है सो लोगन ने देख-देखके कह्यो के इनोने तो यासू कछु हू नहि खायो है तब धोये है मुख हाथ चरण जिनोने ऐसे विनके प्रति महाप्रभुजी भाणेजन द्वारा परमदिव्य तांबुल कूं दिवावत भये हैं तब श्री गोस्वामीजी में प्रसन्न होय के जै वैदिक विप्र हते सो मंत्रन कूं पढ़-पढ़ कर स्वेत शुभ अक्षतनकूं देते भये है तब श्री गोस्वामीजी हू विन अक्षतन कूं वा श्री गोकुलपती के श्री मस्तक में धारण करत भये है तब आये भये विनकूं द्वार पर्यंत पीछे जायके

प्रेम सूं नमन करत परम विनय कूं दिखावत विनकूं विदा करत भये है याके अनंतर वेणाभटजी के घर में श्री गोस्वामीजी की आज्ञा सूं गाम सूं बडो ज्योतिषी बुद्धिमान जायके एकांत स्थल में श्रेष्ठ लग्न समय के परीक्षार्थ जलसुं पूर्ण पात्र में मंगलमय कुंमकुंम सूं पूजित तांबा की शुभ घंटिका कूं स्थापन करिके तहां स्थित होतो भयो है और श्रीमद् गोकुलके सर्वस्व जे श्रीजी है सो आपुके घर में तो अनेक मंगल कृत्यन कूं करिवे अर्थ स्त्रीजन प्रारंभ करत भई है सो अपने-अपने यूथ सूं मिली भई चंद्र जैसे मुखवारी कमलनयनी वे स्त्रीजन बडे हर्षसूं मंगलमय अनेक गीतन कूं गान करत भई हैं तहां प्रसाद और हजारन वस्त्रन के लाभ सूं अत्यन्त प्रसन्न भये और उदय होय रहे जे उत्साह के हजारन कल्लोल हे विनसूं वेगवारे भये और परम प्रेम सूं प्रफुल्लित मुखकमल वारे जे ऐसे वाद्यक हते सो विन सूं प्रथम कहै हजारन वाजे बाजते भये हैं तहां मातुल जो गोविंदभट्ट है वासूं प्रभुन के इच्छित कूं जानके दास और सेवक भक्तजन ही विन विन कार्यन कूं करत भये है और नयनन सूं हर्ष के आंसून कूं वर्षा करत अत्यंत भक्तीवारो चाचा हरिवंशजी हू स्वयं हूं तिस तिस कार्य में मग्न होतो भयो है और पद-पद में उछलित होय रह्यो है प्रेम को सागर जामें ऐसे वा चाचाजी के वचनसूं करोडन भक्त प्रभुन की तिस तिस सेवाकूं करत भये है सो सगरे भक्त हैं सो प्रफुल्लित जिनको मुख है और सगरे आभरण सूं भूषित है और पाग श्रेष्ठ कमरवस्त्र कंचुकादि वस्त्रन सूं बड़ी शोभावारे है चारों और सूं आये भये जन हूं, जिनके गुणनकूं निरंतर वर्णन कर रहे है ऐसे वे प्रभुन के भक्त तो सार्व भोमन के शतन सूं हू अधिक शोभायमान होय रहे हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले द्वादश स्तरंग समाप्तम् ॥१२॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग तेरेहमो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रयोदशामो तरंग लिख्यते ।।१३।।

श्लोक -- **''लोल भौतिक हाराणां कुर्वती नांगतागतः वमौ नुपुर झंकारो मेखला कृष्णमंडिला''** ।।१।।

याको अर्थ -- तहां चंचल जे मुक्ताहार है विनके गतागत कूं जे कर रही है ऐसे जे प्रभुन के भक्त स्त्रीजन हैं जिनके मेखला के शब्द सूं पुष्ट भयो नूपुरन को जो झंकार हतो सो शोभायमान होय रह्यो है ।।१।। और जे तहां स्त्रीजन हैं सो हू कैसी हैं के कुमकुम सूं उज्ज्वल होय रहे हैं सगरे अंग जिनके और फुलेल सूं शोभायमान होय रहे हैं केश जिनके और जे दिव्य वस्त्र पुष्प माला कूं धारण कर रही हैं और जे रत्न के आभरणन सूं भूषित हैं और तांबूल के राग सूं पुष्ट होय रहे स्वाभाविक अधर की लालिमा जिनकी और सुवर्ण के कलश की शोभा कूं हरवे वारे पुष्ट कुचन सूं जे शोभायमान होय रही हैं और सुवर्ण के पर्वत की शिला जैसे शोभायमान हैं नितंब के फलन की शोभा जिनकी और करोड़न पूर्ण चन्द्रमा के सौन्दर्य कूं जीतवे वारे हैं मुखकमल जिनके और स्वाभाविक मंद हास्य के मिस सूं गिर रहे हैं मुक्तान के समूह अधरन सूं जिनके और आलाप की माधुर्य सूं पराभव कूं प्राप्त होय गई हैं कोकिला के समूह जिनसूं और जे स्त्रीगण सुन्दर कटाक्ष कूं देखिकें सो वा श्रीजी के हृदय में श्रृंगार सार को हैं विस्तार जामें ऐसे लीलानन्द रूप महा सागरन कूं रचना करि रही है और जे स्त्री जन मृणाल जैसे भुजान के तैसे आंदुलन सूं सौंदर्यामृत के समूह रूप सागर में मानो अत्यन्त तर रही है और जे अपनी नख की शोभा सूं लक्ष्मी के शतन कूं विजय करिके शोभायमान होय रही है और मंद हास्य सहित और सहित कटाक्ष के उच्छलित प्रेम विलास के और सहित आनंद प्रवाह के और निरन्तर सहित रस की धारा के और सहित लज्जा के और सहित आर्ती के जे स्त्री जन श्रीजी के श्रीमुख कमल कूं निमेख रहित ही दर्शन कर रही है ऐसी सो भक्त स्त्रीजन हैं सो श्री गोकुल के जे प्राणनाथ

हैं और पूर्ण परमेश्वर हैं और परम सुन्दरवर हैं और जे किशोर स्वरूप हैं और जे रस के सागर हैं और जे भक्तन के भीतर अंतःकरण में गुप्त जो सो सो मनोरथ है विनके कसवटी रूप हैं ऐसे वा श्रीजी के तिस तिस मंगल कृत्य में वे स्त्रीजन प्रवर्त होती भई हैं विनमें कितनी एक तो सहित मिस के श्रीजी सूं आलाप में तत्पर हैं और कितनी एक तो वा श्रीजी के श्रीमुख कमल कूं स्पर्श करके दर्शन करके वाके विहार संबंधी रस सिन्धुन में मग्न होय रही हैं और तहां तहां निरन्तर तिस तिस प्रकार सूं तैसे तैसे प्रभु के गुणन कूं वे स्त्री गान करि रही हैं विनमें गीत जे हैं सो या श्रीजी के तैसे गुणन कूं प्रसिद्ध करें हैं अथवा श्रीजी के गुण हू विनके गीतन कूं प्रसिद्ध करें हैं याके निर्णय करवे में पंडितन को गुण हू समर्थ नहिं होय सके है शोभायमान होय रही है किशोरताकी मनोहरता जाकी ऐसे सो परम सुन्दरवर श्रीजी जा प्रसन्नता कूं छिपावत भये हैं वा प्रसन्नता कूं या श्रीजी के श्रीमुख की जो प्रफुल्लितता हती सो प्रगट ही कहे देती भई है सो किशोर स्वरूपात्मिक जो परम मेघ हतो सो वा उत्सव रूप आकाश में अत्यन्त शोभा सहित विराजमान भयो थको पूर्णमा के चन्द्र जैसे मुख वारी जे भक्त स्त्रीगण हैं के विनके नेत्र रूप क्षेत्र वारी पृथ्वी कूं लक्ष करके हर्षाब्धि के हर्ष समूह रूप जलन कूं वर्षा करत भयो है जब श्री वल्लभजी विन स्त्रीजनन कूं सहित भाव के देखत भये हैं तासूं सो वे स्त्रीजन वा श्रीजी के रस सिन्धु रूप श्रीमुख कमल में मग्न भई थकी उन्मजन करवे कूं के निकसवे में समर्थ न होय सकती भई हैं तब विन स्त्री जनों के तिस तिस मनोरथन कूं और आशा कूं और तापन कूं और हर्ष कूं सन्मुख आये मन रूप दूत सूं विज्ञापना किये सो श्रीजी जानके सो अपने तिस तिस मनोरथादि कूं विन प्रि[illegible]न कूं जतायवे अर्थ प्रियमने रूप दूत कूं पठावते भये हैं सो या श्रीजी के मन रूप दूत कूं जो तहां सूं फेर आयके उत्तर कूं न कहेत भयो है सो यह योग्य है अथवा स्वयं ही या स्त्रीजन को मनवेग ही अब यहां आवेगो जासूं यह श्रीजी परम चतुरों के हू अर्पण है मुख्य है तासूं ही या श्रीजी में सो विनको मन आलंबन करत भयो है सो या प्रकार जय कियो है अप्सरान को मन जिनने ऐसी भक्त स्त्री गणन सूं मिले भये और सम्पूर्ण चन्द्र के करोड़न के सौन्दर्य कूं जय करिवे वारो है श्रीमुख जाको ऐसे सो श्रीजी शुद्ध मुक्ता गणन सूं मिल्यो परम चंचल मध्यमणी जैसे होय तैसे ही रूप

लावण्य चातुर्यता और किशोर अवस्था तैसे प्रेम रस रूप यह सगरे समुद्रन सूं परम शोभायमान होतो भयो है सो पूर्ण परमेश्वर श्रीजी कूं जो विश्व कूं हू मोहन करवे वारो रूप है सो विना यत्न के ही सगरे मनुष्यन की ओर के देखवे रूप इच्छा के समूहन कूं दूर कर देतो भयो है। तामें कितनी एक तामसी भाव वारी स्त्री जन तो उच्छलित होय रहे प्रेम समुद्र के कल्लोलन सूं लोल होयके परम सुन्दरवर श्रीजी के चरण कमलन की रेणुन में हू अत्यंत लुटित (लोटत) होय रही है यामें रमण रस की सूचना होय है और जे तामस भाव वारी स्त्रीजन हैं सो करोड़न निधि कूं जैसे होय तैसे ही वा श्रीजी के चरण कमल की रजन कूं प्राप्त होयके अत्यन्त लोभ वारी भई थकी हर्ष सूं मिली भई निपुण जैसे होय तैसे ही भली प्रकार ग्रहण करत भई हैं यामें हू रमण रस की सूचना होय है और कितनी एक तो राजस भाव वारी कमलनयनी वा श्रीजी के चरण कमल संबंधी रज कूं प्राप्त होयके वासूं भये ताप के समूहन कूं वा श्रीजी के श्री अंग की कांति संबंधी किरण रूप प्रेम अमृत के समुद्रन सूं हू शांत करत भई है जे सात्विक भाव वारी स्त्रीजन मृगनयनी हैं सो वा श्रीजी के उदय होय रहे मुख चन्द्रमा में अपने चकोरी भाव कूं अत्यन्त धारण करत भई हैं तब कियो है मंगल स्नान जानें ऐसे वा श्री वल्लभजी कूं सोना किनारी सूं शोभायमान है अंचल जाको ऐसी उत्मीष कूं कहा के पाग कूं बांध के श्रेष्ट कमर पटका कूं कंचुक पे जामा कूं धारण करत भये हैं तब वस्त्र और आभरणन कूं अंगीकार करके पद पद में महा शोभायमान होय रहे हैं ऐसे श्रीजी कूं बाहु मूल के तल में अद्‌भुत अगरु चन्दन के पंक कूं धारण करत भये हैं और मणिकांचन मुक्ता की नाना विधि मालान कूं हृदय में धारण करत भये हैं और चंपकावली और परम प्रिय तुलसी माला कूं हू हृदय में धारण करत भये हैं और मनोहर कंठाभरण कूं नूपुर वलयादि कूं धारण करत भये हैं और खजूरी के पत्रन सूं रचना करी नाना प्रकार के पुष्पन सूं मिली भई जो सुवर्ण मुक्तामणी गणन सूं खचित शुभ शुभ्रिका है वा शुभ के शिनआरो है या मंत्र सूं समर्पण करत भये हैं तिस तिस अंग संबंधी मनोहर तिस आभरण सूं उदय होय रही जो कांति है सो इन्द्रायुद्ध कहा इन्द्र के धनुषन की समूह रूप है विनसूं चारों ओर रक्षित और भक्तन के नयन भूमि में आनन्द के समुद्रन कूं वर्षा करत वा प्रिय पुत्र कूं नाना मुक्तामणि गणन सूं जटित जो कोमल वस्त्र

सूं आछन्न मंगलमय सुवर्ण पीठ है वामें ब्राह्मण ज्ञाति बंधु स्वजनन सूं विराजमान करायकें यथा विधि मंगल स्वस्तिवांचन पुण्याह वाचन कूं श्रीमान् श्री गोस्वामीजी करावत भये हैं शोभादि जे बहेन हैं मुक्तामाणिक्य सूं खचित और चमत्कार वारे सुवर्णमय सुन्दर भाजन में बहुत दीपकन कूं सिद्ध करके गीत वाद्य सूं मिली भई हू मंगलमय गंधाक्षत और तांबुलादिकन सूं अत्यन्त पूजन करके हर्ष सूं मिली भई सो श्रीमद् गोकुल के सौन्दर्य परम पुरुषोत्तम कूं निरांजन करत भई हैं ॥३८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले त्रियोदश स्तरंग समाप्तम् ॥१३॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग चौदहमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चतुर्दश तरंग लिख्यते ॥१४॥

श्लोक -- '' **सु चाचा हरिवंशोजीय महाभाग्य वतांवरः अनुकरुक्त श्रव भक्त श्रवद्र सदा श्री गोकुलोत्सवे** '' ॥

याको अर्थ -- याके अनन्तर बड़े भाग्यवारेन में श्रेष्ठ जो प्रसिद्ध चाचा हरिवंशजी हैं सो सदैव ही श्री गोकुल के उत्सवरूप श्री गोकुलेशजी में अनुराग वारे हैं सो बाहिर भीतर हर्ष सूं पूर्ण भयो थको सो गंभीर वाणी सूं कहत भयो है के अब वेग ही भूषणादिक सूं अलंकृत और सज्जित श्रेष्ठ मंगल रूप तुरंग घोड़ा कूं इहां ले आवनो चहिये ऐसे जब कह्यो तब वेग ही भक्त सेवक वा घोड़ा कूं लावते भये हैं । तब उपस्थित भयो जो सो मंगल अश्व है सो अपने मनोहर हर्षित है सुख सम्पदामई सर्व कार्यन की सिद्धि कूं याकूं स्पष्ट ही कहत भयो है तब मंडप मे विराजमान श्री प्रभुन के निकट में जायके सो चाचा हरिवंशजी सहित मंद मुसकान के कहेत भयो है के हे विभो अब विलम्ब कूं नहिं करनो चहिये । हे प्रभो वेग ही कार्य करिये जाकूं सगरे भक्त चाहना करें हैं ऐसो सो शुभ लग्न निकट आय रह्यो है और मंगल अश्व भी निकट आयकें ठाड़ो

है सो अपने ऊपर विराजवे की चाहना करि रह्यो है और हे महाप्रभो वा वीथी कूं गली कूं आप सूं अलंकृत करायो चाहना करे है सो हे प्राणनाथ चारों ओर सूं स्थित जे मथुरापुर की स्त्री गण हैं विनके नेत्र रूप कुमोदनीन कूं अपने श्रीमुखरूप पूर्णचन्द्र सूं प्रफुल्लित करिये और हे प्रभो त्रिलोकी में मणी जैसे अपने स्वरूप सूं वेणाभटजी के घरकूं अत्यंत शोभायमान करिये सो या प्रकार चाचाजी के कहेत में भक्तन की और नरनारीन की जय शब्द की परंपरा है सो प्रगट होती भई है और मंगलमय सगरे बाजेन को जो महाशब्द है सो कानों में अमृत के अनंत समुद्रन कूं भरत ही वृद्धि कूं प्राप्त होतो भयो है श्री आपके भक्त सरस जे स्त्रीगण है विनके श्रीमुखनसूं तब वे वे मंगलमय गीत प्रगट होते भये हैं तब मंगलमय श्रेष्ट नारकेल कूं श्री हस्तकमल में लेकर सो श्रीमद् गोकुलकूं सौंदर्यरूप पुरुषोत्तम श्रीजी उठी ठाड़े होते भये है तब सुंदर लक्षणवारे मंगलमय अश्वरत्न कूं अलंकृत करत भये है के वाके ऊपर विराजमान होते भये है तब सो श्रीजी परम अनुरागवारे भक्तन के हाथन में स्थित जो सुंदर चमर है विनसूं विराजमान होय रहे और हजारन जामें मुक्ताकी सरी लटक रही है तासूं शोभायमान जो पुर्णचन्द्र मंडल जैसे अद्भुत श्वेत छत्र है जो नानाविधि रत्नन के गणनसूं खचित सुवर्ण डंडा सूं शोभायमान है सो वा छत्र कूं प्रेम सूं अपनी कृपाबलसूं कृतार्थ करिवे कूं श्री मस्तक सूं अंगीकार कर रहे हैं और जो गुणन के सागर है ऐसे वा श्रीजी के पीछे सगरे आभरणन सूं भूषित और अमूल्य है बस्त्र जिनमें और शोभायमान है कंचुक के ऊपर सुंदर अंगीया एसी जे करोडन चंद्रमुखी स्त्री रत्न है सो हृदय के पति और श्रृंगार रस के निस्तुप रस सार कूं हूं जे साररूप श्रीजी है वा श्रीजी के पीछे ही सो या श्रीजी के विन-विन चरित्रन कूं गायन करत चलि रही है और करोडन भक्त पीछे है और लाखन तो सेवक है और अनंत तो दास है ॥ तैसे मित्र, जाति वारे और संबंधी बांधव हू अनंत है ॥ तिस तिस क्षण में जो जो वस्तु अपेक्षित है सो तिस तिस वस्तु कूं अपने हाथन में प्रेमसूं लेकरिके अत्यंत प्रसन्न भये थके प्रफुल्लित होय रहे है मुख कमल जिनके और प्रभुन के आगे की पृथ्वी कूं हर्ष के जलसूं सिंचन करत ही हों प्रथम जावु हू, हों प्रथम जावू हूं ऐसे चारो ओर सूं दौड़ रहे है । और श्री विट्ठलनाथजी जे श्री गोस्वामीजी हैं सो तो प्रेम समुद्र के जल जे अगणीत तरंग हैं विनसूं प्रेरणा करे भये ही उल्लास

कूं प्राप्त होय रह्यो जे पुलक के समुद्र है विनसूं शोभायमांन होय रह्यो है कंचुक जाकूं और नयन कमल सूं निरंतर आनंद जलके पराग के समूहन कूं वर्षा करत ही बढ़ि रह्यो जो महा उत्साह रूप हजारन करोडन समुद्रन सूं प्रक्षालन सूं अत्यंत उज्ज्वलता कूं प्राप्त होय रहे सुंदर अत्यंत अलौकिक रूप कूं धारण करत है । ऐसे श्री गोस्वामीजी हू तैसे वा श्री गोकुलेशजी प्रिय पुत्र के विवाह उत्सव में अत्यंत योग्य प्रफुल्लित श्रीमुख कमल वारे प्रभुजी चरणन सूं श्रीजी के निकट ही चलत वा श्रीजी सूं अत्यंत ही शोभायमांन होते भये हैं । तहाँ अनन्त भक्तन के समूह ही प्रभुन के आगे मार्ग में अनेक वर्णन के सुगंधित द्रव्यन कूं और श्रेष्ठ चंदनादि चूर्णन कूं बारंबार विकीर्ण करि रहे है । और शोभायमान कर्पूर के और सुंदर श्रेष्ठ वस्त्र की सुंदर बाती जामें है ऐसे सुगंधित तेल सूं भरे भये परार्द्धन दंड दीप शोभायमांन होय रहे है । तहां भेरी और मृदंग, ताल पटहं आनक झन्झर ढक्का और दुंदुंभी छोटे असंख्य दुंदुंभी और रवाव अयुध वीणादिक और झांझ उपंग वेणुं वंसी गोमुखा कानभेरी झालरी घुघरी स्वरनादिनी मुरज पणव भुंगल और शंखन के समूह हू द्रुमं-द्रुम डिम-डिम सारंगी पिनाक करोडन चंद्र-मंडल और स्वर मंडल के समूह हुडक मंटुव मर्दल और हू जो विन-विन के अवांतर भेद है, घन भेद है तद्ध भेद है और सूं शिरनामवारे है तैसे मुरजोके जे भेद है ॥ और अंक्य सोलिग्य और उर्द्धक आदि जे बाजे है तैसे और खुड्डक है ये सगरे बाजे बजाये और बिन बजाये हू सगरे बाज रहे है । सो तैसे विश्वकूं हू पवित्र करिवेवारे मंगलमय विन शब्दन के समूहन सूं सो मथुरांजी शुद्धाद्वैतमय रूप ही शोभायमांन होती भई है ॥ और प्रसन्न भये नट और नर्तकीन के हजारन विविधी नृत्य होते भये हैं ॥ और चारों ओर सूं जे जे वस्तु पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी कूं शोभित करिवे लिये आई है सो सो वस्तु वा श्रीजी सूं ही वा शोभा कूं प्राप्त होय के ही अत्यंत लज्जायमान होय जाती भई है ॥ सो वा लज्जा सूं ही सौन्दर्य निधि ईश्वर श्रीजी कूं प्राप्त होती भई है ॥ और प्रसन्न भये थके वंदी जनन मागद सुत चारणादिक जे हते सो गुण सागर श्रीजी कूं यथार्थ स्तुतिन सूं ही स्तुति करत भयो है और मार्ग के क्रमसूं अपने-अपने घरके द्वार पे प्राप्त है जे कृपा सागर श्रीजी है सो वा श्री गोकुलाधिपति कूं तिलक पुष्पमाला और मणी सुवर्ण मुक्तामय हारन की भेटन सूं और अमूल्य दिव्य वस्त्र मंगलमय आरती आदिकन सूं सहित कुटुंब

परिवार के बढ़ि रहे हैं । महाउत्सव के सागर जिनमें ऐसे जे भक्त स्त्री पुरुष है सो बड़े हर्ष सूं जय शब्दन सूं और प्रणाम स्तोत्रन के समूहन सूं और अपने भाग्यन की बढ़ाई कहीवे सूं और सर्वस्वादि के अर्पणन सूं और देह इन्द्रीय प्राणादि के मन सहित अर्प्पणन सूं वा श्रीजी के पूजन करत भये है ॥ या प्रकार अत्यंत उछल्लित होय रहे आनंदाब्धी के समुद्रन में तरंगन के शत हजारन लाखन सूं अपने भक्त स्त्री पुरुषन कूं और हू सगरे जनन कूं क्रीडा करावतो सो कृपासागर श्रीजी विनमें स्वयं हू परमेश्वर श्रीजी निरंतर त्रिलोकी में मणी रूप अपने स्वरूप सूं वेणाभटजी के घर के द्वार कूं विशेषकर शोभायमांन करत भये है ॥४६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले चतुर्दश तरंग समाप्तम् ॥१४॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग पंद्रहमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पंचदश तरंग लिख्यते ॥१५॥

श्लोक -- ''**तस्यद्धारस्य सौभाग्यं भूषितस्य भृशंजनेः ॥ तदीयेस्तादृशेनवतः त्स्त्रदृशांन**'' ॥१॥

याको अर्थ -- वेणा भटजी के तैसे जननसूं अत्यंत भूषित कियो जो द्वार है वाकूं जो तादृश निम्मर्याद और उछल्लित होय रहे है, हजारन लहरी जामें ऐसे निस्तुष श्रृंगार रस सागरनकूं हृदय में बड़े यत्नसूं धारण करत जो तादृश परम निस्तुष रससार साररूप श्रीजी है ॥ वा श्रीजी सूं भयो जो सौभाग्य है वाकूं ब्रह्मा के करोडन लक्ष हू कहा कछू वर्णन हू करिवे कूं समर्थ होय सकेगे ? किंतु कदापि नही होय सके है ॥ और अखंड ज्ञान विज्ञानरूप रत्नकूं उत्पत्ती वारो भूधर पर्वतरूप जो शेषनाग है सोहूं तेसो वर्णन अचुतन के हजारन वर्णन करिवे कूं समर्थ होयगो ? कहा अपितु नहीं होयगो ॥ तहां अपने चरण कमल संबंधी नषनकी शोभासूं रंभादि अप्सराओं के सौन्दर्यकूं तिरस्कार करत और

प्रेम रसकी सागररूप और महा भाग्यवतीन में श्रेष्ठ और प्रफुल्लित है मुख कमल जाकूं और कल्प वृक्ष के नवीन दल जैसे विद्रुम की शोभाकूं धारण करिवेवारे वा अधर में अमूल्य मंद हास्यरूप मुक्ताकूं जो धारण कर रही है ।। और प्रिय श्रीजी है वाके श्रीमुख रूप संपूर्ण चंद्रमा संबंधी शोभा के रूप अमृत समुद्रनकूं पान करिवे अर्थ जो अखंडित चकोरीरूपकूं धारण कर रही है ।। और हजारन मुक्ता हीरा माणिक्यन सूं खचित और नवीन मंगलमय सहित जल के सुवर्ण कलशकूं श्री मस्तक में धारण करत है ।। और संपूर्ण चंद्र जैसो है श्रीमुख जाकूं और मृग के शावक कहा छोटे छोरा जैसे बडे चंचल मुग्ध है नयन जाके और ऊँचे और पुष्ट है कुच जाके मृणाल है जैसे विलासवारी सुंदर है भुजा जाकी और माणीकनसूं खचित मेखलान सूं शोभावारे नितंबरूप फलकन सूं शोभित है ।। और रत्न के नूपुरन के झंकार सूं खेंचि लिये हैं प्रिय श्रीजी के नयन जाने और कृश है उदर जाको ऐसी सुंदर मंगलोसू घटीत जेसी होय तेसी ही सो सुंदर मुख्य स्त्री प्रगट होती भई है ।। तब प्रभुन ने प्रवेश करिवे कूं जो निश्चय कियो है ऐसे वेणाभटजी के घरसूं हजारन शत करोडन जे स्त्री है जे विविध मंगलमय गीतकूं गान कर रही है ।। हर्षसूं पूर्ण है और उछल्लित होय रहे प्रेम समुद्रन के तरंगनकी शत कोटि जामें और उत्कृष्ट जो यौवन है वाके आधिक्यता सूं शोभायमांन होय रही है ।। अंगन की किरण जिनकी और रत्न खचित जे आभरण हैं विनके समूहन सूं निकस रही किरणन के समूहन सूं चारों और हूं अमृत समुद्रन के मानो जो वर्षा करि रही है । ऐसी स्त्री रत्न शोभायमांन जो किशोर अवस्था है ।। वाके सार सर्वस्व सूं प्रकाशमान परम सुंदर वर जो प्राणनाथ श्रीजी हैं वाको दरसन करिवे कूं प्रगट होती भई है तहां सर्व प्रकार सूं हर्षों के अनेक समुद्रन कूं दांन कर रही वा श्रीजी की पूर्ण दृष्टि है वा सगरी दृष्टि कूं ही कितनी एक बड़े भाग्यवारी स्त्री प्राप्त होती भई है ।। और कितनी ऐक तो कछुहीक न्यून और कितनी ऐक वाके अर्धकूं और कितनी ऐक तो वा दृष्टि के अंश के हूं लेश कूं प्राप्त होती भई है ।। तथापि श्रीजी में धारण किये है हृदय और नेत्र जिनने ऐसी वे सगरी मृगनयनी कृत्य कृत्य भावकूं प्राप्त होती भई है ।।१८।। याके अनंतर सौन्दर्य के समूह को सार्वभौमरूप जो श्रीजी है सो सहित हर्ष के सुवर्ण मणी मुक्तानसूं वा नवीन मंगल घटकूं पूजन करत मस्तककूं धारण कर रही जो सो वर स्त्री है वाकूं

स्नेह भरी नजर सूं आनंद के समुद्र में निमग्न करिके वा मंगलमय घोड़ा सूं उतरते भये है ॥ रस सूं सघन दृष्टि सूं असंक्षात उछल्लित तरंग वारे हर्षामृत के समुद्रन कूं जो वर्षा करि रह्यो है ॥ और जो कृपा के समुद्र है और जय कियो है पूर्ण चंद्र जाने ऐसो है श्रीमुख जाको, ऐसे वा अश्वसूं उतरत भये किशोर स्वरूप पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी कूं वेणाभटजी के श्यालेकी जो भार्या है सो अपने हस्त कमल में मंगलमय आरती कूं धारण करत ही बंधु सुहृदी की सुंदरी गणों सूं मिल्यो भयो ही ॥ वस्त्र भूषणन सूं पूजन करिके प्रेमसूं निरांजन करत भई है। फेरि गंधाक्षत मंगलमय फल रत्न और हृदय नयनन सूं न्योछावर करिके वा श्रीजी के शोभायमांन चरण कमल संबंधी नख की शोभा में हृदय सूं प्राण और सर्वस्व कूं हूं अर्प्पण करत भयी है ॥ और सो परम चतुर समय के अनुसार अपने चित्त के अनुसार अनेक आसीष कूं देती भई है ॥ फेरी सोनामय रजतमय रत्नमय पुष्पन सूं परमेश्वर श्रीजी कूं परम प्रेमसूं सो अश्व कूं पूजन करिके प्रफुल्लित भयो है मुख जाको ऐसी होय जाती भयी है ॥ और परमेश्वर श्रीजी रूप जामाता के लाभसूं सहीत संबंधीन के वेणाभटजी हू भीतर बाहीर प्रसन्न भयो थको और अपने कूं कृतार्थ ही मानत विवाह घरके आंगण में शोभायमान विस्मृत मनोहर मंडप में सगरे दास भक्त सेवकन सूं मिले भये श्रीजी कूं तहां प्रवेश करावत भयो है ॥ तब परम रमणीक हीरा माणिक मोतीन सूं खचित अमूल्य और श्रेष्ठ वस्त्र सूं ऊपर आच्छादित परम कोमल आभरणन सूं शोभित सुवर्णमय आसन में वा श्री गोकुलपतिजी कूं पधरावतो भयो है ॥ और जे आपके भक्त सेवक दास संबंधी आदि हते विनकूं यथोचित आसनों में बेठावतो भयो है ॥ तब तहाँ वेणाभटजी तो परमानंद सूं पूर्ण भयो थको स्नान कूं करिके धोये भये शुभ्र श्वेत वस्त्रन कूं पहेरिके संबंधी जनन सूं मिल्यो भयो ही परम गुणन के सागर श्री प्रभुन के समीप ही मधुपर्कादि सामिग्री कूं पास राखके बेठ जातो भयो है ॥ तब भटजी के संबंधवारी जे स्त्रीजन हती सो थारी में सुंदर हरदी सूं मिले भये गेहूं के चूनसूं रचना किये बहुत दीपकनकूं धारण करिके और मंगलमय लाल चोंचवारे शुकनकूं हूं धारके वा वर श्रीजी के मुख को दर्शन करत ही समीप में बैठ जाती भई है ॥ और यहां सगरे संबंधीन सूं और स्त्री पुरूषन सूं सहित उल्लास कूं प्राप्त होय रह्यो है हर्ष को समूह जामें ऐसे श्रीमद् वल्लभ नंदन श्री गोस्वामीजी हू वा परमेश्वर श्रीजी

के समीप में ही विराजमान होते भये है ॥ और तहां श्रीजी में जे भक्तिवारी सगरी स्त्री और तैसे पुरुष हते सो निमेष रहित ही नयनन सूं वा श्रीजी के मुख कमल को पान करत तहां ही स्थित होयके शोभायमांन होते भये है ॥ जब बड़े प्रेमसूं स्वसुर वेणाभटजी अमूल्य रेशमी सुंदर वस्त्रनकूं अर्प्पण करत भये है ॥ तब श्रीजी हूं प्रथम जे कंचुक आदि पहेरे हते विनकूं बड़ो करिके पहेरते भये है ॥ तब श्रीजी के जे चरण कमल है जे परम शुभ लक्षण वारे है और जिनकी रजहू सगरे अवतारन के अवतारी है विनके समूहन कूं हूं दुर्ल्लभ है ॥ ऐसे श्रीजी के विन चरण कमलोकूं बड़े भाग्यवारेन में श्रेष्ट जो वेणाभटजी है सो परम भक्तिसूं भली प्रकारसूं प्रक्षालन करत भयो है ॥ तब श्वसुर भावके दांनसूं परम प्रसाद कूं रचना कर रहे जे परमेश्वर श्रीजी है वाकूं जो ब्रह्मादिकन कूं हूं दुर्ल्लभ विश्वकूं हूं पवित्र करिवेवारो तेसो मंगल रूप चरणकमल संबंधी अमृत है वाको परम प्रेम सूं पान करिके आदर सूं और प्रेम सूं सहित परिवार के वाकूं मस्तक सूं धारण करत सो भटजी कृतार्थता कूं प्राप्त होय जातो भयो है ॥ तब बड़े आदर सूं विन चरण कमलन कूं कोमल वस्त्रन सूं पोंछि के दोनों कानो के मणी मुक्तानसूं खचित सुवर्णमय अद्‌भुत दोनों कुंडल और दो मुद्रिका और हू हीरादिकन कूं करुणासिंधु ईश्वर श्री गोस्वामीजी द्वारा पहेरावत भयो है ॥ फेरि वा श्रीजी को जो श्रीकर है जो कल्प वृक्षरूप है सगरे अर्थनकूं कृतार्थ करिवेवारे है ॥ और कल्पवृक्ष के आलबाल की शोभाकूं धारण करत जो वाकोमूल है तामें भटजी कंकण कूं धारण करत भये है । फेरि दही आदिकन सूं शास्त्रानुसार ही तिस तिस मंत्रन सूं मनोहर मधुपर्क की शुभ विधि प्रवृत होती भयी है ॥ फेर तहां मंगलमय उपकार करिवेवारे सुंदर तंदुलनसूं भरे भये दो वंशपात्र तहां धारण करत भये है ॥ तामें ऐक पात्रकूं तो वर श्रीजी ही शोभायमान करत भये है ॥ वाके ऊपर विराजमांन होते भये है ॥ विचमें श्रेष्ठ क्षण की प्रतिक्षा सूं टेरी कनात देते भये हैं ॥ तामें बधुन की स्त्रीन सूं पधराये भये श्री वधूजी दूसरे पात्रकूं शोभित करत भई है ॥ के दूसरे पात्र पर विराजमांन होती भई है ॥ तब बंधुवर के वस्त्र के आंचलों में मंगल ग्रंथी बंधन कूं वधु की स्त्रीजन करत भई है ॥ तबसगरे भक्तन के सुखदायक गोत्र कीर्तनसूं सुन्दर कन्यादांन शास्त्रानुसार प्रवर्त होतो भयो है ॥ तब आपस में दर्शन की इच्छावारे गुणनके सागर बंधु और वरके तंदुलसुं पुरण अंगुली अत्यंत शोभायमांन होती भई है ॥

तब शुभ लग्न आय गयो है ।। तासूं अग्रम कृत्य के अर्थ सावधान भयो चहिये सो बारंबार उल्लास वारो जो ज्योतिषीन को वचन हतो सो वधु और वरकूं आनंदित करतो भयो है ।। सो या प्रकार के विवाह संबंधी संबंध में अपने जातिवारे बुद्धिमान और हू जे ब्रह्मचारी आदि हते सो दोनों पक्षवारे ही आपस में जय की इच्छावारे भये थके वर वधु के शुभ के अर्थ मंगलमय श्लोकनकूं पढ़ते भये है ।। तब शुभ क्षण में देवज्ञाने आशीर्वाद पढयो है ।। तब परदाहू दूर होय जातो भयो है ।। तब सहित हर्ष के आपसमें देखत सो वधुवर आपस में मनकूं बलात्कार हरत ही होम संबंधी अग्निके धूम संबंधीसूं संपन्न भये भावसूं आपस में हर्ष के जलन के समूहन कूं बारंबार वर्षा करत ही अंजुली में विराजमांन तंदुलन सूं मस्तक में युक्त भयो जैसे होय तैसे ही बिनकूं देवज्ञ के कहिवे सूं यथा स्मत्र करत भये है ।। पीछे मंगलमय वंशपात्र में दोनों वर वधु फेर ही विराजमांन किये भये यथा विधि विवाह संबंधी सगरे कर्मन कूं करत भये है ।।६०।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले पंचदश तरंग समाप्तम् ।।१५।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग सोलहमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ षष्ठदश तरंग लिख्यते ।।१६।।

श्लोक -- **अनुसहृदय कुलाचार प्रेरितः स्वजैनः प्रभुः आदायतां वंधुमके गृह्यमध्यंप्यभूषत् ।।१।।**

याको अर्थ -- या प्रकार वैवाहिक कार्यन कूं करत स्वजनन सूं प्रेरणा किये भये प्रभूजी कुलाचार के अनुसार ही वा बहुजी कूं अंक में लेकर घरके मध्य कूं शोभायमान करत भये हैं ।। के घरके भीतर पधारत भये हैं तहां बधु-पक्षवारी स्त्रीजन जैसे कहे है तैसे ही सो प्रभु पुरूषोत्तम सगरे कुलाचारकूं करत भये है ।। तहां प्रभुन के आशयकूं जानवे वारे अधिकारीन ने प्रथमही नाना प्रकार के हजारन आभरण सिद्ध किये है ।। सो मणी मुक्तानसूं खचित अमूल्य पेटीमें

धारण किये भये है ॥ सो परम चतुर अधिकारी विनकु पठावते भये है सो समय कूं जानिवे वारी आपकी कृपा पात्र दामोदर दासी जी विनको आगे धरत भयी है ॥ तब सो श्रीजी विन भूषणन सूं या श्री बहुजी कूं नष सू ले सिष पर्यन्त भूषित करत भये है । या पार्वतीजी कूं हू सर्वोत्तम ही भूषणनसूं कहा है जासू यह पार्वतीजी हूं विन भूषणन को भूषण रूप है ॥ सगरे भूषणनके भावकूं धारण करिवेवारी है, या प्रकारसूं याकी सखीनकूं जन्मसूं ही ऐसी गर्व बुद्धि की परम काष्टाकूं प्राप्त भयो हतो ॥ आज सो गर्व ही तिरस्कार कूं प्राप्त होय गयो है ॥ जासूं प्राणनाथ श्रीजी ने जब वा बहुजी में भूषण अर्पण किये है ॥ विन भूषणन ने प्रियाजी में अभूतपूर्व कहा है के प्रथम कबहु न भये ऐसे शोभाकूं अधिक ही सिद्ध कियो है ॥ जासूं यह सो पार्वतीजी है ॥ या प्रकारकी इन सखीन की प्रत्य भिक्षाकूं लोप करत जो शोभाको आधिक्य अत्यंत बढ़ी गयो है भूषणनके धारण करवेसूं प्रगट भई जा शोभा के आधिक्य में या बहूजी कूं प्रथम शोभा न्योछावर भावकूं प्राप्त होय गई है ॥ तब अनेक बाजे बाजते भये है ॥ और गीत हूं प्रगट होते भये है । वर वधू जी कूं कछुक ही अनिर्वचनीय मोद ही तीनों भवनों में विस्तृत होय जातो भयो है ॥ मंगलमय तृणनसूं जो आच्छादित है सो माणिकमय जामे वेदी है और रत्नखचित सुवर्णमय दो जामे पीढा बिराजमान हैं ॥ और सुन्दर समाहित है होम के अर्थ अग्नि जामे ऐसे मंगलमय मंडपकूं सो कृपानिधी परमेश्वर शोभायमान करत भये है ॥ तब सो स्थलहूं भारी अलौकिक वधु वर के सुन्दर तेजसूं सूर्य-चंद्र के सत लक्षणसूं मिल्यो जैसे होय तैसे ही शोभायमान होते भयो है ॥ त्यांहां अत्यंत प्रदीप्त भये अग्नि में शास्त्रानुसार ही तहां होमकूं सर्व धर्म के धुरंधर श्री गोकुलाधीशजी करत भये है ॥ और जब होमादि और हूं वैदिक कर्म तहां होतो भयो है ॥ तब करुणानिधि प्रभुजी अपने श्यालगण में दिव्य नाना विधि श्रेष्ठ अमूल्य वस्त्र सहित प्रशादकूं देते भये हैं ॥ और नाना प्रकार के माणिक्यसूं खचित मांगलिक सुवर्णमय पात्र में मंगलमय आरती कूं तैयार करके श्रीमहाप्रभुजी की बहिनें शोभाजी, यमुना, कमला, सत्या, देवका, लक्ष्मी, यह सगरी पधारी हैं ॥ तहां दोनों बहुजी और वरको पूजन करत भई है ॥ तब इन दोनों वर बहुजीकूं दोनों पक्षवारी स्त्रीजन मंगल मंडपके समीप श्रेष्ट आसनमें सन्मुख बिठाय के विविधि गीतन को गान करत हर्षसूं प्रफुल्लित ऐसे वे स्त्रीजन संक्षेपसूं मंगलमय

हारिद्रा क्रीडानकूं अपने-अपने मनोरथ अनुसार विन दोनों वहुवर सूं हूं करावती भई है ॥ और श्री गोकुलाधीशजी के विवाहरूप सुन्दर महोत्सव कूं देखवे अर्थ जे वीप्र ज्ञातिवारे आये हते सो वे तांबुल दक्षिणादांन मांन पीछे पहचावन आदिसूं प्रसन्न किये वे सगरे ही वंधुवर कूं प्रशंसा करत अपने-अपने घरनकूं जाते भये है ॥ और पद्मावतीजी और श्रीजी की बहेन बड़े हर्षसूं कुलाचार चणांकीदार चावरन सूं मिल्ये भये खिचड़ी के भरे भये वंश के पात्रनकूं ज्ञातीवारी स्त्री जनो प्रति सहित आदरकूं देती भई है ॥ और सुंदर वाणिसूं और विनयसूं अत्यंत प्रसन्न करी भई वे स्त्रीजन फेर आयवे में वेग ही उत्साहवारी भई थकी अपने अपने घरनकूं जाती भई है ॥ अब श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी कूं हूं वेणाभट्ट पीछे पोहोंचाय के अपने घरकूं जब हर्षसूं प्राप्त भयो है जब श्री गोस्वामीजी हूं अपने घरमें पधारके विराजमान भये है ॥ इतने में भट्टजी हू अपने सगरे संबंधीन सूं मिल्यो भयो ही हरदी के द्रावसू सिद्ध भये पीरे अक्षतनसूं मिल्यो भयो नाना मणिनसूं खचित सोना को पात्र आगे करिके गोस्वामीजी के आगे प्रणामनकूं करके हर्षसूं वा पात्रकूं आगे धरके सहित विनय के यह विज्ञापना करत भयो है के आपुतो जाति में भूषणरूप हो और मे तो अपने सामने यद्यपि अयोग्य ही हूं तथापि मेरी कन्या सगरी महात्म्यन गुण संपदा सूं बिराजमान सर्वोपर कृपा सागर श्री गोकुलेशजी कूं अंगीकार करायके आपने दुर्लभ अपने सुखाभाव को प्रकाशमान निरूपाधिक कूं जा कृपासूं प्राप्त करी है ॥ यद्यपि हूं तो अत्यंत तुच्छहूं तथापि ऐसेही मेरे घरमें वा निरूपाधिक कृपासूं ही सहित कुटुंब परिवार संबंधी अत्यंत सहृद्गुणों के वरके संग ही भोजन करवे अर्थ आप पधारिये ॥ जा प्रकार सूं हो कृतार्थ होय जाऊँ ॥ या प्रकार कूं वा भट्टजी की विज्ञापना कूं सुनके हसके पात्र में स्थित जे अक्षत हते विनकूं माथे पे करके उठी ठाड़े होते भये है ॥ तब वेणा भट्टजी कूं संग लेके श्री गोस्वामीजी अपने संबंधीन के घरकूं पधारत भये हे ॥ सो वेणा भट्टजी के घर में भोजन करिवे कूं विन सम्बन्धीन कूं निमंत्रण करके वेग ही घर कूं पधारे हैं आज वेंणा भट्टजी के घर वर भोजन है ॥ या प्रकार के हर्षसूं मिली भई स्त्रीजन प्रसन्नतासूं अनेक प्रकार के पाकनकूं जमावती भई है ॥ और करोडान शाकन कूं पचावती भयी है और विचित्र वड़ा और वडीन कूं करती भई है ॥ सहित कर्पूर के मिरच के रसाल बनाये है और अधोट्यो दूध स्वेत मिश्रिसूं मिल्यो बहुत बनायो है ॥

बहुत आंबके खंड हैं और सुंठ के खंड हैं, मिरच सूं मिले बिलसारु हैं ॥ ऐसे अनेक पदार्थनकूं सिद्ध करत भई है ॥ तब वर पक्षवारे सघरे संबंधी हूं अपने-अपने घरनसूं न्हाय न्हाय के सुंदर वस्त्रनकूं पहेर के भोजन के अर्थ तहां आये है ॥ वेणा भट्टजी के संबंधी विन सगरेन कूं भले प्रकारसूं बेठावते भये है ॥ पतरावली सर्वके आगे धर दीनी है ॥ सो वे सगरे सबंधी हूं विन अतुल वधु वरकूं देखतही अपने जन्म की सांफल्यता कूं मानत भये है ॥ तहां समाज में भोजन के अर्थ विनने शोभायमान सुक्ष्म जाके ऊपर वस्त्र है ऐसे सुन्दर आभरण वारे सुवर्णमय रत्न पीठ में वधु के सहित वर श्रीजी कूं पधरायो है ॥ तहां श्रीजी के आगे विस्तृत सुवर्णमय पात्र और रत्नमय पात्रन कूं हूं धारण करके भोजन के प्रारम्भ में बंधुनने बहुजी कूं प्रेरणा करी है ॥ तब बहूजी लज्जाकूं करत वरके ही हस्त में घृत कूं धारण करत भयी है ॥ तब वरकी माता पदमावतीजी वेणाभटजी की विज्ञापना को मानके वाने दिये भये मंगलमय पीरे पटमय वस्त्र कूं धारण करत भयी है ॥ तब अपनो कुलाचार है यह जानके सर्व के आगे प्रथम घृत कूं हूं परोसती भयी है ॥ वहुजी ने जो श्री हस्त में गाय को घृत दियो है सो कियो जाने आचमन ऐसे हमारे प्रभु संबंधीन के संग ही भोजन करवे कूं प्रारंभ करते भये है ॥ विनमें कितने ऐकतो श्री गोस्वामीजी के भाग्यनकूं और वेणा भट्टजी के भाग्यनकूं सराहना करत भये है ॥ भोजन कूं करके हाथ मुखकूं प्रक्षालन करके शुद्ध भये थके हाथन में मंगलमय अक्षतनकूं लेके ब्राह्मण बड़े हर्षसूं आशीर्वाद के मंत्रनकूं पढके देते भये है ॥ तब श्री गोस्वामीजी हू विनकूं अपने वस्त्रन सूं लेकर बहू और वरके विनय सूं नम्र भये श्री मस्तक में विनके शुभकूं इच्छा करत धारण करत भये है ॥ तब यह सगरे ज्ञातिवारे तांबुल दक्षिणा दानमान पहोंचावने आदिकन सूं प्रसन्न किये भये वधू-वर की प्रशंसा करत अपने-अपने घरकूं प्राप्त होते भये हैं । तब वेणाभट्टजी हूं सहित विनय के हाथनसूं बांधके श्रीजी के पिता श्री गोस्वामीजी कूं दूर पर्यंत पहोंचाय के भक्तन सूं प्रणामकूं करत विवाह विदा करत भयो है ॥ और अपने वंधुन सहित अपने घरकूं प्राप्त भयो है ॥ वर वधू तो वा रात्री में मंडप के समीप भूमि में ही विस्तृत सैय्या के ऊपर सुख सूं पोढते भये हैं । ब्रह्मचर्य व्रत कूं जिनोने आदर कियो हो मिले भये दोनों भीतर तो हर्ष कूं प्राप्त भये

है ।। सो सबके ऊपर विराजमान मन वचन के अगोचर जे वे प्रिया-प्रिय है विनके वा अत्यंत गोप्य हर्ष कूं वर्णन में कौन समर्थ होय सके ।। अपितु कोउ नहीं हे ।।५७।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले षोड़स स्तरंग समाप्तम् ।।१६।।

।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग सत्रहमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सप्तदसमो तरंग लिख्यते ।।१७।।

श्लोक -- **अथ प्रभाते तिकाते मुहूर्त द्वितीये स्त्रीयेः । सर्वा एवगता द्रुष्टुम लौकिक वधु वरोः ।।**

याको अर्थ -- दूसरे दिन चार घड़ी रूप प्रभात काल हू जब गुजर गयो है वा समय में सगरी ही स्त्री जन व्रा अलौकिक वधू वर कूं देखिवे लिये तहां आवती भयी है । तो कोटि कंदर्प लावण्य और अर्बुद चन्द्रन के तुल्य जाको श्रीमुख है और विशाल जाके वक्षस्थल हैं और शोभायमान होय रहे हैं मुक्ता के हार जामें ऐसे अधीश्वर श्रीमद् गोकुलाधीशजी कूं और अपने चरण कमल संबंधी नयन की शोभा के लेश कण अणुमात्र सूं ही लक्ष्मी के हजारन अयुतन कूं ही जो तिरस्कार करै है ऐसी वा वल्लभजी की प्रिया कूं वे सगरे स्त्रीजन दर्शन करके ही जा हर्ष रूप सुधा सिन्धु में निमग्न होती भई है ।। वा कृपा समुद्र रूप हर्ष समुद्र कूं विनके मन में परिचय करिके हू विनके मुख कमल प्रति हू कदाचित नहीं कहो तो हों सदृश वाकूं कहवे में कैसे समर्थ होवुंगो ।। सो या प्रकार के विवाह रूप रस संबंध में वर पक्ष वारी जे मृगनयनी पद्मावती जी भाग्यवती शोभा यमुना सत्या देवकी तैसे और हू जे बांधवन की स्त्री हती ।। रागवारी भक्ति वारी स्त्री गण हतीं सो वधु वर के श्रीमुख कमल की शोभा रूप अमृत पान में उत्साह वारी भयी थकी सो वा प्रियाप्रिय के वचनामृत रूप

सागरों में मज्जन की इच्छावारी हैं कानन की वृत्ति जिनकी और वा प्रिया प्रिय के सेवानंद रूप समुद्रन के शत कोटि तरंगन में विहार करिवे की इच्छावारे हैं हस्त कमल चरण कमल और चित्त जिनके ऐसी जे भाग्यवारीन के गण में हू महा शिरोमणि रूप करोड़न स्त्री जन हैं सो सुवर्ण रूप माणिक्यमय अनेक कुंभन में स्त्रीन सूं सिद्ध भये हरदी के द्राव कूं और कुमकुम के द्राव कूं ले करिकें और केतकी चंपा पद्मजाती के पुष्पन सूं भयो जो तेल है और हू जे अनेकानेक तेल हैं और हू जे अनेक पुष्प हैं विनकूं सुगंधित सुन्दर तैल हैं सो नाना विधि हजारन कांच के पात्रन में धर्यो थको है वाको हू लायकें तहां धरती भई हैं और हू जे सुगंधि सिंदूर वर्ण वारे उवटना हैं और हू जे वेणी के गूंथवे में उपयोगी कसुंभी रंगवारे हजारन सूत माल्य हैं ।। और हू जे सिन्दूर के पात्र हैं जैसे काजर की पुड़ी है और हू जे नाना विधि कांकसी है जे अनेक वर्णन सूं मनोहर हैं ।। और नाना विधि फलन जे उदैव के फलन सूं तैसे धतूरा के फलन सूं और कंटकारी के फलन सूं तैसे बेंगन आदि और हू फलन सूं चतुर पुरुषन ने अनेक प्रकार की माला हास्य रस की अपेक्षा सूं बनाई है सो सगरी तहां ले जाती भई हैं ।। सो उल्लास कूं प्राप्त होय रहे हैं गान मंगल बाजेन के शब्दन को समुद्र सहित अनेक वर्ण वारे गंध चूर्णन कूं और श्रेष्ठ कृष्णागरू के द्राव कूं संग कूं और हू अनेक भूषणन कूं और हू असंख्य क्रीड़ा के योग्य वस्तु कूं संग लेकर वे सगरी स्त्री जन वर मंडप कूं प्राप्त होती भई हैं । प्रथम वा श्रीजी के और बहूजी के दर्शन सूं अत्यन्त तृप्त होय रही है दृष्टि जिनकी ऐसी वे सगरी स्त्री जन वधुवर के मुख कमल संबंधी सो सौंदर्यामृत के सागरन को पान करके अत्यन्त शीतलता को प्राप्त भई हैं ।। सो शीतलता करोड़न पूर्ण चन्द्रमान के समुद्रन कूं नित्य पान करके वाके निकट स्थित होय रही जे चकोरी हैं विनकूं हू नहीं प्राप्त होय हैं तो औरन की तो कथा हू कहा है ।। तब सगरी स्त्री जनों ने मिलिके वेणा भट्टजी के घर के भीतर स्थित जो कुल देवी है वाके आदर करवे कूं श्रीजी कूं विज्ञापना करी है ।। तब मर्यादा समुद्रन कूं हू पालना करवे वारो सो ईश्वर श्रीजी जब मान देते भये हैं तब सगरी सखी मिलि के कहें हैं के या बहूजी कूं अंक में ग्रहण करके ही भीतर जायके फेरि आप इहां पधारो ।। सो ऐसे हू हाथन कूं बांधि के हम करुणा सागर आप कूं विज्ञापना करें हैं ।। हे महाप्रभो यह कुलाचार है ।। तासूं ऐसे

ही करनो होयगो ।। तब सो श्रीजी हू उच्छल्लित श्रृंगार रस सार के सर्वस्व वारिधि हैं ।। तासूं सो प्राणनाथ मंद हास्य सहित के विनकी विज्ञप्ती को कष्ट सूं जब मानत भये हैं ।। तब सखीन की अनेक विज्ञापना सूं हू न मान रही जो बहूजी हैं वाकूं यह तो हमारो कुलाचार है ।। कुलाचार कूं उल्लंघन करवो योग्य नहीं ।। ऐसे कह्यो भयो सो कुलाचार ही सखी द्वारा बहूजी कूं मनावत भयो है ।। अब लक्ष्मी कूं नारायण जैसे होय तैसे अपनी वा प्रिया कूं अंक में लेकर सहित विलास के भीतर पधारत ही श्रीजी देखवे वारेन के हृदय में अपार रस के समुद्रन कूं वर्षा करत भये हैं ।. जासूं विनके चित्तन कूं हू द्रविभूत करत भये हैं ।। अंक में शोभायमान होय रही है मृगनयनी श्री बहूजी जाके ऐसे भीतर पधारके निवृत्त भये वा श्रीजी को दर्शन कर रही जे स्त्रीजन हैं विनके नयनों में जे हर्ष के समुद्र निमर्याद भाव कूं प्राप्त भये हैं विनमें एक समुद्र के हू पारतल परिमाण तैसे स्वरूप कूं सर्वज्ञन के सहस्त्र शत कोटि हू निर्णय करवे कूं समर्थ नहीं होय हैं एह निश्चय है ।। तब मंडप के समीप विन स्त्री जनों ने मंगल आसन रचना किये हैं तब स्त्री जनों ने सो प्रिया प्रिय आपस में सन्मुख ही पधराये हैं ।। तब अत्यन्त लज्जा कूं कर रही है ।। सो श्री बहूजी आंचार के गौरव सूं और कुल स्त्री गणों के अनुकूल वर्तवे सूं और अत्यन्त प्रिय श्रीमद् गोकुल के भूप पूरण परमेश्वर श्रीजी के अत्यन्त हर्ष सूं प्रफुल्लित होय रहे दोनों कपोलन में स्तंभ स्वेद रोमांच कंप आदि सात्विक भावन सो शोभायमान श्री हस्त सूं श्री बहूजी सुन्दर पिसी भई हरदी कूं लेकर जब लगावत भई हैं ।। तब सो श्रीजी वाकूं अमृत लेपन ही मानत भये हैं । सो चिरकाल सूं वांछित वा समय कूं प्राप्त होयके सो प्रभु तैसे कुलाचार में अत्यन्त प्रसन्न होवत रस सागर श्रीजी शोभादिकन सूं प्रेरणा भये थके तब चातुर्यता के सागर प्रभु श्री बहूजी के कपोलों में हरदी सूं लेप कूं करत भये हैं ।। तब शोभा आदिकन ने श्री बहुजी और श्रीजी के वस्त्रन में ग्रंथि बंधन कियो है ।। सो ग्रंथी बंधन परम भाग्यवान तदीय अपने बुद्धिमान कृपापात्रन कूं गुप्त अथवा प्रगट अपनो भाव यह कहेत भयो है के यह श्रीजी या बहूजी के विना क्षणमात्र हू नहीं ठहेरे हैं यासूं ही यह जैसे बाहिर वस्त्र में हू दृढ बांधे हैं ।। सो जैसे आपस में चित्त में हू सुन्दर स्निग्धन ही सर्वदा यह अपनो भाव ग्रन्थी वन्धन ने सूचना कियो है ।। तब रस सागर श्रीजी या बहूजी के श्रीमुख कमल में सहित भाव

के दृष्टिन कूं व्यापार वारो करत और स्त्रीन के हू चित्त कूं हर लेते भये हैं ।। तब श्री बहूजी ने हू जो दृष्टि भली प्रकार आज्ञा करी भई है ।। तथापि मेरे प्रभुन की वा बहूजी के आलिंगन में समय जो सो दृष्टि है सो हम दासन कूं शुद्ध करे पालन करे भावदान करे तब तहां स्त्रीन के बाजे बाजत भये हैं । और स्त्रीजन मंगल गान करत भयी हैं । और भक्तिवारी स्त्रीजन हैं सो जिनके न तो समान है और न तो अधिक है ऐसो जो दुर्ल्लभ प्रिया प्रिय कूं यह मिलन है वाको दर्शन करत ही अपने जन्म कूं सफल कर मानती भई हैं ।। और प्रियाजी कूं जो श्रीमान शोभावारो मुखचन्द्र है वाकी सौन्दर्य रूप लहेरी के जे समुद्र हैं जे दृष्टि द्वारा श्रीजी के हृदय में और रोम रोम में प्रविष्ट होय गये हैं विनसूं वश भये थके सो श्रीजी प्रियाजी के चरण कमल में प्रणत होते भये हैं ।। तब बड़ो पुण्यात्मा कुलाचार ही व्याज रूप होतो भयो है ।। वो श्रीजी कूं सेवा कर रह्यो है ।। तब लज्जा सूं प्रिय के स्पर्शामृत के पान में विमुख होय रही जो श्री बहूजी हैं वाकूं दूर करिके वा बहूजी के जे हस्तकमल हैं सो स्वयं हू स्वतन्त्रता कूं प्राप्त होय के आपस में मिलि के आगे सूं होय के चरण कमल युग्म कूं आवरण करत ही इहां प्रणाम के रोकवे की मिस सूं वा श्रीजी के अत्यन्त स्पर्शामृत रूप समुद्रन कूं पान करत कितने क्षण पर्यन्त कृतार्थता कूं होते भये हैं ।। सो प्रिय श्रीजी कूं जो श्री मस्तक है सो प्रिया श्री बहूजी के श्री हस्तकमलों के स्पर्शामृत रूप समुद्रन कूं पान करत आपकूं कृतार्थ मानत भयो है ।। अब प्रियाजी को श्री मस्तक हू हस्त कमलों की तैसी कृतार्थता कूं जानके और प्रिय के श्री मस्तक की कृतार्थता कू हू जानके अपनी हू कृतार्थता करवे कूं प्रिय श्रीजी के चरण कमलों में स्पर्शामृतन के समूहन के लाभ रूप लोभ सूं स्वतः ही पतन करवे की इच्छा वारो भयो थको ही कुल के जे स्त्री गण हैं विनके वाणीन के समूह रूप सहायक कूं प्राप्त होयके सौभाग्य वारेन में महा श्रेष्ठ परम बुद्धिमान प्रियाजी को श्री मस्तक जो तैसे ही श्रीजी के चरणारविन्दों में अवलंबन कूं करत भयो है ।। तब प्रियाजी की जे सखी हती सो सहित हांसी के वा प्रिय पुरुषोत्तम श्रीजी कूं कहत भई हैं के यह सत्य है ।। तुम चतुरन के शिरोमणि रूप हो ।। ऐसे तुमकूं हम निश्चय जानें हैं ।। सो तुम यदि हमारी सखी के कंचुकी कूं यत्न सूं हू खोलोगे तो खुली हैं कंचुकी जाकी तासूं कियो है अभ्यंगादि जानें ऐसी यह प्रिया अन्य स्त्रीन

कूं हू दुर्ल्लभ जो अनिरवचनीय रस है वामें निमर्ज्जन करेगी ॥ तब वा प्रियाजी की कंचुकी में जे ग्रन्थी हैं जो अत्यन्त विषम हैं और दृढ़ हैं ॥ जे वाकी सखी जनने नर्म हास्य रस की वृद्धि के अर्थ कठिनता सूं खुलवे वारी रचना करी है ॥ विनकूं हँसि के खोलवे में इच्छा वारे जे अत्यन्त प्रिय श्रीजी हैं वाको प्रथम प्रस्थान कर रह्यो जो श्रीजी को दक्षण हस्त है वाकूं परम चतुर जो श्री बहूजी हैं सो पाणिग्रहण में और हलदी के लेपन में और प्रणाम के रोकवे में प्राप्त भयो आस्वाद जाकूं ऐसे और परम सुन्दर हैं मनोहर हैं और निरन्तर प्रिय श्रीजी के स्पर्श रूप अमृत समुद्रन कूं पान करवे की इच्छा वारो है ॥ और सखी गणन की प्रेरणा सूं अधिक बल कूं जो प्राप्त होय रह्यो है ॥ कुलाचार सूं तो महा अस्त्र रूप है सो ऐसे अपने हस्त सूं सो बहूजी महासुख के प्रतिबंध में महा उद्यम वारी वा लज्जा कूं रोक के श्रीजी के वा दक्षिण हस्त कूं दृढ़ ही ग्रहण करती भई है ॥ तब तहां या श्रीजी के ठाड़े होय रहे पुलकन के समूह सूं तोंद कूं पीड़ा कूं प्राप्त होय रही हू सो प्रियाजी ता पीड़ा कूं हर्ष रूप ही मानती भई है ॥ तब तेल विशेष सूं भरी भई विन ग्रंथीन कूं खोलवे लिये दूसरे कमल सूं और प्रारंभ करत भये हैं ॥ सो यद्यपि अनंत ब्रह्माण्ड के सर्ज स्थित नाशादिक जा श्रीजी की इच्छा मात्र सूं हू जाके अंशाशो के हू अशांश रूप पुरुषादिक वा क्षण में हू कर दे है न के रंचमात्र हू विलम्ब करे है सो वा प्रिय कूं प्रियाजी के कंचुकी के खोलवे में महा बिलंब ही होतो भयो है ॥ सो तो केवल प्रिया प्रिय के और इनके सखीन के रस कूं बढ़ायवे अर्थ ही विलंब होतो भयो है ॥ सो जैसे वे ग्रंथी शिथल नहीं होय है तैसे तैसे बहूजी की पक्षवारी स्त्रीजन रस गारी मय सुन्दर गान कूं हंसत हंसत करें हैं तहां वर कूं और वरपक्ष वारी स्त्री जनन कूं मुदित करें हैं और बारंबार निरन्तर लज्जित हू करें हैं ॥ तब वर पक्ष वारी स्त्री हू विनकूं जय सूं प्रसन्न भयी देखिके आपस में मिलिके बाहिर जिनमे स्तुति होय और भीतर रसमय गारी होय ऐसे नागर रस सूं संबंधवारी नीति सूं सुन्दर गीत गान करत भयी हैं ॥ तब विनके गान और स्वर तालादिकन सूं माधुरी की संपदा सूं और रीति सूं वर और वहूजी बहुत प्रसन्न होते भये हैं ॥ ऐसे और प्रकार सूं दुर्ल्लभ हर्ष के समूह कूं भेट करिके सो परम चतुर बुद्धिमान विलंब हू अन्तरध्यान होतो भयो है ॥ तब रस सागर श्रीजी हू सहित विलास और मन्द हास्य के और रोमांच वैसे कंप के उच्छल्लित होय रह्यो है प्रेम समुद्र को प्रवाह जामें ऐसे

देखत ही कंचुकी के ग्रंथीन कूं खोल के तहां स्थित जे स्त्री हैं विनके हू दुःख सूं खुलवे वारी जे हृदय की ग्रन्थी हैं विनकूं हू खोल देते भये हैं ॥७५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां जी श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले सप्तदश स्तरंग समाप्तम् ॥१७॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग अठारहमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टदसमो तरंग लिख्यते ॥१८॥

श्लोक -- **तदा जय जयेत्यूंर्हषोत फुल्लान नांबुंजाः ॥ वर पक्ष स्थिताः सर्वाः बंधु वधु पक्ष स्थिता अपिः ॥१॥**

याको अर्थ -- जा समय में श्रीजी श्री बहूजी के कंचुकि के ग्रंथिन कूं खोल देते भये हैं ॥ वा समय में हर्ष सूं प्रफुल्लित है मुख कमल जिनके ऐसी जे वर पक्ष वारी स्त्रीजन हती सो जय जय ऐसे करत भई हैं ॥१॥ तब शोभा आदि के विज्ञापना सूं और कुलाचार के वश सूं हू वधु पक्ष में स्थित जे स्त्री हैं विनके अनंत मनोरथन सूं रसात्मक जे वे वे स्त्री हैं विनके जे कपोल हैं सो रोमांच रूप हैं कंचुक जिनमें और जे हर्ष के उद्देक सूं प्रफुल्लित होय रहे हैं और प्रकाशमान होय रहे हैं अपनो प्रतिबिम्ब जिनमें ऐसे विन कपोलों में सुन्दर हस रह्यो है श्रीमुख जाको और तैसे प्रफुल्लित होय रहे नेत्रन के विलास सूं मिले भये हैं और अपने सौंदर्य सूं विजय कियो है अनन्त मनमथ कामदेव की शोभा जाने ऐसे श्रीमद् गोकुल के सुन्दर निधि रूप श्रीजी कल्पवृक्ष के नवीन पल्लवन कूं विजय करिके विलास वारो जो अपनो हस्तकमल है वासूं सो उच्छल्लित रस सागर रूप श्रीजी हरदी कूं लेकर आछी रीति सूं लेपन करत भये हैं ॥ सो श्रीजी ने लेपन करी है हरिद्रा जिनमें ऐसे जे विनके मुख हते सो सूर्योदय में प्रफुल्लित होय रहे सुवर्ण के कमल जैसे होय तैसे प्रफुल्लित होते भये हैं ॥ तब बहूजी हू अपने पक्षवारी स्त्रीजनन सूं प्रेरणा करी भई ही वर पक्ष वारी स्त्री जनों के कपोलों में हरदी कूं लेपन करत भई हैं तब अपने पक्षवारी स्त्रीजनों के कपोलों में हरदी लेपन में प्रवृत्त होय रहे अपने प्रिय कूं

देखके तब विन अपने पक्ष वारी स्त्री जनों की प्रेरणा सूं असुया वारी होयके वेग सूं कुमकुम के द्राव सूं भरी भई एक कंचन कलसी कूं उठायके मंद मंद ही चलके हसि रह्यो है श्रीमुख जाको सो श्री गोकुलेशजी के पीछे सूं अपने कंकण के शब्द और मंजीर नूपुर के झंकारन कूं रोकत ही दृष्टि के संकोच सूं प्रिय के सखीन में प्रभुन कूं जतावतो निशेध करत ही वेग सूं पधारके अधिक जे वे कुमकुम के द्रव हते विनसूं जे श्री गोकुल के जीवन रूप अपने प्रिय कूं श्रृंगार रस रूप देशन के समूह में सार्वभौम भाव कूं प्राप्त करत सिंचित कर देती भई हैं ॥ तब सखीन सूं मिले भये ही सो प्रियजी हंसि रह्यो है श्रीमुख जाको और उपाय के न करिवे सूं प्रसन्न होय रही है ऐसी वा अपनी प्रिय बहूजी कूं देखिके आनन्द के समुद्र में निमग्न होय जाते भये हैं ॥ सो श्रृंगार रस के सागर रूप प्रभुजी वा रस में मग्न होते वा अपने स्वरूपात्मक श्रृंगार रस संबंधी कुंमकुंम द्रव के समूह रूप कलोलन की कोटिन में वा प्रियाजी कूं मज्जन करावते भये हैं ॥ जासूं वा प्रियाजी के बिना श्रीजी हू स्थित नहीं होय सके हैं और वा प्रियाजी की सखीन कूं और वाके पक्षवारी और स्त्रीन कूं हू वामें मग्न कराय देते भये हैं ॥ सो स्त्री हू वा रस सागर के विन कल्लोलों में वे जब रस सूं हू सगरी स्त्रीजन सर्व प्रकार सूं निमग्न होती भई हैं ॥ तथापि विन सखीन के भारी रस रूप आपस में जो जय की इच्छा है सो तो निमग्न होती भई हैं ॥ प्रत्युत विनकूं हू विन लेहैरीन सूं निकास लेती भई हैं । तासूं सो उदय ही अत्यन्त जय कूं प्राप्त होतो भयो है सो फेरि हू अपनी सखीन सूं तैसी लीला में प्रेरणा करी भई सो श्री बहूजी कारे पीरे श्वेत लाल हरे गंध चूर्णन कूं लिवाय के और कृष्णागर के द्रव्यन सूं बहुत उबटनो और अत्यन्त पापड़ और प्रथम कही वे सगरी फूलमाला उठवायके सहित उत्साह के अपने पक्ष वारी स्त्रीन कूं आगे दे करके अपने प्रिय कूं जय करवे लिये सो बहूजी पधारती भई हैं ॥ सो तहां आय रही अपनी प्रियाजी कूं देखके सो प्रिय श्रीजी हू अपने सखी जनन सूं विन सूं हू अधिक वस्तुन कूं उठवाय के विन सखीन कूं आगे देकरिके स्वयं हू श्रीजी पधारे हैं तब बाजे बाजते भये हैं ॥ और करोड़न गीत प्रगट होते भये हैं दोनों पक्षन में जय जय शब्द होते भये हैं ॥ तब वधू पक्ष वारी स्त्रीजन आपस में सर्व प्रकार सूं मिलिके ही श्रीजी के पक्ष वारी स्त्रीन के नैनन में और कानन में और मुख में गंध चूर्णन कूं डार के और हलदी

के रस सूं और केशर के रस सूं न्हवाई भई वे नख सूं लेकर मस्तक पर्यन्त गंध चूर्णन सू छिरकी भई और विन विन अंगन में अगरु के रसन सूं लेपन करी भई और उबटने सूं हू लेपन करी भई सो अत्यन्त व्याकुल होय जाती भई ॥ उदंवर के फल आदि सूं जे माला रचना करी हती वे हू इनकूं पहेराय देती भई हैं ॥ और इनकूं जोर सूं पकड़के इनके माथे पर अनेक पापडन के टुकड़े कर देती भई हैं ॥ ऐसी सो प्रिय के पक्ष वारी स्त्री गण पीछे पिरके श्रीजी के निकट आयके अत्यन्त लज्जित भई थकी श्रीजी ने हू कठिन प्रकार सूं पहेचानी है सो ऐसी वे सगरी बहूजी की और बहूजी के पक्ष वारी स्त्रीन कूं अत्यन्त व्याकुल कर देती भई हैं सो हू व्याकुल भई थकी ही तहां ठहरवे कूं समर्थ न होती भई हैं ॥ प्रौढ़ कूं कहेत भई हैं के जय जय बहूजी और वाके पक्षवारी स्त्रीन में हम सूं बहुत करी है ऐसे कहेत भई हैं ॥३१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरा श्री गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले अष्टदश स्तरंग समाप्तम् ॥१८॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग उगनीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ उगनीसमो तरंग लिख्यते ॥१९॥

श्लोक -- **अथ प्रियतमा सर्वास्मितेना स्वास्थीतास्तदा वधु पक्षस्थ नारीषु गंध चूर्णस्य या किरनुः ॥१॥**

याको अर्थ -- तब श्रीजी ने अपनी मंद मुस्कान सूं स्वस्थ करी जे वे सगरी अपने पक्षवारी स्त्री हती सो बहूजी के पक्षवारी स्त्री जनों में गंध चूर्ण कूं वर्षा करत भई है ॥ तब सो रसिक शिरोमणि श्रीजी अपने पक्षवारी स्त्रीन के आगे होते भये हैं ॥ तब श्रीजी की ये जो अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करवे वारे स्वाभाविक अनेक प्रकार के अपने दृष्टि के विलास हैं और असंक्षात मंद हास्य के भेद हैं और तैसे ही असंक्षात स्पर्श के भेद हैं और वाणी की मधुरता के भेद हैं और मुख चन्द्रमा की कांति के समुद्र हैं और मुक्ताहार के आंदोलन हैं और श्री अंग की कांति के समुद्र हैं ॥ और रत्नाभरण के समुद्रन के विलास वारे

कांति के समूह हैं और चरण कमल के धारण रूप भेद हैं और भुजा के जे चांचल्य हैं जे विचार वारे के तो वेग ही हृदय कूं प्रवेश करवे वारे हैं ।। ऐसे विन करके लौकिक अलौकिक सगरे पदार्थन सूं जय करके शोभा वारो और करोड़न काम के सौन्दर्य कूं तिरस्कार करवे वारी है शोभा के समुद्र जामें ऐसे अपने स्वरूप करके नेत्रन में हृदय में हू और सगरे स्त्रीन के सगरे अंगन में और रोम रोम में ही प्रवेश करके अनुभवैक वैद्य अलौकिक और मन सूं अतीत भावानंद रसोल्लास मयी मुक्ति रूप अवस्था कूं प्राप्त होय रही जे वे सगरी बहू पक्षवारी स्त्रीजन हती सो अपने ही वस्त्राभरण और देह के रक्षा में हू समर्थ नहीं होती भई हैं ।। सो प्रथम जैसे विन स्त्रीन के संग अथवा प्रभून के संग क्रीड़ा करवे में कैसे समर्थ होय तब श्रीजी अपने पक्षवारी स्त्री जनों के आगे भये हैं ।। तब बहूजी के पक्षवारी स्त्री गणन कूं जय करवे लिये प्राप्त भयो है बल जिनको ऐसी जे श्रीजी के पक्ष वारी स्त्री गण हती सो सगरी ही खेलवे कूं पराक्रम करत भई हैं ।। तब हरदी के द्राव कूं और पिसी भई हरदी कूं और कुंमकुंम के रस कूं और विविधि वर्ण वारे गंध चूर्ण कूं और अग़र के द्राव कूं नाना प्रकार के उवटना कूं विन स्त्रीन में तैसे तैसे वर्षा करत ही बारंबार बढ़ि रह्यो है रस जामें ऐसे खेल कूं करत भई है ।। तबतहां कहूं तो प्रभुन के विहार की जो भूमि हती सो तो अत्यन्त शोभायमान होती भई है ।। सो कहूं तो अगरु द्रव के पंक सूं मिली है और कहूं तो घोंटू प्रमाण है हरदी को रस जामें ऐसी होय रही है और कहूं तो गंध चूर्ण के समूह सूं प्रगट होय रही है सुन्दर पर्वत की शोभा जामें ऐसी होय रही है ।। और कहूं तो गिरे भये सुवर्ण के अलंकारन के समूहन सूं और लाल रत्नन सूं सुमेर पर्वतन कूं धारण करत जैसी होय तैसी ही शोभायमान होय रही है ।। और कहूं तो गुलाबी पट वस्त्र के समूहन सूं मिलि रह्यो जो कुंमकुंम रस है वाकूं धारण करत सरस्वती नदी कूं धारण करत जैसे होय तैसे शोभायमान होती भई है ।। सो ऐसे टूटे हार मुक्तान के समूहन सूं भर रहे मार्ग में गिर रही जे वे सगरी स्त्रीजन हैं सो प्रिय कूं हर्षित मंद हांसी वारो करत भई हैं के ऐसे पराजय वारी जिनकूं देखिकें श्रीजी हू हंसते भये हैं ।। विनमें एक तो मुख के विना और सगरे अंगन में हरे रंगवारी सुन्दर गंध चूर्ण सूं लेपन करी भई सो प्रफुल्लित होय रह्यो है कमल जामें ऐसी पद्मिनी सरसी जैसे प्रिय के पक्षवारी

मृगनयनी जे अगर के द्रव वर्षा करे हैं ॥ विनसूं बहूजी के पक्षवारी गोरे अंग वारी हू स्त्री जन नीलकमल की शोभा कूं धारण करत भई हैं ॥ विनमें एक तो प्रिय ने वर्षा करे अगर के द्राव में गिरि जाती भई है ॥ और भाग्य वारी कूं तो श्रीजी स्वयं हू हसत हसत उठावते भये हैं ॥ ऐसे प्रिय के पक्षवारी मृगनयनी स्त्रीजनों ने बहूजी के पक्ष वारी स्त्रीजनों कूं बल सूं ही वा हरदी के खेल में सुगंधी फुलेल की नदीन में कितनी एक तो न्हवाय दीनी हैं । और कितनी एक तो कृष्णागर के पंक में बारंबार शयन करायी हैं ॥ और कितनी एक तो कुंमकुंम के रंग सूं रंगी हैं ॥ और कितनी एक कूं तो प्रथम कही फूलन की माला पहिराय के बहुत लज्जित करायी है ॥ और कितनी एक तो नाना वर्ण वारे गंध चूर्णन सूं छिरकी हैं जासूं बड़े चतुर जन हू जैसे तैसे जिनकूं जानिवे में समर्थ नहीं होते भये हैं ऐसी करी है ऐसे या प्रकार सूं अपने पक्ष के उपमर्दन होने पर बहूजी की जो सगरी सखी हती सो विचार करत और उपाय कूं न देखत ही अपनी जय के अर्थ अपने वर्ग के आगे अनन्त लक्ष्मीन के शोभा कूं मर्दन करवे वारो है सौन्दर्य जाको ऐसी बहूजी कूं हू करत भई है ॥ सो डरे भये ही हिरण के शावक जैसे हैं नयन जाके ऐसी वा बहूजी के चारों ओर सूं स्वाभाविक अलौकिक उदय होय रहे जे आनन्द समुद्रन के समूहन कूं वर्षा करवे वारे सो सो विलास हैं विनसूं प्राणनाथ श्रीजी के दृढ नयन रूप खंजरि युग्म हते सो बंध गये हैं ॥ और मन रूप तो महा मत्त गज रह्यो सोहू सांकल सूं बांध्यो भयो है । जब तो श्रीमद् गोकुल के अलंकार रूप अधिकारी श्रीजी हू स्वयं अनिरवचनीय रस के हजारन समुद्रन में निमग्न होय रहे हैं और विन रस के समुद्रन में पूर्ण चन्द्र सूं हू अधिक जाको श्रीमुख है और जो सदैव ही अपनी सहचरी है ऐसी वा बहूजी कूं निमग्न कर रहे हैं । तब दोनों प्रिया प्रिय के जे सगरी सखी गण हती सो हू तैसे और स्त्री गण हू अपनी अपनी जय इच्छा के संग ही मन और दृष्टि के संग ही आपस में रसास्वाद विलासामृत सिंधुन में निमग्न होय जाती भयी हैं ॥ ऐसे जय कियो है रंगादि अप्सरान को रूप जाने ऐसी विन स्त्रीगणन सूं चारों ओर मिले जे प्रिया प्रिय हते सो ध्यान करवे में हू अत्यन्त दुर्ल्लभ जैसे होय तैसे ही अत्यन्त शोभायमान होते भये हैं ॥ तब विन स्त्री गणन के जे हजारन करोड़न मनोरथ रूप समुद्र हते और प्रिय संबंधी प्रेम की वा कृपा उत्कंठा रस अर्बु समुद्र हते

और सहित विलास के देखनो स्पर्श करनो मंद हास्य रूप अमृत के जे समुद्र हते और जे रूपामृत के लाखन खर्वन के अयुत समूह रूप जे सागर हते और तिस तिस भूषण और श्रेष्ठ रत्न और अंगन की कांति रूप जे समुद्रन के समूह हते और परार्द्ध कोमल करोड़न परमित वलय किंकिणी नूपुरुन के जे अलंकार रूप करोड़न समुद्र हते और हू जे नर्म वचन गान के समूहन सहित ताल दान रूप समुद्रन के समूह हते और हू जे तिस तिस के गुण क्रिया चातुर्य सौन्दर्य कांति रूप समूह हते और जे रस भाव विलास नाम वारे तिस तिस करोड़न अपार सागरन कूं रोम रोम में हू जे धारण करे हैं ऐसे जे बहूजी संबंधी रस रूप महा समुद्रन के हजारन अयुतन कोटि हैं ॥ सो रस कूं स्त्रवंत हू श्रृगार रस सार के महा सागर रूप श्रीमद् गोकुल के सर्वस्व रूप श्रीजी में वे सगरे ही जा निमर्याद महा रससिन्धु कूं भली प्रकार प्रकर्ष करके क्षुभित करत भये हैं ॥ के संगम कूं प्राप्त होते भये ही अत्यन्त उच्छल्लित करत भये हैं ॥ सो या महानिमर्याद महा रससिंन्धु कूं कहा के हे मूर्ख चित्त तुम कहा वाकूं उतोलन कर सके हैं ॥ निश्चय सूं इन समुद्रन में एक बूंद कणिका कूं हू तुम तो लेवे में समर्थ नहीं है और तुमसूं हू अधिक हू नहीं है सो या रस सागर की मर्यादा कहा है । तासूं यह महा निमर्याद है ॥४५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले उगनीस स्तरंग समाप्तम् ॥१९॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग बीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ बीसमो तरंग लिख्यते ॥२०॥

श्लोक -- **अथ शोभाय्यां स्तत्राभ्यर्णमेत्यं महाप्रभो होमकाल समासन्नं सुचयंतिस्मसु प्रभो ॥१॥**

याको अर्थ -- तब तहाँ श्री शोभाजी आदिक स्त्रीगण श्री महाप्रभुन के निकट आयके निकट आये होम काल कूं सूचना करत भई है के हे प्रभो होम काल तो निकट आय गयो है तब वर और बहूजी दोनों कूं लेकर सुन्दर आसन पै पधराय के विनके अंग अभ्यंग उवटने आदि कूं ही सखी द्वारा वाद्य गीत

के सहित ही करती भई है और स्वतह ही जो सगरे जगत कूं पवित्र कर रहे हैं ऐसे विन बहू - वर के पवित्र करवे कूं मंगाये जे जल हैं सो अत्यन्त लज्जा कूं प्राप्त न होंयगे ? किन्तु प्राप्त ही होंयगे। यह मानके परम बुद्धिवारी स्त्रीजनों ने कियो है आचार प्राप्त रात्रि संबंधी विहार रूप स्नान जिनोने सो ऐसे बहू-वर के स्नान के लिये वे जल नहीं लाये हैं। किन्तु जलों के पवित्र करवे कूं हू लाये हैं और जो यह बहू-वर तैसे अपने स्वरूप सूं सर्वदा ही केवल चतुर्दश त्रिलोकी कूं बी नहीं भूषित करे है किन्तु वैकुण्ठन के समूहन कूं हू भूषित करे है और विनसूं हू अधिक मथुरा मंडल कूं हू चारों ओर सूं भूषित करे है ऐसे विन वधू-वर कूं नाना विधि आभरणन सूं वे भक्ति वारी स्त्रीजन भूषित करती भई हैं सो जासूं विन स्त्री गणन कूं जो अखंडित प्रेम है सो वा श्री गोकुलाधीशजी के हृदय में हू हर्ष के उछलित तरंग वारे अनेक समुद्रन कूं धारण कर रह्यो है। ऐसे विनके प्रेम कूं हों वन्दना करूं हूँ यद्यपि विन विन भक्तन के तिस तिस कार्य के अर्थ परम उत्तम अवतार श्री गोकुलाधीश जी के असंक्षात हैं और विन विन अवतारन में हू सो सो लीला उत्तम भई है। सो हू आनन्दमयी है परन्तु जे लीला आप स्वयं श्री गोकुलेशजी ने करी है यह आगे और जिनको वर्णन करें हैं सो विन लीलान के तो सोड़सो कलान कूं हू वे सगरी हू योग्य नहीं हैं। यह हमकूं दृढ़ निश्चय है। और जो महाभाग्यवान इहाँ विवाह में अपनी कृपा सूं आचार स्थाप्रन कियो है सो वा आचार की संमत्ती सूं मंडप में विछायो जो सुन्दर अमूल्य हिममय पाट है तामें प्रियाजी के सहित ही श्रीजी विराजमान होय के सो धर्म की रक्षा अर्थ हू जिनको प्रागट्य है और जासूं दयालु हैं तासूं ऐसे प्रभुन के वेदी में प्रज्ज्वलित होय रही अग्नि में यथाविधि होम कियो है फेरि वेणा भट्टजी की प्रार्थना सूं गुणसिन्धु जे महाप्रभु श्रीजी हैं सो दिन में अपने बंधु और अंतरंग के सहित ही वाके घर में भोजन करत भये हैं और रात्रि में हू सगरे परिवार के सहित श्रीमद् गोस्वामीजी के संग हू प्रथम जैसे भोजन कूं करत भये हैं सो अपने बन्धु अंतरंग के संग ही दो वार भोजन और हरदी को खेल और वाके घर में ही विराजनो अत्यन्त प्रिय बहूजी के संग शयन यह चार दिनन में होतो भयो है। दिन में श्री बहूजी के संग हरदी के खेल के अनन्तर श्री महाप्रभुन की सुन्दर मनोहर पुंग विहार प्रवृत्त होतो भयो है जा ही पुंगी फलन सूं भरी भई मुष्टी कूं क्रीड़ा

परायण जो वर श्रीजी हैं सो खेलिवे वारे कूं कहे है के कहो के मेरी मुष्टी में पुंगी समान संख्या वारे हैं के विषम संख्या वारे हैं । तामें जो खेलवे वारो जैसे कहे यदि मुष्टी में हू तैसे होय तब तो जय होय नहीं तो पराजय होय। सो जाको पराजय होय सो जय करवे वारे कूं मुष्टी में जितनी पुंगीफल होय वितने पुंगीफल अथवा मुक्ता फल वितने रत्न अथवा सुवर्ण सो अपने वाणीबंद के अनुसार और वस्तु हू सो देवे है । सो या प्रकार कूं जो बहू-वर को खेल है सो सगरे भक्तन कूं अत्यन्त सुखदायक है जामें पराजय हू एक कूं जय कूं हू अपनी ही जाने है न के केवल अपने जय कूं हू अपनो जाने है जासूं तामें जय कूं प्राप्त भये श्रीजी प्रिय पुंगीफल सुवर्ण मणि मुक्ताफलन कूं अपने अंतरंगन के प्रति हू अधिक देते भये हैं ऐसी श्री बहूजी हू जय कूं प्राप्त होय के अपने सखीजन आदि प्रति देती भई है और सखीजनन सूं बारंबार विज्ञापना करी भई हू लज्जा सूं बड़े यत्न सूं प्रिय श्रीजी के प्रति हू देती भई है सो या प्रकार जे भक्त हैं विनके प्रति हू सुख को दान करत क्षण क्षण में हू सो बहूजी बढ जाती भई हैं और श्रीजी हू अत्यन्त रुची वारे भये हैं याके विना और न रुचती भई हैं तब चतुर्थ दिन में यथायोग्य प्रभुन ने होम कियो है और रात्रि में लोक सिद्ध जो नागवल्ली नाम कृत्य हतो सो होतो भयो है तामें सगरो आंगन ही चन्दन के अगरु कुमकुम कस्तूरी घनसारन सूं चन्द्रमुखी स्त्री गणों ने लीप्यो है तामें स्वस्तिक के साथिया बनाये हैं और हजारन रंगवल्ली बनाई है और हू अनेक प्रकार के मंडल बनाये हैं और चारों ओर सूं प्रकाशमान पीरे श्वेत हरे लाल कारे तंदुलन सूं सर्वतोभद्र बनाये हैं तहां माटी के पात्र हैं नाना विधि वर्ण सूं शोभित हैं चित्रित हैं सो स्थापना कियो है और चणां की दार तंदुलन सूं तहाँ खीचरी पूरी है और हरदी हू तहां धरी है और गेहूं के दीपक हैं जे हरदी सूं रंगे हैं सो हू मंगलदायक मंडप के चारों ओर धरे हैं और हू छोटे मोटे पात्र श्वेत करके तहां यथायोग्य ही स्थित किये हैं और संबंधी हू बुलवाये हैं सो वा आंगण में सगरे आयकें विराजमान भये हैं और तहां पार्वती के संग महादेव और लक्ष्मी के संग नारायण और कुलदेव यह सगरे कुलाचार के अनुसार लिखे हैं और सगरे आभरणन सूं शोभायमान और दिव्य पुष्प माला वस्त्रन कूं धारण करत वधु वर हू तहाँ पधारके भक्तन के तैसे और हू जनन के नेत्रन में सुधा की वर्षा कूं करें हैं । तब मृगनयनी स्त्रीजनने वस्त्र में बांधी

है ग्रन्थी जिनके ऐसे बहू-वर जी पीत पटुन के वस्त्रन सूं शोभित सुवर्णमय पीठ में विराजमान करत भई हैं तहां श्री महाप्रभुन के समीप हू श्री गोस्वामीजी और पद्मावती जी विराजे हैं और हू तहां निकट बंधु वर्ग हू बैठतो भयो है और श्रीजी के जो भक्त हैं चाचा हरिवंशजी जिनमें मुख्य हैं ऐसे वे सगरे और दामोदरदासीजी आदि भक्त स्त्रीगण हू चारों ओर सूं विराजमान भये हैं तब आचार्य ने जैसे विज्ञापना कर्‌यो है ता रीति सूं श्री महाप्रभुजी लक्ष्मीनारायणादि की के मंत्रपूजन कूं करत भये हैं तहां बहूजी के माता स्थान में अभिषेक करी भई जो वेणाभट्टजी के श्याला की स्त्री है सो कितनी एक बंधुन की स्त्रीन सूं मिली भई हू अपने हाथन में पूजित जो चित्रित खीचरी सूं भर्यो जो माटी को कुंभ है वाकूं धारण करके तहां आयके स्थित होती भई हैं और तहां और हू सौभाग्यवारी स्त्रीजन तांबूल जल के पात्र कूं धारण करके स्थित भई हैं सो वे सगरी वधु-वर कूं आगे करके तहां लिखे भये लक्ष्मीनारायण आदि देवतान की परिक्रमा तीन वार करते भये हैं फेर या बहूजी के प्रति अपने वधुजन वस्त्रन कूं देते भये हैं और शुभ कूं आशा करत आशीरवाद करत श्री बहूजी के सीमंत में वे सगरी स्त्रीजन सिंदूर कूं धारण करती भई हैं ॥४६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां श्री गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले बीस स्तरंग समाप्तम् ॥२०॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग इक्कीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ इक्कीसमो तरंग लिख्यते ॥२१॥

श्लोक -- **तत्रागणे विदाधी मिस्तंडुलै ॥ कल्पितो गजाः एको परस्तुल वर्णैव्यवहार मनोहरः ॥१॥**

याको अर्थ -- तही आंगण में चतुर स्त्रीनने ऐक तंदुलन सूं गज रचना कियो है, दूसरो लवण सूं रचना कियो है ॥१॥ तब बंधूजन सूं प्रार्थना किये क्रपासिंधु श्रीजी जासूं व्यवहार में हू मनोहर है तासूं कौतिक के अर्थ और सदाचार के हू पालना के अर्थ तंदुल के गज पर विराजमान होते भये हैं तब

अपनी सखी जनन के कहिवे सूं सो दहूजी हू वा लवणमय गज के ऊपर विराजमान होती भई हैं तब वा सभा में ज्ञातिबंधु हते और भक्त स्त्री पुरुष हते सो तैसे वरके और तैसे बहुजी के उछल्लित तरंग वारे अमृत समुद्रन कूं तरवे वारो जो संवाद है वाकूं कानरूप दोनान सूं सगरे हूं पान करिवे की इच्छावारे भये थके ठाडे होते भये है तब अलौकिक बहू वर के दर्शन करिवे कूं प्रथम हौं जावुं हूं प्रथम हौं जावुं हूं या प्रकार सू आगे होने के ईच्छावारे जनो की ऐसी समृद्धि होती भयी है के जामें ऊँचे फेंके भये तिल हूं अवकाश के न मिलवे सूं भूमि तल कूं न प्राप्त होते भये हैं तब कुलाचार है सो उल्लंघन के योग्य नहीं है ऐसे कहे रही सखीजन हती सो श्री बहूजी कूं या प्रकार सूं विज्ञापना करत भई है के अपने प्रियकूं निर्भय होयके तुम ऐसे कहो हे दास लवण गज कूं लेकर मोकूं तंदुल को गज देओ या प्रकार बिनकी तेसी बारंबार विज्ञापना कूं बड़े चतुरन सूं पूजा योग्य है चरण कमल जाके ऐसी सो श्री बहुजी कानों में हूं नहीं धर्ती भई है के सुनती हूं नही भई है जब फेर अपने वा प्रिय के मनोरथ कूं जानती भई है तब कहिवे की इच्छा करत भई है सो हे नाथ ऐसो जो कहिवो है जहां कठोररूप है और हे प्रिय ऐसो जो कहेवो है सो तो उचित है और हे दास ऐसो जो कहेवो है सो जामें अनुग्रह विशेष होय है तहां ही होय है सो या प्रकार सूं जहां होय सो आपस में सो स्त्री पुरुष अनुरागी कूं यह यासूं जो यह और है सो नारी तो रजु जैसे वांधवे वारी है और पुरुष है सो ताप सूं सदृश है सो या इस प्रकार कूं जानत हू है तथा या रसनिधि प्रिय के प्रतिकूंल होयवे कूं न समर्थ भई थकी मेरे प्रिय को मनोरथ सुनिवे को मनोरथ है या कारण सूं हू बड़े यत्न सूं सो श्री बहुजी कहेती भई है के

दासोसिममनै वत्वं प्रेष्टः श्रेष्टोसि सर्वथा तल्लावणं समादाय गंज मेदे हिताङ्लं ॥१॥

या प्रकार गद-गद कंठ जैसे होय तैसे ही कांपत ही सो प्रियाजी बड़े यत्नसूं जो कह्यो है सो याकूं सहित हर्ष के सो प्रिय श्रीजी विचार करत भये है के बहू जी बहुत चतुर है तासू ऐसे श्रेष्ठ वचन कहेत भई है सो वाकूं दिखावे है के न तुम मेरे प्रिय हो और न तुम श्रेष्ठ हो जासूं तुम मेरे दास हो जासूं लवणमय गज कूं लेकर तंदुलमय गज मोकूं देवो जासूं सगरो पदार्थ दासकूं नहीं होय है किंतु स्वामिनि कूं ही होय है तासूं यह तंदुलमय गज हूं तिहारो

नही है किंतु मेरो ही है सो होंतो तोकूं ऐसे ही देवु हूं सो कृपा सूं जो लवणमय हस्ती हों देवूं हूं वाकूं बडे आदर सूं लेकरिके तंदुलमय हस्ती मोकूं मंद रूप सूं देवो सो या प्रकार के भाववारे वचन सूं जो बड़ी चतुर प्रियाजी बाहिर कूं रीति सूं कुलाचार कूं और सखीन कूं हूं अनुकूल करिके युक्त कहेत भई है और मोकूं हूं अनुकूंल करिके युक्त हूं कह्यो है के आप मेरे दास नहीं हैं। किंतु सगरे प्रकार सूं मेरे अत्यंत प्रिय ही और श्रेष्ठ हो तासूं मेरे यह लवणमय गज नून्य हू है तथापि अपनी प्रसन्नतासूं हूं अंगीकार करिके यद्यपि तंदुलमय गज बड़ो है तथापि तो अपनो गज मेरे प्रीति प्रसाद सहित के जैसे होय तैसे ही देवो या प्रकारसूं मेरे प्रति कहेत भई है सो या प्रकार सुनिवे वारेन के कानों में विशेष सूं तो मेरे कानों में और हूं दोनों पक्षवारेन के कानों में सुधा के समुद्रन कूं वर्षा कर रही जो श्रेष्ठवाणी है वाकूं कहेकर सो प्रियाजी तैसे उचित वचन कूं हूं कहती भई हैं सो या प्रकार सूं विचार करि के रस सागर श्रीजी वा प्रियाजी कूं कहेत भये हैं

''दास्यासित्वा ततो वच्मि स्वामिन्यर्प्यमप्यमु लावणं गज मादत्व तांदुलकिविलंवसे ॥१॥

जब या प्रकारसूं श्रीजी ने कह्यो है तब श्रीजी के इतने अक्षरन सूं उछल्लित अनंत तरंग वारे प्रवृत किये अनेक हर्ष के सिंधुन कूं पान करिके सो प्रियाजी विचार करत भई है के या प्रकार के वचन सूं मेरे प्रिय श्रीजी हूं कुलाचार कूं और लोकन कूं हूं अनुकूंल करिके ही यह जतावत भये है तुम जासूं मेरी दासी हो तासूं तोकूं विज्ञापना नहीं करूं हूँ किंतु कहूं हूं जासू हो प्रभु हू तासू मेरे मोकूं लवणमय गज अर्पण कर और तंदुलमय तिस गज को तुम लेवो और जासो तुम दासी हो तासूं प्रभुकी आज्ञा में तुमकूं बिलम्ब उचित नहीं है सो या प्रकार सूं प्रिय मेरे प्रति कहेत भये हैं और तो गर्म अर्थ कूं कहेत भये है के हे स्वामिनि जासूं तुम अत्यंत उदार हो तासूं प्राणप्रभू मेरे कूं तुम या लवणमय हस्ती कूं देवो तासूं हो कहू हूं के लवणमय गज मोकूं अर्प्पण करो तोकूं हो आज्ञा नहीं करूं हूं जासू स्वामी प्रति आज्ञा नहीं करी जाय है और तंदुलमय हस्ती कूं अंगीकार करो सो यामें विलंब योग्य नहीं है। तासूं प्रभू है सो अपनी इच्छानुसार चलत ही कछु अर्थ में कोई सूं ही निवारण नहीं कियो जाय है यह प्रसिद्ध है सो या प्रकार सूं मेरे प्रति श्रीजी कहेत भये हैं ऐसे श्री स्वामिनि

जी विचार करत भई है तब श्री महाप्रभुजी तंदुलमय गज कूं तहां छांडी के सहित विलास के लवणमय गज के ऊपर पधारते भये है और तैसे ही श्री बहुजी हूं तंदुलमय गज के ऊपर पधारते भये है तब प्रिया प्रिय की या विलासरस सागरन में मंज्जन करत जे भक्त हते विनके मुखन सूं जय जय ऐसे अनेक वचन प्रगट होते भये है तब अपनो जो कुलाचार है सो उल्लंघन करिवे योग्य नहीं है या प्रकार सूं बोध करि रही और हँस रही सखीन सूं बहुत वार चरणन में प्रणाम करिके वारंबार शिक्षा करी भई सो बहुजी श्रीजी के प्रति प्रियकूं मेने दास कह्यो है विन दास्योक्ति रूप दोष के दूर करवे अर्थ यद्यपि लज्जासूं सखीन के अनुकूंल होवनो योग्य नहीं है तथापि वाकूं बड़े यत्न सूं त्याग करिके पूर्वोक्त तैसे वचन के प्रयोग करिवेसूं प्रगट भये भयसूं ही मानो दास्योक्ति रूप दोष के दूर करिवे अर्थ डरी भई सरस्वती देवी सूं प्रेरणा करी भई हूं कंप पसीना रोमांच स्वर भंगादि सूं मिली भई ही या प्रिय के कानों में और हृदय में और सगरे अंगन में हूं अमृत के अनंत समुद्रन सूं रचना करत सो श्री बहूजी हे प्राणनाथ हे महाराजाधिराज पुरुषोत्तम तुम तो कृपासागर हो तासूं तुमारे विराजवेसूं प्राप्त भयो है सर्वसूं उत्कर्ष जाकूं ऐसे मेरे लवण के गजराज कूं आप प्रसादीरूप करिये तासूं आपुने जो अर्पण कियो है तंदुलमय गज सो मेने उपायन रूप लियो है या प्रकारसूं श्री प्रियाजी कहेत भई है तब प्रिय श्रीजी हूं वा प्रियाजी के वचनरूप अमृत के समुद्रन में कितने ऐक क्षण निरंतर बिहार करके वधुन की प्रेरणासूं गज सूं बड़े यत्न सूं ठाड़े किये भये ही हंस रह्यो है श्री मुख जाको ऐसे सो श्रीजी कहेत भये हैं के हे पट्टराज्ञे मेरे प्राणन की स्वामिनि यह लवण हस्ती तिहारो हूं है और यह तंदुलमय हस्ती कूं हूं तुम अंगीकार करिके सर्वोत्कृष्ट महिमावारो करिये औरहूं जो मेरो है सो हे भामिनी सो सगरो हूं तिहारो है सो या प्रकार प्राणेशरूप जो उत्तम मेघ है तहां स्थित सगरे भक्तन के क्षोत्र रूप क्षेत्रन में वाणी रूप अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करि रह्यो है तब तहां स्थित जे बंधु भक्त हते विन सगरेन के मनरूपी जो घर है सो आनंदसार सर्वस्व रूप सस्य राशि के शत अर्बुदन सूं पूर्णता कूं प्राप्त होय जाते भये है तब बधू पक्ष में जे वंधू ज्ञाति वारे हते विन सगरेन ने हू प्रीय श्रीजी की जो वचन माधुरी है सो सगरी चिंतामणीन की और असंख्यात निधिन के हूं समूह की अपने हाथन में प्राप्त रूप ही निश्चय करी है और

श्रृंगार रस सर्वस्व के सार मूर्ति जे प्रियजी है वाके संबंधी जे चतुः षष्टि प्रमाण वारे अक्षर हैं जे अपने कानों और हृदय द्वारा अपने श्री अंग रूप रंगभूमि में प्रविष्ट भये है और जे चारो ओरसूं विलास सहित के और आनंद के प्रकर्ष सूं हूं नाच रहे है विनसूं सो श्री वहूजी लक्ष्मी के जे सहस्त्र कोटि हैं विनके वेसे और हूं जे सुन्दर स्त्री है विन सगरीन के सकाश सूं ऊँचो करिके ही जा पद में परब्रह्मानंद के सहस्त्र कोटि गुणित शत अर्बुदन कूं हू सर्व प्रकार सूं जो अधिक है ऐसे जे प्राणनाथ के महाप्रेम रस सागररूप सूं परमानंद समूह को सार को हू सार सर्वस्वरूप जो सागर है जो उछल्लित होय रहे शत कल्लोलन सूं सुन्दर है सो वे प्रियाजी के हृदय में उपायन रूप कियो है ऐसे वा पद में ही भली प्रकार सो प्रियाजी विराजमान करी है सो या रससागर श्रीजी कूं सो प्रियाजी निमेष रहित जैसे देखती भई है और जैसे आगे जाती भई है और जैसे भक्ति सूं प्रणाम करती भई है और जा प्रकार सूं बहुत आदर सूं परिक्रमा करत भई है और जैसे सष्य सूं प्रसन्न करत भई है और जैसे जा श्रीजी में अपने सगरे सर्वस्व कूं हू निवेदन करिके जे जाकूं अपने आपकूं श्री आपके चरण कमलों में नोछावर करती भई है और जैसे हर्ष के आंसुन कूं वर्षा करत आलिंगन करत भई है और जैसे प्रसन्न होती भई है और जैसे चिर पर्यंत प्रगट ही सराहना करत भई है और जैसे परिचरण करत भई है और जैसे विधी अनुसार बहुत ही पूजन करत भई है और जैसे दास्य सूं सेवा करत भई है और जैसे सख्यसूं प्रसन्न करत भई है और जैसे जा श्रीजी में अपने सगरे सर्वस्व कूं हूं निवेदन करि के जे जाकूं अपने वश कर लेती भई है और वा श्रीजी के संगम सूं जैसे स्तंभ स्वेद रोम हर्ष स्वरभंग और कहा कांपनो और विवर्णता और जा प्रिय संबंध-सू अधिक प्रथु और प्रलय कहिये रसमें लीनता है वाकूं अपने में जो धारण करत भई है सो सर्व के ऊपर विराजमान वा श्रीजी की जो सर्वोपर विराजमान सो प्रिया है वाके जो सर्वोपर विराजमान प्रिय श्रीजी है वाके और वा प्रिय के वे जे सर्वोपर विराजमान प्रकार है विनकूं तृण सूं हूं नीच हो सरीखो विशेष सूं चारों ओर सूं जानवे में कैसे समर्थ होय सके अपितु नहि होय सके है याके अनंत शोभाजी आदिक तब बहु और वरकूं मुक्तामणी शोभित मंगलमय आसन में विराजमान करत भये है तब श्रेष्ट गंधनसूं और अक्षतन सूं और मंगल आरतीन सूं और सुवर्ण रजत रत्न मुक्तामय पुष्पनसूं

उछल्लित होय रही है प्रेम भक्ति जामें ऐसी कोमल मनवारी स्त्रीजन वा वधू वर को पूजन करती भई है नोछावर करत भई है और दुष्ट द्रष्टि दोष दूर करिवे कूं राई लोन आदि सू हूं न्यौछावर करत भई है । तब करुणासागर श्रीजी सहित प्रसाद के दो दो तांबुल सगरे भक्त जनन के प्रति देते भये है तब दोनों रस सागर श्री बहुजी और वर श्रीजी सो दोनों हू आपस में अपनी-अपनी सभा में विराजमान भक्तन के हर्ष अर्थ आप हूं आरोगते भये हैं ॥६४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले इकवीसमो तरंग समाप्तम् ॥२१॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग बाबीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ बाबीसमो तरंग लिख्यते ॥२२॥

श्लोक -- **अथ प्रणभ्यगण कैरभिर्जेर्मधुराक्षरं प्रभात कल्य रजनी मनु विज्ञापितः प्रभुः ॥१॥**

याको अर्थ -- अब बड़े चतुर जे ज्योतिषि हते सो मधुर अक्षर जैसे होय तैसे ही प्रभात प्रायः रात्रीकूं देख विचारिके प्रभुनकूं विज्ञापना करत भये है । के प्रभात समय में गृह प्रवेश कूं मुहूर्त बहुत आछो है ॥१॥ तब वेणाभटजी सूं पूछिके अपने घरकूं शोभित करिवे की इच्छा वारे भये थके सो श्री महाप्रभुजी निकट पधारे मंगल अस्व के ऊपर बहूजी के संग विराजमान होते भये है ॥२॥ सो जब आप प्रस्थान कियो है तब सगरे ज्ञाती वारे बंधू भक्त स्त्री पुरुष वे सगरे ही अपने वंधून कूं प्रेम सूं पूर्ण भये थके पोहोचावने कूं प्राप्त होते भये है तब अनेक बाजे बाजते भये है ॥ और भाग्यवारी स्त्रीजन के मुखन सूं अनेक गीत प्रगट होते भये है, तब पुरुषोत्तम श्रीजी कूं बंदीजन चारण सूत मागध यह सगरे ही स्तुतीकूं करत भये है । तब श्री प्रभुन के जे अभिप्राय के जानवे वारे हजारन अधिकारी है सो विन वैदिक विप्रन में और भिक्षुक तैसे और हूं यथा योग्य पुरुषन में सुवर्णमणि मुक्तादिक और विविध वस्त्रनकूं और जो जो

वांछाकरे है विनसूं हूं अधिक पदार्थन कूं जैसे जलन कूं मेघ वर्षा करे है तैसे ही वे महाशय महा उदार अधिकारी अनेक वार इतनी वर्षा करत भये हैं, के इतने द्रव्य पदार्थन के आधिक्य कूं लेकर अपने घरन कूं जायवे में समर्थ न होयके वामें सूं कछु ही लेकर घरन में जाते भये हैं जासूं जितनों ले गये हैं वितने सूं ही सदा पूर्ण कामना कूं प्राप्त होते भये है । तब तहां जे अर्थ विनने त्याग किये हैं सो वे समयांतर में यहां आये अनेक जीवन के दरिद्र कूं निरमूल कर देते भये हैं श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी तो हर्ष में प्रफुल्लित है, श्रीमुख कमलवारे भये थके ही तैसे श्री बहुजी सहित अपने पुत्र रत्न अधीश्वर श्रीजी कूं निमेष रहित नयनन सूं देखत ही अपने बंधु सुहृदगण सूं मिले भये ही तैसे पुत्र पिता भाव सूं सर्वोपर विराजमान होयवेवारी परमकाष्टाकूं आरोपित भये थके ही प्रफुल्लित होय रह्यो है । रोमांच सूं कंचुक जिनको आनंदके नयन जलन सूं आपके मार्गकी पृथ्वी कूं सींचत ही तब के आनन्द के आधीक्य सूं सगरे लोकन में चरणनसूं हूं सर्व के ऊपर हू प्रतीत होय रहे है ऐसे सो श्री गोस्वामीजी प्रेमसूं उचित जैसे होय तैसे ही विन विन कूं दांन करत भये हैं, और आज्ञा करत भये हैं, और वेणाभटजी हु अपने बंधु सुहृदत सेवक प्रिय वर्गन के सहित ही स्वयं हू प्रेम सूं पूर्ण होवत थके ही असंख्य दायजा कूं देतो भयो है ।। सो नाना देशन के बने भये ऐसे अमूल्य नाना विधि सुवर्णमणी मुक्तादि भूषण और वर योग्य वस्त्र और वधु योग्य हूं करोडन वस्त्र और श्री गोस्वामीजी के योग्य हू वस्त्रादिक तैसे विनके सबंधीयो के योग्य वस्त्र और आपुके सेवक मित्र प्रिय वर्ग बंधु दासन में और अनेक भक्तन के योग्य जे वस्त्र है सो देतो भयो है ।। तामें पाग है और श्रेष्ठ कभा वस्त्र है और कंचुक है और रेशमी वस्त्र है और कितने एक तो मजीठ रंग में रंगे भये हैं और कसूंबी रंगवारे है और हरदी के रंगे हू करोडन वस्त्र है और हरे-पीरे नाना वर्ण के रंगे हैं । और केसरी वस्त्र हैं तैसे लाखन कोमल रंगवारे मृग चर्म के वस्त्र हैं । और हू दक्षिण के पूर्व के अद्भुत वस्त्र है और उत्तर के है पश्चिम के हजारन वस्त्र है वे देतो भयो है और स्त्रीन के प्रति अनेक प्रकार की सुंदर मनोहर साड़ी है और हूं ऊपर के वस्त्र है बड़े रमणीक और उज्ज्वल वस्त्र हैं सो या प्रकार अनेक वस्त्रादिकन कूं देते भये है । निमेष रहित ही बंधू वरकूं बड़े भाग्यवारे परम चतुर भट्टजी वधू-वर के पीछे चलि रहे है और अमूल्य

मणी मुक्तानसूं जटीत सुवर्णमय मुकुटकूं सिर पर शोभित करत जे अलौकिक वधू-वर है तिनके दरशन करवे कूं मथुरा पुर की स्त्रीजन घर के सगरे आवश्यक कार्यनकूं हूं त्यागके तहां आय के अपने जन्म कूं अत्यंत सफल करती भई है । और प्रेम सूं प्रफुल्लित होय रहे अपने नयन कमलोसूं वधू-वर कूं पूजा करत जे ये स्त्रीजन है विनके कृतार्थतासूं कछु हु अवशेष नहीं रह्यो है के सगरो जन्म हूं कृतार्थ होय गयो है मानो श्री बहु-वर के दर्शन के अर्थात् मथुरापुर वासिनी के घर हू तैसे कपाटन के मिस सूं अत्यंत पसारे भये नयनन सूं ही तत्पर भये थके ही प्रकाशित होते भये हैं तब वा श्रीजी के अंग राग की सुगंध कूं धारण करत जो सुगंधित वह पवन हतो सो विन जीवन कूं स्पर्श करिके विनके भीतर स्थित हूं विचित्र अन्य संबंध के गंधकूं निवारण कर देतो भयो है तब मथुरा पुर की जे गली हती सो रस सागर श्री महाप्रभुजी श्रीजी कूं पूजाके अर्थ मंदिरन के ऊपर चढ़ी भई मृगनयनी स्त्री जनोने जे कदंब के पुष्प वर्षा करे है तैसे और हू जे पुष्प वर्षा करे है विनसूं और अवतारन के स्पर्श सूं हूं न भये थके रोमांच के समूह कूं और हास्य कूं श्री गोकुलेशजी के दासन के चरण कमल के धारण सूं चिर पर्यंत धारण करती भई है तब मार्ग के क्रम सूं श्री बहु-वरजी भक्तन के घर के द्वारन के निकट प्राप्त भये हैं । तब प्रेमसूं विन भक्तनने जो पूजा करी है वाकूं सो करुणासागर श्रीजी अंगीकार करत भये है तहां भक्तिवारी जे स्त्रीजन हते सो हर्षसूं मंगल आरती कूं करत सहित प्रेम के है देखनो जामें ऐसे मंद हास्य रूप अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करत वा श्रीजी के श्री मुखकूं दर्शन के कृतार्थता कूं प्राप्त होते भये है ॥ श्रीजी के श्रीमस्तक में जो स्त्री कूं दक्षण कर को अंगुष्टासूं तिलक कुकरत भयो है ॥ वा दक्षणहस्त कमल के अंगुष्टकूं और जे वाके अंग है सो उछल्लित होय रहे प्रेमसूं रोमांचवारे भये थके बहू मानसूं हू वाकूं वंदना करत भये है और हृदयसूं वाके जन्मकूं सराहना करत भयो है तामे कोऊ ऐक स्त्रीतो मुक्तान की मालान सूं शोभायमान विशाल श्रीजी के वक्ष स्थल को दर्शन करिके वामे आलिंगन अर्थ लोभी होयके अपने में तुलसी माला के भाव कूं इच्छा करत भई है के हों तुलसी माला होयके सदेव ही याकूं आलिंगन करत रहूं जैसे और हू को स्त्री अत्यंत स्वच्छ वा श्रीजी के हृदय में क्षणु मात्र हूं प्रतिबिंब कूं प्राप्त होवत ही नारायण के हृदय में सदैव निवास सूं महागर्ववारी लक्ष्मी कूं हूं सो तृण

जैसे हू नही मानती भई है तामे और जो पुष्ट और उँचे होय रहे है कुच जाके ऐसी जो स्त्री है सो तो श्रीजी के श्री अंग संबंधी पद्मराग की कांति के समूहन सूं क्षणुं ऐक स्पर्श करी भई ही सो विन कांति के समूहन सूं प्रसादिक सूं भी उतरीय रूप सारी वस्त्र के अपने आंगन में सहित चाहना के पहेरावने कूं हूं मानती भई है, वा कांति के समूह जो याके ऊपर पुर्यो है सो याने यह निश्चय कर्यो है के श्रीजी ने मेरे कूं अपनो प्रसादी वस्त्र पहेरायो है तासू याके कुचहू हर्ष सूं पुष्ट और ऊँचे होय गये है तासु तैसे कह्यो है सो पधारत अपने प्रियकूं सुनके कोई जो भाग्यवारी स्त्री है सो साहससूं श्रीजी के सन्मुख आवती भई है तब अत्यंत स्वच्छ अपने हृदय में प्रतिबिम्बित भये श्रीजी के श्रीमुख कूं प्राप्त होय के फरक रह्यो है अधर पल्लव जाको ऐसी सो स्त्री वा श्रीमुख के चुंबन करवे की इच्छावारी भयी थकी ही यामें आशक्त भई अपने मुख कमलकूं वाके दर्शनानंद सूं प्रगट भये आंसून के समुद्रन सूं चारों ओर सूं मानो सिंचन ही करत भई है ॥४४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले बावीसमो तरंग समाप्तम् ॥२२॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग तेबीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तेबीसमो तरंग लिख्यते ॥२३॥

श्लोक -- **एवं महाप्रभु भक्तिः पूजा प्रेमाणि मती हृधपि ईक्ष्ये तान्या दशन्दंड प्रणामान्कृपया तदा ॥१॥**

याको अर्थ -- ऐसे या प्रकार स्त्री पुरुषन की भक्ति पूजाही हृदय में प्रेमनकूं और आदर दंडवत प्रणामनकूं हूं देखके क्रपासूं मंद हास्यादि सूं विनकूं अंगीकार हूं करत सगरी समृद्धिवारो जो अपनो राजद्वार है जो विशाल है और चारो तरफ बाँधे है तोरण जामे और सोभाग्यवंती स्त्रीजन जहां जल पूर्ण कलसनकूं माथे पे धारण कर रही है और जाके मार्ग में अमूल्य कोमल पीरे रेशमी वस्त्र

विछाये है और संबंधी के भयसूं प्रथम ही आयके अपने छोरा छोरीन के संग ही अपने उचित स्थानकूं लेकर तहां-तहां ठहेरे और वा श्रीजी कूं निरखके ही प्राप्त होय है महारस जिनकूं और बाँधे है हाथ जिनोने और नम्र है ऐसे जे महात्मा स्त्री पुरुष भक्त है विनसूं जो द्वार सेवित होय रह्यो है वा राजद्वारकूं सो श्रीजी प्राप्त होते भये है । तब सो कृपानिधी श्रीजी सुवर्ण मणिमुक्तान सो मंगलमय घटकूं पूरण करिवे सूं या घटकूं धारण कर रही जो बड़ी भाग्यवतीन में शिरोमणीरूप स्त्री है वाको मंद मुसकान पूर्वक देखवेसूं दुर्ल्लभ दशाकूं और अपने जीवन के योग्य अनिरवचनीय पदकूं आरोपण करिके तब शोभाजी सत्याजी आदिकनसूं सुवर्ण पुष्पन के समूहनसूं और सुवर्ण के पात्र में स्थित महामंगलमय आरती आदिकनसूं सहित प्रेमके पूंजा करे भये ही अपने विस्तार वारे नैनन सूं भक्तन की स्त्रीन को कटाक्षन सूं देखनो रूप जो करोडन अमृत समुद्र है उनकूं अत्यंत पान करत वधुजी के सहित ही सो गुण सागर श्रीजी मंगल अश्वसू उतरते भये है ॥१०॥ और निष्तुस गेहुं के सुन्दर चूनसूं रचना किये असंख्यात मंगलमय दीपक और तैसे सकुंला कहा युवा यह ज्ञातिवारी स्त्रीनके पद-पद में धारण करे है विनकूं देखत आनंदित होत सो श्रीजी सहित प्रियाजी के आँगण कूं प्राप्त होते भये है सो कैसो है आंगण के महाविस्तृत है और जामें रत्न खचित कंबल बिछाये है और जामें शोभायमान कृष्णागर के समूह और धूपन की सुगंधी सूं सुखदायक है । और नाना विधि उपहार और सुगंधित पुष्पन की राशीसूं शोभायमान है तैसे वा आंगण में मंगलमय मंडप में सुंदर बिछे भये रत्न जटीत सुवर्णमय पीठ में श्री बहुजी के संग सो श्रीजी परम शोभायमान होते भये हैं तहां ज्ञातीवारे, सुहृदं और संबंधि सेबक राजा राजपुत्र राजान के लोक और कवि पंडीत गुणीगायक और राजपत्नि और नर्तक जैसे हजारन नर्तकी और सूत बंदीजन नाट्य शास्त्र के जानिवे वारे और मागध हू तैसे चारण और भिक्षुक और सगरे याचक और स्मृति के वेता और वेदांती और सांख्य शास्त्रवारे और मीमांशक और स्मृति के जानवे वारे और वेदीक न्याय वेदीक और हू तपस्वी है तैसे कर्मठ और वैष्णव शैंव और वृत्ती बालक बूढ़े यौवन वारे और करोडन भक्त और तैसे स्त्रीजन नानाविधि भाववारे नानाविधि वस्त्र आभरण वारे और नानाविधि प्रेमरस सेवा तात्पर्य में नेष्टावारे अपने भक्त हैं और अनेक देशवारे गुणीजन और नानाविधि वैध ज्योतिषि यह सगरे प्रभून की

हूं इच्छानुसार यथा योग्य स्थानो में ठहेर रहे है विनमें कितनेक भाग्यवान तो श्री महाप्रभुन सूं दूर स्थित है और कितनेक भाग्यवान निकट स्थित है और कितने तो सगरे कार्य करवेवारे श्री गोस्वामीजी के निकट स्थित है तब अपने बंधुजनों के संग ही वेणाभटजी आते भये है सो सहित प्रेम रोम हर्ष के वधुवरकूं देखत ही मानके सहित बैठते भये हैं और दोनों पक्षवारी स्त्रीजन हूं स्वभाविक मंद हास्यसूं सुंदर और करोडन पूर्णचंद्रमान की सुंदरताकूं तिरस्कार करिवेवारी जाकी शोभा के समूह है ऐसे श्री गोकुलेशजी के श्री मुखकूं देखत ही अपने भाग्यन कूं हृदय सूं वारंबार स्तुति करत तहां बैठ जाते भये हैं तब बजायवे वारे वाजेन कूं बजावते भये हैं और स्त्रीजन अनेक प्रकार के गीतनकूं गान करती भई है और नर्तकी तो सुन्दर तालगान सूं मनोहर नृत्य करत भई है और पंडीत तो अत्यंत शास्त्र चर्चा कूं करते भये हैं और वधूवर के शुभकूं चाहना करत नाना विधि मंत्रन कूं पढ़ते भये हैं और व्याख्यान करते भये हैं सो भरी सभा शोभायमान होय रही है जामें श्री महाप्रभुजी के जे साधारण दास है सो अनेक चक्रवर्तीन सूं हूं अधिक शोभायमान होय रहे हैं तहां जो आचार्य है सो शास्त्र अनुसार सगरे धर्मन के धुरंधर जे पुरुषोत्तम दर्शन के ईश श्रीजी हैं सो आप कूं पुण्याह वाचन हू करावते भये हैं ॥३२॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले त्रेवीसमो तरंग समाप्तम् ॥२३॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग चौबीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चौबीसमो तरंग लिख्यते ॥२४॥

श्लोक -- **समुत्थायतो यद्धृजलिः श्रृप्हमन स्तीनः प्रेमणो पनीतं प्रागुत्कं सजीनां वास सामपिः ॥१॥**

याको अर्थ -- तब वाधी है अंजुली जाने और नम्र है मन और शरीर जाको ऐसो सो वेणाभटजी उठकर ठाडो होयके प्रथम कहे जे प्रथम वह इहां लायो

है सो मणि और वस्त्र और भोक्तिक के और सुवर्ण के और भूषणोंके करोडन राशिकूं सगरे अवतारन के अवतारीन कूं हूं दुर्ल्लभ है कृपाद्रष्टि जाकी ऐसे जामाता महाप्रभु श्रीजी में उपायन करिवेकूं लज्जा करत नम्र भये मस्तकसूं प्रभूनके समीप ठहेर जातो भयो है के विचारवान हूं सो भट्टजी कछु विज्ञापना करिवे कूं उत्साह न करतो भयो है तब प्रभुन के अभिप्रायकूं जानवेवारे जे श्री गोस्वामीजी हैं सो वा भटजी के प्रभुन में भक्ति प्रेम विनय और आदर तैसे गुण और निष्कपटता सूं अत्यंत प्रसन्न मनवारे भये थके ही मंद मुसकानसूं शोभित है श्री मुखारविंद जिनको ऐसेसो श्री गोस्वामीजी मधुर अक्षरनसूं वचन कहेत भये हैं के हे वेणाभटजी तुमतो सगरे विचारवानो के शिरोमणीरूप हो और तिहारे जे पूर्व पुरुष हते वे सगरे ही महाशय हते वे सगरे ही पंडीत हते और लोक वेद शास्त्र में विचक्षण हते और कुलीन तैसे श्रेष्ठ आचारवारे और तीनों जगतों में विस्तृत कीर्तिवारे हते और जिनके चरणन की रजकूं हमारे ज्ञातीवारे हूं सिरपे धारण करते ऐसे वे तिहारे महापुरुष हते सो तुमतो विन सगरेनकूं और हमकूं तैसे ओरनकूं हूं तैसे अपने सगरे गुणनसूं और भक्तिसूं तैसे प्रेमसूं अधिक होयके वर्त रहे हो और तुमने तो तैसे कितने ही कार्य किये हैं । जैसे जितने कोऊ कबहू न कर सके तासूं हे विद्वन तुम काहे कूं लज्जा करो हो सो अपने मनोरथ अनुसार अमूल्य मणि आदिकन के समूहन सूं अपने जामाता श्री गोकुलेश्वर कूं वेग ही पूजन करो और अपनी कन्या कूं हू तैसे आपके भक्तन कूं हू पूजन करीये यह हम मानत है या प्रकार श्री गोस्वामीजी के वचनामृत कूं कान रूप अंजुली सूं पान करिके वेणा भटजी या प्रकार विज्ञापना करत भये हैं के हे प्रभो आपके जे पुत्र श्री गोकुलेशजी है वाके दासीन दासके हूं दास है सो वेहू लौकिक अलौकिक सगरे पदारथन कूं विजय करिवे वारी मूरती है और सगरे अवतारन के जे अवतारी हैं वाकूं हूं जिनकी स्नेह भरी कृपाद्रष्टि दुर्ल्लभ है और जे सर्व कर्तुअकर्तु अन्यथा कर्तुमें समर्थ है और जिनकी चरणरज शिव ब्रह्मादिकन कूं हूं दुर्ल्लभ है और जिनोने क्षीरसागर कूं जय करिवे वारे यश सूं भूमि हू धवल करी है और उज्जवल प्रकाशमान प्रताप के विस्तार सूं सूर्यकूं हूं जिनोने पराभव कियो है और चरण कमल की रजसूं तो जिनोने करोडन अधम पवित्र कियो है ऐसे तो वा श्रीजी के दासानु दासन के दास है विनमें हूं कोइ एक क्षुद्र कूं हू बड़ो धैर्यवारो हूं विज्ञापना करिवे में को समर्थ होय

शके, सो या प्रकार के आपके महिमा कूं जानूं हूं तासूं विज्ञापना करिवे में अयोग्य ही हूं तथापि निरहेतुक दीन मो सदृश में हू निरंकुश बदि रही जो आपकी कृपा है वा कृपा के वल सूही हों, विज्ञापनारूप अपराध करू हू कछु और हू है के यदि आपमें अधिक अमूल्य वस्तुन के समूहन कूं अर्प्पणहू होय तोहू विज्ञापना संभवे है परंतु यह मेरी वस्तुतो जैसे मलय पर्वत में अत्यंत तुच्छ चंदन के टूक कूं अर्प्पण कियो जाय तैसे है और सुमेरू पर्वतकूं जैसे छोटी सोना की मुद्रिका पहेराई जाय और जैसे मलय पर्वत संबंधी पवनकूं पंखा कर्योजाय और जैसे सागरकूं बालक के चुलक प्रमाण जलसूं स्नान करायो जाय और जैसे प्रकाश की निधि रूप सूर्य कूं दीपक सूं आरती करी जाय और जैसे क्षीरसागर कूं स्त्री के स्तन संबंधी दूध की कणिका अर्पण करी जाये सो तैसे ही यह मेरे पदार्थन कूं आप में अर्पण है, या प्रकार शिरसूं जाके चरण कमलों में नमन करिके और विज्ञापना करिके सो भटजी अमूल्य अमित वस्त्र मणी भूषणन सूं वर श्री गोकुलेशजी को पूजन करत भयो है और श्रीजी की आज्ञा लेकर पीछे अपनी कन्या कूं हूं विन महाधन वारे वस्त्र अलंकार रत्नन के समूहन सूं पूजन करत भयो है पीछे श्री गोस्वामीजी कूं बहुमान भक्ति विनय सूं पूजन करत भयो है और तैसे ही पद्मावतीजी और शोभाजी सत्या और कमला लक्ष्मी यमुना देवका और और हू जितनी हती विनकूं प्रभुनकी इच्छानुसार यथा योग्य ही पूजन करत भयो है और जे प्रभुन के संबंधी विनकूं हूं पूजन करत भयो है और जे प्रभुनके दास है निकट रहिवे वारे सेवक है दास है आपमें भक्तिवारी स्त्री है और गौरबाई जो तैसे कृष्णदासी और प्रभुनके जे कृपापात्र भक्तवर्य विश्वासपात्र चाचा हरिवंशजी हू वाकूं और जाके प्रथम ही गुण वर्णन किये है सो दामोदरदासीजी कूं पूजन करत भयो है याके पीछे वा श्री महाप्रभुन के जे शोभाजी आदि बहेन है सो प्रेमसूं श्री बहुजी सहित श्रीजी के महानिरांजनकूं गीत वाद्यादिकन के सहित ही फिरत भई है तब सोहू कृपासिंधु अधीश्वर श्रीजी विनके ऊपर महाप्रसाद कूं करत भये है । तब पूर्ण परमेश्वर श्रीमद् गोकुलनाथजी के स्वगृह में पधारवे रूप महाउछव कूं देखवे अर्थ जे सुहृद बंधु ज्ञाति ब्राह्मण और हु जे आये हते विनकूं तब श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी गंधाअक्षत वस्त्र विभूषण तांबुल आदर श्रेष्ठ मीठे वचन दक्षणांदिकन सूं यथा योग्य ही सतकार करत भये हैं, पीछे वेणा भटजी जन्मसूं लेकर बड़ी भई जो अपनी कन्या है

सो गोद में विराजमान है वाकूं अब यहां बैठायवे कूं समर्थ न भयो थको तैसे वासूं हू अत्यंत प्रिय गुणन के सागर और सगरेन के प्राणन सूं हूं वल्लभ श्री गोकुलेश जी कूं हू इहां छोड़िवे कूं समर्थ न भयो थको प्रेमसूं कायर होयके नयनन सूं जल कूं वरसावत हाथन कूं बांध के प्रणाम करिके श्री गोस्वामीजी के आगे विज्ञापना कूं करत भयो है के जो आपुके पुत्र श्री गोकुलेशजी के दासानु दासन को दास को जो महात्म्य है सोहु सगरे अवतारन के जे अवतारी हैं विनके गुणनकेहु मन के अगोचर है सो वाकूं कहिवे में कैसे समर्थ होय सकेगो अथवा को जीव जो स्वभाव सूं हू समर्थ रहित है जो थोड़े से अर्थ में हूं अत्यंत मूर्ख है तैसे का विषय में का साधन सूं काके अर्थ कासूं कब का प्रकार सूं विचार सके अथवा सेवा कर सके किंतु कछु हूं नही कर शके है तामे जो अत्यंत बुद्धिमान हू होय और अधिक पुण्यन वारो हू होय सोहू जाकूं नमन हूं याकी कृपा के विना नहीं कर सके है तासूं यद्यपि ऐसे हूं है तथापि हों तो जीवन में सर्वप्रकार सूं अधम हूं अयोग्य हू बुद्धिहीन हू तृणकूं टेडे करवे में हूं समर्थ नहीं हू सो आपको जो पुत्र श्री गोकुलाधीश्वर है सो तो सर्वेश्वरेश्वरन कोहू ईश्वर है पूर्ण परमेश्वर है जाको स्वरूप सर्वकूं अक्षय है सो ऐसे श्री गोकुलेशजी कूं या कन्याकूं विनियोग करिवे कूं दास क्रत्य में हूं जो धृष्टता कूं प्राप्त भयो हूं सो तो आपकी कृपासूं भई वा श्रीजी की कृपासूं ही भयो हू यह निर्णय है सो जा कृपासूं बडेनकूं हू सर्वथा अत्यंत दुर्ल्लभ या पदकूं ऐसो हौं आरोपण कियो गयो हू सो वा कृपासूं हू आपके पुत्र श्रीजी ने और वाके पिता आपने सो यह मेरी कन्या हूं अपने घरकी तुच्छ दासीन में हू गणना करिवे योग्य है और घर के काम काजन में हू यथेच्छानुसार हू लगायवे योग्य है या प्रकारसूं वेणाभटजी विज्ञापना करत भये हैं। तब प्रभुन के आशयकूं जानिवेवारे श्री गोस्वामीजी या भटजी कूं कहेते भये हैं के हे भटजी हमतो तिहारे संबंधसूं औरनकूं दुर्ल्लभ सूं हू दुर्ल्लभ पदकूं आरोपण किये हैं सो फिर हूं तुम ऐसे वचनन सो हमकूं तासूं हू अधिक पदकूं आरोपण करो हो सो वेणाभटजी तुम अत्यंत बुद्धिमान हो यह तुम्हारी पुत्री तो मेरे घरकूं केवल भूषण नहीं है किंतु सगरे जगतकूं और श्री गोकुलेशजी के घरकी हूं भूषण रूप होयगी यामें कहा संदेह है, और याकूं आज्ञा को करे किंतु यह तिहारी कन्याहू हम सर्वकूं आज्ञा करेगी यह बड़ी चतुर है, भाग्यवती है और श्री गोकुलेशजी कूं वल्लभा है,

प्रिय है और हों और जे हमारे है वे सगरे ही याके वश में स्थित हैं या गुणन की निधि और सगरे लक्षणन सूं सेवित श्रीजी की कांता के प्रिय नित्य ही करत याकूं प्रसन्न ही करेगे, और यह श्री गोकुलपति की प्रिया है सो जाके ऊपर कृपा करेंगे सो नीचहूं होय वाको हम उद्धार ही करेगे यामें अधिक कहा कहें श्री गोकुलेशजी याकूं ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ अपने पद में सहित स्नेह के सदेव ही राखेंगे और तुमतो या प्रकार की कन्या कूं मेरे घरकों भूषणरूप बनाय के और श्री गोकुलेशजी में स्नेह कूं भक्तीकूं और विनयकूं और पारवतीकूं अर्पण करिके सर्व प्रकार सूं कृतार्थता कूं हूं प्राप्त भये हैं । और या तिहारी रीति कूं जे जन सुने और भक्ती सूं कीर्तन करेगे सो वे जन हूं वा कृतार्थता कूं प्राप्त होयेंगे ॥२४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले चतुर्विंश तरंग समाप्तम् ॥२४॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग पच्चीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पच्चीसमो तरंग लिख्यते ॥२५॥

श्लोक -- **एवमाश्वसितो वेणाभटः श्री मन्महा प्रभोः ॥ तोत श्री चरणै स्तस्य स्निग्ध द्रष्टयापि सर्वथाः ॥१॥**

याको अर्थ -- या प्रकार श्री मन्महाप्रभून के तात चरण श्री गोस्वामीजी के आश्वासन कूं प्राप्त भये थके और सर्व प्रकार सूं आपकी स्नेह भरी द्रष्टि के हू आश्वासन कूं प्राप्त भये थके सो वेणाभटजी अत्यंत विचारवारे जो अपनी कन्या है वाकूं शिक्षा करत नयननसूं जलकूं छोड़त मंद-मंद स्वरसूं हित वचनकूं कहत भये हैं के हे वत्से के कल्याण शीले जे अपार गुण महिमा संपदा माधुर्य के सागर हैं और जिनकूं सगरे अवतारन के जे अवतारी के विनके हूं वंदना के स्वरूप कूँ नहीं जान सके हैं और ब्रह्मा रुद्रादि देवनकूं हू दुर्लभ हैं चरण कमल संबंधी रज जाकी और ब्रह्मादिकन कूं हू जाके दृष्टि रूप कमल के

कटाक्ष पात कूं सर्वथा ही प्रार्थना करे हैं और नारायण के हृदय में निवास सूं सौभाग्य शोभा की राशि रूप जे लक्ष्मी हैं वासु अत्यंत अधिक जे हिरण नयनी भक्त स्त्रीवृंद है सो हाथन कूं बांधके ही जाके चरण कमल संबंधी रेणू की कणिका की शोभा की हूं सेवा करि रहे हैं ऐसे जे श्री गोकुल के भूपति श्री गोकुलेशजी है सो तिहारे भरथार हैं सो विनकी कृपा में निरंतर ही तुम सावधान रहीयों या महाप्रभू कूं जो स्त्री कुलके अथवा रूप के तैसे गुणन के बल के वा धर्म के अथवा सेवाके सौभाग्य के अथवा कछु इतर पदार्थ के हू आधिक्य सूं जो अभिमान वारी है सो स्त्री याकूं नहीं रूचे है जासू यह महाप्रभु तो शुद्ध प्रेमसूं ही प्रसन्न होय है तासूं सदैव ही याके मन अनुकूंल चलत सावधान होयके नित्य ही प्रिय हित में प्रीतिवारी होय के याकी सेवा में सावधान रहोगी या श्रीजी के प्रसाद सूं दासीन के हजारन करोडन तिहारी आज्ञा कूं प्रतिक्षा करत और तिहारे चरण कमल कूं सेवा करत ही स्थिति होयगी तथापि तुमतो हृदय में सगरे पुरूषार्थन सूं अधिक ही विचार के और कार्यनकूं हूं त्याग के या श्रीजी की सेवा ही सदैव करोगी और याकी सेवा के जो प्रतिकूंल होय वाकूं त्याग करोगी और सर्व प्ररकासूं क्रोध और मत्सर और सुख आलस्य तैसे मान के वसकूं कदाचित हूं प्राप्त नहीं होवनो और या श्रीजी कूं प्रिय जो तृण हू होय वाकूं सुवर्ण पर्वतरूप जाननो और वा श्रीजी कूं जो अप्रिय होय सो सुमेरू होय तोहू वाकूं हु तृण जैसे जाननो और या श्रीजी की करूणा के लेश में ही सगरो धन धान्य धर्म सौभाग्य यह लोक और परलोक और भक्ति मुक्ति जो भक्ति और सुख समूह और आचरण अनिष्ट नाश और सर्व इष्ट की प्राप्ती यह सगरो ही प्रतिष्ठित है और या श्रीजी के जे प्रिय स्त्री है अथवा पुरुष हू है वे यद्यपि अपराध हू करे तथापि विनकूं थोड़ो सो हू अपमान नहीं करनो जासूं सगरो इष्ट ही विन आपके प्रिय भक्तन के वश में ही है सो यह श्रीजी भक्तन के वश में है और भक्त है सो याकूं दासभाव है मुख्य जीवन बिनकूं ऐसे है और थोरीसी हू निष्कपट भक्ति सूं तो यह श्रीजी प्रसन्न होय जाय है और कपटवारी अधिक भक्ति कूं हू यह श्रीजी नहीं आदरे है सो यह परम चतुर शिरोमणी प्रभू अंगीक्रत जो जीव है सो तुच्छ हू होय और सर्व अपराधी हू होंय और सगरे दोषन कूं आकर्ष हू होय और सगरे पापन में निमग्न चित्त हूं होंय तथापि अंगीक्रत होय तो वाकूं कदाचित हूं यह प्रभू त्याग नहीं करे

हैं किंतु प्रत्युत वाकूं सर्वसूं अधिक सर्वसूं दुर्ल्लभ अपने पद में वेगही सो कृपासिंधु आरोपण करे है और सर्व के ऊपर विराजमान जो श्रीजी है वाके गुणनकूं कहिवे में परार्द्ध करोडन रसना वारो हू वर्षन के करोडन सूं हूं समर्थ नहीं होय सके है, सो हे वत्स मेने तो जो कछु यह प्रेमसूं प्रगट कर कह्यो है सो करूणा सागर या श्रीजी की सो कृपाही है सो अंगीकृत तुमकूं सगरो यह और हू स्वयं ही शिक्षा करेंगे सो या प्रकार स्नेह सूं शिक्षा के वचन वेणाभटजी कहे रहे है तब श्री बहुजी के नयन कमल सूं जो अश्रुन की धारा प्रवृत भयीहै सो प्रिय के गुणन के निश्चय सूं प्रगट भये प्रेमानंद सागर सूं निकरी भयी है और इतने समय पर्यंत जो ऐसे प्रियकूं लाभ नहीं भयो है वाके विचारसूं हूं प्रगट भई है और ऐसे प्रियकूं जो हस्तकमल कूं ग्रहण भयो है सो यामें मेरे पिता के बड़े उपकार है और अधिक गुण है सो या प्रकार भावना करिवे में वा प्रिय में जो प्रेम समूह रूप सागर है विनसूं हू प्रगट भई है परन्तु या अश्रुधारा को और लोकतो पिता के विछुरवे सूं भई आरत सूं प्रगट भई है ऐसे कलपना करत भये ही वास्तवमें तो याकूं कारण प्रथम ही कह्यो है तब ज्ञाती वारे, सुह्रद बंधु और हूं वैदिक ब्राह्मण और वेणाभटजी हूं और स्वयं श्रीमद् विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी हूं वर-वधू के शुभके चाहना वारे वे सगरे मंत्रनकूं प्रेमसूं पढ़ि के अक्षतन कूं देते भये हैं तब सहित श्री बहुजी के सो प्रभु श्रीजी विन अक्षतनकूं लेते भये है तब भक्तन के मुखनसूं प्रगट भये असंक्षात् जय शब्द उदय होते भये है सो जिन शब्दनसूं यह जगत हूं पूर्ण होय जातो भयो है तब वे सगरे विश्वपति श्रीजी कूं प्रणाम करिके श्री गोस्वामीजी सूं आदरकूं प्राप्त भये थके ही अपने गृहन के प्रति जाते भये हैं, वेणाभटजी हूं उछल्लित भये प्रेमसूं कातर भयो थको अपने वंधूजनन के सहित ही वधुवर कूं चारों ओर सूं बारंबार देखत ही प्रेम के प्रसरवेसूं भक्ति और प्रेमसूं विह्वल होयके सहित नम्रता के श्री गोस्वामीजी सूं अनुगमन करिके अभिनंदन कियो भयो ही आंसुनसूं नेत्रनकूं पुरण करत ही अपने घर कूं प्राप्त होतो भयो है ॥३५॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले पंचवीसमो तरंग समाप्तम् ॥२५॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग छब्बीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ छब्बीसमो तरंग लिख्यते ।।२६।।

श्लोक -- **जनेषु प्रतियातेषु ओछत्प्रेम पूरिताः पद्मावती वधूयं के ग्रहीत्या वृत्यमांचरत् ।।१।।**

याको अर्थ -- सगरे जने अपने अपने घर प्रति गये हैं तब उच्छल्लित प्रेम सूं पूरित भई थकी श्री पद्मावती जी श्री बहूजी कूं अंक में पधराय के वृत्य कूं नाम आचरण कूं के नौछावर कूं करत भई हैं तब बाजे बाजते भये हैं और गीत हू होते भये हैं और भक्त स्त्रीन के मुख सूं बारंबार जय शब्द होते भये हैं तब अधिकारी जे स्त्री हतीं वे सगरी कृष्णादासीजी आदिक तैसे प्रभून की भक्त और जे दासी हैं जे प्रभून के तिस तिस अभिप्राय कूं जानवे वारी हैं और दामोदर दासी जी तैसे गौर बाई बड़ी भक्तिवारी यह सगरी श्री बहूजी के श्री मस्तक पै बारंबार रत्न कंचन मोक्तिक और भूषण अमूल्य दिव्य अलौकिक गुण वारे वस्त्रन कूं बारंबार वारके ही भिक्षुक जनन के प्रति देती भई हैं तब श्री बहूजी के संग सुवर्णमय सिंघासन में विराजमान श्रीजी कूं करिके मंडप समीप अपने अपने मनोरथ अनुसार अनेक उपायन कूं आन आन के दंडवत प्रणाम कूं करत भई हैं, प्रणाम कर रहे विनकूं भारी संभ्रम होतो भयो है सो हौं प्रथम करूं - हौं प्रथम करूं ऐसे विचार के सबही दौड़ दौड़ के आय रहे हैं और जे अधिकारी हैं वे उनके नाम कूं और हृदय कूं और विनके देशन कूं कहि रहे हैं और विनके गुणन कूं और कर्मन कूं हू कहि रहे हैं और जे वेत्र कूं धारण करवे वारे झापटिया हैं सो जे जन दूर ठाड़े हैं विनकूं बुलाय के लावे हैं और उनकूं भीड़भाड़ सूं निकासें हैं तामें कितने तो आय रहे हैं और कितने तो उठि रहे हैं और कितने तो संवलित होय रहे हैं ऐसे विनके नूपुरन के समूह को जो शब्द है और नूपुरन के जे शब्द हैं तैसे कंकण और किंकणीन के तैसे वलयन के जे शब्द हैं चरणन के घात सूं प्रगट भये जे शब्द हैं और मेखलान के जे झंकार हैं वे अपने शब्द करिके जगत कूं शब्दाद्वैतमय

ही कर देते भये हैं तब तहां कंचुक और पाग सुन्दर वस्त्र कंचुकी सारी मुक्ता और सुवर्ण दिव्य मेखला और मणि अमूल्य भूषण और करोड़न चादर पटा और रेशमी वस्त्र और रोम वारे वस्त्र तैसे चंदवा हजारन और रेशमी उपरेना कंवल अमूल्य रत्न माला लाखन मुद्रिका चूड़ामणि दिव्य हार तंबू नूपुर करोड़न कर्णिका और कुण्डल काची किंकणी सो यह चारों ओर सूं कूंटन के कूंट ही होय जाते भये हैं विनकूं शिक्षा करवे में कौन समर्थ होय सके, वाल पाशी और कंठ भूषण और लंबाहार और ललाटिका और माणिक्य हार और उर सूत्रिका गुच्छ और आधी गुच्छ और दिव्य एकावली देवबंद और मोस्तन हार और नक्षत्र माला और सीमन्त भूषण तिलक और चतुष्टिका पद की और चरण संबंधी अंगुष्ट और अंगुलीन की मुद्रिका निव्या और आरसी मोती के कंकण और दिव्य प्र-श्रेष्ट आभरण और अद्‌भुत उप कंकण कहिये पोंहोंची और हथ सांकल और त्रिमणिका तैसे कंठसरी और धुंगधुगी और नवरत्न मुद्रिका और कंठ माला तैसे तैसे मुक्तासरी और पदक और वेणा मंडन और नाशा मोती और मोहन माला और नाशामोर और नाशा नवरत्नी और त्रिरेखिका कहा के आड़ और कर्णोत्यक और कर्ण मणि कणवध तैसे कर्ण फूल और शीश फूल और मोहन त्रल्लरी और चड़ातक कहिये वर-वधू के आधे उर पर्यन्त पहेरवे योग्य वस्त्र और कनात और कर्पूर कुमकुम और सुवर्ण मणी मुक्ता रत्नादिकन की माला और परदे और कटिबंध कस्तूरी तैसे और हू तिस तिस देश संबंधी विविधि वस्तु और काश्मीरी कंबल मनोहर यह सगरे उपायन में कूंटन के कूंट ही होय जाते भये हैं । विनकी कहां तक गिनती करे । वाके अनन्तर श्रीजी ध्यान मन्दिर कूं पधारत भये हैं तब स्नान के मिसि सूं अपने श्री अंग के स्पर्श सूं जलन कूं पवित्र करत भये हैं । तैसे सगरे अवतारीन के अवतारीन सूं हू अधिक जे श्री महाप्रभुजी हैं ऐसे आपके जे तैसे भक्त हते सो विन जलन कूं वन्दना करत भये हैं और पान करत भये हैं और मस्तक सूं धारण करत भये हैं वा श्री आपके चरण कमल संबंधी वा रस कूं पान करवे की इच्छा सूं अपने स्थानन सूं निकसि रहे जे भक्त रूप भौंरा हते विनकूं हों प्रथम जावुं ऐसे भारी समर्द्ध होतो भयो है विनमें कितनेक तो लेके जाय रहे हैं और कितनेक तो मार्ग में गिरि जाते भये हैं और कितनेक तो ठहेर रहे हैं तब सगरे धर्मन कूं धुरंधर रूप श्रीजी संध्योपासनादि के होमादि सगरे आवश्यक कृत्यन कूं करत

भये हैं पीछे सर्वेश श्रीजी श्री नाथजी के मन्दिर में पधारे हैं। तहां योग्य कृत्य कूं करके पीछे सूं सुहृत्संबंधी बांधवन के संग और श्रीमद् गोस्वामीजी के संग भोजन कूं करत भये हैं फेर आप भोजन पात्र में जे झूठन जी विराजे है सो ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ है सगरे जगत कूं पवित्र करिवे वारो है और सुधा सूं हू अधिक है महाप्रसाद रूप सूं तो अपार महिमा को सागर रूप है वाके लेवे वास्ते अनेक वैष्णव भक्त आवत भये हैं। कितने वन्दना करि रहे हैं और कितनेक तो बारंबार याचना करि रहे हैं और कितनेक तो लेकर जाय रहे हैं और कितने तो मारग में गिर रहे हैं और तहां ठहरे हैं और कितने फेर उठे हैं और कितनेक हा-हा कार कर रहे हैं और कितने तो मोकूं हू यह देवो ऐसो बारंबार कहि रहे हैं। ऐसे आपु जाय रहे हैं स्त्री पुरुष भक्तन को भारी समर्द्ध भीड़ होती भई है सो विनके मनोरथ मात्र सूं यह सगरे ही पवित्र है। परन्तु इनमें ऐसो अपवित्र नहीं है जिनके स्पर्श सूं कछु भय होय है। पीछे श्रीजी आचमन कूं करके श्रीहस्त चरण कमल कूं धोय के मंद मुसकान सहित दृष्टि सूं कृपासागर श्रीजी भक्तन कूं अभिनन्दन करत विश्राम मन्दिर कूं पधारत भये हैं। तब तांबूल कूं आरोगत और अमृत के परार्द्धन समुद्रन कूं निरादर करिके जय करि रहे जे स्वाभाविक तैसे आगंतुक श्रेष्ठ जे मंद हास्य हैं विनसूं बढाई है श्रेष्ठचाहना जिनो नें ऐसे अत्यन्त मधुर कोमल वचनन सूं कटि पर्यन्त वैष्णव भक्त सेवकन कूं सुख दान करत श्रीजी कितनेक क्षण तहां विराजके विश्राम करत भये हैं ॥४३॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले छब्बीसमो तरंग समाप्तम् ॥२६॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग सत्ताबीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सत्तावीसमो तरंग लिख्यते ॥२७॥

श्लोक --

याको अर्थ -- या अन्तर में प्रायः यह क्षण श्री महाप्रभुन के विश्राम को

है। तासूं हमकूं यहां ठहेरनो अब उचित नहीं है या प्रकार विचार के सो भक्त प्रणाम करिके स्वतः ही अपने आग्रह सूं ही अपने प्राणनाथ के दर्शन को जो वियोग है सो अपने प्राणन के वियोग सूं हू अधिक है। यह जानत हू आपके दर्शन कूं त्यागवे में अत्यन्त विकल होय के अपने घरन कूं जाते भये हैं और कितनेक तो आगे की सेवा अर्थ वस्तुन कूं अवश्य सिद्ध करनो ही है ऐसे मानके तैसे हू वे तहां सूं जाते भये हैं और जे निकासिवे और भीतर लै जायवे में जे अधिकारी जन हैं सो यदि हम अब ठहेर जायगे तो पीछे यहां नहीं आवन देवेंगे या भय सूं कितनेक तो निकस जाते भये हैं यह समय रहिवे को है और यह समय रहिवे को नहीं है सो या प्रकार के ज्ञान वारे झापटीयान ने कितनेक तो जोर सूं निकासे भये हैं बड़े यत्न सूं जाते भये हैं और कितने तो आपके दरसन रस सूं प्रहारन के समूहन कूं सहन करत हू विन प्रहारन कूं न जानत विनसूं बड़े यत्न सूं कृपा करे भये ही तहां ठहेरते भये हैं और कितनेक तो दीनता सहित ही इनके चरणन में बारंबार प्रणामन कूं करके इनसूं स्थिति होयवे कूं बड़े यत्न सूं कहेते भये ही तहां ठेहेरते भये हैं और कितनेक तो बड़े दरवाजा सूं इनके सामने होयके निकस के फेर इनके अजाने ही पास के दरवाजे सूं दरशन की इच्छावारे भये थके फेर ही प्रवेश करत भये हैं और कितनेक तो छिप के ठहेरते भये हैं और कितनेक तो कार्यार्थ के मिस सूं बड़े यत्न सूं ठहेरते भये हैं और कितनेक तो पंखा करिवे कूं और कितनेक तो चरण कमल कूं संवाहन करिवे कूं और कोई पान आरोगवायवे कूं और कितनेक तो प्रभून के मध्य में जागरण समय जल कूं पान करायवे अर्थ ठहेरते भये हैं और कितनेक तो रक्षा के अर्थ ही और कितनेक को उत्थापन के अवसर कूं कहिवे अर्थ वाके रूपामृत कूं विस्तार वारे नयनन सूं पान करत ही ठहेरते भये हैं। जिनके गुणन कूं बाहिर जे स्थित भक्त हैं सो बारंबार सराहना करि रहे हैं और कितनेक तो वेत्रधारी पुरुषन ने जोर सूं बाहिर निकारे हैं वा श्रीजी के दरसन में तृप्त नहीं भये हैं। तासूं आपके जागरण पर्यन्त ही द्वार में ठहेरते भये हैं और जे हू भक्त अपने अपने घरन के प्रति बड़े यत्न सूं गये हैं सो फेर आये ही विन भक्तन ने तहां देखे हैं भीतर महाप्रभुन के घर में स्थित होय के कहूं गयो है अथवा फेर जब भीतर जायवे कूं आयो है सो द्वार में स्थित भक्तन के नयनों के समूहों से विन सुधा के समुद्रन कूं वर्षा करत भयो

है और किसके आदर कूं पात्र नहीं भयो है और वैसे चाहना के योग्य नहीं भयो है अपितु भयो ही है। तब बाहिर ठाड़े भक्त प्रश्न करें हैं के प्रियजी सुख पूर्वक पौढ़ रहे हैं। तांबूल अथवा जल कूं लेकर देवे वारेन कूं सो गुण सागर अपनी स्नेह भरी दृष्टि सूं अनुग्रह करत भये हैं और वामें स्थित जे हमसूं हू अधिक जे भाग्यवारे भक्त हैं विनके कानों में कहिवे सूं कितने वचनामृत के सागरन कूं वर्षा करत भये हैं और भाग्यवारे तुमारे नयन रूप भौंरान ने हमकूं जो रस हमकूं अत्यन्त दुर्लभ है ऐसे या श्रीजी के मुखकमल सम्बन्धी मंद हास्य रूप मधु को पान कियो है सो हू क्षण कब होयगो जामें तुमारी कृपा सूं हमारे हू नेत्र रूप भौंरा याके चरण कमल संबंधी परागन में लोटत ही अपने जन्म कूं सफल करेंगे या प्रकार प्रश्न समूहन सूं विनकूं सिंचन करके वे भक्त हू भाग्यवारेन के चक्रवरती भाव कूं प्राप्त होय रहे तिस भक्त सूं श्रीजी के भीतर मन्दिर की वार्ता कथन रूपी रक्षा सूं अत्यन्त हर्षित किये भये सो प्रभुन के मन्दिर भीतर प्रवेश कर रहे वा सर्व भाग्यवारेन के शिरोमणि रूप भक्त कूं बारंबार मन, सिर और वाणी सूं प्रणाम करके हाथन कूं जोड़ के प्रेम और दीनता के सहित पूछते भये हैं के हे भक्त प्रवर कृपा रत्न के सार रूप शुभाकार जो कृतार्थ वेद शिरोमणि मुगट रूप श्रीमान महाप्रभुन के निकट में तुम विराजमान होवो हो सो आपके दर्शन विना व्याकुल होय रहे ऐसे हमकूं हू शरण करवे सूं कृतार्थ करोगे। कहा हम सरीखे अधम जीवन कूं अत्यंत दुर्लभ जो दर्शन है सो निकट ही रहिवे वारे तुम सरीखेन के स्मरण सूं ही और जीव हू पावें हैं, हे तात तुमारी जो रसना है सो सदैव ही प्रभून के गुणाख्यान रूप अमृत के समुद्रन में निमग्न होयवे सूं पवित्र ही है सो हम तो सगरे दोषन के घर रूप हैं ऐसे हमारे संबंध सूं हमारे नाम हू अधम होय रहे हैं ऐसे हमारे नाम कूं प्रभुन के समीप कृतार्थ करवे कूं उच्च स्वरासूं स्पर्श करेगी कहा, हे शुभ शील गुण कृते कहा तैसे तुम करोगे के जैसे हम हू प्रभुन के नयनों के सनमुख होंय मोय सरीखे दीनजन कूं प्रभु दरशन देवे की इच्छा करे तो तुम कपाट खोलिवे सूं अपनी कृपा कूं मेरे ऊपर स्पष्ट करोगे कहा ऐसे सो पूछो भयो ही सहित विनय के मधुर मधुर अक्षर कहेत भयो है के सगरे अवतारन सूं और सगरे अवतारीन कूं हू दुर्लभ है दर्शन जाकूं ऐसें द्वार वारो जो प्रभुन को विश्राम गृह है सो वामें हौं तुच्छ कहा प्रवेश को योग्य हू तथापि जो प्रवेश

करूं हू सो अपने बल सूं कहा सो नहीं है किन्तु आपके दर्शन विना अत्यन्त ताप वारे जो तुम संद्दश अनंत गुण वारे श्रेष्ठ भक्तराज हैं विनकी कृपा सूं ही भीतर प्रवेश होय है जैसे स्वयं भूखे माता पिता वात्सल्यता सूं बालकन कूं श्रेष्ठ अन्न प्रथम ही खवावे है तैसे उत्साह वारे हू तुम वा श्रीजी के मुख कमल के मधुर रस कूं प्रथम हमकूं पान करावो ही हो जैसे गजराज तो बाहिर हू ठहेरे हैं इतने में प्रथम ही राजमन्दिर में मार्जार जो विडाल है सो तुच्छ होयवे सूं प्रथम ही प्रवेश कर जाय है तैसे तुमारे ही बाहिर विराजे वे मैं ही हौं। तासूं भीतर प्रवेश करूं हूं सो जिन तुमारी कृपा सूं वा श्रीजी के दर्शन रूप सुधानिधि में विहार कूं प्राप्त होवुंगो विन तुम कूं विस्मरण करके कहीं कृतघ्न होवुंगो अवश्य ही स्मरण करूंगो और श्री गोकुलेशजी के गुणालय में मूक जो मेरी यह रसना हती सो जिन तुम्हारे नामन कूं सेवा करिके ऐसे महा रस कूं प्राप्त भई हैं सो यद्यपि हौं तो निरन्तर अनेक दोषन सूं मिल्यो हूं ऐसे हू मोकूं सर्व कूं हू दुर्लभ और शोभा के समूह और मधुरता के सागरन कूं रस है जे श्रीजी के अलौकिक तिस आनन्द सूं पुष्ट जे श्री चरण कमल विनकों निकट प्राप्त करे है ऐसे वा प्रभू कूं आधीन करवे वारे वा तुमारे नाम कूं अत्यन्त विकास कूं प्राप्त होय रही दृष्टि सूं वा प्रभू कूं पान करत ही वा प्रभून के आगे तब सो मेरी वाणी तुमारे नामन कूं चिर पर्यन्त वन्दना करे और प्रेम सूं सेवा करे और भली प्रकार सूं पूजा करे ऐसे होय सके है कहा सो प्रभुन की स्वाभाविक करुणा और तुम भगवदीयन की कृपा और उत्साह सों शीघ्र ही दर्शन करावेगे आपस में कृपा करत प्रसन्न होत तुम भगवदीय हू दर्शन करावो हो यामें और की कछु नहीं चले है सो तुम तो बड़े भाग्यवान ही हो सो तुमकूं दर्शन देवे की इच्छा वारे प्रभुन की वर्द्धमान कृपा ही वेग सूं किवाड़ कूं खुलावेगी मो सरीखे कूं तो केवल वाके खोलवे में ही सामर्थ करेगी ॥४०॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलायां सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले सत्ताबीसमो तरंग समाप्तम् ॥२७॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग अट्ठाबीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अट्ठाबीसमो तरंग लिख्यते ।।२८।।

श्लोक -- **ईस्य विज्ञापिता शेषः प्रविवेशमहाप्रियेः ।। विश्राम भवनं धीमान्सजजागरेश्वरः ।।**

याको अर्थ --या प्रकार सूं विज्ञापना कियो है सगरो अपनो अभिप्राय जाकूं ऐसे सो बुद्धिमान भक्त श्री महाप्रभुन के विश्राम भवन कूं प्रवेश करत भयो है और श्रीजी हू तब जागते भये हैं द्वार में स्थित जे भक्त हैं विनकी आर्ति की अभी तक विज्ञापना हू वा भक्तराज ने नहीं करी है तासूं हू प्रथम सगरे सर्वज्ञन सूं वन्दित जे सो श्रीजी हैं सो विनकी आरति कूं जानके जागते भये हैं तब द्वार को जो कपाट हतो सो स्वतः ही उघर जातो भयो है और बाहिर ठाड़े सगरे भक्तन ने तो ऐसो जान्यो के भीतर स्थित भक्तराज ने ही द्वार उघार्यो है जासूं वास्तव में वा प्रभू की जो कृति है सो सगरी हू गूढ़ है तहां अमूल्य मंगलमय जो सिंहासन है जामें कोमल श्वेत वस्त्र ऊपर बिछायो है ऐसे रत्न खचित कंबल सूं जो शोभायमान हैं और अत्यन्त ऊंचो है और विशाल है तैसे रमणीय है और मनोहर है और पीछे जामें सुन्दर तकिया शोभायमान है ऐसे सिंहासन में श्रीजी विराजमान हैं और जे श्रीजी अपने पवित्र अत्यन्त मंगल रूप मधुर और मंद हास्य सूं सुन्दर जे कटाक्षपात हैं विनसूं भक्तन की सगरी आधि कूं दूर कर रहे हैं और जे अपने परमानन्द के समूहमय जे श्री अंग हैं विनसूं निरन्तर भक्तन के नयन रूप भूमि में अमृत के समुद्रन कूं वर्षा करि रहे हैं ऐसे भगवान पुरुषोत्तम करुणासागर श्री गोकुलेशजी कूं वे द्वार में स्थिति भक्त भीतर जायके दर्शन करत भये हैं विन भक्तन के जे सिर हते सो श्रीजी के आगे नमन करवे कूं और नयन जे हते सो दर्शन करवे कूं और हाथ जे हते सो श्रीमद् चरण कमल के स्पर्श करवे कूं और कान जे हते सो अमृत के समुद्रन कूं जय करवे वारे वा श्रीजी के वचनामृत कूं पान करवे कूं और प्राण जे हते सो वा श्रीजी के अंग सुगंधी कूं सूंघवे कूं और जो रसना हती सो श्रीजी के उच्छिष्ट तांबूल कूं लेवे अर्थ और जो मन हतो वाके गुणन के

आस्वाद लेवे कूं ये सगरे ही साहस करत भये हैं तब प्रभुन की जो कृपा शक्ति हती सो सगरे भक्तन के सगरे मनोरथन कूं वेग ही पूरण करती भई है तब अत्यन्त प्रसन्न भये प्रभुन को दर्शन करके भक्त जे हते सो अधिकारी जी द्वारा अपने घर कूं पवित्र करायवे अर्थ विज्ञापना करत भये हैं । तब कृपा के सागर श्रीजी हू वाकूं मानते भये हैं तब सहित श्री बहूजी के और अपने कृपापात्र सगरे सेवक भक्तन के संग ही क्रम सूं ही कितनेक भक्तराजन के घरन कूं शोभायमान करत भये हैं । तब प्राणनाथ जाके घर कूं अपने चरणन सूं शोभायमान करत भये हैं । तब वाके घर में जैसे वेणाभट्टजी के घर में भयो हतो वैसे ही महोच्छव कूं महासागर बढ़तो भयो है सो आपके जे भक्तजन हते सो आपके चरणन में सर्वस्व कूं हू और पुत्र संबंधी मित्र कलत्र समूह हू और देह इन्द्रीय प्राण मन कूं और आत्मा कूं हू सर्व प्रकार सूं निवेदन करके हू अत्यन्त दीनता सूं अपने हृदय में मैंने तो कछू नहिं कियो ऐसे ही मानते भये हैं और भक्तजनन ने प्रेम सूं अर्पण कियो तुलसीदल हू कृपा सागर श्रीजी सुमेरु कोटि सहस्रन सूं हू अधिक मानते भये हैं विन भक्तन के घर में गान बाजेन के समूह और नृत्य विविधि प्रकार के होते भये हैं और बहुत प्रकार सूं आर्ति और करोड़न भेटा होती भई है वस्त्र हैं आभरण हैं शैय्या है अनेक उपचार प्रकार के भेटा होते भये हैं सो वा उत्सव के सागर रूप और सर्व प्रकार सूं परिपूर्ण जे श्री गोकुलनाथजी हैं सो आपके तरंग हू तैसे हैं या प्रकार के कछु अधिक तीन महीना पर्यन्त अपने भक्तन के घरन में उत्सव के सागरन कूं वर्षा करत भये हैं सो या प्रकार ही पूर्ण परमेश्वर श्री गोकुलेश्वर जी को सुन्दर विवाह लीला संक्षेप सूं हू मैंने सूचना करी है सो याकूं पढ़वे वारो और भक्ति श्रद्धा सूं मिले प्रेम सूं सुनिवे वारेन कूं यह सर्व पापन के क्षय करवे वारी है सगरे अपराधन कूं निवर्त करे है और सगरे उपद्रवन को नाश करे है तैसे सगरे संताप कूं हू हरे है और सगरे अभीष्टन कूं देवे है और सगरे रोगन कूं दूर करे है और सगरे सुखन कूं बढ़ावे है और सगरे अंतरायन कूं हरे है और श्री गोकुलेशजी की प्राप्ति कूं करे है और जे जन निरन्तर भक्ति और श्रद्धा सूं मिले भये हैं स्त्री हो अथवा पुरुष हू होय वा श्रीजी के दर्शन विना जे निरन्तर तप्त होय रहे हैं और केवल श्रीजी के ही आश्रय वारे हैं और वा श्रीजी के ही श्री मुख कमल सूं गिरि रहे मधु के सिन्धुन के हू सिन्धुन कूं हू अपने कान रूप पोतन

कूं विहार करायवे की इच्छा वारे हैं और प्रेम सूं वा श्रीजी के वचनामृत रूप सिन्धुन में अपने कान रूप पोतन कूं विहार करायवे की इच्छावारे और तप्त होय रही अपनी रसना कूं सुधा सिन्धुन के परार्द्धन कूं जय करवे वारे जे श्रीजी के प्रसादी भोजन हैं विनसूं विना यत्नक के निरन्तर अत्यन्तक शीतल करवे की इच्छा वारे है और अत्यन्त दुर्लभ है रज के कणिका हू जाके ऐसे श्रीजी के चरण कमलन कूं संवाहन की इच्छा वारे हैं और अत्यन्त अलौकिक वाके स्वरूपामृत सागर में नित्य ही विहार करवे की इच्छा वारे जे स्त्री अथवा पुरुष हैं श्रीजी की जो यह विवाह लीला है सो विनके तिस तिस मनोरथ वारे देहादिकन कूं तैसे रक्षा करे है जैसे तिस तिस दुर्लभ पदार्थन के वियोग मय उत्कंठ वडवाग्नि के शिषा समूह में फेर नहीं जावेंगे सो श्री गोकुलपति के विवाह रूप या लीला कूं चिरकाल पर्यन्त जो स्त्री आस्तिक स्वभाव वारी सुनेगी अथवा भक्त श्रद्धा सूं मिली भई जो गान करेगी अथवा पढ़ेगी सो कबहू न दूर होयवे वारे अन्य संबंध रूप दोष कूं दूर करके श्री गोकुलाधीश की कृपा सूं वाके पद कूं हू प्राप्त होयगी और जय कियो है करोड़न अमृतन को सागर जाने और मन्द हास्य सूं शोभा वारी ऐसे वा श्रीजी के अधर की माधुरी कूं कंठ पर्यन्त वाधा रहित ही पान करेगी और वा श्रीजी के उत्कंठ दंड जैसे अत्यन्त शोभायमान जो भुजदंड हैं विनसूं भयो जो आलिंगन है ता करिके अत्यंत आनन्दित होय के सो स्त्री सौभाग्य के अधिकता की प्राप्ति सूं सगरी स्त्रीन कूं और औरन सूं हू विशेषकर लक्ष्मी कूं हू स्पृहा के योग्य ही होयगी यामें बहुत कहा कहे के जो रस सर्व के अनुभव सूं अतीत है वर्णन में हू नहीं आवे है और ब्रह्मानंद के शतन सूं हू परतम अधिक है महा रसमय है और जो मनोरथन सूं हू दुर्लभ है औरन के तो मनोरथन सूं हू स्पर्श के योग्य हू नहीं है और वा प्राणनाथ रसात्मक श्रीजी के हू और कोई कूं स्वाद नहीं करायो। केवल या प्राण प्रियतमा जन के अर्थ ही सुन्दर रक्षा कर राख्यो है जो सर्वाश्चर्यमय है और घात पात पीड़न ताड़न दंत दशन और कर्षन तिरस्कार और केशन के ग्रहणादि सूं और लज्जा हास्य मंदहास्य कथा विलासादि निरीक्षणन सूं और अनुकूलता तैसे प्रतिकूलता और उदासीनता तैसे दासी भाव और आग्रह आदि सूं हू और क्रोध अनुनय गर्वादिकन सूं और स्तंभ तैसे पलकन सूं और स्वेद तैसे स्वर भंग और कंप प्रलय तैसे आसुन सूं और निर्मलता सूं और विषाद सूं वैराग्य और श्रम

सूं भय और आलस्य हर्ष और उत्साहादि सूं हू जो सर्वाश्चर्य मय होय है ऐसो माधुर्यसार को सर्व स्वरूप परिपूर्ण परम फल कूं वा श्रीजी के कृपा सूं हू और जनन सूं दुर्लभ हमकूं प्राप्त होयगी जो रस के तैसे स्वरूप कूं प्राप्त होय रही स्त्री हू जाने है जासूं अनुभवैक वैद्य है जैसे विवाह में और विवाह सूं पीछे हू प्रिय श्रीजी प्रियाजी में प्रसन्न होते भये हैं तैसे या विवाह लीला कूं भक्त प्रेम सूं सुनें, पढ़ें ते गान करवे वारी स्त्रीन के ऊपर हू होय है श्री गोकुलेश जो भगवान हैं सो नित्य हैं तैसे आपके जन हू नित्य हैं निरन्तर नित्य ही श्री गोकुल जी में अपने भक्तन के संग नित्य ही सुन्दर विहार करे हैं सो जीवन के दान के अर्थ और भक्तन कूं अपने में प्रीति देवे के अर्थ और अपने पद में प्रेम वारे भक्तन के अर्थ प्रति आनन्द में अपने स्वरूपानन्द कूं देवे अर्थ सो महाप्रभुजी कृपाशक्ति की प्रेरणा सूं या घोर कलयुग में हू प्रगट होय के अपने स्वरूपात्मिक श्रीमद् गोकुल में आनन्द समुद्रन कूं वर्षा करत अपने जीवन के संग सदैव ही विहार ही करे हैं सो प्रिय श्रीजी विन भक्तन में और समय फल दान करे हैं और अपने स्वजनों प्रति जो फलदान करे है तैसे वा फल कूं हू यह आदर करे है कीर्तन करिवे वारे और सहित आदर के सुनिवे वारे और तैसे वर्णन करिवे वारे नर अथवा नारी होय तो विन के प्रति ब्रह्मादिक हू जाके लेस कूं हू नहीं जाने हैं ऐसी वे श्रीजी की भक्त स्त्रीगण हू प्रसन्न होयके देवे है नहीं तो अपने स्वरूपात्मक अत्यन्त दुर्लभ रसमय इन अपने भक्त स्त्रीगणन कूं वा लोक में काहे कूं प्रगट करते सो तासूं जे स्त्री अथवा पुरुष या श्रीजी की लीला कूं सहित आदर के वर्णन करे है अथवा श्रवण करे है सो विनमें जैसे गुण सागर श्रीजी प्रसन्न होय हैं तैसे तो सेवा करिवे वारेन में हू प्रसन्न नहीं होय हैं ऐसे यह प्रभु हैं ।।४५।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले अट्ठाबीसमो तरंग समाप्तम् ।।२८।।

।। श्री श्री श्री श्री श्री ।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग उगणतीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ उगणतीसमो तरंग लिख्यते ।।२९।।

श्लोक -- **तत्रापि श्रवणां दात्म विवाहस्थ रसाबुधिः ।। भृंश प्रतुष्यति यथा तथा नान्येन केन चित् ।।१।।**

याको अर्थ -- तामें हू जैसे अपने विवाह में सुनिवे सूं रस सागर श्रीजी प्रसन्न होय हैं तैसे और कोई सूं प्रसन्न नहीं होय हैं । यासूं हू श्री विक्रमादित्य के १६९६ वर्ष में जेष्ठ मास शुक्ल पक्ष में जो एकादशी आवे है वा दिन में श्रीजी श्री गिरिराज के ऊपर विराजमान होते पिछले प्रहर में अपने मन्दिर में सुन्दर बिछायो है सूक्ष्म कोमल वस्त्र जामें ऐसे अमूल्य श्रेष्ठ रत्नखचित कंबल वारे सिंघासन में तुल्य जैसे कोमल ऊँचे उत्कृष्ट आसन में पीछे सूं धारण किये दिव्य भारी तकिया कूं आश्रय करिके विराजमान भये थके करुणासागर श्रीजी अपने रूपामृत समुद्रन के सतन सूं भक्तन के नयनन कूं अत्यन्त सिंचन करते सभा में शोभायमान होय रहे हैं । तहाँ आपके निकट जमनादास और दामोदर भट्ट और विट्ठलदास हैं तैसे छोकरा श्यामदास तैसे टीकमदास और मथुरा भट्ट हैं और माधवदास और सिंहा और दिनकर तैसे और हू बड़े भाग्यवारे श्री महाप्रभुन के कृपापात्र प्रसिद्ध गुण नाम वारे करोड़न भक्त ही आपकी उपासना कर रहे हैं और भक्ति वारी स्त्रीजन हू प्रेम के प्रवाहन सूं व्याप्त भई थकी वा श्रीजी के मुख कमल संबंधी शोभा के मधु रूप सागरन के समूहन कूं निमेष रहित ही दृष्टि कमल रूप पात्रन सूं निरन्तर अत्यन्त पान कर रही हैं । ऐसी सो स्त्रीजन करोड़न ही अपने अपने योग्य स्थानन में वा आपकी उपासना कूं कर रही वा विस्तार वारी सभा में ऐसो रामनंद यति हू बैठो है जो श्रीपाद ऐसे प्रसिद्ध है और श्रीजी में अत्यन्त भक्ति वारो है सो प्रभुन की लीला रूप अमृत के समुद्रन कूं कान रूप अंजुली सूं पान करिवे की इच्छा वारो भयो थको ही प्रभुन कूं सहित आदर के विज्ञापना करत भयो है के हे महाप्रभो, महाराज हे करुणासागर, हे हरे हे ईश, आपने प्रगट किये अपने विवाह लीला

रूप अमृत के सिंधुन सूं कब और कहाँ अथवा का प्रकार सूं अपने भक्त कृतार्थ किये हैं । हे रससागर विभो सो मोकूं अपने श्रीमुख सूं हू कृपाकर वा लीला कूं जतावो ऐसे पूछे भये प्रश्न को रस सागर ईश्वर श्रीजी मंद मुसकान सूं सगरे पुरुषार्थन कूं वर्षा करत अपने निकटवर्ती जनन कूं सुखदान करत प्रथम कहे प्रकार वारी वा विवाह लीला कूं संक्षेप सूं वरणन करत भये हैं तब आपके श्रीमुख सूं श्रवण कर रहे जे बड़े भाग्य वारे भक्त हैं उनमें जो हर्ष बढ्यो है सो वा हर्ष कूं तो वे ही जानें हैं सो जब विवाह में श्री प्राणनाथजी श्री बहूजी के संग भोजन कियो है और जो श्री बहूजी में आपने प्रणाम कियो है और आपमें श्री बहूजी ने जो प्रणाम कियो है वामें जब मंद हास्य वारे श्रीमुख कमल को दरशन करिके अपने कूं जो अत्यन्त दुर्ल्लभ रस की प्राप्ति भई है सो और जब प्रभु कमलनयनी प्रियाजी कूं आलिंगन करिके अंक में लेकर उठावते भये हैं सो रसवारे उठावने कूं और जब प्रिय श्री बहूजी के कंचुकी संबंधी ग्रंथीन के खोलिवे में जो चातुरी है वाकूं अनुभव कियो है और जब रससागर आपस में हरदी के खेल कूं करत भये हैं और जब आपस में निरांजन कूं करत भये हैं और जब लवण और राई कूं अद्भुत उतारनो है और जब प्रिय अपनी प्रियाजी के प्रति अपनी मुद्रिका कूं देते भये हैं और जब नागवल्ली में हस्ती के आरोहण में जो रस प्रकार भयो है सो और हू जो जो आनन्दमय कृत्य भये हैं विनकूं जब प्रिय श्रीजी अपने श्रीमुख से कहेत भये हैं तब सगरे स्त्री पुरुष भक्त वे वा रस सागरमय श्रीजी के अक्षर अक्षर में ही मज्जन करिके फेर ही उठते भये हैं या रस संबंध में जानी जमनादास श्री महाप्रभुन के आगे प्रणाम करिके विज्ञापना करत भयो है के हे प्रभो महाराज कृपासागर श्री आपकी जो विवाह लीला मावजी भट्ट ने वर्णन करी है सो तो जगत में सगरे भक्तन कूं सुखदायक है अत्यन्त मधुर है या प्रसंग के सुनने सूं सुन्दर मन्द हास्य वारो है श्रीमुख जाको ऐसे प्रसन्न हृदय वारे श्रीजी कूं देख के तब श्रीपाद सन्यासी विज्ञापना करत भयो है के हे कृपासिन्धु हे महाप्रभो सो लीला मैंने नहीं सुनी है सो वाकूं सुनिवे कूं मेरे कान बहुत उत्साह करें हैं सो याकी विज्ञापना कूं सुनकर श्री महाराज सहित कृपा के कहेत भये हैं के मैंने कोई समय में आछी रीति सूं नहीं सुन्यो है सो या प्रकार श्री महाप्रभुजी की इच्छा कूं उछल्लित करिके सब बड़ी चतुर अनुराग वारी रसिके जिनके कंठ हैं सो रोमावली जिनकी

प्रफुल्लित होय रही है ऐसी गोमती बाई और राजबाई और गौरबाई यह सहित आदर के वा विवाह लीला कूं गान करत भई हैं सो गायन करती इनकूं देखिकें प्रभुन के प्रकाशमान तिस तिस गुणन सूं आनन्दित हैं अन्तःकरण जिनके ऐसी और हू प्रभून में अत्यन्त भक्त स्त्रीजन गान करत भई हैं सो जब श्रृंगार सार के सर्वस्वमूर्ति कंदर्प कोटि लावण्य श्रीजी हंसत मुख भये हैं तब तो वा श्रीजी में ही आशक्त है मन और दृष्टि जिनकी ऐसी इन हरिण नयनीन कूं सो गानता में निर्वाह कूं न प्राप्त होतो भयो है तब सगरे वे जन कहवे लगे हैं के यह नहीं जाने हैं । तब रसिक शिरोमणि हंसिके स्वयं हू कहवे लगे हैं जैसे तुम कहो हो के यह नहीं गायवो जानें हैं सो ऐसे नहीं है किन्तु लज्जा और निरन्तर संकोच और तैसे मानादिक जे स्वाभाविक धर्म हैं सो थोरे से हू और कारण कूं प्राप्त होयके वे यदि निरन्तर हुल्लास कूं प्राप्त होय हैं । तब पूर्णचन्द्र जैसे सुन्दर जिनके मुख हैं और जे गानादि में अत्यन्त चतुरता कूं धारण हू करें हैं ऐसी हू विन स्त्रीन कूं सो वे लज्जादिक धर्म कूं हू चिरपर्यन्त रोकत हू कबहू अपराध करत हू चतुर रसिकन के हृदय में अनन्त रस के समुद्रन कूं बारंबार वर्षा करें है सो या प्रकार प्राणनाथ श्रीजी के जो सत्य और अत्यन्त प्रिय वचन हैं सो या अमृत रस कूं विन भक्तन के कान और हृदय में वर्षा करत भये हैं वे कान और सो हृदय हू वा रस कूं विन भक्तन के मुख प्रति हू जब नहीं कहते भये हैं सो मोसूं अधिक बुद्धिमान चतुर जामें मोह कूं प्राप्त होय जाय है सो वाकूं हों सरीखो कैसे वर्णन कर सकूं । अपितु नहीं कर सकूं हूं ॥४॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाय सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले उगणतीसमो तरंग समाप्तम् ॥२९॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग तीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तीसमो तरंग लिख्यते ।।३०।।

श्लोक -- **अस्मिन्नेव्यति करे रूपाबाई ति विश्तुता वर्णिता स्वेनतां लीला मधुरं साधु संजगैः ।।१।।**

याको अर्थ -- या प्रकार के रस प्रसंग में रूपाबाई जो ऐसे नाम सूं प्रसिद्ध हती सो स्वयं जाकूं वर्णन कियो है ऐसी वा मधुर लीला कूं भली प्रकार ही गान करत भई है ।।१।। तब वाके साथ वीरबाई की सहचरी ब्राह्मणी गौरी नाम सूं हती सो और कान्हबाई हीराबाई और धनबाई तैसे और स्त्री हू तैसे गान करत भई हैं केवल आप श्रीजी में आशक्त हैं मन और दृष्टि जिनकी ऐसी विन महा भाग्यन की निधि रूप स्त्रीन के मध्य में सहित प्रेम रस संपदा के आदर और उत्साह सूं मनोहर अत्यन्त मधुर गान कर रही जो रूपाबाई है वाकूं देखके सगरे रसिकन के समूहन सूं वन्दनीय हैं चरणकमल जाके ऐसे सो परमेश्वर श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं सो सगरे अवतारन के अवतारी हू जाकी कृपादृष्टि कूं प्रतिक्षा कर रहे हैं और ब्रह्मादिकन कूं हू जाके श्रीमद् चरणारविन्द की रज के कणिका हू दुर्ल्लभ हैं ऐसे श्री गोकुलाधीशजी जब प्रसन्न भये हैं तब तो आपके भक्त हू सगरे बड़े प्रसन्न होते भये हैं । तब श्रीपाद हू श्रीजी के आगे प्रणाम करिके बड़े आदर सूं नम्रता सूं और बढ़े भये स्नेह सूं वा श्रीजी के श्रीमान कंठ में तुलसी मणी माला कूं पहेरावतो भयो है । तब कृपासिन्धु श्रीजी हू वाको हू अंगीकार करत भये हैं जासूं यह प्रभु भेंट किये न तो कण कूं विचारे हैं और न तो सुमेरु कूं हू गिणे हैं किन्तु वा भेटा में मूल रूप केवल प्रेम कूं हू गिनें हैं तासूं गोकुल के प्राणनायक वाके प्रेम सूं अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं । तब वा प्रभुन के आगे प्रेमपूर्वक उपायन कूं धरि के कनकादि बाई जी श्री प्रभुन के दोनों चरण कमलन कूं प्रणाम करत भई है और चांपाबाई तैसे धनबाईजी वा जो प्रभुन के श्रीकंठ में सुवर्ण की माला कूं पहेराय के प्रेम सूं बारम्बार प्रणाम करत भई है और केसर के रस सूं रंजित

उत्तम उज्ज्वल उत्तरीय कूं श्री करुणासिन्धु प्रिय श्री गोकुलाधीश श्रीजी कूं भक्ति सूं अंगीकार करावती भई है और छोकरा श्यामदास ने सुवर्ण की रत्न खचित अमूल्य मुद्रिका प्रणाम करिके पहेराई है और विठ्ठलदास तैसे और हू आपके भक्तन ने प्रणाम पूर्वक भेट करी है तैसे टीकमदास ने हू प्रणामपूर्वक भेट आगे धरी है और सदा निकट रहिवे वारे माधवदास जी ने बड़ी भक्ति पूर्वक उपायन प्रणाम करी है और मोहनदास की माता फूला भाभी जी ने हू सर्व प्रकार सूं प्रणामादि कर उपायन आगे धरी है और गोकुलदास की बेहन ने हू प्रणाम करी है। तैसे जसोदा बहिन ने हू प्रणाम करी है उपायन आगे धरी है तब या रस सागर श्रीजी के आगे सगरे स्त्री पुरुष अपने अपने मनोरथानुसार उपायन कूं धारण करिके प्रणाम हू करते भये हैं। पीछे शरद् ऋतु के पूर्ण चन्द्रमा सम्बन्धी किरणन के समूह कूं जय करिवे वारी बहुत मिसरी भक्तजन लायके प्रभुन के आगे धरत भये हैं। तब कृपासागर यह श्रीजी हू वामें से कछु कूं हू आस्वादित करिके प्रसादी करत भये हैं। तब प्रसन्न भये कृपा के सागर रसात्मक श्रीजी सिद्ध कियो है अपुने अधरामृत के संबंधी महारस कूं सिद्ध वा मिसरी कूं परम निज भक्त जनन के समूह में बांटवे कूं आपको प्रसाद ही है एक जीवन जिनकूं ऐसे अपने भक्तन के प्रति देते भये हैं। तब प्रसन्न होय रहे वा प्रभुन सूं प्रसादी करी भई सो मिसरी हू उछल्लित होय रहे तरंगन के समूहवारे अमृत के सागरन कूं हू तृण जैसे हू नहीं मानती भई है तब श्री प्राणनाथ श्रीजी कूं प्रणाम कर करके ही कितनेक भक्त तो ले रहे हैं और कितने तो दे रहे हैं और कितने तो वाकूं याचना कर रहे हैं और कितने तो खाय रहे हैं और तो स्तुति हू कर रहे हैं और कितनेक तो संग्रह ही कर रहे हैं और कितने तो आय रहे हैं और कितने तो लेके जाय रहे हैं और कितने तो प्रणाम कर रहे हैं ऐसे श्रीजी के परार्द्ध सूं हू अधिक संख्यावारे भक्त स्त्री पुरुषन कूं अलौकिक महा आनन्द रस को कोलाहल रूप समुद्र अत्यन्त बढ़तो भयो है। वाके पीछे तैसे ही उच्छलित रसात्मिक स्वरूप सूं सो श्रीजी श्री गोवर्द्धन नाथजी के मन्दिर कूं शोभायमान करत भये हैं। तब सो श्री गोकुलाधीशजी के अपने पौत्र के पुत्र बालक जे ब्रजपति हैं जाने तैसे उत्साह सूं शोभायमान आपके दर्शन करिके विज्ञापना करी है। तातजी आज आपको जन्म उत्सव बढ रह्यो है, कहां सो ऐसे जब ब्रजपति ने कह्यो है तब वाकूं

सुनिके ही उछल्लित होय रहे प्रेम सूं भक्तन के सुनत हू मंद हास्य पूर्वक स्वयं प्रिय श्रीजी ऐसे कहत भये हैं कि कहा ऐसे है तासूं वा मन्द मुसकान सूं कितनेक भक्तन के आशय में अपनो आशय या प्रकार सूं प्रगट करत भये हैं के जड़ जे अनपढ़ आदि हैं केवल विनके प्रसंग में निश्चय सूं उत्पत्ति हू जन्म है । ऐसे शास्त्रवेत्ता पंडित जानें हैं और जीवन कूं तो जन्म है नहीं तासूं जन्म है तहां देह कूं उत्पत्ति है । ईश्वर तो नित्य है तासूं वाके देह कूं हू सो जन्म नहीं है । तब कहा है के केवल वाको प्रागट विशेष ही जन्म कहावे है । तब तो जे ईश्वरेश्वरन के हू ईश्वर जो प्रगट प्रभु हैं सो मेरो जन्म कैसे होय तासूं भक्तन के स्नेह सूं प्रागट कूं हू जो विशेष है सो जन्म रूप सो मान्यो है और जन्म रूप जो विकार है सो तो मेरे कूं स्पर्श हू नहीं करे है । मेरे में तो आज विवाह लीला के कीर्तन श्रवणादि सूं भक्तन कूं उदय भयो जो यह प्रेम है तासूं बढ़यो भयो जो वह नयो रूप प्रागट्य है सोई हू जन्म भाव कूं अथवा वाके समान भाव कूं प्राप्त होय रह्यो है । सो यह मेरे लालना के प्रभाव सूं प्रगट भयो अद्‌भुत बुद्धि सूं जो या ब्रजपति ने कह्यो है के तातजी आज आपको जन्म उत्सव है कहा सो यह साधु ही कह्यो है सो जैसे जन्मोत्सव में होय है तैसे ही आज हू भक्तन कूं महाभारी अनन्त तरंगन की वृद्धिवारो अनिरवचनीय उत्साह रूप सागर प्रगट भयो है । तासूं आज हू तैसे ही अत्यन्त अलौकिक जन्मोत्सव ही है । फेर श्रीजी श्री गोवरधननाथजी के मन्दिर सूं पधारके त्रिलोकी के मणि रूप अपने स्वरूप सूं अपने मन्दिर कूं फेर शोभायमान करत रात्रि में तेलाभ्यंग के समय में वलाद नाम सुगंधी तैल सूं शरोदासादि और सिधा तुलसी आदि श्री अंग कूं मर्दन कर रहे हैं और भाग्य वारेन में श्रेष्ठ छोकरा श्यामदास और विट्ठलदास और टीकमदास और सदा निकटवर्ती माधवदास हू यह सगरे भक्ति सूं श्री चरण कमल कूं मर्दन करि रहे हैं और यथा समय ही दिनकरजी तांबुल कूं सिद्ध करि के दे रह्यो है । और हू तहाँ तहां तैसे सगरे भक्त सेवा में तत्पर होय रहे हैं । तब ईश्वर करुणानिधि श्रीजी के निकट पुत्र कूं संग लैके वेत्रधारी जो दामोदरदास हतो सो वीणा कूं बजावत विवाह लीला को जामें वर्णन है ऐसो परमानन्दजी ने रचना कियो जो सुन्दर पद हतो वाको आछी रीत सूं गान करत ही भयो है । तब वा पद में श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं । सो प्रसन्न होयके प्रभु जो अपने माथे पे धारण किये भये

अमूल्य उपरना कूं वाके प्रति देते भये हैं। उपरना और महापुरुषन कूं अत्यन्त दुर्ल्लभ हतो ऐसो उपरना जब श्रीजी ने दियो है। तासूं सो श्रीजी जब अत्यन्त प्रसन्न भये हैं तो तब सगरे स्त्री पुरुष हू भक्त हू नोछावरी करिके बहुत दिव्य वस्त्रन कूं वाके प्रति देते भये हैं और बहुत धन हू देते भये हैं। तब रससागर श्रीजी सुख शैय्या में पधारे हैं। तब मुरली और बलराम हू मिलिके विवाह लीला को गान करत भये हैं। तामें हू श्रीजी अत्यन्त प्रसन्न होते भये हैं। तब जीजीबाई और जसोदाबाई ने और गौरबाईजी ने प्रेम सूं प्रभुन के ऊपर सगरे जनन के मन कूं हरवे वारो निरांजन कियो है और जीजीबाई ने सुवर्णमय माला पहेराई है और गौरबाई ने मुद्रिका पहेराई है वाकूं हू रससागर श्रीजी अंगीकार करत भये हैं। इहां सगरे जे भक्तजन हते सो उपायन और नमस्कार के मिस सूं अपने आत्मा कूं हू अर्पण करत भये हैं सो वे अनेक भक्त अर्पण किये भी अपने सर्वस्व आत्मा कूं फेर जो अर्पण करे है सो आश्चर्य है और अंगीकृत कूं हू कृपासागर हू जो अंगीकार करत भये हैं सो ऐसे निश्चय जाननो के उदय होय रही या प्रभुन की श्रेष्ठ कृपा सूं क्षण क्षण में यह भक्त सगरे ही नवीन नवीन भाव कूं धारण करे हैं सो इन भक्तन को सर्वस्व हू क्षण क्षण में उदय होय रहे और प्रेम सूं नवीन भाव कूं धारण करे है तासूं अर्पक जे भक्त हैं और अर्पण योग्य जे विनके देहादि और सर्वस्व हैं यह सगरे क्षण क्षण में नवीन नवीन ही होय हैं और तैसो रसात्मिक प्रभु हू क्षण क्षण में विचित्र नूतन रस रूप है। तासूं यामें बुद्धिमान आश्चर्य नहीं जानें। अब प्रभात समय में प्रभुन कूं जो मोहनदास अधिकारीजी हैं चन्दन स्नान के अर्थ छोकरा श्यामदास की विज्ञप्ति कूं सूचना करत भयो है। तब श्रीमान के प्रभात में भक्तवत्सल भगवान श्रीजी निस्तुष कुमकुम के रसन सूं प्रभु भक्तन के भावाधीन भये स्नान करत भये हैं। तब केसू के रंग सूं शोभायमान धोती उपेरणा और सुवर्णमय माला प्रेम सूं छोकरा श्यामदास ने अर्पण करी है सो करुणासागर विनकूं अंगीकार करत भये हैं सो करुणानिधि श्रीजी महाभाग्यवारे इन सगरे भक्तन के विन उपायन कूं अंगीकार करत भये हैं और छोकरा श्यामदास कूं सगरे भाग्यवारेन में बड़ो भाग्यवान ही करत भये हैं। तब भाग्यवान मोहनदास की जो माता फुली भाभी हती सो सगरी रसोई सामग्री अर्पण करिके सहित परिवार के आपकूं भोजन करायो है और सेवक तैसे आपके सगरे भक्तन कूं बड़े सत्कार सूं उत्तम

मीठो विविध अन्न सूं अपने घर में भोजन करावती भई है। याके अनन्तर तीसरे दिन में श्री गोकुलाधीशजी वा श्री गिरिराज सूं श्री गोकुल में पधार के अपने घर कूं शोभायमान करत भये हैं। तब वा गोकुल में हू जे भक्त हते वे हू सगरे प्रसर रहे हर्ष सूं वा महाप्रभुन के आगे अनेक उपायन कूं धरिके और नमस्कार कूं करिके आपके श्रीमुख की शोभा के दरशन सूं उदय भये अपार निस्तुष आनन्द के सागर में चिर पर्यंत अत्यंत मग्न होय जाते भये हैं और सगरे भक्त के शिरोमणि जो मोहनदास को पुत्र है जो जब हर्ष सूं रात्रि में सुख शैया में पधारे हैं तब हर्ष सूं निरांजन करत भई है और वा मोहनदास की कन्या कमला ने सुन्दर मनोहर सुवर्ण की माला पहेराई सो वाकूं हू प्रसन्न भये मन सूं श्रीजी अंगीकार करत भये हैं। तब श्रीजी कहवे लगे के इतनो उपायन मेरे आगे धरके मोकूं बड़े हर्ष सूं ये सगरे भक्त काहे सूं अत्यन्त प्रणामन कूं कर रहे हैं। तब अधिकारीन में श्रेष्ठ जो रतनजी अधिकारी हते सो प्रभुन के आगे प्रणाम करिके विज्ञापना करत भये हैं के जासूं आप बहुत दिन गिरिराजजी विराजे हैं और अब कृपा सूं पधारे हैं तासूं प्रसन्न भये हैं यह भक्त महाप्रभुन कूं प्रणाम कर रहे हैं। तब हसत हसत श्रीमुख कमल सूं सो श्रीजी हू वा अधिकारीजी कूं कहत भये हैं के वहां तो जो कछु भयो है सो तो वहां ही है सो वा सुन्दर मंद हास्य सूं और इन अक्षरन सूं कितने एक विचारवान अर्थ जानवे वारे कृपापात्र भक्तन में सगरे तहां के व्रत कूं करुणासागर श्रीजी प्रगट करत भये हैं के विवाह लीला के श्रवण कीर्तनादि सूं जो अनिरवचनीय अत्यन्त उत्कृष्ट मोकूं हर्ष भयो है सो तो आनन्द के उद्रेक वारो है रूप जाको ऐसे आनन्द की पराकाष्टा कूं प्राप्त भये श्रृंगारसार सर्वस्व को सार रूप जो मेरो कोई एक अनिरवचनीय रूप भेद है वाकूं उल्लास करिवेवारो है और दाता हू है सोहू हर्ष तो साधनो के शतन सूं हू सिद्ध नहीं होय सके है। सो कल्याण भट्टजी कहे हैं के यासूं ही प्रथम मैंने या लीला के श्रवण कूं फल कह्यो है के तामें हू रस सागर श्रीजी अपने विवाह के सुनिवे सूं तो जैसे अत्यन्त प्रसन्न होय हैं तैसे और कोई सूं नहीं होय हैं। तासूं जो मैंने प्रथम कह्यो है वामें सन्देह नहीं करनो है तामें प्रभुन ने जो कथन कियो होय वामें जो सन्देह करे है सो तो महा नीच नर है। अर्थ में हू शुभ फल कूं नहीं प्राप्त होय है और वे नरकादिकन में गिरे हैं। भट्टजी कहें हैं के यदि हों बड़े यत्न सूं परार्द्ध

मुखवारो हू होवुं तोहू कहिवे में समर्थ नहीं होवुंगो ही और वा निर्दोष स्वभाव कूं स्तुति कहा कर सकूंगो के जा कृपामय स्वभाव सूं मेरे हू कानन में उदय होय रहे हैं तरंगन के शत करोड़न जामें ऐसे हर्ष के समुद्रन कूं निरन्तर वर्षा करिवे अर्थ या श्रीजी के श्री मुखारविन्द सूं हू यह विवाह लीला प्रगट भई है ॥७६॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले त्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३०॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग इकत्रीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ इकत्रीसमो तरंग लिख्यते ॥३१॥

श्लोक -- श्री गोकुलेश्वरो नेनं प्रीयतां लिखनेनमे दीनबंधु दयासिन्धुः ॥ संपूर्णः पुरुषोत्तमः ॥१॥

याको अर्थ -- श्री कल्याण भट्टजी कहें हैं के दीनबन्धु दयासिन्धु सम्पूर्ण पुरुषोत्तम जे श्री गोकुलेश्वरजी हैं सो मेरे या प्रकार के लिखिवे सूं प्रसन्न होवें ॥१॥

काः कुलालाः ॥ कलाकाली लांगली लोल शीतलः ॥ को गोली गोंग गंगा का कौ गौः को गौः कलाकुलः ककोलः कुशलः ॥ कः कः का कोकोलीशः ॥ कलौकिल लिकतौकिल ॥ गो गो केल लं लौ लीला गोकुलेश कशैलशाक ॥२॥ कः कुलशेशः कुशशाः कुशलः फलः गो कोकिल शील शालिशं शीलो लोक शोकशः ॥३॥ जयत्य ये यतौ जप्यो जयत्ये ताजी ता जीत ॥ ता ताय तोत्यू या त्यायी ता ताप या तु तु त तः ॥५॥ वंद दी दी तददंद ता दादा दो दुत हददो ॥६॥ ता ततो दददीता त त ता त्ति तुदु ततः दुत्तंन ॥७॥

इनको अर्थ विचारनो ॥ महामंगलमय है रूप और शील जाको और श्रृंगार रस के सार कूं जो सरवस्व है तन्मय है एक मूर्ती जाकी ऐसें श्री श्री गोकुलेशजी हैं सो सगरे हू महा अवतारीन के अतुल सर्वभौम हैं और निरन्तर नवीन और उपमा रहित किशोर अवस्था सूं जो विशेषकर शोभायमान हैं और नाना विधि

रस और आस्वादन के समूहन सूं निरन्तर प्रतिक्ष प्रमाण हैं निर्मल कृपा कटाक्ष जाकूं कहिके नाना विधि रस और आस्वादन के समूह हू विचार करे हैं के कबहू हमारी और यह श्रीजी को कृपा कटाक्ष होयगो और आनन्द के सार रूप जे अनेक विलास और उछल्लित होय रहे जे माधुर्यन के प्रवाह हैं और अद्भुत जे समृद्धि है तैसे विद्या के जे समूह हैं और जे भाग्यरास हैं तैसे सौन्दर्य रूप तरंगन के समूह हैं और प्रकर्ष के जे समूहन के वृन्द हैं और जे विदग्धता हैं तैसे भ्रू के जे नृत्यभेद हैं और अनिरवचनीय जो चंचलता को समूह है और प्रसिद्ध जो सो मनोहरता है तैसे प्रसिद्ध जे भोग हैं और सर्व के ऊपर विराजमान जे निर्दोष प्रकाशमान सगरें गुण हैं और निर्मल जे भाव हैं तासूं जो निरन्तर सेव्यमान है कहा के यह प्रथम कहे सगरे जो कि निरन्तर सेवा कर रहे हैं और करुणा तैसे प्रभुता और माधुर्यता और लीला रस सूं रंजित नयन जाके ऐसे जो प्रियजी श्री गोकुलेश जी हैं वा श्री गोकुलेशजी ने श्री गोकुल में जो अपनी लीला रूप कमल कूं प्रकाशित कियो है जामें नवीन रसिक संगी जे भक्त हैं सो भौंरा रूप है हे अस्पर्शज्ञवर्या कहा के या श्रीजी के जे रसिक रस के जानवे वारे हैं विनमें श्रेष्ठ और हों वा श्रीजी के भक्तराज वा श्रीजी के प्रफुल्लित लीला कमल कूं तुमारो कर्णपुर रूप कहा के कर्णाभरण रूप करूं हूं के सो लीला कमल के विवाह लीला के कहिवे सूं जो मेरे चित्त कूं अब हू अत्यन्त शोभायमान कर रह्यो है और अंगन में प्रसरवे वारी है सुगंधी जाकी और जो उत्कृष्ट स्वाद है निर्मल है वाकूं हे भक्त हृदय रूप नासा सूं सूधे कहा कै वाकी सुगंधि कूं लेवो और जा लीला कमल सूं उदय होय रही अधिक तैसे मधुर रस के सागरन कूं पतिव्रता जे स्त्री हैं वे सगरी ही परम हर्ष सूं शिर कूं हिलावती ही मनरूप हाथन के युग सूं लेकर निरन्तर ही पान कर रही हैं और जा लीला कमल की सुगंधी तैसे प्रसिद्ध वा श्री विट्ठलेश श्री गोस्वामीजी के मनमें कछु हू प्रविष्ट होवो थको उछलित तरंग वारो निरन्तर गंभीर सुधा के समुद्रन कूं पान करावत भयो है बड़ो आश्चर्य है जा लीला कमल कूं जो सौष्ठव है कहा के आधिक्यता है श्रेष्ठता है सो तैसी बहेन के और तैसी माता के विचार सूं बड़े यत्न सूं स्पर्श करके कहा के विनके विचार गोचर भयो थको ही तासूं ही विनकूं वेग ही हर्ष रूप पर्वत के शिखर ऊपर ही चढ़ावतो ही भयो है जा लीला कमल कूं प्रिया रूप सुन्दर मनोहर सरोवर है सो विश्वास रूप पवन

सूं उछलित भये जे वाणीमय सीकर हैं जल कण हैं विनसूं सखीन कूं स्पर्श करके शीतल कर देतो भयो है और जा लीला कमल कूं जो दल है हरिण नयनी स्त्रीन के कछु हिक कर्णावतंस सूं भाव कूं प्राप्त होय के विनके हृदय में उत्साह के सागरन कूं वर्षा करके विन सागरन की वृद्धि अर्थपूर्ण चन्द्रमा भाव कूं प्राप्त होय रह्यो है और जो लीला कमल अंतरंग भक्त समूह के चित्त रूप मार्ग में अत्यंत प्राप्त होयके तहां प्रिया सबंधी महाभाग्यन के समूहन कूं स्तुति करवे लिये अधिक हर्ष सूं बंदीभाव कूं धारण कर रह्यो है और जा लीला कमल के स्पर्श रूप सौभाग्य सूं अत्यन्त शोभित भयो जो पवन है प्रसिद्ध ही जगत कूं पवित्र कर रह्यो है और वाके अपराधन के समूह रूप पर्वत के मूल सूं निकारके वा नाशा रूप सागर में प्रसिद्ध डुबाय रह्यो है ऐसे वा लीला कमल कूं हे भक्तो तिहारे कार्य को भूषण रूप करूं हूं । सो रस सागर के निर्मल उज्ज्वल तारुण्य कूं निरन्तर शोभायमान कर रहे जे प्राणपति हैं और तैसे ही मधुर विलासन सूं रस सागर के तारुण्य कूं अत्यन्त शोभायमान कर रही जो चन्द्रमुखी श्री स्वामिनीजी हैं इन प्रिया प्रिय कूं जो युग है प्रसिंद्ध ही तैसो लक्ष्मी नारायण कूं जो युग है वाकूं जय कर लेतो भयो है । जासूं वा लक्ष्मीनारायण के युग सूं और जे सगरे स्त्री पुरुषन कूं युग है सो जय कियो भयो लज्जा कूं प्राप्त होयगो कहा अपितु नहीं होयगो तासूं जगत में लज्जित होयवे कूं इनकूं जय कह्यो है नहीं तो इनकी कहा चली है वा श्री प्रियाजी और श्रीजी को जो स्वरूप है सो निरदोष है और मधुर है और विन दोनों कूं चरित्र हू तैसो मधुर है और मंद हास्य हू मधुर है और विलोकन कहा देखनो हू मधुर है और गति हू मधुर है तैसे बोलनो हू मधुर है और इनकूं कौतूहल हू मधुर है तैसे विभ्रम जे विलास है सो हू मधुर है और स्थिति कहा विराजनो हू मधुर है और कृपा को जो समूह है सो हू मधुर है और इनकी कथा हू मधुर है और इनके जन हू अत्यन्त मधुर हैं और याकूं निकेतन जो निवास मन्दिर है सो हू सुन्दर मधुर है और इनकी नर्म हू मधुर है और कुंडल मधुर हैं और अधर हू मधुर हैं और कुंडल क्रम हू मधुर हैं और सधर हू मधुर हैं और इनके नयन हू सुन्दर मधुर हैं और कटाक्षन को समूह है सोहू मधुर है । और तैसे इनके कानन को युगल हू मधुर है और कुमकुम को तिलक हू मधुर है और इनकी दांतन की पंक्ति हू मधुर है और उल्लसित होय रहे

युगल हू मधुर है और इनके नासा पुट हू मधुर है और प्रसरवे वारी
की शोभा हू मधुर है और इनके कंठ में जो तुलसी माला है सो हू मधुर
और इनकी मनोहर जो भुज युगल है सो हू मधुर है और इनके हार के
की जे छटा है सो हू मधुर है और इनके कंठ में गुंजा माला है सो
मधुर है और इनकी जो रोम लता है सो हू मधुर है और इनके नाभि वलय
जो सुन्दरता है सो हू मधुर है विभूषणन के जे समूह हैं सो हू मधुर है
इनके चरण कमल की जो शोभा है सो हू मधुर है और नखचन्द्र है सो
मधुर है और जो इनकी जे रज है सो हू मधुर है और इनके चरण कमल
जल हू मधुर है और इनको समागम हू मधुर है और हू जो कछु है सो
इनको सर्वथा मधुर है। और इतर जे हैं विनको तो कछू हू मधुर नहीं है
है सो तो कटु है और हसनो है सो पीपली मिरच रूप है और स्थिति
सो लवण रूप है और कथा है सो निंबपत्र सम कटु है और हू सगरी चेष्टा
जैसे है और रूप हू विष है और देखनो हू मृत्यु रूप है सो इतर स्त्री
को कछु हू सुन्यो भयो सो विष जैसे पसर के निश्चय सूं वाधा ही करे
और जे परम प्रिय श्रीजी आपको तो श्री अंग सगरो ही चारों ओर सूं अमृत
ही है और शुभ मास और मंगल के समूहन सूं मनोहर सुन्दर पक्ष है
वामें रससागरमय स्वरूप जे श्री गोकुलेशजी हैं आपकी जे श्री प्रियाजी श्रीमुख्य
स्वामिनी श्री पार्वती बहूजी हैं वाके जे वाम अंग हैं और वाम नेत्र कमल हैं
तैसे भ्रू है सो फरकन रूप मुखारविन्द सूं परम पुरुष तैसो श्री गोकुलेन्दु श्री
गोकुलेशजी हैं वाके संग श्रृंगार सार के स्वरस रूप सागर संबंधी कल्लोल
समूहन को अधिक उछलनो जामें और लक्ष्मी आदि सर्वोत्तम जे स्त्री हैं विनकूं
हू प्राप्त नहीं होयवे वारो है चरण कमल संबंधी राग को लेश जाकूं ऐसो जो
संग है रसमय मिलाप है वाकूं सूचना करत भये हैं के तुमकूं श्रीजी को संगम
होय और परम भाग्यवती वा श्रीजी की प्रिया सखी जो सो मुख्य स्वामिनीजी
श्री पार्वती बहूजी हैं वामें शुभ जे अस्व के शब्द हैं सो हू निरन्तर दक्षिण भाव
कूं प्राप्त होय रहे हैं और सुन्दर मंगलमय रूप वारे शुभ शकुन होय रहे हैं
और शीतल मन्द सुगंधि पवन हू सेवा कर रह्यो है और निष्कारण हर्ष को
समूह हू होय रह्यो है और वा प्रियाजी के जे श्रीअंग हैं सो मिल के चिरपर्यन्त
वा सुन्दर दंतवारी प्रिया कूं मानो अलभ्य लाभ कूं कहेत ही जाको स्वरूप नहीं

जान्यो जाय है ऐसे उत्साह कूं प्राप्त होय रही है और उछल्लित होय रह्यो सो सौन्दर्य पुर का स्वरस हू और तैसे मंद हास्य हू और तैसे विलास हू वेग सूं आय के वा प्रिया कूं प्रिय के संगम रूप वृत्तांत कूं कहेत भये हैं तब यह कमल नयनी श्री बहूजी अपनी अंतरंग सखी के प्रति वा वृत्तांत कूं सूचना करके और निरहेतुक हर्ष के समूहन कूं और तैसे उत्साह कूं सुनाय के वा सखी कूं सो प्रियाजी कहवे लगीं के हे वयस्ये पांच छै दिन सूं प्रारम्भ करिके मेरे में ऐसो उत्साह होय रह्यो है यासूं कहा होयगो सो हू नहीं जानूं हूं। यदि तुम जानत होओ तो मोकूं कहिये। सो या प्रकार प्रियाजी के वचनामृत सिन्धु कूं कान रूप अंजुली सूं पान करके सो सखी हर्ष सूं उछलित होय रहे मुख रूप पूर्ण चन्द्र के मंद मुसकान सूं शोभायमान करत सो सखी कहवे लगी के हे अंजन नेत्रे, कमल नयने, और हे गोकुल मंगलस्य प्रिये, गोकुल के मंगल रूप जे श्रीजी हैं वाकी प्रिये या प्रकार के शुभ शकुनन सूं जो तुमकूं मंगल होयवे वारो है सो तो केवल़ तुमारे ही अनुभवैक वैद्य है। तासूं वाकूं मैं हू नहीं जानूं हूं तैसे और हू नहीं जान सके है। हे डोल, के सदच्छ भाग्ये, उछलित होय रह्यो है निर्मल उज्ज्वल भाग्य जाको हे ऐसी प्रिये सो मंगल प्रगट होय के तुमारे प्रति अपने स्वरूप कूं स्वयं हू स्पष्ट ही कहेगो सो वा निर्दोष तिस महामंगल को निरन्तर मनोहर प्राकट्य समय नि़कट ही होय रह्यो है सो जाकूं महामंगल कूं आपके चरणन में अत्यन्त गिरके हाथन कूं बांधके हू हमसूं तैसे और सखीन सूं हू पूछी भई हू तुमसो हमारे आगे यामें किंचित मात्र हू कहिवे में समर्थ नहीं होवोगी सो वा समय में सुन्दर विलास वारे जे तिहारे नयन कमल हैं और विविध प्रकार सूं उल्लास कूं प्राप्त होय रहे जे भ्रूअ हैं और निरन्तर प्रफुल्लित होय रहे जे कपोलपालि है और लज्जा सूं शोभायमान जो मंद मुस्कान है और वा हर्ष के पर्वत सूं गिर रह्यो जो तैसो मनोहर अश्रु रूप झर है और कदम्ब के पुष्पन के समूहन कूं निरादर करिवे वारो और तिहारे सगरे अंगन कूं शोभित करवे वारी जो रोमावली के हर्ष हैं और भीतर सुधा सूं सिंचन करी जे कल्पवल्ली हैं और असंख्यात पुष्पन सूं निश्चित मिलिवे वारो वेग ही उदय़ भयो जो अतुल उज्ज्वल मनोहर सौन्दर्य है और जाके ऊपर अमृत के समुद्रन के हू समूह वारने किये जाय ऐसो जो तिहारे श्रीकंठ कूं शोभायमान करके प्रकाशमान होय रही न समय मे प्रगट भई गदगदता है और

उदय भये अनिरवचनीय भाव सूं जो अनिरवचनीय मनोहर शोभा वारो मुख कूं नीचो करनो है और और दिनों में हू पसरवे वारो जो निद्रा कूं आदर है और कपोलपाल में अधिक ही शोभामान होय रह्यो जैसे अधर में अत्यन्त जाग रह्यो और हृदय में शोभायमान जे कुच कलिका है विनमें अत्यन्त वर्ध्धमान अतुल मंगलमय शोभावारो अत्यन्त माघ कहिये महेता चुम्बन पान मर्दनादि सूं उदय होय रही वो विलक्षण शोभा है और दूर कियो है लाल उज्ज्वल रत्न कूं दर्प्प जाने ऐसो जो तिस तिस अंग में उदय भयो अनिरवचनीय मद है राग है लालिमा है सो या प्रकार सूं वा समय में श्रेयवे वारे जे यह मनोहर चिह्न है यह चिह्न है यह चिह्न ही तिहारे वा महामंगल कूं हमारे प्रति ही कहेंगे ॥१०१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले इकत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३१॥ ॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग बत्रीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ बत्रीसमो तरंग लिख्यते ॥३२॥

श्लोक -- **इति दृगस्या वचनं कृशागि मुग्धानि पीय श्रवणदयेन पिकीगण व्याहृति माधुरी धुग्वचोनि जन प्रकटी चकारे ॥१॥**

याको अर्थ -- या प्रकार वा सखी के वचन सूं सो परम सकुमार अंगन वारी मुग्धा प्रियाजी अपने दोनों कानन सूं पान करिके कोकिला गणन की वाणी संबंधी माधुरी कूं निरादर करवे वारो जो अपनो वचन है वाकूं प्रगट न करत भयीं हैं सो या प्रियाजी के वचन रूप अमृत समूह के न लाभ सूं निरन्तर खिन्न होय रहे वा सखी के दोनों कानों कूं देखके और रूप कूं पान कर रहे तासूं भारी अभिमान वारे वाके नयनों के युग्म कूं देखके और या अर्थ कूं विचार के परम हर्ष सूं भरी भई सो स्वामिनीजी उदय होय रहे हैं पुलक रूप अंकुर जामें ऐसी सो हर्ष सम्बन्धी अश्रु पूर के प्रवाह कूं वर्षा करत या सखी के स्थल सूं उठके चली जाती भई हैं या प्रियाजी की जो माता रही सो तो प्रथम ही

अंतरध्यान होय गई रही तब याकी माता के स्थान में स्थित जो वात्सल्य की सागर रूप याकी मातुलानी जी हैं वाके प्रति सो प्रियाजी की जो प्रिय सखी हती वा वृत्तांत कूं सुनावती भई है तब यह प्रियाजी की मातुलानीजी प्रियाजी की सखी के अमृत कूं जय करिवे वारे वचनन कूं अपने कर्ण में उत्तम आभरण रूप करके हर्ष सूं प्रियाजी के पिता कूं एकांत में जायके कहेत भई हैं के हे अधिक बुद्धि वारे शुभ लक्षण वारी तिहारी पुत्री कूं अत्यन्त मनोहर शुभ सो समय निकट आय गयो है के जा समय में यह पार्वतीजी वा पुरुषोत्तम कृपा सागर श्री गोकुलेन्दु के घर कूं निरन्तर शोभायमान करके श्रेष्ठ प्रेम और महोत्सव को पात्र ही होयगी सो सगरे संबंधीन जिनकूं चिरकाल सूं वांछित करे हे सो यह उदार शोभा वारो समय प्राप्त होय रह्यो है जा समय में लक्ष्मी आदि कूं हू दुर्ल्लभ जो भाग्य है सो वा भाग्य कूं यह तुमारी कन्या प्राप्त भई है तासूं तुम वेग करो जो या कन्या के पठायवे में अपेक्षित जे वस्तु है अनेक अर्बन जो दीपन को समूह है वाकूं हू गूढ ही ले आवो और यह जो तिहारी कन्या है अनेकान अब्ज लक्ष्मीन कूं हू विजय करिवे वारी है और जे श्री गोकुलचन्द्र श्रीजी हैं सो हू परम पुरुष हैं गुणन के सागर हैं तिहारे जामाता भाव कूं अंगीकार कर रह्यो है और यह समय हू रस रूप उत्सवन को समूह मय है तासूं हे अच्छ बुद्धे, उज्ज्वल बुद्धिवारे या समय उच्छलित होय रहे हैं हे भाग्यन के समूह जाके ऐसे तुमने कहा कहा कर्त्तव्य नहीं किये हैं तासूं यह तिहारो जे उत्साह कूं समूह प्रेरणा करि रह्यो है तासूं अपने अपने मित्रन सूं तैसे तैसे तहां तहां वेग ही तुम यत्न कूं करो। सो यह भट्टजी हू बुद्धिमानों में मुख्य गणनीय नाम वारे हैं तासूं याके वचनन कूं सुनिके सगरे कार्यन में सफल उद्यम वारो अत्यन्त प्रेम सूं ही उद्यम करत भयो है। तब महाभाग्यवान समय में कमल नयनी या स्वामिनीजी कूं सखीजन नाना विधि विन सुगंधिन सूं श्री अंग में उबटनो करत भई है और सुगन्धि वारे ताते सुहाते जलन सूं न्हवावती भई हैं। तब केश सूं लेकर नख पर्यन्त अलंकृत भई सो स्वामिनीजी सुन्दर कोमल सुगन्धि वारे पुष्पन के समूह सूं शोभायमान वेणी कूं धारण करत और अंगन में उच्छलित होय रही सुगंधि के प्रवाह की शोभा वारी और लाल अधर में शोभायमान होय रही जे कस्तूरी कर्पूर तांबूल रस विनसूं महा सुन्दर मनोहर है और अत्यन्त अद्‌भुत और उत्तम सूक्ष्म तंतु वारे श्वेत वस्त्र सूं जाके

नितम्ब बिंब आच्छादित हैं और उदय होय रही महा सुगंधी सूं मनोहर जाको चोल और चंडा तक वस्त्र है और कंठ में जाके पुष्प माला विराजमान है ऐसी सो चन्द्रवदनी श्री स्वामिनीजी अत्यन्त उत्तम भाग्यवारी रात्रि में पिता के घर में एकांत में रत्नन सूं खचित जो सुवर्ण सूं सिद्ध अमूल्य पर्यंक है वामें सुखपूर्वक शयन करत और रात्रि के पिछले सुन्दर प्रहर में प्राप्त भये जो परम पुरुष श्रीजी हैं जो हे प्रिय बहुत काल सूं मेरे वांछित रस के योग्य ही आज भई हो ऐसे कहेते भये हैं। और जे नयन कमल और भ्रू विलासन सूं अपने लालसा के आधिक्यन कूं सूचना कर रहे हैं ऐसे प्रिय श्री गोकुलाधीश को दरशन करत भई हैं तब श्रीजी हू स्वेच्छानुसार ही तैसे तैसे ही रमण करत भये हैं पीछे यह रस सागर श्रीजी अंतरध्यान हू होय जाते भये हैं। तब परम कोमल अवयव वारी सो श्री स्वामिनीजी या प्रकार के चमत्कार के समूह कूं प्राप्त होयके जागरण कूं प्राप्त होती भई हैं और या प्रकार के रमण में स्वप्न कूं आरोपण करत भई हैं सो रस सूं आर्द्र होय रहे प्रिय के वियोग की अग्नि जामें बढ़ रही है ऐसे जो या प्रिय के या प्रकार कूं परम फल रूप अनुभव भयो है वामें यह प्रिया अत्यन्त प्रताप के समूह कूं धारण करत भई है और भीतर अत्यन्त लज्जा कूं हू धारण करत भई है और सो विशेष मुग्धा श्री स्वामिनिजी उत्साह कूं और चिन्ता कूं तैसे कौतुक कूं हू धारण करत भई हैं सो जब प्रिय श्रीजी ने विवाह रूप अमृत के शत अनुभव कराये हैं तब रात्रि के शेष समय में पुष्प के मिस सूं अत्यन्त उछलित होय के बाहिर प्रगट भये तैसे अत्यन्त मनोहर अपने अनुराग कूं हू प्रातः समय में ऊषाकाल कूं हू जय करिवे वारो जो गौर वर्ण वारो वस्त्र है तामें दर्शन करत भई है तब तासूं प्रगट भयो जो अगाध्य लज्जामय सागर है तामें निमग्न होयके सो परम कोमल श्री स्वामिनिजी अपने प्रिय पुरुषोत्तम श्रीजी को रात्रि संबंधी लीला कूं स्मरण करत मिलन किये हैं नयन जाने ऐसी सो श्री स्वामिनिजी तहां ही विराजमान होती भई हैं तब याकी मातुलानीजी अचानक ही इहां पधारके प्राणपति श्रीजी के लीला रस की योग्यता कूं प्राप्त भई और रोम हर्ष के सहित आनन्दित होय रही तैसी व्यवस्था वारी या श्री स्वामिनिजी कूं देखती भई हैं। तब याके उच्छल्लित होय रहे उज्ज्वल तैसे अत्यन्त उत्तम महा भाग्यन कूं अपने मन में स्तुति करत सो वाकी मातुलानी जी क्षण क्षण में बढ़ रहे तैसे उत्साह के भार सूं वेग सूं ही घर में प्रवेश करके

नाना विधि मणी मोक्तीन सूं खचित जो थारी है वामें अक्षत कुंमकुम आदि कूं धारण करिके तब नवीन चौली और नवीन वस्त्र और याके पहरवे योग्य श्रेष्ठ चंडा तक लायके और याके अवस्था के योग्य जो याकी चन्द्रमुखी भाग्यवती सखी है वाकूं हू लायके वाके हाथ में कुमकुम की थारी देकर तिस द्वारा श्री पार्वतीजी को पूजन कूं करावती भई है तब वा भाग्यवती ने कियो जो मनोहर श्रेष्ट कुमकुम मय मंगल तिलक है और अक्षत है विनकूं मनोहर श्री मस्तकमें धारण करत और शोभायमान वक्षस्थल में शोभायमान उज्ज्वल अंगिया कूं धारण करत और नितंब बिम्ब में अमूल्य वस्त्र और अत्यन्त शोभायमान चंडातक कूं धारण करत तैसे रसात्मक प्रिय सूं रसात्मक तैसे युद्ध के अर्थ सज्जित होय तैसे ही सो प्रियाजी अत्यन्त शोभायमान होती भई तब सो श्री स्वामिनिजी दूसरी या भाग्यनवारी स्त्रीजनन ने सुने और मातुलानीजी सुने ज्ञाति जनों ने आदर कियो जो आचार है वाकूं अनुसार ही चलनो उचित है या प्रकार के वचनों के अनुकूंलता सूं बैठाई है ॥४१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले बत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३२॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग तेत्रीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तेत्रीसमो तरंग लिख्यते ॥३३॥

श्लोक -- **अत्रांतरेकाचिद खर्व भाग्य पूर्णे दुवक्ता पति मत्य गातत श्री विट्ठलेशस्य गृहं मनोज्ञ भाग्यस्य वक्तुंत मुदतमृहिः ॥१॥**

याको अर्थ -- या अन्तर में बड़े भाग्यवारी और पूर्ण चन्द्र जैसे मुख वारी काचितु पति वारी स्त्री वा वृद्धि के वृत्तांत कूं कहिवे अर्थ रुचिर भाग्यवारे श्री गोस्वामीजी के घर कूं जाती भई है ॥१॥ सो भाग्यवारी स्त्री श्री गोस्वामीजी के घर में प्रवेश करिके रसोई घर में विराजमान जो ईश्वरेश्वर श्रीजी की माता

जो उदार पद्मावती जी हैं और रसोई घर में विराजमान बहेन शोभाजी हैं वाकूं महामंगल भयो है तुम वृद्धि कूं प्राप्त भये हो या प्रकार कहि कर सहित हर्ष. के वा वृद्धि के वृत्तांत कूं सुनावती भई हैं वा वृत्तांत कूं सुनिके वे दोनों अत्यन्त प्रसन्न होती भई हैं तब बड़े उत्साह सूं पूर्ण भयो है अन्तःकरण जाको तासूं उछल्लित होय रही है उज्ज्वल शोभा जाकी ऐसी सो शोभाजी तत्क्षण ही रसोई घर सो बाहिर पधारके ही सुन्दर वस्त्र आभरणादिकन सूं वा भाग्यवती को अत्यन्त आदर करत भई है और सिद्ध रूप पद्मावती जी तो रसोई घर में विराजमान भई थकी हू वस्त्रादिकन सूं वाकूं आदर करत भई है तब वृद्धि कूं प्राप्त होय रह्यो है अतुल हर्ष भाव जाकूं ऐसी सो शोभाजी श्री गोवर्द्धनधर के मन्दिर में प्रवेश करिके अपने पिता जे श्री गोस्वामीजी हैं और प्रिय गोकुल मंडन रूप जे भ्राता श्रीजी हैं जे वा श्री गोवर्द्धनधरजी के श्रृंगार कूं धराय रहे हैं सो विनकूं प्राप्त होय के तहां कहेती भई हैं के हे तातजी महामंगल भयो है के सकल मंगल रूप जे श्री वल्लभजी हैं के सकल मंगल को आलय रूप नवीन रस सूं आनन्द देवे वारो जो मनोहर अत्यन्त शोभन समय है सो प्राप्त भयो है सो प्रफुल्लित होय रहे श्री मुख वारी वे अपनी कन्या के वचन कूं सुनके निर्मल उज्ज्वल बुद्धिवारे श्री गोस्वामीजी रस की कल्पवल्ली रूप अपनी स्नुषा के पुष्प के उदय कूं सुनकर आवर्त और कल्लोलन के हजारन संपूर्ण जो अत्यन्त दीर्घ हर्ष समुद्र हैं वामें निमग्न होय जातो भयो है सो कछु क्षण के पीछे यह श्री गोस्वामीजी वहां सूं बाहिर पधार के रोम हर्ष वारे हैं और आंसून के कणन कूं वर्षा करत वा हर्ष समुद्र के लेहरन सूं भरी भई वाणी कूं प्रगट करते भये हैं के महा मंगल भयो है के हमारो चिरकाल सूं वांछित सुन्दर मनोहर भलो मंगल भयो है सो यह श्रीजी कूं महा उत्सव हमकूं अत्यन्त प्रिय है जो उत्सव अमृत प्रवाह के समूहन सूं हमारे हृदय कूं आर्द्र ही कर देतो भयो है श्री गोवर्द्धनधरजी जे हैं वे तो श्री गोकुलाधीश के हस्त कमल कूं जो भलो स्पर्श है तासूं प्रगट भये सात्विक भाव रूप अत्यन्त गंभीर अत्यन्त हर्ष जात्य कूं ही प्राप्त होय रहे हैं सो वा जाडय कूं वा श्री गोस्वामीजी के वचन सूं उदय भयो जो हर्ष हतो सो वे जासूं पुष्ट करत भये हैं तासूं सो तैसे परमेश्वर हू यह श्री गोवर्द्धनधरजी हू तिस तिस प्रेम के अनुसार बहुत प्रकार विधान करवे कूं और कहवे कूं इच्छा करत हू समर्थ नहीं होते भये है और प्रिय जे श्री वल्लभजी

हैं विनमें वा शोभाजी के वचन रूप सागर सूं प्रगट भयो जो तैसो हर्ष समुद्र हतो यद्यपि सगरे लोकन में व्याप्त होयवे वारो हू हतो तो हू वा हर्ष समुद्र कूं सो लज्जा आवरण ही कर लेतो भयो है यह महा आश्चर्य है तब बड़े यत्न सूं उदय होय रही रोमावली सूं वा लज्जा कूं विजय करके सो श्रीजी विचार करत भये हैं और सुन्दर बुद्धिवारो चन्द्रवदनी प्रियान कूं जो परम रसात्मक गण हतो सो द्वार में स्थित भयो हू सो श्रीजी में हर्ष जितनो और जैसो और जो जो करत हतो वाकूं देखत भयो है वामें कितनी एक तो स्त्री अत्यन्त प्रसन्न होती भई हैं और कितनी तो हर्ष सागर में डूब जाती भई हैं और कितनी तो श्री बहूजी के निर्मल परिपक्व भाग्य कूं सराहना करत भई हैं और कितनी तो रोम हर्ष कूं धारण करत भई हैं और कितनी तो हर्ष के आंसुन को धारण करत भई हैं और कितनी तो गद्‌गद् कंठ होय गई हैं और कितनी तो कंप कूं अनुभव करत भई हैं और वा श्रीजी के प्रेम लीला में जिनको चित्त है ऐसी कितनी तो कहें हैं के अब अद्‌भुत रूप भाववारी प्रिया कूं प्राप्त होयके श्रीजी हमारो आदर नहीं करेंगे या प्रकार सूं सन्देह करत हैं और शुद्ध जिनको भाव है ऐसी कितनी तो वा प्रियाजी कूं प्राप्त होयके वाकूं अत्यन्त हर्षित कर, जा हर्ष के समूह कूं श्रीजी प्राप्त होवेंगे सो हू बड़ो मंगल है के सो अत्यन्त हर्ष हमकूं हू होयगो या प्रकार सूं चित्त में धारण करके हर्ष कूं प्राप्त होय रही है और कितनीक तो बड़े दीर्घ श्वासन कूं दे रही हैं और कितनीक तो चिन्ता सागर में डूब जाती भई हैं और कितनीक तो प्रथम अनुभव किये प्रिय के संगम अर्थ उत्साहित होय रही हैं और कितनीक शुद्ध हृदय वारी मृगनयनी तो यह विचारे हैं के प्रातस काल प्रिय श्रीजी के निरन्तर प्रफुल्लित श्री मुख कूं और प्रिय के अंग संग सूं प्रगट भये विविध मनोहर रती के चिह्नन सूं शोभायमान श्रीजी के श्री अंगन को दर्शन करेंगे और अत्यन्त मंद मुस्कान सूं प्रफुल्लित होय रहे तैसे तांबूल के राग सूं रहित भये वा श्रीजी के अधर को दर्शन करेंगे और रात्रि भर जागरण सूं आलस्य सहित की शोभा के और घूर्णित होय रहे नयनन कूं दर्शन करेंगे और रात्रि समय में तो प्रिया के संगम में उत्साहवारे जे प्रिय हैं तासूं नानाविधि वस्त्र विभूषन सूं तैसे तैसे श्री अंग के परिष्कार में श्रृंगार में तत्पर है और फेर फेर हू अपने कूं अत्यन्त स्वच्छ दर्पण में देख रहे हैं और सुन्दर वस्त्रन सूं तैसे मनोहर श्रेष्ठ सोना किनारी वारी शोभायमान

ऊँचो जामें आम को पत्र धारण कियो है और चित्र वर्ण वारी है ऐसी पाग सूं और हू तिस तिस अतुल भूषणादि सूं बढ़ रही जो शोभा है वाकूं वा अत्यन्त स्वच्छ दर्पण में देख रह हैं और तासूं प्रसन्न होय रहे हैं तासूं हर्ष सूं उदय भई प्रफुल्लता कूं धारण कर रहे हैं तासूं बारंबार मंद मंद हंस रहे हैं और निरन्तर उत्साह वारे हैं ऐसे प्रिय श्रीजी के निरन्तर मनोहर श्रीमुख को दर्शन करेंगे सो मेरे कूं तो अत्यन्त मनोहर सुन्दर सुख यही है और तो दुःख ही है या प्रकार सूं विचार के हर्ष कूं ही प्राप्त होय रही है श्री गोस्वामीजी हू वा समय में होय रहे श्री गोवर्द्धनधर के श्रृंगार कूं हू तहां सोंप के श्रीजी के संबंधी हर्ष सागर के महातरंगन सूं चंचल भये थके वा गिरिधारीजी के घर सूं अपने घर कूं प्राप्त होते भये हैं तहां यह श्री गोस्वामीजी अपने जन द्वारा अपने निरन्तर बुद्धिमान ज्योतिषी कूं बुलावते भये हैं। तब सो ज्योतिषी आयो है वासूं बड़े उत्साह वारे श्री गोस्वामीजी वा क्षण के गुणन कूं हू वेग पूछते भये हैं तब सो ज्योतिषी हू अपने चित्त में आरूढ़ होय रहे जे वा काल के उदार गुण हते विनकूं कहेत भयो है और वा काल में तैसे सगरे रसन कूं बुद्धिवारे भाव कूं कहेत भयो है और तैसे तैसे श्रेष्ठ फल और मंगल कूं कहेत भयो है तब गुणीन में श्रेष्ठ वा ज्योतिषी के वाक्य कूं सुनके सो श्री गोस्वामीजी दीर्घ हर्ष सागर में निमग्न होयके वा समय के स्वरूप कूं विचारके और तैसे रसात्मक तैसे अपने या पुत्र श्रीजी के स्वरूप कूं विचार के तासूं हू कछू अधिकी निश्चय करत भये हैं हौं तो यह मानूं हूं के तब श्री गोस्वामीजी जो उदार अत्यन्त दुर्ल्लभ दीर्घ हर्ष कूं नयनों में प्राप्त भये हैं वा हर्ष संबंधी आपके रोम हर्ष और आंसुन कूं जो समूह है सो हम तो वाके लेस कूं हू वर्णन करवे में समर्थ नहीं हैं यह विचार के लोक में वाकी सूचना कूं करके विराम कूं प्राप्त होय जातो भयो है और श्री गोकुल के प्राणपति जो मेरो सुत है सो तो सगरे मंगलों को निवास रूप है और सगरे जगत के सगरे मंगलन कूं करवे वारो है और विशेष सूं तो या पुष्टि मार्गीय भक्तन के तो सगरे ही मंगलन के करवे वारे ही हैं और याकी जो प्रियाजी हैं सो हू मंगलमूर्ति ही हैं तैसे और मंगलों के सगरे गुण हू जाके चरण कमल की सेवा कूं कर रहे हैं और सगरे ही मंगलमय गुणन को एक धाम रूप ही है और वाकूं स्मरण है सोहू जीवन कूं मंगल रूप है और याकूं जीव जे नमन करे है सोहू मंगल रूप है और जे

स्त्रीजन याको दर्शन करे है सो हू मंगल रूप है और याकूं देखनो हू मंगल रूप है तासूं ही दोनों कूं यह मंगलमय समय हू मंगलमय है और सगरे मंगलों के समूहन सूं मिल्यो है तासूं यामें का सुबुद्धिवान की थोड़ी सी हू चित्रमति प्रवेश करके अपितु नहीं कर सके है इत्यादि प्रकार सूं बड़े भाग्यवारे गुण के सागर और उछल्लित हर्ष के समूह जामें ऐसे जो श्री गोस्वामीजी कहेत भये हैं। तब वा पुत्र के अथवा बंधु के गुणन सूं प्रसन्न भये थके वा ईश्वर श्रीजी के पिता श्री गोस्वामीजी फेर हू वा ज्योतिषी सूं पूछते भये हैं, के हे भाई या बहूजी के पिता के घर सूं पति के घर में पधरायवे कूं आछो मुहूरत तुमकूं कहा संमत है। तब ज्योतिषी हू श्री गुसांईजी कूं प्रणाम करके सहित नम्रता के कहेत भयो है के हे ईश्वर यह दिन सगरो ही शुभ है तामें हू तीसरे प्रहर में जो आद्य मुहूर्त है सो तो महा मंगल रूप है जामें तारा चन्द्र की शुद्धि आदि सगरो ही पूर्ण ही अधिक हैं सो हे गुण सागर श्री गोस्वामिन बंधुन में महा मंगलमय गुणवारी श्री बहूजी कूं वा महूरत में अधिक हर्ष के हजारन समुद्र सूं सघन जैसे होय और परम उत्सव सूं जैसे होय तैसे पधराय लावो सो पति श्रीजी के घर के भूषण कूं प्राप्त होय रही जो मंगलमय मूर्ति यह श्री बहूजी हैं सो यामें पल पल में ही रस माधुरी के अनेकानेक तरंग वृद्धि कूं प्राप्त होंयगे ॥५१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले त्रेत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३३॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग चौंत्रीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चौंत्रीसमो तरंग लिख्यते ॥३४॥

श्लोक -- **ईत्यस्य वाचं सनिपीय कर्ण द्वये न द्रष्टे वसनेः फलैश्रय सुमंगलै स्तंपरितोष्य भूयो धनैश्रय शोभां निज माद हंतः ॥१॥**

याको अर्थ -- या प्रकार ज्योतिषी के वचनन कूं दोनों कानों सूं पान करके

श्री गोस्वामीजी जब प्रसन्न भये थके वा ज्योतिषी कूं सुन्दर मंगल वस्त्र फल अधिक धनन सूं प्रसन्न करके शोभाजी कूं कहेत भये हैं के बहूजी के बैठवे कूं सुन्दर मंगलमय स्थान रचना कियो चहिये और वा स्थान में मंगलमय मनोहर वस्तु हू सगरी धरनी चहिये और संबंधी वेणाभट्टजी के घर में भाग्यवती स्त्री कूं पठायो चहिये सो स्त्री हू तहां जायके मंगल सूं शोभायमान हमारे घर में आज तीसरे प्रहर में तुमारी कन्या के पधारवे को सुन्दर मुहूर्त ज्योतिषी ने बतायो है सो वाके पठायवे में वेग ही अपने सम्बन्धीन के सहित ही भट्टजी तैयार होवो । सो या प्रकार सूं भट्टजी कूं कहें सो भट्टजी हू अपने संबंधीन सहित वेग तैयार होय । सो या प्रकार की अपनी काकाजी की वाणी कूं सुनिके सो अत्यन्त चतुर शोभा बेटी जी घर में प्रवेश कर तैसे ही प्रेम के समूह सूं आनन्द सहित ही सगरो कार्य करत भई है तब उदार जाकी बुद्धि है ऐसे जे श्रीजी के पिता श्री गोस्वामीजी हैं सो गिरधारीजी के आवश्यक सगरे सेवादि कूं करके वेग ही तैयार होते भये हैं । सो श्रीजी की जननी पद्मावती जी तैसे और हू जे घर की स्त्री रसात्मक सुन्दर नयनवारी हती वे हू उदय होय रहे उत्साह सागर के महातरंगन सूं प्रेरणा करी भई हू सगरी हू वेग ही तैयार होती भई हैं और बुद्धिवारी चतुर श्री शोभाजी तो श्री बहूजी कूं बैठवे कूं वेग ही स्थान कूं सिद्ध करिके वामें योग्य जे मंगलमय पदार्थ हते विनकूं सिद्ध करत भई हैं और तहां अमूल्य शोभायमान आभरणन सूं पूर्ण मंगलमय शय्या कूं और नीचे हू अत्यन्त शोभायमान तैसे बैठवे के स्थल कूं माणिक खचित कंवल कर शोभायमान और मंगलमय वस्तुन के समूह सूं शोभायमान जैसे होय तैसे ही रचना करत भई है और श्री बहूजी के बैठवे के मन्दिर की देहली सूं लेकर जितने पर्यंत बैठवे कूं बिछौना बिछायो हतो वितने पर्यंत ही सो चतुर शोभाजी जिनमें सो मंगल शोभावारी बहूजी पधारी भई चरणन कूं धारण करे ऐसे निर्मल पत्रन सूं मिले भये चरणन के और मंगलमय तंदुलन के भारी राशिन कूं भरत भई हैं और तैसे पात्र में दूध और थोरे से घी कूं मिलाय के हर्ष सूं धरती भई है और चार हरदी कूं हू धारण करत भई हैं और वा प्रिय के आभरण में अंतरीय जो धोती है वाकूं हू धारण करत भई है और मार्ज्जन करिके दो वाण हू धारण करत भई है और तिबारी के बाहिर अमूल्य कंबलन कूं विछावती भई है तब सुगन्धी अक्षतन सूं शोभायमान थाली कूं सजायके और

तांबूल के समूह हू सजाय के और अखंडित जे हरदी है सो पतिमति स्त्रीन कूं देवे अर्थ सिद्ध करके और भीतर हू श्रेष्ठ स्वास्तिक कमल चक्रादि कूं पुराय के और मालिन सूं आंब के दलन सूं तोरण बंधावती भई हैं और द्वार के बाहिर हू भोजन पत्र पात्र के जो बनायवे वारी हती सो अत्यन्त प्रसन्न भई थकी सो मंगल की चाहना सूं स्वस्तिक दान कूं पूरती भई है के साथीयान रचना करत भई हैं । तब यह सुवर्ण की थारी कूं अक्षतन सूं भरके हाथ में राख के एक स्त्री वेग ही संबंधीन के घर में जाय के विनके द्वारन में विन अक्षतन कूं धारण करके विनकूं कहेत भई है के श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के घर में श्री गोस्वामीजी के प्रिय पुत्र श्री वल्लभजी की बहूजी कूं शोभन नाम वारो मनोहर सुन्दर महोछव है सो हे कमलनयनी तुम देखवे कूं वेग ही पधारो या प्रकार सों कहेत विन सगरी स्त्रीन कूं बुलावती भयी है । फेर अपने घर में हू आय जाती भई है । तब बन्धुन की जे स्त्री हती सो हू मंगलमय पदार्थन कूं हाथन में ले लेकर सगरी ही तहाँ आय जाती भई हैं भट्टजी कहें हैं के या प्रकार गोकुल के पूर्णचन्द्र जे श्री वल्लभजी हैं विनके काकाजी श्री गोस्वामीजी के घर में जो महासुन्दर मनोहर प्रवृत होय रह्यो महोछव इहां सुनायो है । अब जो वेणाभट्टजी के घर में निरन्तर शोभायमान जो महोछव प्रवृत्त भयो है वाकूं हू कछू वर्णन करूं हूं के वाके घर में हू तैसे तैसे मंगल प्रकार सूं बढ़ाये भये नानाविधि मंगल होते भये हैं और वा भट्टजी के संबंधीन की जो स्त्री हती वे हू सुन्दर वाद्य गान नृत्य के साथ हाथन में मंगल पदार्थ जिनके ऐसी वे सगरी तहां वेग ही आती भई हैं । विनमें पतिवारी एक भाग्यवति जो काचित स्त्री हती सो वेग ही वा श्री बहूजी कूं स्पर्श करके वाकी वेणी कूं सुन्दर गूंथती भई है और अंगन में सुन्दर भूषणन कूं पहिरावती भई है और यावक के मनोहर रस सूं वा बहूजी के चरणन की तली कूं रंजित करती भई है और प्रेम आनन्द सूं भरी भई सौभाग्यवती स्त्री श्री बहूजी कूं तांबूल हू आरोगावती भई है और नेत्र कमलों में हू श्याम मनोहर काजर कूं धारण करावत भई है और श्री मस्तक में मंगलमय मनोहर तिलक कूं करत भई है और अमूल्य कोमल वस्त्र कूं और चंडा तक कूं पहेरावती भई है और शोभायमान वा कमलनयनी श्री बहूजी कूं मनोहर चौल और निचोल हू पहिरावती भई है और अमूल्य पनही कूं हू चरणन में धारण करावती भई है और सो मातुलानीजी हू मनोहर खिचरी और अपुपन

के समूह और गेहूं के चूर्ण और बहुत घृत और तंदुल और गुड़ के पिंड और सगरे चणा और गुड़ सूं मिलायके मर्दन कियो बहुत खसखस के बीज इन सगरेन कूं वेग ही सजावती भई है और पांच शब्द के बाजे हू बजबावत भई है। सो या प्रकार सूं मंगलमय क्षण में तो मंगल संबंधी शोभावारो स्त्रीन को समूह सुन्दर वाद्य गान नृत्य सहित ही अपने घर सूं श्री गोस्वामीजी के घर में आवतो भयो है जब पहर एक दिन बाकी रह्यो है तब हर्ष सूं श्री गिरिधारीजी की आवश्यक सेवा कूं हू राखि के श्री गोस्वामीजी तो अपने घर के पास ही विराजमान होय रहे हैं। तब सो चतुर श्रीजी की माता पद्मावती जी और महा हर्ष वारी सो बहेन शोभाजी सगरी ब्रज सुन्दरीन के सहित ही बहूजी के पधरायवे कूं संबंधी वेणाभट्टजी के घर में पधारती भई हैं। तब सो श्री बहूजी की मातुलानीजी हती जो बड़े आदर सूं विनके आगे आयके अपने घर के भीतर ही ले जाती भई हैं। सो बड़े प्रेम हर्ष सूं और स्त्रीन कूं हू आसनन में बैठावती भई है सो तहां बैठके वे स्त्रीजन हू प्रेम आनन्द के सहित अनेक गीतन कूं बहूजी के पक्ष वारी स्त्रीन के संग ही वा बहूजी कूं देखत ही गान करत भई हैं। कछुक काल गान करके जब ऐसी स्थिति भई है तब श्री बहूजी की जो मातुलानी हती सो विन सगरी स्त्रीन के माथे में मनोहर कुमकुम को तिलक कूं करके अक्षत हू लगाय के हर्ष सूं सहित कर्पूर के तांबूल कूं देती भई है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले चौत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३४॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग पेंत्रीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पेंत्रीसमो तरंग लिख्यते ।।३५।।

श्लोक — **अधोक्षितास्ताः प्रसरत्प्रमोदं स्नुषामुपादां यततः समस्ता प्रतिस्थिरे गांन मधुनि वक्त पूर्णेदुभिः काम महोसजंत्यः ।।१।।**

याको अर्थ — तब हर्ष के सहित उठके बहूजी कूं संग लेके वे सगरी स्त्री मुख रूप पूर्ण चन्द्रन सूं गान रूप मधु के रस कूं गिरावत कहा के सुन्दर मनोहर गान करत प्रस्थान करत भयी हैं ।।१।। तब संबंधीन की जे स्त्री हतीं सो प्रथम कह्यो जे खीचरी आदि है वा सगरे कूं हस्त कमलन में लेकर पंच शब्द बाजे और गीत के संग चलती भई हैं । सो सगरी वा श्री गोस्वामीजी के तैसे घर कूं प्राप्त होयके सुन्दर आसनन सूं प्रथम ही शोभित किये स्त्रीन के घर में ही प्रवेश करत भई हैं । तहां तंदुल और चणा और नवीन पत्रन के समूहन की करी जे राशि हती विनके ऊपर चरणन कूं धारण करत सो श्री बहूजी वाके अर्थ प्रथम सूं ही रचना किये मंगलमय द्रव्यन सूं शोभित घर में वधुन की स्त्री संग सूं प्रवेश करती भई हैं हृदय में उदय ह्वै रहे अनेक भावन सूं मिली भई सो प्रवेश करत भई हैं । तब डरे भये मृग के छोना सरीखे जाके नयन हैं ऐसी सो श्री बहूजी तहां शोभायमान मंगलमय आस्तरन में विराजमान होती भई हैं । तब पति एक वारी स्त्री प्रथम जे धारण करे हते दो वाण विनकूं हाथ में लेकर के प्रथम जो घृत सहित दूध धर्यो हतो वामें विनके फल कूं बोर के श्री बहूजी के चरण के ऊपर और घोटूं के अग्र में ऐसे तीनवार स्पर्श करत भई है और दो छोरीन कूं हू ऐसे स्पर्श करत भई है और हाथन कूं भीत में स्थापन करिके दो हाथ थापा लगावती भई है । तब सो कमलनयनी तहाँ आस्तरण में बैठ जाती भई है और एक पिता के घर की और एक इहां की कुमारिका जे और कूं स्पर्श नहीं करे ऐसी जे छोरी तहां स्त्रीन ने श्री बहूजी के निकट बैठाई है तैसे समान अवस्थावारी और हू स्त्री तहां आयके हर्ष सहित वाके निकट बैठती भई हैं और कृष्णादासी तैसे दामोदरदासी और रस सागर

गौरबाई सुन्दर बुद्धिवारी उछल्लित होय रहे उत्साह के हजारन शत कल्लोलन सूं शोभायमान और हू भक्त स्त्री जे तहां बैठवे के योग्य हैं तहां बैठत भई हैं और वा श्री बहूजी के घर सूं बाहिर सुन्दर तिवारी के पास ज्ञाति बंधुन की स्त्री जो हतीं सो यथा सुख ही बैठत भई हैं और श्री पद्मावती जी काकीजी और शोभाजी बहेन हैं सो दोनों ही उछल्लित होय रह्यो है जे उत्साह को समूह और परमानन्द को सागर जिनमें ऐसी हैं और तहां आय रही जो स्त्री हैं विनके समाधान में तत्पर हैं सो तहां वे बड़ी शोभायमान होय रही हैं। तब और हू जे श्री गोस्वामीजी की बेटी हैं बड़े आनन्द सहित मंगल गान में तत्पर हैं और आय रही तैसे जाय रही जे स्त्री हैं और जे तैसे तैसे मंगल कर्मन कूं कर रही हैं और ये याचना कर रही हैं विनकूं दे रही हैं और जे गान कर रही हैं ऐसी स्त्रीन कूं जो वस्त्र आभरणन सूं शोभायमान समाज हतो सो अत्यन्त शोभायमान होतो भयो है और तहां चतुर स्त्री के हाथ कमल सूं बाज रही जो पटहिकार ही वाकूं मधुर शब्द ही उदय होतो भयो है। भक्तराजन की भक्त जे कमलनयनी स्त्री है सो मंगलमय रस गाली गान कूं करत स्त्रीन के समाज कूं और श्री गोस्वामीजी कूं सुखी करत भई हैं और जगत प्रभु जे प्रिय श्रीजी हैं सो अपनी बैठक में विराजमान हैं और तैसी जो प्रिया है वाके समागम के अर्थ जो अत्यन्त हर्ष रूप निधि है वासूं पूर्ण है चित्त रूप कोश गृह जाको और शोभायमान है नवीन किशोर अवस्था जाकी और तांबूल कूं आरोगत शोभायमान है श्रीमुख जाको और उच्छल्लित होय रही जो अतुल अद्‌भुत नवीन सो स्त्री है विनके समागम में उत्साह वारे हैं और शोभायमान जामें तकिया है ऐसे आसन के ऊपर विराजमान और विनके गाली गान कूं सुख सूं सुनत उदय होय रहे तैसे मंद हास्य सूं प्रसन्न किये हैं सगरे जाने और तैसे नम्र होय रहे हैं नयन जिनके ऐसे समाज में विराजमान सो तैसे महा आनन्दमय महोत्सव कूं देखत हू और सगरे कृपापात्र अंतरंग भक्तन सूं मिले भये ही स्थिति होय रहे हैं और जे कृपापात्र भक्त हैं सो हू आप कूं प्रसन्न कर रहे हैं और सुन्दर हांसी में तत्पर हैं तामें अत्यन्त नम्र परायण चतुर बिहारीजी हैं और तैसे हास्य रसन में परायण गोविन्दस्वामीजी हैं सो वे हू आप कूं हंसाय रहे हैं और श्रीजी अपने हू नर्म हास्य गान क्रीड़ा कौतिकन सूं विन भक्तन कूं और कितनी एक रसात्मक स्त्रीन कूं हू सुन्दर हर्ष सागर

में मग्न कराय रहे हैं और गीत के जे अनन्त तैसे रसमय अर्थ हैं और भाव हैं विनकूं पर्यवसान अपने में और प्रियाजी में बहुत प्रकार सूं करत हैं और तहां ही कानन कूं देकर विराजमान हैं और रोमांच के सुन्दर समूह कूं धारण कर रहे हैं। और तैसी जो मृगनयनी प्रियाजी हैं वाके संग संबंध करवे कूं दीर्घ उच्छल्लित जो उत्साह रूप सूं रज्जु है सो जो श्रीजी कूं कर्षण कर रही है और तासूं स्वयं हू वा प्रियाजी के वेश दशा स्वरूप और भाव तैसे और हू वाके संबंधी कूं देखवे अर्थ चेष्टा हू कर रहे हैं और तहां हू लज्जा के समूह सूं बड़े बड़े यत्न सूं ठहेर हू रहे हैं और उछल्लित है उत्साह को समुद्र जामें और शोभायमान है भाग्य जाको ऐसे जो श्री गोस्वामीजी हैं सो अपनी बैठक में अपने जनन के संग विराजमान हैं और आपके भीतर हर्ष समात हू नहीं है और सगरे अर्थन कूं त्याग के गीत आदि में कान दे रहे हैं और शोभादि बेटीन सूं पूंछे हैं के बहूजी के निकट वहां कहा मंगल भयो है और कैसे कैसे भयो है और कहा कहा होयगो। ऐसे पूछत अपने जनन के संग तहां विराजमान हैं तब श्री बहूजी के निकट जे सुन्दर मंगल और मधुर गान और बाजेंन के शब्द और जे उत्साह प्रेम मोद नर्म विनोद दान ग्रहण शोभा भये हैं विनके वर्णन में समर्थ को होय सके। या प्रकार सूं रात्रि की पांच छः घड़ी गुजर गई है और उच्छल्लित होय रहे हैं आवर्त और तरंग जामें ऐसो उत्सव रूप सागर प्रसर रह्यो है और दीप तैसे दंड दीप अत्यन्त प्रकाशित होय रहे हैं और चन्दन कस्तूरी कृष्णागार कर्पूर की सुगंधी निरन्तर जहां कहां व्याप्त होय रही है और श्रीमान जे काकाजी श्री गोस्वामीजी हैं सो बहूजी के पिता के घर सूं आई जे बहुत वस्तु हैं वाकूं धराय के अत्यन्त प्रसन्न होय रहे हैं और खीचरी और अपूपन कूं जो तैसो कार्य है सो हू होय रह्यो है और आये जे तंदुल चणां हैं विनकूं हू काकी श्री पद्मावती जी और शोभाजी वा वा योग्य संबंधीन की स्त्रीन कूं दे रही हैं और हरदी की गांठ हू विनकूं दे रही हैं और सहित हर्ष के गंधाक्षतादिकन सूं विनकी पूजा कर रही हैं और तांबूल हू विन सगरी स्त्रीन के प्रति दे रही हैं और हर्ष सूं गान रूप अमृत को सागर अत्यन्त प्रसर रह्यो है और कितनी एक स्त्री अपने घर में जायवे अर्थ उठ रही है और श्री पद्मावती जी और शोभाजी विन संबंधीन की स्त्रीन कूं मान कर रही हैं और भोजन कूं वेग पधारियो ऐसे कहकर विनकूं विदा कर रही हैं और

सुवासिनी भाग्यवती के द्वारा विनके घर में जायके विनकूं निमन्त्रण हू कर रही हैं और भोजन के अर्थ तैसे मंगलमय पाक सिद्ध होय रह्यो है और वेणाभट के घर सूं आयो जो कोमल गेहूं को चून है बासूं गुड़ सूं सुन्दर मीठे पूवा सिद्ध होय रहे हैं तब भोजन के अर्थ सगरी संबंधीन की स्त्री आय गई हैं और सहित हर्ष के भोजन कूं कर रही हैं और वीड़ा कूं ले लेकर अपने अपने घर कूं जाय रही हैं। तब आनन्द के समूह सूं सघन् अर्धरात्रि को समय होय जातो भयो है सो या प्रकार ज्ञातिबंधु जनन की स्त्रीन कूं भोजन दूसरे दिन में और तीसरे हू दिन में होतो भयो है सो विनके अर्थ भोजन में सुन्दर चामर मूंग गेहूं को चून घृत खांड़ आदि अमूल्य द्रव्य तो वेणाभटजी के घर सूं हू आवतो भयो है और दूध दही आदि और शाक आदि तैसे तांबूल आदि तो श्री महाप्रभुन के घर सूं हू सिद्ध भयो है सो तीन दिन मंगलमय पटहिका कूं बजावनो होतो भयो है और आनन्द के समूह सूं उच्छल्लित अमृत कूं जय करिवेवारी स्त्रीन को गान हू तीन दिन होतो भयो है और बहूजी की वेणी कूं गूंथती भई है और विविध भूषणन कूं पहेरावती भई है। और नयनन में कजरा कूं करत भई हैं और तिलक रचना कूं हू करत भई है और तांबूल कूं हू आरोगावती भई है और भोजन हू माटी के पात्रन में करावती भई हैं और तीन्यो दिन हू बहूजी के निकट ही वे कुमारिका हू तहां भोजन करती भई हैं और बड़े उत्साह के सागरन सूं हू वे कुमारिका हू श्री बहूजी कूं सगरो सो सो कार्य करत भई हैं और श्री अंग की दासी हू वा श्री बहूजी कूं स्पर्श करके तहां स्थिति भई हैं वाने हू सगरो कार्य कियो है और वा श्री बहूजी कूं संकोच के डर सूं और स्त्री निकट जायवे में उत्साहन करत भई हैं और चन्द्रमुखी सो श्री बहूजी तीनों दिनन में हू विन कुमारिकान के संग खेलत और कथा वारता और विनने करी जो कथा है विनकूं सुनत ही तहां तैसे विराजमान होती भई हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले पेंत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३५॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग छत्रीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ छत्रीसमो तरंग लिख्यते ।।३६।।

श्लोक -- **अथ दिवसे खलु तुर्ये स्नानस्य सुमंगलस्य जत, कर्तव्यस्य वधु त्यागण केनोक्ते क्षणे प्रातः ।।१।।**

याको अर्थ -- अब चतुर्थ दिन में श्री बहूजी के कर्तव्य जो मंगल स्नान है वाकूं गणिक ने जो प्रात समय रूप क्षण बतायो है तामें जाकूं अभी पुष्प नहीं आयो और पति को संबंध हू नहीं भयो ऐसी एक सौभाग्यवती स्त्री प्रसन्न होयके श्री बहूजी कूं न्हवावती भई है तामें ऐसी नायिन की जो स्त्री है सो प्रथम सर्षयवली खली को जो चूर्ण है वाकूं ताते जल में मर्दन करके महीन वस्त्र सूं निकास के वाकूं बहूजी के शीश में धारण करके तासे अंगन कूं हू मर्दन करके और विन अंगन कूं बहुत जल सूं प्रक्षालन करके आंछो करत भई है । तब एक कुमारी हरदी के उवटना सूं अंगन कूं लेपन करके पीछे बहुत जल सूं न्हवाय के वाके सगरे अंगन कूं निर्मल वस्त्र सूं बड़े आदर सहित पोंछती भई है । तब मनोहर सारी कूं और सुन्दर चंडातक सो चन्द्रमुखी प्रियाजी कूं पहेरावती भई है । अब सगरे अतुल सुन्दर वस्त्र आभूषणन कूं पहिर के घर के भीतर पधारके मनोहर रत्न खचित चौकी पर विराजमान होती भई हैं । तब नायिन की जो स्त्री हती सो वा बहूजी के चरण कमल के तल में यावक के रस सूं रंजित करत भई है और जो भाग्यवती प्रथम कही है सो नायिन की स्त्री पात्र सूं घृत दुग्ध कूं आन के वामें स्पर्श कराये वाण सूं वाकूं प्रथम जैसे ही तीन वार स्पर्श करावती भई है और चतुर जो स्त्री है सो श्री बहूजी के कहे अनुसार न्हवायके आपके दोनों तरफ निकट बैठाई जो दो कुमारिका हैं सो विनकूं हू प्रथम जैसे स्पर्श करत भई है और कूंटके गुड तिल के जे प्रथम ही लड्डुवा बनाय धरे हते सो बड़े सुन्दर चार मंगलमय लड्डुवा हू श्री बहूजी के देखत ही सुन्दर स्त्रीन के प्रति देती भई है । अब नायिन की जो स्त्री है सो विनके स्थान सूं बहूजी के स्पर्श वारे वस्त्रन कूं उठाय

के भली प्रकार प्रक्षालन करत भई है । सो विन वस्त्रन में स्थिति जो प्रिय कूं अंतरीय के वाके चारयो कोणो में बांधे जे तंदुलादिक हते सो सगरे हू खोल के ले लेती भई है । या प्रकार जब मंगल स्नान पूर्ण होय चुक्यो है तब श्री बहूजी शोभादिकन सूं बढाई भई पिता के घर कूं पधारती भई है तहां याके गीले वारन कूं चतुर सखी सुखायके सुन्दर गूंथती भई है और सगरे अंगन कूं हू अलंकृत करती भई है और जो कछु कृत्य हतो सो हू करत भई है। अब कछु भोजन करके विन सखीन के संग तैसे विनोद कूं करत विराजमान होती भई है श्री गोस्वामीजी के घर में तो महोत्सव होय रह्यो है तहां स्थान है बड़े उज्ज्वल करके लिपाये हैं और जिनमें बड़ी शोभा वारो पद्मादिकन सूं सांथियो स्वस्तिक रचना किये है और नवीन तोरण हू तहां तहां जिनमें बांधे हैं और जिनमें केला के स्थंभ हू लगाये हैं और पत्रावली के रचना वारी एक कमल नयनी स्त्री सगरे ज्ञाति वारे जनों के घरन में जायके विनके द्वारन में पीरे अक्षतन कूं गिरायके सगरी स्त्रीन कूं निमन्त्रण करावती भई है । तामें श्री गोस्वामीजी के घर सूं एक अपनो बधु संबंधीन के घर में जायके शोभन उत्सव कूं देखवे अर्थ वेग पधारो ऐसे कहेतो भयो है । तब हर्षित आय रहे दासजन सगरे घरन में सुन्दर आस्तरणन कूं विछावते भये हैं और वेदी के ऊपर चतुर स्त्री जन पद्मादिक कूं रचना करत भये हैं तामें पूर्वाभिमुख दो पीढ़ा धरे हैं और विनके ऊपर शोभायमान परम कोमल अमूल्य पटमय वस्त्र धारण किये हैं विनके ऊपर कोमल आंब के पत्र धारण किये हैं विनके ऊपर मनोहर दो पात्री धारण करी है विनके ऊपर गुड़ के पिंड धारण किये हैं और जल पात्र के निकट गंधाक्षत पुंगी फल सहित एक स्थाली धारण करी है याके निकट ही जल सूं पूर्ण पात्र धारण कियो है और तहां बाजे बजायवे वारे दुंदुंभी गोमुख भेरी मृदंग प्रणव आनक आदि अनेक बाजेन कूं बजावते भये हैं और कीर्तन में चतुर अत्यन्त मधुर कीर्तन कूं करत भये हैं और हू मनोहर हरी लीला को गान करत भये हैं तामें जे भक्त हते सो हू अपने अपने मनोरथन सूं अनेक कीर्तन करत भये हैं और जे गुणी हते सो प्राणपति के गुणन कूं बड़े हर्ष सूं प्रगट करत भये हैं और गुणी लोक श्रीजी कूं प्रसन्न करवे वारे मधुर अपने गुणन कूं प्रगट करत भये हैं और नृत्य में निपुण जे पुरुष और स्त्रीजन हैं सो प्रभुन के जय गान करत करत आछो अभिनय करत नाचती

भई हैं और वा प्रभुन के उत्सव में याचक अनेक ही तहां इकट्ठे होते भये हैं और चारण मागद व सूत बंदीजन हू आयके अपनी रीति सूं परम पुरुष श्रीजी की ऊँची स्वरा सूं स्तुति करत भये हैं । तैसे और हू जे नैयायिक और कवि और विशेषक तैसे मीमांसक और पातंजलि और वेदांत व्याकरण और वैद्य जोतिषी ने सगरे हू तिन तिन देश ग्राम पुर स्थानन सूं आते भये हैं और तहां अनेक भक्त हू आवते भये हैं तैसे विनके पुत्र और मित्र और राजाधिकारी हू और राजान के नौकर हू तहां आवते भये हैं सो दर्शन कूं आये जे वे सगरे लोग हैं विनकूं प्रांगण में घरन में अटारी में वीथी में गली में बड़ो समर्द्ध होतो भयो है । अब श्री गोवर्द्धनधारी के मन्दिर सूं बाहिर पधारे श्री गोस्वामीजी गोकुलरत्न श्रीजी कूं आगे करिके वेदी में स्वर्ण सूं मणिन सूं घटित जो मंगलमय आसन है वामें बैठावते भये हैं और या श्रीजी के निकट स्वयं श्री गोस्वामीजी हू दक्षिण पार्श्व में विराजमान होते भये हैं ॥४१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले छत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३६॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग सेंत्रीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सेंत्रीसमो तरंग लिख्यते ॥३७॥

श्लोक -- **रसिक वरोद्भुत माधुरिम सौंदर्य विलास सिंधुरसौ सुमहा प्रभाव गरिमा चंचत्तम कौ कुमावर द्वंद्वः ॥१॥**

याको अर्थ --अद्भुत जो माधुर्य और सौंदर्य विलास विनके सागर सो रसिकवर श्रीजी हैं सो बड़ो है प्रभाव और गुरुभाव जिनको ऐसे हैं और शोभायमान है केसरी दो वस्त्र धोती उपरना जामें और राजाधिराज राजेश्वर जे श्री गोस्वामीजी हैं विनके राजकुमार युवराज हैं और शोभायमान चिकने लांबे निर्मल केशन के समूह कूं है मनोहर जूड़ा जिनकूं और रसमय भाल

में विराजमान है कुमकुम को तिलक जाकूं और मनोहर है भ्रूअ जिनकी और कमल के दल जैसे दीर्घ जे लोचन हैं विनकी शोभा सूं वस किये सगरी स्त्रीन के चित्त जाने और वा नयन कमलों से गिरि रह्यो जो करुणा रसमय हजारन सागर है विन कर आर्द्र किये हैं अपने शरणांगतन के समूह जाने और अधरामृत रूप चांदनी सूं प्रफुल्लित किये हैं ऐसे व्रज भक्तन के नयन रूप कुमोदनी को समूह जाने और भीतर शोभायमान जो श्रृंगार रस सागर है वाकी लहेर रूप शोभायमान है सुन्दर मूंछ जाकी और मंद हास्य के समय में थोरे से निकसि रहे जे दंत हैं विनकी किरणन सूं शोभायमान होय रह्यो है अधर जाको और जय कियो है पांचजन्य शंख जाने ऐसो कंठ है । वामें उदय होय रह्यो जो शोभा को तरंग है तासूं आर्द्र होय रहे हैं और वा कंठ में भक्तन के समूह कूं सुख देवेवारी जो तुलसी माला है वाकूं धारण कर रहे हैं और हू वा कंठ में सुवर्णमय और रत्नमय और गोल मुक्तामय मनोहर मालान कूं धारण कर रहे हैं और भुजा रूप दंडन में नाना विधि अमूल्य मणी वारे उच्छल्लित प्रभा सूं सुन्दर मनोहर केयुरन कूं धारण कर रहे हैं । और प्रकोष्ट स्थल में सुन्दर मणिगणन सूं जटित दिव्य भूषणन कूं धारण कर रहे हैं और अंगुलीन में उच्छल्लित प्रकाशवारी बहु विधि मणि खचित मुद्रिका कूं धारण कर रहे हैं और शोभायमान हैं मुक्ता के गुच्छ जामें ऐसी मणिमय कटिबंधनी और क्षुद्र घंटिका सहित सुन्दर मेखला कूं वा सुन्दर कटि सूं शोभायमान कर रहे हैं और भक्तन के नयन कमलों में हर्ष के समुद्रन कूं वर्षा करि रहे हैं और उत्साह रूप अग्नि सूं तपायो जो श्रृंगार रस रूप दूध है वाके उच्छल्लित भये मंदाक्ष कूं लज्जा कूं साधु ही भले प्रकार सूं ही धारण कर रहे हैं । श्री काकीजी के निकट विराजमान हैं और गुढ़ है हर्ष को सागर जामें और कृपा सूं पूर्ण है और शोभायमान प्रसन्न श्री मुख कमल सूं गिरि रहे जे हजारन मधु के पूर हैं विन करके त्रिभुवन कूं त्रिगुण भक्तन कूं आर्द्र कर रहे हैं शोभायमान कर रहे हैं और पावम कर रहे हैं और मधुर कर रहे हैं ऐसे जे प्रिय श्री वल्लभजी हैं। सो जिन भक्तन ने अपने नयन सूं अत्यन्त पान किये हैं सो विन भक्तों के चरण कमलन कूं हौं प्रणाम करूं हूं । तब श्री गोस्वामीजी हू या उत्सव में जे आपके घर में निज संबंधी पधारे हैं विनकूं सहित विनय के मान कूं देते भये हैं सो वे सगरे संबंधी प्रभुन कूं और आपके श्री काकाजी कूं प्रणाम करके तहां बैठ

जांते भये हैं और प्रिय श्रीजी कूं जो श्री मुख सुधा है तामें विहार कर रहे दृष्टि रूप मीन जाके ऐसी जे हरिण नयनी हैं सो चन्द्रमुखीन के समाज में बैठके या प्रभु कूं प्रिय जे जे गीत हैं विनको गान करत भई हैं और कितनीक स्त्री तो मंगलमय पटहिका कूं बजावती भई हैं और रसमय गाली वारे गीत कूं प्रसन्न होय के गान करत भई हैं और वैष्णवन की मृगनयनी जो स्त्री हैं सो हू तहां तहां सुखपूर्वक विराजमान भई थकी या प्रभु के जे रसमय गीत हैं विनकूं ऊँची स्वरा सूं गान करत इच्छापूर्वक स्थित भई थकी श्रीमुख चन्द्र के पसर रहे जे अनेक विधि प्रवाह है विनकूं अपने दृष्टि रूप चकोरन कूं कंठ पर्यंत पान करावत शोभायमान होय रही हैं या प्रकार श्री गोस्वामीजी के घर में मिले भये स्त्री पुरुषन सूं चारों और सूं मधुर सघन महोच्छव प्रसरतो भयो है वाकूं संक्षेप सूं कहूं हूं। अब जैसे वेणाभट जी के घर में महोच्छव भयो है वाकूं हू संक्षेप सूं कहूं हूं। सो सहित आदर के पान करके सो या बहूजी कूं जो सगरो श्रृंगार है सो प्राणप्रिय के नेत्रन में परमानन्द की वर्षा कूं कर रह्यो है ऐसो सो चतुर सखीन ने कियो है परिधान चंडा तक चोल आदि परम कोमल अमूल्य वस्त्र पहेराये हैं और विविध भूषण मणिमुक्ता हीरा के हार हू पहेराये हैं और चन्दन कस्तूरी कृष्णागर चन्दन कर्पूरादि के सुगंधी हू या सखी ने समर्पण करी है और श्री बहूजी के संग ले जायवे योग्य जे पदार्थ हैं सोहू सगरे सिद्ध करे हैं। श्रीमद् विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के घर में करतव्य जो परिधानी है वाके निमित्त प्रिय के अर्थ जे अपेक्षित वस्त्र हैं और श्री बहूजी के अर्थ जे बहुत पेटी हैं। जे बड़े मोल वारी अनेक परम कोमल सुन्दर विविध साड़ीन सूं युक्त है और अनेक प्रकार के चंडातक और चोल और नानाविधि निचोलन सूं युक्त है और सिन्दूर हिंगुल हरदी को जल आदि की पूड़ीन सूं और श्रेष्ठ गंध फुलेल अतर आदि सूं और उवटने अंग लेप श्रेष्ठ कुमकुम फुलेल संयुक्त है और पात्र में स्थित खिलोना सूं और कांकसी है दर्पण है और कोमल हरदी के रंग सूं रंगे श्रेष्ठ त्रमाला हैं और श्रेष्ठ कृष्णागरु चंदन के सारमय पात्र हैं और श्रेष्ठ पुष्पमय माला हैं और तांबूल वीड़ान के समूह और भूषण तैसे कमंडल है सो इनसूं मिली बहुत पेटी हैं और नाना विधि शय्या है। तैसे अनेक वरण वारे पर्यंक हैं और नाना विधि अमूल्य अनेक कोमल आस्तरण हैं और सुन्दर सिरहाने हैं और छोटे गेंदुवा हैं और अनेक भेद वारे शैयाबंध

हैं और नानाविधि रत्नखचित चौकी हैं और पात्र हैं तैसे भारी भोजन को पात्र है और थारी है और हू विविध भोजन करवे के अर्थ पात्र हैं और जलपान के पात्र हैं, तैसे अमूल्य पारिबर्ह हैं और सुन्दर धीमी पकी सुखपुरी आदि हैं और अनेक प्रकार की मिसरी में पगी पूरी हैं और विविध प्रकार की उत्कारिका हैं विविध प्रकार के मूंग हैं चावल हैं मिसरी है घृत है और गेहूं के निस्तुष जे चून है तैसे और हू सगरो पदार्थ वेणाभट के चतुर पुरुषन ने जाय के सगरो सिद्ध कियो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले सप्तत्रीसमो तरंग समाप्तम् ॥३७॥ ॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग आड़त्रीसमों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ आड़त्रीसमो तरंग लिख्यते ॥३८॥

श्लोक -- **अथ विट्ठलेश हरिणं प्रहितः स्वीयो ब्रवीदेन विवर्ति ता खिलार्थ प्रतिक्षंते विट्ठलाधीशः ॥१॥**

याको अर्थ -- अब श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी ने पठायो अपनो संबंधी है सो भटजी कूं कहेत भयो है के सगरे कार्यन कूं करिके श्री गोस्वामीजी तुमारी हू प्रतीक्षा कूं करि रहे हैं । तासूं तुम अपने संबंधीन सूं अपने कार्य कूं कराय के वेग ही चलो जासूं ज्योतिषी ने कह्यो जो सुन्दर समय है सो गुजर रह्यो है सो या प्रकार के याके वचन कूं सुनकें वेणाभटजी हू बेगि उठिके अपने संबंधीन सगरेन सूं मिल्यो भयो ही और गीत नृत्य वाद्य सहित और स्त्री पुरुष दासन के सहित वा कन्या कूं आगे करिके वा श्री गोस्वामीजी के घर में आवतो भयो है । तहां श्री गोस्वामीजी ने बड़ो आदर दियो है । सो महा भाग्यवान संबंधीन के साथ ही सुन्दर आसन में विराजमान होय जातो भयो है और वा अपनी कन्या कूं प्रिय श्रीजी के मन्दिर सामें मंगलमय आसन में बैठावतो भयो है सो चन्द्रमुखी श्री बहूजी हू श्रीमुख कमल कूं घूंघट सूं दावि

रही है, और बाहिर और भीतर शोभायमान है लज्जा जामें ऐसी है और निश्चय होय के प्रिय श्रीजी के श्रीमुखचन्द्र कूं देख रही है। सो या प्रकार आपस में श्री बहूजी और वर प्रियजी के स्पर्श दर्शनादि सूं उच्छल्लित रस वारे व्याप्त होय रहे गंभीर भाव हैं सो वे अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धिवारे कोई सूं हू नहीं जाय हैं सो वे जे अनिरवचनीय अत्यन्त गूढ़ कटाक्ष हैं और जे स्पर्श के भेद हैं और जे व्याप्त होय रहे उत्साह के तरंग हैं और जे प्रेम के आवर्त हैं और लज्जा के विभ्रम हैं और रस के प्रवाह हैं और जे भय के कल्लोल हैं सो अत्यन्त मधुर हैं और अत्यन्त गूढ़ हैं। वे तो केवल रसात्मक जो मृगनयनी हैं विनके ज्ञान गोचर हैं सो वे सहित करुणा रस के श्रृंगार समय है अत्यन्त मनोहर भाव है। सो रसात्मक स्त्री गणन के नयन कमल और हृदय कमल कूं प्रफुल्लित करिवे वारे हैं। सो चारों ओर ही व्याप्त होय रहे हैं। तब वा पति पत्नि के संबंध समय में श्री शोभाजी बहेन पधारके वर वधु के अंचलों में मंगलमय ग्रन्थि कूं बांधती भई हैं और वेणाभटजी जे वस्त्र भूषणादिक ले आये हते सो प्रभुन के पिता श्रीमान श्री गोस्वामीजी के प्रति दिखाय के आपके निकट ही धारण करती भई हैं। तब सगरे संबंधी देखते भये हैं और श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के संबंधी सो वेणाभटजी प्रिय श्रीजी के मुख को दर्शन करत निकट ही बैठ जातो भयो है और वा प्रिय श्रीजी कूं जो गोचिन्दभटजी मातुल हैं सो हर्ष सूं ही यजुर्वेद के प्रसिद्ध मन्त्रन सूं श्री प्राणनाथ श्रीजी सूं पुण्याह वाचन करावत भयो है विधि अनुसार और हू जो कर्तव्य हैं सो हू करावतो भयो है। और वा प्रिय श्रीजी के अंजुली में श्वेत तंदुल और पांच पुंगीफलन कूं देकर लज्जा कूं प्राप्त होय रहे या श्रीजी सूं सहित लज्जा के जो श्री बहूजी हैं वाकी अंजुली में धारण करावतो भयो है और या श्री बहूजी सूं या श्रीजी के अंक में धारण करावतो भयो है और या समय में तो मातुल गोविन्दभटजी गर्भाधान के मन्त्र कूं हू पढ़ते भये हैं। श्री गोस्वामीजी विन श्वेत तंदुलन सूं समयांतर में श्री बहूजी के भोजन योग्य पायस करायवे कूं धारण करिके रक्षा करत भये हैं और पुंगन कूं हू तांबूल आरोगवे के समय में विनियोग करवे कूं धारण करत भयो है और वेणाभटजी परिधायन के अर्थ के पहेरायवे के अर्थ जो जो वस्त्रादि लाये हैं सो सो गोविन्दभटजी कूं दिखाय के कहेत भये हैं के यह तो श्रीमद् गोकुलेश्वरजी के अर्पण योग्य यद्यपि नहीं हैं तथापि जैसे चन्द्रमा कूं सूत्र अर्पण

कियो जाय है सो तैसे ही मैंने यहां अर्पण कियो है । सो तुम श्री गोस्वामीजी के आगे निवेदन करो सो गोविन्दभटजी तो याके वचनन कूं सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होय के दीनता के सहित विनय के श्री गोस्वामीजी के आगे हर्ष सूं विज्ञापना करत भयो है । तब श्री गोस्वामीजी हू वाकी विज्ञप्ति कूं सुनकर सहित प्रसन्नता के कहेत भये हैं के हे वेणाभटजी तुम तो बड़े भाग्यवान ही हो सो तुमने जो कछु यहां दियो हैं सो तो इतनो अधिक है के जितनो अत्यन्त विस्तार वारे हू हमारे घर में स्थल धारण करिवे कूं समर्थ न होय । तासूं तुम सन्देह रहित होयके अपने जामात श्री गोकुलेशजी के आगे यह अर्पण करो और अपनी कन्या के आगे हू अर्पण करो और प्रसन्न मन होयके हमकूं और हमारे सगरे संबंधीन कूं देवो । तो वेणाभटजी तो या प्रकार के वचनन कूं सुनकर प्रसन्न मन होयके भीतर अत्यन्त लज्जा कूं करत पुरुषोत्तम सार्वभौम जे श्रीजी है विनमें प्रेम दीनता सूं और हर्ष सूं मिल्यो भयो अनेक प्रकार के अमूल्य वस्त्र भूषणन कूं प्रणाम करत ही अर्पण करत भयो है । तब श्री गोस्वामीजी सो मनोहर नीचोलादिक या श्री बहूजी के हस्त कमल में देते भये हैं और अमूल्य दिव्य साड़ी कूं श्री पद्मावतीजी के प्रति देते भये हैं और हू विनके प्रति पठावते भये हैं और बालक बेटी बहेन तैसे और संबंधीन के और सगरे संबंधीन के वस्त्रन कूं देते भये हैं और विन कुमारिका के प्रति हू सो पद्मावतीजी सुन्दर मनोहर वस्त्रन कूं देती भई है और भोजन के योग्य तो सामग्री बहुत आई है । सो श्री गोस्वामीजी श्री पद्मावतीजी कूं सौंपते भये हैं और तिस द्वारा पाक कूं सिद्ध करायके विन बंधुन कूं और विनकी स्त्रीन कूं हू भोजन के अर्थ निमन्त्रण करत भये हैं और जो सगरो परिवार है और शय्या वाके जे उपकरण हैं सो वे कोषाधिकारीन के कोष घर में धरे हैं और ज्ञाति वारे जनों ने जे सुन्दर वस्त्र लीये हैं । सो विनने हू अमूल्य अमूल्य ही सगरे वस्त्र लिये हैं । तामें मातुल गोविन्दभटजी तो या महोत्सव में अमूल्य निर्मल निचोल कूं प्राप्त होयके अत्यन्त प्रसन्न होतो भयो है और पकवानन में जो जे जे मधुर मधुर सुक पूरी हैं सो आदर हर्ष के सहित श्री पद्मावतीजी आदिकन के घर हैं सहित उत्कारिका के यथायोग्य विभागकरिके पठाई हैं और बहूजी के जे वस्त्र हैं वे तो श्री बहूजी की जो श्रीअंग सेवा की अधिकारिणी हैं वाके हाथ में ही सगरे दिये हैं । तैसे खिलौना और दर्पण और सुगंधी द्रव्य तैसे साधन हू सगरे विनके हाथ में दिये हैं और

जे शय्या हैं वे हू प्रभुन के शैय्या घर में सगरी धरी है या प्रकार अत्यन्त मनोहर मंगलमय जो महोत्सव कूं कृत्य हैं सो जब पूर्ण भयो है। तब पतिवारी बेहेन बड़े हर्ष सूं मणि मुक्ता हीरा सूं खचित जो सुवर्णमय मद्य पात्र है जामें गंध अक्षत हू धारण किये हैं ऐसे वा पात्र में आरती कूं धारण करके वेग पधार के दोनों बहू-वर के श्री मस्तक में तिलक कूं करके और तांबूल कूं दे करके निरांजन कूं करत भई है। तब श्री महाप्रभुजी हू अत्यन्त प्रसन्न भये थके विनके प्रति अनन्त सुवर्णमय मुद्रा कूं देते भये हैं। वे तो प्रेम सूं अपने कूं हू वाके ऊपर बहुत वार वारती भई हैं और बहुत आशीर्वाद हू देती भई हैं और तब सगरे संबंधी स्त्री पुरुष भक्तन के औरन के हू मुखन सूं आशीर्वाद के शब्द और जय जय शब्द सहसा ही प्रगट होते भये हैं और वा समय में मागध चारण बंदीजन हू स्तुति करत भये हैं और सगरे स्त्रीजन और पुरुष और ज्ञातिवारे हू सगरे और श्री गोस्वामीजी हू प्रिय जे श्रीजी हैं वाके मुखकमल कूं देख रहे हैं। सौभाग्य निधि श्री तातजी और तैसी श्री माताजी श्रेष्ठ भाग्यन वारी बहेन हू वा प्रिय श्रीजी के सुख कूं बहुत प्रकार सूं आशासना करत भये हैं। तब श्री गोस्वामीजी बड़े पुत्र गिरधरजी कूं आज्ञा करत भये हैं सो आपकी आज्ञा अनुसार तहां आये भये संबंधीन के प्रति तिलक करिके तांबूल कूं देते भये हैं और ब्राह्मणन के प्रति हू दक्षिणा देते भये हैं और भीतर हू स्त्रीजन दर्शन के अर्थ आई भई सगरी स्त्रीन के प्रति तांबूल और हरदी कूं देती भई हैं और सगरे ब्राह्मण अक्षतन कूं हाथ में लेकर वधू-वर के अर्थ आशीर्वाद रूप मन्त्रन कूं पढ़ते भये हैं। तब श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी हू अपने आसनन सूं उठिके ठाड़े होते भये हैं और सगरे ब्राह्मण हू श्री बहूजी के सहित श्री गोकुलपति हू ठाड़े भये। तब शोभाजी पधारके बहू-वर के अंचल में जो ग्रंथि बांध रही हैं विनकूं छोड़ती भई है। तब श्री गोस्वामीजी के वस्त्र कूं अंचल पसार्यो है तब ब्राह्मणन ने हू सहित आदर के मंत्र सहित अक्षत तहां धारण किये हैं तब श्री गोस्वामीजी हू विनकूं लेकर अपने मस्तक में कितनेक श्रीजी के मस्तक में धारण करत भये हैं और बहूजी के हू श्री मस्तक में आशीर्वाद सहित कितनेक अक्षतन कूं धारण करत भये हैं। तब उच्छल्लित होय रह्यो है प्रेम और हर्ष जिनमें ऐसे जे श्री बहूजी सहित श्रीजी हैं सो श्री तातचरण श्री गोस्वामीजी के चरण कमलन कूं आदर सहित नम्रता सूं प्रणाम करत भये

हैं। तब श्री गोस्वामीजी हू आयुष्मान होवो, पुत्रवारे होवो या प्रकार सूं आशीर्वाद करत भये हैं और श्री बहूजी कूं हू पुत्रवारी होओ सौभाग्यवती होओ ऐसे ऐसे आशीर्वाद करत भये हैं। तब जे सगरे लोक आय रहे सो श्रीमद् विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी कूं और आपके पुत्र श्रीजी कूं प्रणाम करके और इनसूं आज्ञा लेकर श्री गोस्वामीजी सूं और वेणाभटजी सूं बड़े आदर कूं प्राप्त भये थके अपने अपने घरन के प्रति जाते भये हैं और आसुन सूं पूर्ण है मुख जाको ऐसे वेणाभटजी कूं आदर के सहित और विनय उत्साह के द्वार पर्यन्त श्रीमान श्री गोस्वामीजी अनुसरण करिके विदा करत भये हैं और अत्यन्त चतुर श्री पद्मावतीजी काकीजी और बहेन शोभाजी हू वा उत्सव में आई जे वंधुन की स्त्री हैं विनकूं मान पूर्वक विदा करत भई हैं ।।४२।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधा-सिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले अड़त्रीसमो तरंग समाप्तम् ।।३८।।

।। श्री श्री श्री श्री श्री ।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ओगणचालीसमों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ ओगणचालीसमो तरंग लिख्यते ।।३९।।

श्लोक -- **इत्यं महोत्सवे वत वृते तस्मिनातेषु लोकेषु श्रीमद् विट्ठलनाथे गत्वैकांते समुय तिष्टे ।।१।।**

याको अर्थ -- या प्रकार सूं जब महोत्सव पूर्ण भयो है तब लोक हू सगरे अपने घर में गये हैं और श्रीमद् विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी हू अपनी बैठक में जायके विराजमान भये हैं और ब्राह्मण भिक्षुक और बंदीजन आदि और पंडितन कूं तैसे औरन कूं हू धन वस्त्र प्रसाद दानादिकन सूं भली प्रकार मान देकर विदा कर रहे हैं और हू जो गान नृत्य बाजे बजायवे में चतुर हैं तैसे और हू जे सगरे हैं विनके प्रति हू बहुत धन कूं दे रहे हैं तब भोजन को समय भयो है सो प्रिय पुत्र वा श्री वल्लभजी के संग तैसे और हू पुत्र और अपने संबंधी हू विनके संग भोजन घर में पधारके श्री गोस्वामीजी तहां संबंधीन के

संग भोजन करत भये हैं पीछे अपने बंधुन समेत अपनी बैठकजी में पधार के तहां श्री वल्लभजी के दक्षिण अंचल में स्थित जे ब्राह्मण के दिये मंत्राक्षत हैं सो ले करिके श्री वल्लभजी के और श्री बहूजी के मस्तक में धारण करत भये हैं और ब्राह्मणन के प्रति तांबूल कूं देकर विनकूं विदा करत भये हैं। और तहां कछु विश्राम करिके अपनी अपनी बैठक में पधारते भये हैं और उछल्लित होय रह्यो है उत्साह सागर को समूह जामें ऐसे प्रभु श्रीजी हू अपनी बैठक में पधारके वाकूं शोभायमान करत भये हैं। तब तहां कितनेक भक्त सहित प्रेम हर्ष के तहां आयके प्रभुन के प्रति पहेरवे योग्य धोती कभाय पाग कमर वस्त्र अमूल्य कोमल यह अर्पण करत भये हैं और शोभायमान अंगिया और साड़ी चोली चंड़ातक कूं श्री बहूजी कूं अर्पण करत भई हैं। और बहुत धन और मुक्तामणि हीरादिक और सुवर्ण माला हू और हू अमूल्य अत्यन्त मनोहर सुन्दर भूषण अर्पण करत भई हैं और प्रसन्न है श्रीमुख जाको और भगवान श्रीजी हू विनके भाव मनोरथ सादर विनय और तत्परता कूं विचारके महाप्रसन्न होते भये हैं और चन्द्र जैसे जिनके मुख हैं ऐसी वे स्त्री तो उच्छल्लित होय रह्यो है हर्ष जिनमें ऐसी जे सगरी ही निश्चय सूं यह हमारो ही महा उत्सव है ऐसे मान के प्रिय श्रीजी के प्रति विविध वस्त्र भूषणन कूं प्रेम सूं निश्चित प्रगट ही तैसे तैसे उपायन कूं करत भई हैं। अब प्राणपति के शयन घर कूं कहें हैं। के प्राणपति श्रीजी को जो शयन घर है सो सुधा सूं लिप्यो भयो है और शोभायमान रसोदीपक, चित्रन सूं शोभित है और शोभायमान है सुन्दर चंदुवा है जामें और झूल रहे हैं श्रेष्ठ पट्ट के वस्त्र जामें और अमूल्य मनोहर अनेक प्रकार के जामें टेरा लगे हैं और अत्यन्त अमूल्य मनोहर अनेक प्रकार के जामें टेरा लगे हैं और अत्यन्त अमूल्य मनोहर माणिक सूं खचित कंवल जामें बिछाये हैं और अनेक दर्पण जामें बांधे हैं सुन्दर मधुर है दीपक को स्थल जामें और शोभायमान नवीन तुल आदि सहित शोभायमान है सुवर्ण को पर्यंक जामें और रूपमई मनोहर चार पाया चौकी जामें शोभायमान है जामें रत्न मुक्ता हीरा खचित सुन्दर पादुका सूं शोभायमान है और तैसे करवा के समूह और अनेक विधि जे सुगंधित द्रव्य हैं अत्तर जवाद कृष्णागर अगर सार श्रेष्ठ अंग राग साख गौरामद पीरा आदि सूं शोभायमान है और गुलाब के श्रेष्ठ जल और उवटना के भेद श्रेष्ठ कुमकुम के जल और हू पुष्प संघन के जे तेल

है जे अमूल्य पात्रन में स्थित हैं और हू जे नानाविधि धारण किये सोना रूपामय पात्र हैं विनसूं तहां तहां सुन्दर हैं और नानाविधि पुष्पमाला सूं शोभायमान हैं और पर्यंक के चारों तरफ धारण करी जे रत्न खचित चौकी है विनके ऊपर धारण करे जे तांबूल बीड़ा हैं विनसूं और कर्पूर की जे पात्री डिब्बी है जे रत्नमुक्ता हीरान सूं खचित है तासूं अद्‌भुत शोभावारी है विनसूं शोभायमान है और भूषणन के समूहन सूं भरी जे पात्रिका है विनसूं शोभायमान है और अनेक विधि पात्रन में स्थिति जे कर्पूर के कस्तूरी के पुष्प हैं पत्ता हैं और गुंजा के हाथी दांत के जे नानाविधि कौतूहल अर्थ सिद्ध किये भूषण हैं विनसूं शोभायमान है और जाके द्वार में कदली के स्तंभ आरोपण किये हैं और जाके आंगण में मधुर स्वास्तिक आदि की शोभा होय रही है और कृष्णागर धूप सुगंधि के समूह और चंदन कस्तूरी सुन्दर पुष्प कर्पूर यक्ष कर्दमादि के सुगंधी समूह सूं शोभायमान है और नाना विधि कोमल सुन्दर स्पर्श के योग्य सुगंधी वारे मधुर फलन सूं शोभायमान है और सुन्दर खांड में पगे अत्यन्त कोमल उज्ज्वल सुगंधी वारे मनोहर जे भक्ष्य और हू जे विविधि सुगंधी सुन्दर रूप वारे जे खांड के खिलौनादि सामिग्री है विनसूं शोभायमान है और हू जे दांत के सोना के और रूपा के विविधि खिलौना है विनसूं शोभायमान है और शीतल जल सूं भरे और गीले वस्त्र सूं ढांपे हैं ऐसे पान पात्रन सूं शोभायमान है और पंखीन सूं तैसे मनोहर पीकदान सूं शोभायमान है और प्रिया प्रिय श्री बहूजी श्रीजी ने हर्ष सूं तिस तिस समय में पेहरवे योग्य जे सुन्दर कोमल वस्त्र हैं विनकी गांठन सूं शोभायमान है और बैठवे के जे आसन हैं और बड़े तकिया हैं और बिछाये भये नानाविधि आरन्तरण हैं विनसूं शोभायमान है और नवल गुटिका सारी पांसा जामें मुख्य है ऐसे जो चित्त के विनोद कारण गंजपा आदि सगरे खेल साधन हैं और भारी विचित्र वर्ण वारे जे विविधि क्रीड़ा कंदर्पकादि है जे श्री बहूजी के मन हरिवे कूं सहित प्रेम के ग्रहण किये हैं और नाना विधि उछल्लित भावन सूं भक्तनने प्रिय के रस प्रवाह के बढ़ायवे कूं उपायन रूप सूं दिये हैं ऐसे जे खेलवे के और हू साधन हैं विनसूं सोभायमान है। पवित्र कोमल सुखदायक सुन्दर सजायो है विनसूं शोभायमान ऐसो सो शैय्या घर है। तब रजनी हू प्राप्त भई है और दीपक हू चारों ओर प्रगट होय रहे हैं और प्रिय श्रीजी हू वा प्रियजी में तैसी मृगनयनी के विन भोग रूप हर्ष के महासागर में निमग्न करायवे वारी जो लालसा

है सो हू अत्यन्त ही बढ रही है तब अभ्यंग करायके उवटनो करायके श्री बहूजी कूं सुगंधित शीतल बहु जलन सूं आछी रीति सूं न्हवाय के और कोमल वस्त्रन सूं आछी रीति सूं पौंछिके तब प्रेम के समूह सूं आर्द्र होय रही जे सखीजन हैं सो श्री बहूजी कूं चरणन सूं लेकर शिखा पर्यंत मनोहर रत्न मुक्ता हीरा सूं खचित और उच्छल्लित उज्ज्वल शोभावारी जिनकी ऐसे जे अनेक भूषण हैं विनसूं अत्यन्त शोभायमान करत भई हैं और सुरत रस में महामनोहर जे निचोल चोली उज्ज्वल साड़ी और चंड़ातक है विनकूं पहेरावती भई है और श्रीजी हू तैसे रस सूं उछल्लित होय रही हैं अत्यन्त शोभा जामें ऐसो चित्र वर्ण प्रकाशमान सो किनारीवारो और ऊपर जाके नवीन पल्लभ शोभायमान होय रह्यो है ऐसे श्री मस्तक में धारण कियो मनोहर उत्मीष सूं चीरा सूं शोभायमान है और श्री लिलाट में मुखारविन्द के ऊपर भौंरा कूं प्राप्त होय रहे श्याम स्वच्छ जे पाग सूं निकर रहे अलका हैं विनसूं शोभायमान हैं और प्रभा वारे मनोहर जो श्रेष्ठ विलास वारे भ्रू पल्लव द्वै के मध्य में काम कूं वाण रूप कुमकुम को ऊर्द्धपुंड तिलक है तासूं शोभायमान हैं और कामदेव के अर्वुद कूं विजय करिवे वारी जो चन्द्रमुखी स्त्रीजन हैं विनके धैर्य कूं नाश करिवे में वाण रूप कूं धारण कर रही जे सुन्दर दृष्टि है विनकर शोभायमान है और मुखारविन्द के शोभा रूप सरोवर में तैसे शोभा रूप वृहद भाव कूं धारण कर रह्यो जो कांतिवारो नासा है तासूं शोभायमान हैं और चंचल शोभायमान मणीमुक्तान सूं खचित सुन्दर सुवर्ण के जे कुंडल हैं विनसूं के जे तांडव है नृत्य है विनसूं शोभायमान है और मूंछन की जे उच्छल्लित चन्द्रका जे मनोहर प्रवाह है विनसूं और सुवर्णमय सुन्दर दर्पण की शोभा कूं हरिवेवारो मनोहर दोनों कपोलन के और प्रकाश कूं स्पर्श करि रहे अनेक मनोहर दंतकांति के सुधा तरंग हैं और स्वाभाविक मंद हास्य के और अधर की कांति के जो तरंग हैं और सघन तांबुल राग के जे मनोहर कर्मीर मिश्रित भाव हैं विनसूं शोभायमान हैं और गोल स्थूल जो मुक्तामय हार है तैसे गुंजा की जे माला है और तुलसी की जे माला है विनसूं शोभायमान हैं और पांचजन्य शंख की शोभा कूं हू जय करिवे वारे मधुर मनोहर तेज के समूहन सूं और शोभायमान सूक्ष्म तंतुवारी जो मनोहर कंचुक है और दीप्तिवारे सोना के क्षत्रन सूं प्रकाशमान जो श्रेष्ठ कमर पटुका है तासूं शोभायमान है और श्रेष्ठ कंकण मुद्रिका जिनके दोनों

भुजा शोभायमान हैं और नानाविधि आभरणन के लांबे चाक्यचिक्य सूं और प्रसरवे वारी है श्रेष्ठ सुगन्धी जिनकी ऐसी जे कंठ में शोभा वारी दो पुष्प माला हैं विन सगरेन सूं भक्तन के नयन रूप भूमि में हर्ष के समुद्रन कूं जो वर्षा कर रहे हैं ऐसे तो श्रीजी शोभायमान होय रहे हैं और प्रिया के संग और गृह प्रवेश को समय है सोहू निकट आय गयो है । तब बड़े प्रेम वारी शोभाजी वा प्राणेस्वर श्रीजी कूं और आपकी प्रिया श्री बहूजी कूं शोभायमान रसात्मिक नायका के संग ही लेकर श्री काकीजी श्री गोस्वामीजी के निकट प्रणाम करिवे कूं इनके शुभ कूं चाहना कर ले जाती भई हैं । तब कियो है प्रणाम जिनोने ऐसे इनकूं देखिके प्राप्त भयो है हर्ष जिनकूं और प्रफुल्लित होय रही है रोमावली जाकी ऐसे श्री गोस्वामीजी हू तांबूल के दान सूं और पुष्प माला के समर्पण सूं बड़े प्रसन्न होते भये हैं । तब परम चतुर शोभाजी हू विज्ञापना करत भई हैं हे प्रभु नानाविधि भाव वारे शुभ के अर्थ यह दोनों कूं श्री आपकी आज्ञा कूं हू प्रार्थना कर रहे हैं । तब गिर रहे हैं हर्ष के आंसू जिनके ऐसे श्री गोस्वामीजी वा श्रेष्ठ पुत्र के प्रति दीर्घ आयुष्मान होवो तुम पुत्रवान होवो । ऐसे प्रेम के समूह सूं मनोहर आशीर्वाद देते भये हैं और सौभाग्यवती होय और पुत्रवती होय और पति श्री वल्लभजी कूं अत्यन्त प्रिय होय । ऐसे श्री बहूजी के प्रति आशीर्वाद देते भये हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्रीमथुरा जी श्री गोकुल बिहारमये तृतीय कल्लोले ओगणचालीसमो तरंग समाप्तम् ।।३९।।

।। श्री श्री श्री श्री श्री ।।

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४० मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चालीसमो तरंग लिख्यते ।।४०।।

श्लोक -- **अथ प्रणाम्य प्रिय सार्वभौमस्तां ता प्रियं शयनालयैसः अन्वीय मानोगनिसेवकेण द्वित्रैस्तथाभक्तवरेरपिस्तैः ।।१।।**

याको अर्थ -- अब प्रिय सार्वभौम जे श्रीजी हैं सो श्री काकाजी गोस्वामीजी के चरण कमलों कूं प्रणाम करिके श्री अंग के सेवक और तैसे दो तीन अपने अंतरंग भक्तन के संग ही पांच-छै मृगनयनी सुन्दरीन के सहित ही शयन घर में पधारते भये हैं । तहाँ सों श्री जी बड़े तकिया सूं सहित जो अपनो आसन है वाकूं शोभायमान करत भये हैं और महाप्रेम के समूह सूं प्रेरणा किये जे भक्त हैं विनने तैसौ तैसौ सजायो जो सो शयन घर और आसन शैय्यादि हैं विनकूं स्त्रव रहे हैं कृपा सागर जासूं ऐसे मनोहर नयनों के युगल सूं देखत भये हैं और दीप समूह के महा प्रकाशन सूं और मुखारविन्द की दीप्ति के समूहन सूं और तिस तिस अंग में विराजमान होय रहे जे आपके सो सो विभूषण हैं विनके उदय होय रहे चाक चिक्य सूं के समूहन सूं और तैसे श्री अंगों में विराजमान होय रहे जे सुन्दर वस्त्र हैं और तैसे तैसे तहां तहां बिछाये जे मनोहर बिछोना हैं और तहाँ तहाँ धारण करी जे सुन्दर वस्तु हैं विनके उदय होय रहे जे बहू भेदवारे छवी के तरंग हैं विनसूं सो श्री जी कछु अनिवरचनीय रसपान रूप ही रचना किये हैं सो अत्यन्त मधुर श्रीजी रूप रसपान जिन भक्तों के नयन कमलों ने मिलके ही पान कियो है सो वे भक्त दर्शन के दान सूं बिन भक्तन के और विन मृग नयनी स्त्री गणों के भीतर के भाव कूं और श्रम कूं और अनन्त बड़े मनोरथन कूं चित्त में धारण करत सो गोकुल के पूर्ण चन्द्र श्रीजी हैं सो मेरे नयनों कूं शीतल करेंगे और वा समय में स्थित जे प्राणपति के श्रीमुख चन्द्र की सुधा कूं पान करिवेवारी हरिणनयनी स्त्री गण हैं विनके हृदय में जो सुख उछलीत भयो है वा सुख कूं तो बड़े भाग्यवारी

वे ही जानें हैं तब रस और कृपा के समूह सूं मिश्रित भाव वारे और सुधा के हजारन प्रवाह कूं वर्षा करवे वारे नयनन सूं विन कमल नयनी कूं कटाक्ष चलायवे वारी करत और तिस जैसे विनके संग आलाप कूं करत और विनमें आनन्द कूं विस्तार करत और सुखदायक नर्म हू करत और सहित विलास के प्रफुल्लित है श्रीमुख चन्द्रबिम्ब जिनको और अंगन सूं हर्ष के करोड़न समुद्रन कूं वर्षा करत सो ईश्वर श्री जी नाना विधि विहारन कूं करत भये हैं और प्रकर्ष सूं उच्छलीत होय रह्यो है अनुराग जिनमें ऐसे जे वे श्रीजी के विलास और उच्छल्लित होय रहे याके कौतिक और प्रकाशमान क्रीड़ा और नर्म में यह अंगना विन स्त्रियों के जन्म कूं सुफल कर देते भये हैं और वे स्त्री हू अनुराग सूं प्रसरे भये नाना विधि कटाक्षन सूं और मंद हास्य विलास और रस नर्म तैसे सौन्दर्य के समूह और माधुरी सूं वा श्रीजी कूं सखी हू करत भई है । विन स्त्रीन में हू कोई एक महाभाग्यवती जो प्रिया है सो तो या श्रीजी ने सदा दान किये रस के प्रवाहन सूं अत्यन्त आद्र ही करी हैं और निरन्तर ही श्रीजी के निकट ही विराजमान रहे हैं और याके अंगन सूं जाको श्री अंग सदैव ही संबंध वारो ही रहे है और कृपा के समूह सूं या श्रीजी ने वाकूं तैसी योग्यता सौभाग्य अधिक सुखदान हू कियो है और हू प्रिय के वचन नर्म आदर और मन्द हास्य, विविध सरस हास्य कटाक्षन सूं सन्तुष्ट होय रही है सो चतुराई या प्रकार सूं श्री जी ने सर्व के ऊपर हू करी है और सो यथायोग्य कर्पूर सूं भीनी बीड़ी कूं हस्त कमल सूं लेकरके श्रीजी कूं अरुगाय रही है और मन्दहास्य वारो है मुखचन्द्र जाको ऐसी सो महाभाग्यवती विलास सहित श्रीजी कूं कहे हे के हे प्रिय सार्वभौम आपने आज हमकूं निर्गुण जानके ऊँचे सौभाग्य रूप पर्वत सूं जा समय में उतार के दूर ही फेंक दीनी है और जो महा भाग्यवती सगरे गुणन सूं और शील सूं और रूप सूं अद्वितीय सुन्दर है और विलासन के प्रवाहन सूं विजय करी है अब्जन लक्ष्मी जाने ऐसी सोभाग्यवती वा सौभाग्य रूप ऊँचे पर्वत में तुमने अत्यन्त चढ़ाई है । ऐसो जामें तिहारो यह उत्साह निरन्तर बढ़ रह्यो है कछु प्रकार सूं हू जो धैर्य कूं नहीं प्राप्त होय है रस सागर जाके, जाके उत्साह सूं ताप के समूह कूं तुम धारण करि रहे हो और पद पद में चंचलता कूं हू धारण करि रहे हो सो वा भाग्यवती तिहारी प्रिया वेग ही पधारे है सो धैर्य करिये सो विलासन सूं तिहारे उच्छलीत होय रहे

नाना विधि सघन मनोरथन कूं पूरण करेगी ॥ हे प्रिय करोड़न काम कूं हू जानें दूर किये हैं ऐसे रूप और मनोहर वेष के तैसे श्री मुखकमल और प्रकाशमान भ्रूअ रूप धनुष और कटाक्ष रूप वाणन के समूह के और या विराजमान कुण्डलन की नृत्य के और माणिक के समूह कूं हू निरादर करिवेवारो या अत्यन्त लाल बिंवाधर संबंधी छवी के समूह के और रस के सागरन की राशि रूप अपने श्री मुखारविन्द के और संख्या कूं उल्लंघन करिके सर्व के ऊपर विराजमान अपने तिस चातुर्य विद्या विनयादि गुण के और अपने सदृश तैसे आपके हू सगरी स्त्रीन कूं आकर्षण करिवे वारो जो अतुल बल है हे प्रिये वा बल कूं तुम अनुसंधान करो, काहे कूं विकल होवो हो सो वेग ही यह तिहारी प्रिया आवे है सो पधारके अत्यन्त मनोहर माधुर्य के परार्ध्ध कल्लोलन सूं पूर्ण अधिक सौन्दर्य समूह के सागरन कूं तिहारे प्रफुल्लित होय रहे दोनों नयनों में अत्यन्त ही भरेगी और तिहारे चित्त में जो उत्साह रूप पक्ष लग्यो है वाकूं वाह्य जैसे मनोहर मानादि भाव रूप अमृत के सागर समूह हैं विनसूं सिंचन करके और नानाविधि भावन सूं पल्लव वारो हू करेगी और अपने किये जे अनन्त अनुनय है और चरण कमल में बारम्बार प्रणाम हैं विनकूं बड़े यत्न सूं कोई प्रकार सूं आदर करिके शोभायमान फल वारो हू करेगी और प्रेम के आधिक्य सूं आपने अर्पन कियो जो आलिंगन और अमूल्य चुंबन रूप सुन्दर मनोहर उपायन है वाकूं हू सहन करेगी और मानेगी और तैसे ग्रहण करेगी और परिपक्व मधुर रस के सागर परम कला रूप अनुपम मनोहर तुम कूं सगरे अंगन सूं बहुत प्रकार सूं तुमसूं अपने कूं अत्यन्त भोग करावत हू भोग करेगी और तिहारे नयन कूं अपने नयनों सूं और हृदय कूं हृदय सूं और भुजा कूं भुजा सूं और उरस्थल कूं उरस्थल सूं और नाभी कूं नाभी सूं तैसे और हू तिहारे अंगन कूं अपने अंगन सूं निरन्तर ही द्विगुण ही करेगी । मिले भये ही सुन्दर स्पर्श संबंध वारे ही करेगी । सो हे प्रिय वा प्रिया के गुणन सूं और शील तैसे रूप और नीति भाव रस सूं निरन्तर अत्यन्त ही बाँधे भये तुम हमकूं तो देखवे कूं और क्षण एक स्पर्श करिवे कूं हू और तैसे बोलवे कूं हू और हे अंग तैसे प्राप्त होयवे कूं हू दुर्ल्लभ ही होवोगे । हे प्रिय हमकूं तो आपने तैसे तैसे वचनामृत कहे कहे और तैसे तैसे रस दान कर करके तैसे रसात्मक सगरे स्त्रीन के समूह के ऊपर हू कियो हूतो सो अब हम कहा करेंगी । हे अंग यासूं पीछे

तिहारे मंद हास्य सूं सुन्दर मुखचन्द्र कूं अपने निकट में क्षणमात्र हू देखवे कूं न प्राप्त होय रही हम का प्रकार सूं काल कूं गुजारेंगी वा कमलनयनी प्रिया सूं दान होय रह्यो जो नूतन अद्‌भुत रस है सो प्राप्त भये वाकूं दृष्टि सूं और हृदय सूं और अंगन सूं पान करत ही तुम पर्युषित हू भये हमारे रस कूं स्मरण हू नहीं करोगे सो हे प्रिय सो नर्म गोष्टि और मधुर लीला और वे प्रेमाविलोकन और अमृत कूं हू तृण जैसे करिवे वारे जे वे मंद हास्य हैं सो हमकूं अत्यन्त दुर्ल्लभ होय गये हैं । हे प्रिय अपने किये जे संभाषण और विलोकन तैसे विलास समूह है और तैसो गाढ आलिंगन और फेर फेर चुम्बन है और हू जे सगरे विनकूं कपट रूप ही प्रगट भयो है के वे तो तुमारे कपट सूं ही हते ।।५२।।

इति श्रीमद्‌गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुलविहार भये तृतीय कल्लोले चालीसमों तरंग समाप्तम् ।।४०।।

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४१ मो ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ इकतालीसमों तरंग लिख्यते ।।४१।।

श्लोक -- इत्यादिका प्योद्विरतिरसद्रांबाचो सांभौनिधिरीश्वरस्तां स्मेराननां भोरुहमाहसस्म प्रियेकिमे वंवतसिदसिंत्वं ।।१।।

याको अर्थ -- या प्रकार रस सूं आर्द्र वाणी कूं कहे रही वा सखी कूं सो रस सागर श्रीजी हसत ही कहे हैं के हे प्रिये तुम या प्रकार सूं काहे कूं व्याकुल होय रही हो ।।१।। जो लौकिक मर्यादा परम्परा सूं हू प्राप्त है और वेद ने हू प्रेरणा करी है सो रीति तो सगरी ही निरन्तर ही करवे योग्य है जासूं जो श्रृंगार सागरमय रस तुमारे में और मेरे में प्रकाशमान होय रह्यो है सो वा रीति सूं ही गुप्त भाव कूं हू प्राप्त होयगो । हे प्रिये जब प्रिय निकट होय तब हू कबहू प्रगट होय रहे अंग हू छिपायवे योग्य होय है और अनद्ये विन अंगन वारो अंगी तो कबहू छिपायवे योग्य नहीं है तथापि हे प्रिये रस तो कबहू प्रगट

करवे योग्य नहीं है । हे प्रिये जासूं प्रगट भयो थको रस तो निंब पत्र के रस सागर के समूह सूं हू कटु होय है तासूं प्राप्त जो यह विवाह संबंधी रस है सो अवश्य ही कर्तव्य है या प्रकार के करवे सूं तो जो रस हमारे तुमारे में विराजमान है सो वृद्धि कूं प्राप्त होय जायगो और गुप्त ही स्थित होयगो और अत्यन्त मधुर ही होय जायगो । हे प्रिये यह समय ता प्रगट रस कूं और गूढ़ रस को जो समय है सौ तो और ही है सो दोनों ही अपने अपने समय में शोभा वारे हैं और दोनों ही तुम हमकूं शोभा देवे वारे हैं । हे अनद्ये तुम तो मोकूं प्राणन के समूहन सूं हू प्रिय हो और सो गुण की सागर प्रिया हू प्राणन के समूह सूं ही प्रिय है । सो यह संमंध हू ऐसो है के जो वज्रलेप सूं हू अत्यन्त स्थिर है सो यह रस तो मर्यादा सूं संकोच वारो है और तुमारे में जो रस है सो निमर्याद है तासूं हू अत्यन्त अधिक ही है सो हे मुग्धे निरन्तर विषाद कूं मत प्राप्त होवो जासूं तुमारे अणुमात्र हू दुःख सूं हौं अत्यन्त दुःखी होवुं हूं सो या प्रकार धीरे धीरे या प्रिया कूं प्रेम पूर्वक विलोकनादि सूं धैर्य देत सो श्री जी तैसे और हू जे अपनी प्रिया पंकजनयना स्त्रीजन हैं विनकूं अपनी स्वकीयावलंबना प्रिया में प्राप्त होय रहे हृदय सूं यह विभावन करावते भये हैं के या प्रिया के पधारवे में काहे कूं निरन्तर विलम्ब होय रह्यो है और रात्रि है सो तो क्षीण होय रही है और उत्साह है सो तो ताप कूं देवे वारो होय के बढ़ ही रह्यो है सो या प्रकार सूं परमेश्वर प्राणप्रिय के चित्त कूं दुर्ल्लभ प्रियाजी में जानके और अत्यन्त ताप कूं हू जानके सो कोई एक भाग्यवती सखी सो वेग ही ताप के सहित ही अपनी सखी कूं प्राप्त होयके वाकूं बुलायके छिपे प्रकार सूं ही वा प्रियाजी के पास वाकूं बोध देवे कूं और विलम्ब के कारण कूं जानवे अर्थ और वाके वेग आयवे में प्रकार कूं करवे अर्थ तैसे तैसे अत्यंत यत्न करवे कूं और तिस तिस आज्ञा करिवे कूं और वा प्रियाजी में कहिवे कूं और इहां आपके सगरे वृत्तांत कूं सुनायवे कूं सो प्रथम ही या सखी ने यह दूती रूप सखी प्रिय श्री जी के हर्ष बढ़ायवे कूं जो स्थापन करी हती सो वाकूं प्रियाजी के पास पठावती भई है सो सखी हूं मन के जानवे वारी है तासूं या प्रकार के संदेश कूं अत्यंत प्रसन्न होयके प्रफुल्लित है रोमावली जाकी ऐसी यह सखी वा प्रियाजी के निकट तहां वेग ही पधारती भई है जहाँ रती कूं जय करिवे वारी है शोभा जाकी ऐसी सो प्रियाजी प्राणेश श्रीजी के सुख में

उद्यम वारी जे पाँच छै सुन्दर दृष्टि वारी स्त्री हैं विनसूं मिली भई ही विराजमान हैं वे सगरी सखी हूं वा प्रियाजी कूं या प्रकार सूं कह रही हैं के गोकुल के भूषण जे तिहारे प्रिय श्रीजी हैं सो तो सगरे भक्तन कूं सुख दान करवे वारे हैं और बड़ी महिमा वारे हैं और स्तुति योग्य यश वारे हैं और आनन्दमात्र हैं सगरे श्री अंग जाके ऐसे हैं और सौंदर्य के धाम हैं और गुणीन के मुकुटमणी हैं और तरुणता और कारुण्य रस के सागर हैं और उदारता और माधुर्य और विदग्ध भावन सूं और ऐश्वर्य के समूहन सूं और प्रिय वाणी वारे भाव सूं सरस आशय वारी जे नितंबिनी हैं विनके आनंद के कंद हैं और मनोहर हैं ऐसे श्री गोकुलपती जी की तुम प्रिया हो सो तुम सगरे गुणन सूं आनंद देवे वारी हो और रामा जे मनोहर स्त्री हैं विनके समूह जाके चरण कमल को पूजन करे हैं ऐसी तुम हो सो हे चारु गात्रि सुन्दर श्री अंगवारी प्रिये सो प्रिय श्रीजी अब तुमकूं विशेष सूं प्रतीक्षा कर रहे हैं सो हे प्रिये हे विशाल नेत्रे चतुर जे स्त्री जन हैं सो हू जाके अणु मात्र हू विलास कूं प्रतीक्षा करे हैं ऐसे वा परम चतुर श्रीजी के मनोरथ कूं तुम वेग ही पूरण करो। हे तनु मध्य में सूंक्ष्म है कटि जाकी हे ऐसी प्रिये जगत के भय समूह कूं नाश करिवे वारो है तैसे कटाक्ष को लेश जाकूं ऐसे जे यह श्रीजी हैं वासूं हू तुम डरो हो यह बड़ो आश्चर्य है और पद्मन चंद्र कूं जय करिवे वारो है शोभायमान श्रीमुख जाको हे ऐसी प्रिये हे मधुरांगी तिहारे दास्य में हू जाको मनोरथ है ऐसे वा श्रीजी में हे मुग्धे सो कारण नहीं जाने है जासूं तू डरे है, हे प्रिये जा निर्दोष प्रिय श्रीजी के चरण कमल संबंधी रस के लेश कूं भक्तजन और कटाक्ष के लेश कूं मंदरेक्षणा जे मत्त खंजन ऐसे नयन वारी स्त्रीजन हैं सो बड़े यत्न सूं प्राप्त होय के निश्चय सूं अप्रसन्नता कूं अत्यन्त निवर्त करे हैं के अत्यन्त ही प्रसन्न होय जाय हैं और यह प्रिय श्रीजी तो तिहारे उदय होय रहे प्रसाद कूं बहुत प्रकार सूं हू वांछा करत है सो जगत के अनेक दुखन कूं हरवे वारो जो तिहारो भरतार रसिक श्रीजी है सो तुमकूं अप्रसन्न कदाचित हू नहीं करे है के सदैव ही प्रसन्न करेंगे। अनवद्य मूर्ते निरदोष स्वरूप वारी प्रिये जो जो तुम कहोगी और जो जो तिहारो अभिप्राय होयगो और जो जो तिहारो प्रिय होयगो सो सो ही वे श्रीजी करेंगे। हे सुकंठे ! यह गुण सागर रस रूप श्रीजी तिहारे जैसे सर्व प्रकार सूं अनुराग वारे हैं सो तुम नहीं जानो हो सो याके हृदय में यह महा दुःख है सूंर्योदय

में जैसे गाढ़ अंधकार निवर्त होय है तैसे ही या प्रिय कूं यह दुख तब ही निवर्त होय जायगो के जब गुण के जानिवेवारी तुम हू वा अपने प्रिय में सर्वात्म भाव सूं अत्यंत अनुराग करोगी । हे प्रिये जैसे यह श्रीजी तुमारे में सर्व प्रकार सूं अनुरागवारे हैं तैसे ही अपने में तुमकूं सर्व प्रकार सूं अनुरागवारी करिवे कूं यत्न कर रहे हैं सो तुम वा श्रीजी कूं मिलो तो, सो यत्न हू सिद्ध होय जायगो हे सुदीर्घाक्षी लंबे हैं नयन जाके हे ऐसी प्रिये नहीं त्याग कियो बालभाव जाने ऐसी जो तिहारी अवस्था है और उदीप्त होय रह्यो जो लज्जा वारो भाव है और निरहेतुक जो निरन्तर भय है सो इनके अनुकूंल रहनो तुमकूं उचित नहीं है इत्यादि वचनन सूं और हाथन के जोड़वे सूं और तैसे तैसे बारंबार प्रणामन सूं हू श्री वल्लभजी के निकट पधारवे कूं सांत्वन करी सो प्रियाजी मनोहर वाम भाव संबंधी जो मानादि है वाकूं न त्याग करत और बढ़ रहे कातरता कूं और बढ़ रही अधीरता कूं हू न त्याग करत सो प्रियाजी सिद्ध होय रह्यो है निषेध वाचक मां कार कूं समूह जामें ऐसो है श्री मुख जाको ऐसी ही होय जाती भई है के केवल निषेध के वचनन कूं हू कहिवे वारी होती भई है के हों तो नहीं चलूं हूं ऐसे शब्द कूं कहती भई है सो या प्रकार बहुत बेर करी है प्रणाम जाकूं ऐसी वा श्री बहूजी कूं देखकें वे कमल सूं हू कोमल मुखवारी सखीजन प्रसन्न होयके कहवे लगी के हे प्रिये तुमकूं बुलायवे कूं यह प्रिया हू इहां आई है । तब सो सखी हू कहवे लगी कि हे अखर्वभाग्ये बड़े भाग्यवारी प्रिये हे मनोहर स्पर्शस्य प्रिये मनोहर जे ईश्वर श्रीजी है वाकी प्रिये सौंदर्य माधुर्य सूं अब्जन लक्ष्मी कूं विजय करिवे वारी हू विदग्धा स्त्रीजन जा श्रीजी के हजारन करोड़न सुधा समुद्रन कूं झरिवेवारे जा कटाक्ष के लेश कूं प्राप्त होयवे अर्थ कहा कहा नहीं करे है अपितु बड़े यत्न कर रही है सो प्रिय सार्वभौम श्रीजी और सगरे कार्य कूं त्याग के ही केवल तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं । हे भद्रे ! तुम तो परम चतुर हो सो तुम इतनो विलम्ब काहे कूं करो हो । हे पद्मनेत्रे ! शरद ऋतु पद्म जैसे अत्यन्त शीतल और प्रफुल्लित हैं नेत्र जाके ऐसी प्रिये अथवा दुःख सूं हू दूर होयवे वारे कछु कारण सूं हू तुमने कियो है सो हे तन्वि ! ऐसे वल्लभ प्रिय श्रीजी के संगम में जो कारण शत्रुता कूं कर रह्यो है याको नाम हू नहीं लेवे योग्य है जासूं यह कारण सगरे दुर्बुद्धीन कूं ईश्वर है तासूं याकी कथा सूं हू अलं है याकी कथा हू मत करो । अब

हे प्रिये या श्री जी के संगम में बाधा रूप या कारण कूं निरन्तर ही निवर्त करके विचार कूं अत्यन्त आदर करके वेग ही प्रस्थान करिये सुभ्र मनोहर सोहार्द्र वैदग्ध और रस अनुकंपा दया जाकी और करोड़न अर्बुद कामदेव की शोभा सूं निरांजन योग्य है चरण कमल संबंधी नख के अंचल की शोभा जाकी ऐसे जे रस आनन्द रूप तिहारे प्राणनाथ श्रीजी हैं सो अपने प्रेम कटाक्ष रूप पुष्पन सूं भली प्रकार आस्तत तिहारे मार्ग में तिहारे पधारवे कूं प्रतीक्षा कर रहे हैं, तासूं हे प्रिये लीला मंदिर में पधारवे लिये साहस करिये और वा श्रीजी के जे अद्‌भुत रूपवारे प्रेम है और अमृत कूं हू जय करिवे वारे शोभायमान जाके मंद हास्य है और भ्रू पल्लव द्वंद के जे तरंग है और अन्यंत रसरूप विविध जे श्रीजी के कटाक्ष है और तैसे प्रेम पूर्वक जे अवलोकन है और मधुर अत्यंत शीतल जे रससूं आर्द्रवाणी है और आलिंगन तैसे अमूल्य जे चुंबन है और जे जे विलास वृंद है सो तुमारी सेवा करिवे कूं कमर बांध के ही गुप्त होय के तहां विराजमांन हैं हे प्रिये सो जब वा श्रीजी के निकट पधारोगी वा समय में ही सर्वथा ही वे प्रगट होय जायगे सो हे गतिर्भागंजिते भे गति सूं गंजन कियौ है हस्ती जाने हे ऐसी सुंदर गति वारी प्रिये वेगसूं ही तहां पधारके विन सगरेन के मनोरथन कूं पूरण ही करिये, हे प्रिये तिहारे प्रसन्न करिवे कूं तैयार करि राख्यो है सगरो तेसो रस रमण साधन जाने और चंद्रमाकूं विजय करिवेवारी है मुखकी शोभा जाकी ऐसे जे तिहारे प्रिय है सो तिहारे पधारवे के अर्थ मोकूं अधिक प्रेम आदर पूर्वक अपने मुखसूं हू कहेत भये है और जो तिहारे परम प्रिय के रूपकूं हू जाने नहीं देख्यो और स्वभावकु हू अभी तक हू अनुभव नहीं कियो और वचनामृत हू नहीं सुने और जाके स्पर्श रस कूं ही अभी नहीं प्राप्त भई है ऐसी हू स्त्री जा तिहारे परम प्रिय के नाम कूं हू सुनके हू सगरे सबंधी गृहादिक कूं त्याग के गिर रहे हैं वस्त्र और विभुषण जाके ऐसी सो स्त्री होय के और मेघ हू अत्यंत वर्षा कर रह्‌यो है और प्रचंड पवनहू चल रहयो है और कीच वारो होय रह्‌यो है और सबंधी हू निषेध कर रहे है तोहू परम चतुर बड़े कुल की कन्या हू सो सुंदरी जो तो तिहारे प्रिय के दर्शन के लवलेश के अर्थ हू साहस कूं अंगीकार करत अत्यंत ही वेगसु पहूचे है तो बड़ो आश्चर्य है के सो वा प्रिय कूं तुमतो आछी रीति सूं जानो हो और वाके रूपादि हू तुमने तो निरंतर ही अनुभव किये है और महाउत्सव हू या प्रकारसूं बढ़ रह्‌यो

है और तुमकु तो सगरी सखी जनहू प्रेरणा कर रही है और तिहारे में जाको चित्त है ऐसे पूर्वोक्त प्रकार वारो ही प्रिय तुमकूं स्वयं श्रीमुखसूं हूं बहुत वार ही बुलाय रह्यो है सो यामे हू तुम बिलंव कूं आदर दे रहे हो और न तो इन सखीन कूं आदर देवो हो और न मोकूं आदर देवो हो और ना वा प्राणप्रिय कूं आदर देवो हो यह बड़ो आश्चर्य है और यह सोना किनारी वारो अद्भुत शोभावारो जाकु पाग है चीरा है और जय करी है अष्टमी के चंद्रमा की छबी जाने और ऐसो जाको शोभायमान उर्ध्वपुंड वारो लिलाट पट है और चारो ओर प्रसर रही है श्यामल चंद्रिका जाकी ऐसी अत्यंत मनोहर जाकी अलकावली है और शोभायमान महाधाम की निधीरूप तैसी मधुर बढ़ रही है शोभा जाकी ऐसी जाकी नाशावंश है और भली प्रकार उदय होय रहे निर्मल चंद्र की किरण सूं प्रगट भये जैसे होय तैसे जाके भ्रू पल्लव द्वंदसूं अनेक तरंग रूप रंग प्रगट होय रहे है और जाके मुक्तामणी हीरा खचित सुवर्णमय श्रेष्ट कूंडलों के जे तांडव करि रहे है और प्राप्त भयो है भंग जाकूं तासूं युध्ध भूमि मे दौड़ रह्यो जो लक्ष्मी पति है वाको जो लीला कमल है वाकूं पराजित जानके पीठ देखवे वारे और रस विलास सूं प्रकाशमांन है और अपने ह्रदय के भावकूं विना अक्षरन के कहि रहे हैं ऐसे जाके नयन है और सुवर्ण मय श्रेष्ट दर्पण कूं जो अभिमान को समूह है वाकूं लुंटवे वारी जो कपोलन की शोभा सबंधी सो माधुरी है और हजारन करोड़न सुधा के समुद्र जासूं झर रहे है ऐसी जाके मूछन की उछल्लित होय रही श्याम कांती है और मंद हास्य सूं बढ़ रही है शोभा जाकी ऐसी जाकी दंत प्रभा है और अखंडित अधिक रस प्रवाहकूं वर्षा करवे वारे अत्यंत मनोहर जाके विवांधर की तैसी लालिमा है और जाके श्री कंठके जे वाके वलन है जे विदग्धा सुंदरीन के नयन कमलों में अपार मोद के सागरन कूं वर्षा करि रहे हैं और जे सौंदर्य के भारसूं अत्यंत अभिमानी है और जाके दोनो भुजाकी जो पुष्ट दीर्घता है सो पुष्ट स्तनवारी जे स्त्री है विनके चित्त रूप मृग कूं बांधवे वारी है और जो भुजा के दीर्घ के युर कोष्ट कंकण मुद्रिकादि सूं सुशोभित अंगवारो है और निरंतर शोभायमान है और जाके माधुर्य के निवास रूप ह्रदय को जो उंचो भाव है और विशालता है जो कपाट की शोभा कूं हू हरिवेवारी है और जो चातुरी है तैसे शोभा के तरंग है और जो तेजस्विता है सोहू विजय कूं प्राप्त होय रही है और चंद्रमुखीन के धैर्य रूप वर्ण कूं टूक-टूक करिवे वारो

जा जाके नाभि कमल को सौंदर्य है और जाके उपरना और धोती में विराजमान जो केसर और श्रेष्ट कुमकुम सूं पीत भाव है और चाकचिक्य की जो, तैसी समृद्धि है और सुंदरता और कोमलता है और जाके चरण कमलन कूं जो रसको समूह है जो अनेकान अमृत के सागरन कूं हू निरादर करवे वारो है सो वे सगरे कैसे शोभायमान होय रहे है सो कहा कहें वे तो देखे ही बने सो मनोहरतासूं विजय किये है करोडन कांम जाने ऐसे जे भक्त जनन के समूह के प्राणन सूं हू अधिक है अत्यंत प्रिय श्रीजी है सोतिहारे चित्त की कठिनता रूप पर्वत के छेदन में वज्रभाव कूं नहीं धारण करे है सो हे प्रिये तुम बड़ी कठोर हो अथवा प्रिय श्रीजी तुमसूं अत्यंत डरपे है ॥ ५२ ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले एकतालीस मुं तरंग समाप्तम् ॥

॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ४२ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ ब्यालीसमो तरंग लिख्यते ॥४२॥

शलोक -- **इत्यादितद्वागमृतानि पित्वै त्वाप्यमान्यमाना रसमंदीरस्य ॥**
गत्यामभुप्रादिं न शीतत्रदत्त रती स्वरुपं रसिकस्यतस्य ॥

याको अर्थ -- इत्यादि प्रकार के वा सखी के वचनामृतन कूं पान करिके हू (प्रथम रात्रि में रसमंदिर के पधारवे में नहीं माने हैं और रसिक वा श्रीजी के चित्त में दियो है रती को स्वरूप जाने ऐसी या श्री स्वामिनिजी कूं वेगसूं हू प्रवेश करिके सो मृगनयनी बल सूं हू उठावती भई हैं, तब या सखीने अपनी सखी श्रीजी के निकट पठाइ है सो सखी हू व्रतांत कूं ले करिके श्री प्राणनाथ श्रीजी के निकट वेग पधारी है तहां श्रीजी हू अत्यंत उत्साहित होय रहे है और या प्रिया के पधारवे वारे मार्ग कूं हू देख रहे है और व्रतांत के लाभ के अर्थ अनेक चतुर सखीन कूं वारंवार वेग सूं हू पठाय केहू फेर हू विन और सखीन कूं पठाय रहे हैं) और बिन सखीन के प्रति या प्रकार सूं कहे रहे है

के वा स्थल सूं श्री स्वामिनिजी इहाँ पधारवे कूं प्रस्थान कियो है ऐसे जो सखी मोकूं प्रथम आय के सुनावेगी वाकूं हू या अभीष्ट के दान सूं अत्यंत कृतार्थ करूँगो और अधिक कहा कहे के यासूं पीछे स्वयं हू वेग सूं पधार के वा प्रियाजी के पधरायवे अर्थ अभिप्राय वारे है और तैसे मनवारे भक्त जे सुंदर द्रष्टि वारे स्त्रीजन है विनसूं मिले भये है और ऐक सखी तो स्वामिनीजी वेगही पधारेगे ऐसे सात्वना करे है और दूसरी तो कहे है के तिहारी स्वामिनिजी कूं सखीजन समुझाय रही है और कहे है के वा प्रियाजी को चित्त इहां पधारवे में मेने लख्यो है निश्चय कियो है ऐसे या प्रकारसूं श्रीजीकूं वे सगरी सखी और की और सुनाय के धैर्य दे रही है और कितनीकतो श्रीजी के निकट पधार के हू खेदकूं प्राप्त होय रही है और प्रियाजी के पधरायवे में उपायकूं हूं विचार रहे वा प्रियकूं देख के विचार करवे लगी के अब प्राण प्रियजी तो अत्यंत उत्साहवारे है सो हम याकु कहा कहे यदि कहे के तिहारी प्रिया बहुत मान कर रही है यहाँ नहीं पधारे है सो हमारे इतने कहवे में तो श्रीजी अत्यंत विकल ही होय जायेगे सो यह विचार के श्रीजीकुहू वेसो देखके स्वयं विकल होयके पीछे हू गमन करत भई है और इतने में यह सखी तो जाय के श्रीजीकूं प्रणाम हू करत भई है और वचन हू कहेत भई है द्रिष्टया महा मंगल भयो है तुम वृद्धि कूं प्राप्त होय रहै हो सो तिहारी प्रिया निश्चयसूं इहाँ पधारवेकूं बड़े यत्न सूं उठि के ठाड़ी भई है सो श्रीजी या प्रकार के या सखी के वचननकूं सुनिके मनोहर जाको स्वरूप है और महा आवर्त और तरंगन को है समूह जामें और अगाधि और अपार ऐसे हर्ष के समुद्र में निरंतर ही मग्न होय जाते भये है तब हर्ष के सहित अपने-अपने श्रीकंठसूं सुवर्ण की मालाकूं उतारके वा सखीके प्रति देते भये है और वा वृत्तांत कूं हू पूंछते भये है सो सखी हू जेसौ वृत्तांत हतो तैसे कहेती भईं है तथापि यह प्रिय श्रीजी तो या प्रकारसूं संदेह करत है के सो तो बड़े मांनवारी फेरहू वगद जायगी या प्रकारसूं निश्चित निर्णय कूं न प्राप्त होते भये है और प्रियाजी तो ह्वदयकूं जो हरिवेवारो जो ईश्वर प्रिय श्रीजी है सो वाके ह्वदय में प्रविष्ट भये थके तैसे मनोहर रूपसूं अत्यंत ऊँचे वाम भाव मानादि भाव रूप पर्वतसूं उतारी भईं हू धीरे-धीरे प्रस्थान करत भई हैं और उदय होय रही है लज्जा जामें ऐसी प्रियाजी अपने स्थान में जायवे कूं वगद के पद-पद में हू वगद के इच्छा कूं करत भई है तथा पिया के स्वरूप कूं पुष्ट

कर रह्यो जो प्रबल श्रीजी को मनोहर स्वरूप है सो याकूं आगे-आगे मार्ग में चरण-धारण करावतो भयो है। तासूं यद्यपि यह अवला है तथापि वा श्रीजी के प्रवल स्वरूप सूं ही यह मनोहर चरणन कूं आगे धारण करत भई है और जब कातरत्ता, याकु वगदाय के ले जायवे की इच्छा करतभयी है तब सखीन के जे यत्न हते सो याकु आगे चलावते भये है और लज्जा याकूं आगे चलन न देती भई है और स्मरण कियो जो प्रिय को श्रीमुख है सो याकु आकर्षण करत भयो है और या तन्वी कोमल अंगवारी प्यारी कूं भय है सो आगे जायवे मे रोकतो भयो है और प्रिय श्रीजीके श्रीअंग की जो माधुर्यता हती सो या भयकूं खंडन करत भई है और जो बढ़्यो भयो हठ रहयो सो तो सखीन के जे हित विवचन है विनकूं मृगनयनी प्रियाजी के कानन में प्रवेश करन नहीं देतो, भयो है तथापि प्राणनाथ श्रीजी के वचनामृत के पान को जो लोभ हतो सो तों आगे पधारवे में ही प्रेरणा करत भयो है तब सो प्रियाजी कहेवे लगी के हे सख्या तुमारे वचनन के अनुकूंल होयके चलतहू हौं लज्जा भय कातरता अधीर्यरूप अखंडनीय श्रृंखलासु बांधी भई हौं चलिवे में समर्थ नहीं हू बारंबार इतनो कहि के जय कियो है, कोकीला को वचन जाने ऐसी सो प्रिया वगद के अपने स्थान में पधारे है तब वे सगरी सखी चरणनन में गिरगिर के विनकूं ग्रहण करके और तैसे भय आदिकूं निवृत करिवे वारे वचननकूं कहेकर वा प्रियाजीकूं आगे चलावत भई है उछल्लित होय रहै निरहेतुक भयसूं वगदरही वा प्रियकूं रसिक वर वा श्रीजीकूं जो कृपा स्वभाव है सो वा प्रियाजी में स्फुरित होय के वा प्रियाजीकूं आगे चलावत भयो है और मानादिरूप वा वाम भाव है सो वा प्रियाजीकूं वगदायवे कूं इच्छा करत भयो है तब हों न जावुगी तब वा प्रियाजी की और प्रिया होय जायगी सो या प्रकार को जो विचार है सो या प्रियाजीकूं आगे चलावतो भयो है और या प्रिय श्रीजीकूं जो ऐश्वर्य है सो वारंवार स्फुरित होयके वा प्रियजीकूं संकोच देकर रोकतो भयो है। और प्रियाजी के उत्साह समूहकूं धारण कर रहयो जो श्रीजी को माधुर्य है सो वा प्रियाजी कूं आगे चलावतो भयो है और नहीं त्याग कियो है वाल भाव जाने ऐसी जो सो अवस्था है वा प्रियाजीकूं आगे चरण धारण नहीं करन देती भई है और बिन भूषणनसूं शोभायमान जो वा श्रीजी को स्वरूप है सो याकूं आगे आकर्षण करत भयो है सो सखी तो दूर पर्यंत प्रियाजी के संग चलके याकूं छोड़ि के फेरहू निवेदन किये वृत्तांतसूं

श्रीजीकूं अत्यंत बढायवे कूं अर्थ श्रीजी के प्रति चलती भइ है तब वा प्रिय श्रीजी के निकट पधारके प्रियकूं प्रणाम करत भइ है और वचनहू कहेत भई है के दिष्टया महा मंगल भयो है हे नाथ तुम वृद्धिकूं प्राप्त होय रहे हो के सो तुम्हारी प्रियाजी धीरे-धीरे चरण कमलनकूं धारण करत मेने किये बड़े यत्ननसूं तुमारे निकट पधार रही है तब प्रियजी कहेत भये है के हे प्रिये यह सत्य है के हांसी वचन है तब सखी कहे है के हे अंग यह सत्य है नर्म नहीं है तब प्रियजी कहेवे लगे के या अर्थ में मेरोमन निश्चयकूं नहीं करे है यदि सत्य है तो यह हर्षसूं मेने दीयो मेरे कंठ को हार तुम लेवो और तुमारे में हों सदेव ही प्रसन्न होवुगो तब प्रिय श्रीजी के या प्रकारके वचननकूं सुनकर हर्ष समूह में मग्न होय रही सो प्रियाजी कहें हैं कि हे प्रिय यह सत्य है सत्य है यह नर्म को समय नहीं है सो समय तो न्यारो ही है हे प्रिय अब तुम बड़े भाग्यवारी अपनी प्रियाजीकूं इहाँ पधारी ही निश्चय करो । हे प्रिय जा सखी की प्रेरणासूं हो शिक्षाकूं प्राप्त होयके यह बड़े कष्ट सूं सिद्ध होयवे वारे बड़े कार्य कूं सिद्ध करिवे अर्थ तहां गई हूं और अत्यंत थोरी बुद्धिवारी ही हों या कार्यमें हों जाकी शिक्षाकूं प्राप्त होयके समर्थ भई हू ऐसी या मेरी सखी अपनी प्रिया में स्नेह हर्षसूं देवे योग्य हारकूं और सदा प्रसाद कूं करिये, हेमदीश मेरे प्रभो हे प्रिय सार्वभौम या मेरी सखी में जो कछु आप करोगे सो सगरो मेरे में ही भयो है या सूं हम दोनो भिन्न नहीं है हम ऐक ही है सो या प्रकार के या सखी के वचनामृत समुद्रकूं प्रसन्न होय के पान करिके प्राणनाथ रससागर श्रीजी अपने हाथसूं प्रेमके भारसूं वा हार कूं वा सखी की प्रिया के कंठ में धारण करावत भये है और वाकूं सहित स्नेह के देखत भये है और उछल्लित हर्ष वारे होय के याकूं गाढ आलिंगन हू करत भये है और याकी कार्य करवे वारी वा सखीकु हू सहित भावके आलिंगन करिके वाकी अंगुली में अपनी मणी खचीत मुद्रिका कूं पहिरावत भये है और आनंदमूर्ती जे सो श्री गोकुलेशजी है सो होंतो सदैव ही मनोहर भाव भारी तुम दोनों के ही आधीन होयके रहूंगो या प्रकारसूं कृपा के आधिक्य सूं कहत भये है ॥५३॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिधो श्री मथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले बयालीश मूं तरंग समाप्तम् ॥४२॥

श्री श्री श्री श्री श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४३ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रेतालीसमो तरंग लिख्यते ।।४३।।

श्लोक -- **द्वित्राभिरालिमिरथो जनीतु सीलं विदग्धामिरहो कथं चितप्रयत्न बाहूल्यभंरेणतन्वी तथा तथा संकुचदंग चित ।।१।।**

याको अर्थ -- तब श्री स्वामिनीजी तो तैसे तैसे संकोच सूं प्राप्त होय रह्यो है अंग और चित्त जाकूं ऐसी है और मेरे में प्रिय श्रीजी तो अत्यंत उत्साह वारे हैं और हों तो अत्यंत विलंब कर रही हूं तासूं प्रिय श्रीजी मेरे में कोप करेंगे अथवा गुण के सागर सो श्रीजी मेरे पर प्रसन्न होवेंगे या प्रकार संदेह कूं करि रही हूं और वा प्रिय के आगे तिस तिस वार्ता कूं करिवे में हों कैसे समर्थ होय सकूंगी या प्रकार सूं चिन्तावारी है और ह्रदय में प्रवेश करिके अत्यन्त स्थित होय रह्यो जो प्रिय को स्वरूप है वाने बहू यत्न सूं वा प्रियाजी के ह्रदय में जो उत्साह अंकुर वारो कियो है जो अधेर्य और कातर्यमय और लज्जा सूं निवर्त होय रह्यो वा उत्साह कूं श्रीजी के तैसे अनंत मनोहर गुणन की स्मृती रूप धर्म कूं विन सखीन द्वारा पहिर के रक्षा कर रही जो सो ऐसी स्वामिनीजी हैं वाकूं परम चतुर श्रीजी कूं प्रसन्न करिवेवारी एक मति कूं धारण कर रही जो दो तीन सखी हूती सो लीला मन्दिर के द्वार कूं प्राप्त करत भई है और सो उत्साह और वे सखी हू जा स्वामिनीजी कूं भीतर प्रवेश करिवे कूं विज्ञापना कर रही हैं तब वा समय ही मिलि के आये जे वे तैसे अधैर्य कातर्यमय लज्जा है सो वे याकूं प्रवेश करिवे में बल सूं हू रोकते भये हैं तब श्रीजी कूं जो तैसो रसात्मक माधुर्य है और तैसो रसात्मक जो श्रीजी को स्वरूप है और प्रकाशमान जो अनिरवचनीय सौन्दर्य को प्रवाह है और दीपावली को जो सुन्दर प्रकाश है और श्रेष्ठ चन्दन और कर्पूर तैसे कस्तूरी के जल में भिजोयो जो अगर चन्दन को द्रवादि है विनकी जो प्रसरवेवारी सुगन्धी को समूह है और तिस तिस सुन्दर वस्तुन की जो शोभा है और वे सखीजन और विनके जे वचन

और निरन्तर तैसो उत्साह हू वे सगरे मिलके या मृगनयनी कूं बड़े यत्न सूं विहार मन्दिर में प्रवेश करावती भई हैं तथापि नीचे होय रहे हैं भ्रू जाके ऐसी जो श्री स्वामिनीजी हैं सो तो संकोच के समूह सूं और भय सूं तैसे लज्जा के आधिक्य सूं और वाम भाव सूं और वगद के बल सूं ही बाहिर पधारती भई है तब बढ रहे उत्साह के भार सूं प्रेरणा करे भये सो प्रिय श्रीजी उठिकें वा प्रियाजी के दर्शनानंद रूप महा सागरन के समूह में निमग्न भये थके मनोहर रूप वारे द्वार में वेग ही पधारते भये हैं तब प्रफुल्लित होय रह्यो है श्री मुखचन्द्र जाको ऐसे श्रीजी उच्छलीत होय रहे करोड़न विलास सागर जैसे होंय तैसे ही वचन कूं कहेत भये हैं के हे प्रिये जय कियो है पर्वत कूं समूह जाने ऐसी लज्जा के आधिक्य को तुम काहे कूं आदर करो हो यहां बहिरंग जन को ठाड़ो है। हे मुग्धे ! हों तो तिहारे निरन्तर अंगीकृत ही हू और सखीजन हू यह तिहारी अंगीकृत ही हैं यदि ऐसे नहीं हैं तो यह सगरी सखी अपने अपने घर कूं चली जाय। सो या समय सखीजन हू प्राणनाथ श्रीजी के वचन कूं सुनकर तहां सूं सरक कें तहां छिप के ठाड़ी होय जाती भई हैं और विनमें जो भाग्यवती चतुरा सखी हती सो श्री स्वामिनीजी कूं तहां रोक के ठाड़ी होती भई हैं। तासूं वा स्थल सूं नहीं जाती भई है और प्राणेश्वर श्रीजी तब निरन्तर ही निकट विराजमान होते भये हैं तब प्रिया श्री स्वामिनीजी तो अत्यन्त संकोच कूं हू प्राप्त होय के नीचे होय रहे हैं श्री अंग जाके ऐसी सो प्रिया जी मधुर जैसे होय तैसे कांपत ही भीत के कोणा कूं आलिंगन करिके विराजमान होय जाती भई है तब सखी कहिवे लगी कै अहो प्रिये प्राणन के अर्बुदन सूं हू अधिक्य प्रिय श्रीजी कूं तुम प्यारी हो यासूं समीप प्राप्त भये या प्रिय सूं अनंद्ये तुम काहे कूं निरंतर संकोच ही करो हो, हे प्रिये यह रस सागर श्रीजी तो महाप्रेम सूं ही तिहारे प्रपंन्न होय रहे हैं थोरे से हू प्रिया आपनो नहीं है और प्रसिद्ध हू जो तिहारी विक्षता है के सियानपन है सो अत्यन्त ही व्यर्थ करि रहे हो और कामदेव संबंधी दर्प समुद्रन के करोड़न समूहन कूं निरन्तर पान करिवे अगस्त भाव कूं धारण करि रहे जे महा परम सुन्दरवर प्राणपति श्रीजी हैं वामें तुम जो आदर को नहीं करो हो तासूं सगरी चतुर स्त्री तिहारे पर हांसी ही करेगी। अहो जो याको सौंदर्य है सो महामनोहर है और अमृत के समुद्रन के समूह कूं हू निरन्तर जय करवे वारो है सो सौन्दर्य तुम कूं प्राप्त होय रह्यो

है । सो यह सौन्दर्य अपने नयनन सूं पान करावो । हे नतांगि काहे कूं मूढता कूं अंगीकार कर रही हो । हे मधुरागिनि, मधुर हैं अंग जाके, हे ऐसी प्यारी आपने आज बड़े यत्न सूं लज्जा कूं आदर कियो है सो कैसे प्राणपती कूं त्याग के दूसरे दिन तीसरे दिन वाकूं आदर करोगी जब अपनी इछादीप्त होयगी तब याको कैसे आदर करोगी । अब या रस कूं अनुकूल न होय रही जो तुम हो सो या प्रिय के या रस कूं अनवेषण करत हू नहीं प्राप्त होवौगी । हे तत्प्राण कोटयाभ्याधिक प्रिये हे व श्रीजी कूं करोड़न प्राणन सूं हू अधिक प्रिय, हे अनिद्य मूर्ते निर्दोष स्वरूप वारी प्यारी हे भद्रे तासूं अपने प्रिय प्राणपति श्रीजी कूं अपने दृष्टि कमल संबंधी कोण के अणुलव के समर्पण सूं हू अनुग्रह करो और लोकातीत और प्रिय कूं अत्यन्त प्रिय और सुगंधी कूं सार रूप अपने चरणारविन्द के समर्पण करि वा लीला मन्दिर कूं वेग ही पूर्ण करो इत्यादि प्रकार सूं कहिकर वा सखी सूं लीला मन्दिर के प्रति प्रेरणा करी जो सो कमलनयनी है सो वा सखी कूं अत्यंत निराश करिके वाके ज्ञानवारी प्यारी पीछे हू सरक जाती भई है । तब सो सखी वेग सूं हू प्राप्त होय के अपने दोनों हाथन सूं वा प्रियाजी कूं फेर वेग सूं धारण कर लेती भई है । फेर हू वा सखी कूं अत्यन्त ही निराश करिके सो चन्द्रमुखी श्री स्वामिनी जी अत्यन्त ही सरक जाती भई है सो या प्रकार की लज्जा रस रूप नयी नयी जो श्री मृगनयनी प्रियाजी की यह लीला है वाकूं सो प्राणपति श्रीजी दोनों नयन कमलन सूं हृदय सूं तैसे मुख सूं पान करत ही अत्यन्त तृषा वारे भये थके ही अत्यन्त आश्चर्यित होय जाते भये हैं तब या प्रकार की लीला के अनुभव सूं भयो जो हर्ष है सो श्रीजी के सगरे अंगन में प्रसर जातो भयो है और श्रीजी की वाणी हू वा लीला रस के आनन्द में निमग्न होय जाती भई है तासूं बाहिर ना प्रगट होती भई है तब श्रीजी के श्री मुख संबंधी मंद हास्य ही सगरे भीतर के भाव कूं कहेत भयो है । तब प्राणपति श्रीजी सखी के प्रति कहेन लगे के हे सखी तुम तो इहां सूं वेग जावो । तिहारी सखी या द्वार देश कूं नहीं छोड़े है । तासूं यानें यह द्वार देश ही लीला मन्दिर रूप बनायो है । तासूं मेरो पोढनो हू इहाँ ई होयगो । या प्रकार मंद मंद हांसी वारे प्रिय के वचनन कूं सुनकर सो सखी वा देश सूं सरक के प्रथम सरकी जे परम चतुर अपनी सखी हती बिनके पास ही छिप के स्थित होती भई है । तब प्रिय श्रीजी हू कछु निकट पधारके हसत हसत ही वा मृग के

छौना सरीखे नयन वारी कूं कहेत भये हैं के हे प्रिये यह निष्कारण रस कूं हठ तुमने काहे कूं आदर कियो है। हे सखी सरोरु हास्ये ! कमल जैसे प्रफुल्लित मुखवारी प्यारी तुम वेग ही पधारिये अपने लीला मन्दिर में प्रवेश करिये। इतनो कहेकर सो प्रिय सार्वभौम श्रीजी निरन्तर बहे भये उत्साह के वश कूं प्राप्त होते भये हैं तासूं वा चन्द्रवदना प्यारी कूं भुजान सूं गाढ़ आलिंगन करके धारण करत घर के भीतर पधारवे कूं निरन्तर ही यत्न करत भये हैं और प्रियाजी तो वा भूमि में ही बैठ जाती भई हैं और आगे तो एक चरण मात्र हू नहीं पधारती भई हैं सो नीचो कियो है मुख जाने ऐसी सो प्रियाजी तहां ही केवल शोभायमान होती भई हैं। प्राणेश्वर श्रीजी हू वा समय में श्री प्रियाजी के उदय होय रहे हजारन करोड़न सुधा के समुद्र जासूं ऐसे वा शोभा के समूह कूं देख के अणुमात्र हू तृप्ती कूं नहीं प्राप्त होते भये हैं। तब भीतर प्रसन्न भये थके हू बाहिर तो अत्यन्त क्रोधवारे जैसे होय तैसे भये थके सो प्रेम विशेष सूं मिले भये प्रिय श्रीजी सहित विलास के वा प्रियाजी सूं अपने श्री मुख कूं कछु पीछे करत भये हैं तब प्रियाजी तो यह विचार करत भई है के श्रीजी ने दृष्टि सों अब प्रिया कूं देख लियो है। यह मानके मेरे में अत्यन्त उत्साह वारे नहीं है तासूं ही पीछे भई है। ऐसे हृदय में विचार के अपने प्रभु श्रीजी के तैसे श्री अंग में सो हरिण नयनी अपनी दृष्टि को व्यापार करत भई है के वा श्रीजी कूं देखती भई है। तब प्रिय श्रीजी जा देखवे के अर्थ क्रोध को इहाँ अभिनय करत भये हैं सो प्रियाजी में वा देखवे कूं देखके बढ़ रहे अत्यन्त हर्ष के सागरन को समूह जामें और उदय होय रह्यो है आनंददायक उत्साह को समूह जामें ऐसे सो श्रीजी फेर पीछे होयके श्री स्वामिनीजी की और होयके पधारे भये ही वा प्रियाजी कूं श्री हस्तकमल में दृढ़ ही ग्रहण करते भये हैं तब लज्जा के भार सूं नीचे होय रहे अपने मुखचन्द्र कूं सो प्रियाजी अपने घोटुन के अग्र में धारण करती भई हैं और दोनों नेत्रन कूं हू निमीलन कर लेती भई हैं तब श्रीजी हू प्रियाजी के निकट ही विराजमान होय के ही तब याके चिंबुक में दो अंगुली कूं धारण करिके वा प्रियाजी के श्रीमुख कूं प्रकर्ष सूं ऊंचो करत भये है और कछू कहेत हू भये है के हे अंग तुम तो स्वतन्त्र ही होय रहे हो या भूमि में आपकी ऐसी स्थिति शोभा कूं नहीं प्राप्त होय है यह लीला के अर्थ आस्तरण बिछे हैं और यह रस को आलय रूप सुन्दरपर्यक है सो

हे तन्वि बिन सगरेन कूं तिहारो स्वरूप वृथा ही कर रह्यो है अलंकृत नहीं करे है तिस रसिक श्रीजी की या प्रकार की वाणी कूं सुनकर सो प्रियाजी अपने श्रीमुख कूं फेर हू नीचे कर लेती भई है तब प्रियजी तो फेर ही वा श्रीमुख कूं तैसो ऊँचो करत भये है और तैसे ही वचनामृत के समुद्रन कूं हू कहे है या प्रकार प्रियाजी तो श्रीमुख कूं बारंबार छिपावे है और श्रीजी तो वाकूं ऊंचो करि रहे हैं । तब प्रियाजी की जो दृष्टि हती सो अत्यंत उत्साह वारे श्रीजी के नयनन सूं कछुक मिलाप कूं करत भई हैं और श्रीमुख हू कछु हंसत भयो है तब श्रीजी हू हसत भये हैं और उठके ठाडे होते भये हैं । तब भुजान सूं मृगनयनी कूं ऊंचो करिके सहित विलास के गाढ़ आलिंगन करके सहित विलास के वा प्रियाजी कूं रोक के बड़े यत्न सूं वाकूं लीला शयन में के रमण पर्यंक में प्राप्त करत भये हैं तब प्रभु श्रीजी याकूं बड़े यत्न सूं वा पर्यंक के ऊपर चढ़ायके और याके निकट स्वयं हू पधारके अपने श्री हस्त सूं बीड़ा कूं संवार के सहित विलास के प्रियाजी कूं अरुगायवे के अर्थ यत्न कूं करत भये हैं । तब अनेक प्रकार के धैर्य और प्रणाम और विन विन चाटुकारन सूं सो रस सागर श्रीजी बड़े यत्न सूं ही वा बीड़ी कूं प्रियाजी को अंगीकार करावत भये हैं और सहित विलास के चंचल जाके नयन कमल हैं ऐसे सो श्रीजी हजारन लाखन सुधा के समुद्र जिनसूं गिरि रहे हैं ऐसे अपने अत्यंत मधुर वचनन सूं चन्द्र और कमल सूं मनोहर श्रीमुख वारी वा प्रियाजी कूं कछुक बुलवावते हू भये हैं और सो प्रियाजी वा प्रियजी के चरणन में बारंबार प्रणाम करके और आगे सुन्दर अंजुली कूं हू बांध के दोनों भ्रूवों के विलासन सूं और दृष्टि के हू मधुर विलासन सूं और अमृत के सिंधुन कूं हू विजै करिवे वारे विन चाटुकारन सूं बड़े यत्न सूं वा प्रियाजी कूं बारंबार जतायकें प्रथम ही प्रेम के भार सूं तैसे मनोहर ही सजाय के धारण किये जे वस्त्र आभरणादि हे विनकूं प्रियाजी के अंगन में धारण करावते भये हैं सो विनमें वा मृगनयनी प्रियाजी के नितंब बिंब सूं चन्डातक और अमूल्य अंशुक कूं धारण करावत भये हैं और मनोहर वत्स सूं के उरस्थल सूं सुन्दर मुक्तामणि हीरा के हार वारी चोली कूं धारण करावत भये हैं और श्री मस्तक में मनोहर सुवर्णमय शोभायमान दीप्त वारो सीसफूल और धर्मिल के सुन्दर भूषण कूं धारण करावत भये हैं और उज्जवल कंठ शोभा सूं वा कंठ के सगरे आभरणन कूं और कानन में सुन्दर दो कुण्डलन कूं और

भुजान में दो केयुरन कूं और कुचन सूं शोभायमान मुक्ताहार कूं और दोनों हाथ सूं वलय कंकणादिकन कूं और अंगुलीन सूं रत्न खचित अंगुलियक मुद्रिका कूं और रस का श्रंगु रूप प्रधान स्थल कामोद्वेग को कारण रूप जो मध्य है कटी है वा कटी सूं काची दाम कूं और दोनों चरणन सूं दोनों मंजीरन कूं और शेष अंगन सूं शेष आभरणन कूं धारण करावत भये हैं या प्रकार यशवर्द्धन रस के समुद्रन कूं वर्षा करिवे वारी है नयन कमल की शोभा जाकी ऐसे सो श्रीजी वा प्रियाजी के सगरे अंगन में सगरे आभरणन कूं सहित विलास के धारण करावत भये हैं ।।

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरा गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले त्रेतालीसमो तरंग समाप्तम् ।।४३।।

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४४ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चवालीसमो तरंग लिख्यते ।।४४।।

श्लोक -- **प्रियोथलज्जामय श्रृंखला सनिरोधिनीकेलि रस प्रवेशे नाना विधाभिः खलुयुक्ती भिस्तां कथंचिदस्याः शलथतांमनैषीत् ।।१।।**

याको अर्थ -- अब प्रिय श्रीजी हे सो केलि रस प्रवेश में वाधा करिवे वारी जो या प्रियाजी की लज्जामय श्रृंखला है वाकूं नाना विधि युकतीन सूं शिथिल कर देते भये हैं । तब सो सर्व रस के आश्रय और मंगलमय शोभावारे जे श्रीजी हैं सो करोड़न मंगलमय स्वरूप सूं अनिरवचनीय रूप रसात्मक क्रीड़ा के अर्थ तैसी अनिरवचनीय रूप रसात्मक रात्रि कूं हू प्रकाश करते भये हैं के प्रगट करते भये हैं सो पर्यंक में जा दिशा कूं आलिंगन करिके प्रिय श्रीजी स्थित हैं वा दिशा के संग असुया वारी महाप्यारी जी वा दिशा कूं थोरी सी हू नहीं देखती भई है ।। और लज्जा रूप नदी में जो मग्नता है के मग्न होवनो है तामें योग्य जो मस्तक सूं नत है हाथन कूं बांधि के मस्तक सूं प्रणाम है वाकूं

अत्यन्त धारण करत सो चित्र युवती की शोभावारी यह श्री स्वामिनीजी अत्यंत शोभायमान होती भई है सो प्रियाजी हू प्रिय श्रीजी के अर्थ तब अत्यन्त लज्जा कूं प्राप्त होती भई हैं और श्रीजी तो लज्जा कूं न प्राप्त होते भये हैं और तासूं सो लज्जा या श्री स्वामिनी जी के हृदय में वा रस के आधिक्य कूं हू पुष्ट करत भई हैं । सो श्री स्वामिनीजी स्वयं हू करिवे की इच्छा करत भये हैं । यदि वा श्रीजी ने हू वाके अर्थ स्वामिनीजी अर्थ न कियो है तब तो वा श्री स्वामिनीजी ने सो तैसे करिवे कूं अपनो उद्यम हू निवर्त करि दीयो है वा श्री स्वामिनीजी के हारन के सौंदर्य के दर्शन में कौतूहल वारे भये थके श्रीजी वा प्रियाजी के कुचन के निकट प्राप्त होय रहे श्री हस्त सूं वा कंठ कूं स्पर्श करत भये हैं और वा प्रियाजी के उर देश कुच आवर्ण कर रह्यो जो अंशुक है वामें दृष्टि कूं धारण करिके विस्मय कूं प्राप्त होय गये हैं और श्री स्वामिनीजी तो मेरो उर कहा निरावरण है यह मान के वेग ही अंचल सूं वाकूं आच्छादित करती भई है और जासूं भुजान सूं जो श्रीजी कूं दूर करके प्रिय के अरपण किये हस्त कुच हू धारण करत भयो है तासूं सो प्रियाजी अपने पार्श्व में प्राप्त श्रीजी कूं त्याग के अपने हृदय में प्राप्त वा श्रीजी के हस्त कूं आलिंगन करत भई है और हे प्रिये जासूं रमण की इच्छावारे मोकूं तो निशेष नहीं करत हो तासूं निश्चय सूं तिहारी हू या रमण में इच्छा है ऐसे कही भयी सो परम विदग्धा मृगनयनी श्री स्वामिनीजी अपने दुर्ल्लभ वचनामृत कूं पान करिवे की इच्छा वारे प्रिय श्रीजी कूं कंपायमान कियो शिर सूं हू अत्यंत निषेध कूं करत भई है सो आपस में प्रेम की समृद्धी वारे जे नवीन योवन वारे दोनों प्रिया प्रिय हैं विनकी कछु अनिरवचनीय नवीन ही रीति है । जासूं जो श्रीजी को कर्त्तव्य होतो भयो है सोई या प्रियाजी कूं निषेध योग्य होतो भयो है के जो कपोल आदि स्पर्श रूप कृत्य श्रीजी कर्यो चाहे हैं वाकूं हू सो श्री स्वामिनीजी निषेध ही कर्यो चाहे हैं और सो श्रीजी बड़े यत्न सूं हू प्रियाजी के कपोलन पर श्रीहस्त कूं धारण करिकें वा परम सुंदरी प्रियाजी के श्रीमुख कूं ऊंचो करिकें हू चुंबन नहीं करत भये हे जासूं श्रीजी के जे नयन हते वो तो वा प्रियाजी के कपोलन के सौंदर्य में ही मग्न होय जाते भये हैं । तासूं श्रीजी हू चित्र लिखे जैसे ही चिरपर्यंत तैसे ही विराजमान होते भये हैं और सो प्रिय प्रभु श्रीजी वा प्रियाजी के बाहिर के तंतु वस्त्रन कूं तो बल सूं दूर करिवे में समर्थ होते भये हैं परन्तु भीतर

कूं लज्जामय जो वस्त्र हुतो वाकूं तो दूर करवे में समर्थ नहीं होते भये हैं और सहित वाम भाव और कौतुक तैसे स्वेद पसीना और कंप तैसे पीडन और भय तैसे हर्ष के और अभिलाखा और महानंद के सहित सो प्रियाजी वा श्रीजी सूं रमण कूं प्राप्त होती भई हैं तब रमण में वा प्रियाजी ने भ्रू कुटिल किये हैं विनकूं सो श्रीजी कामदेव के धनुष के नयन टेडे होवे कूं मानते भये हैं और रमण में मणित हैं के रसात्मा कष्ट कूं जन रूप अव्यक्त शब्द हैं वाकूं काम के बाणन की ध्वनि रूप जानते भये हैं। तब श्रीजी के दंतन सूं पीड़ा कूं प्राप्त होय रह्यो है अधर जाको ऐसी जो प्रियाजी हैं रसात्मक पीड़ा सूं हाथ के कंपावने कूं करत ही सो प्रियाजी श्रीजी कूं नृत्य करवे अर्थ रस कूं शिक्षा करत भई है रस के कांचनमय जय के दौ स्तंभ जैसे होंय ऐसे जे वा प्रियाजी के दोनों उरस्थल हैं सो श्रीजी के नख के चिह्नन सूं अत्यंत ही शोभायमान होते भये हैं। रमण में स्वेद के पसीना के बूंदन सूं मिल्यो जो अपनो वक्षस्थल है वाकूं देख रही सो श्री प्रियाजी रमण में टूटे जे मुक्ताहार हैं विनकूं चिरपर्यंत हू न विचार करत भई हैं। जासूं मुक्ताहार जैसे स्वेद बिंदु ही प्रसीत होय रहे हैं और रती श्रम संबंधी जल सूं पूर्ण होय रह्यो जो प्रियाजी को वक्षस्थल है वामें वा रमण समय में प्रतिबिम्ब होय रह्यो जो मुक्ताहार हतो सो वाकूं शोभायमान करत भयो है सो प्रिय के हार के प्रतिबिम्ब सूं अपने टूटे भये हारन कूं प्रिया विचारना करती भई हैं सो चरणन के तल सूं हूं लुप्त करी है कामदेव की शोभा जानें ऐसे या प्रियाजी के वक्षस्थल कूं देखवे वारे श्रीजी सूं अपार रस सागर में क्रीड़ा करत सो श्री स्वामिनीजी अत्यन्त प्रिय हर्ष कूं प्राप्त होती भई है तब रती सूं श्रमित भई थकी सो श्री स्वामिनीजी कछु मिलित होय रही हैं चंचल तारा जाके ऐसे नयनन कूं क्षण एक आलस भरे ही धारण करत दिखावत श्रीजी के अत्यन्त हर्ष कूं सिद्ध करत भई हैं।

तब यह रसिक शिरोमणि श्रीजी मनमें स्थित भये प्रिय विषयक भाव कूं जैसे होय तैसे ही पंखा में स्थिर होयके स्थित जो पवन है वाकूं या प्रियाजी के रती श्रम कूं निवारण करिवे कूं प्रकट करत भये हैं और स्वेद की बूंदन सूं शोभायमान जो नासा को अग्र भाग है ताकर शोभायमान और बारंबार पान करिवे सूं पोंछो है अधर संबंधी तांबूल कूं राग जाकूं और ऐसो जो वा प्रियाजी कूं रति संबंधी शोभावारो मुख है वा प्रिय श्रीजी कूं अत्यंत सुखी करत भयो

है । आधो मिट गयो है तिलक जाको और अत्यंत लज्जा कूं प्राप्त होय रह्यो है और थोड़ो सो उत्साह वारो है और अत्यंत श्रांत है जासूं लज्जा वारो है तासूं थोरो सो आनंदित प्रसन्न होय रह्यो है और स्वेद के जल सूं पूर्ण है और रोम कूंप के समूह वारो है ऐसे वा प्रियाजी के श्रीमुख कूं जैसे जैसे प्राणपति श्रीजी की दृष्टि ऊंची होय के पान करत भई है तैसे तैसे सो दृष्टि तृष्णा के अंत कूं प्राप्त न होती भई है यह महा अद्‌भुत है आश्चर्य है और जब वा प्रियाजी ने अपने खुले भये केसन के बांधवे में दोनों हाथ व्यग्र किये हैं तब वा प्रियाजी कूं जो भुज मूल प्रगट भयो है तासूं हू सो श्रीजी हर्ष के समूहन में निमग्न होय जाते भये हैं हरिणनयनी श्री स्वामिनीजी जा रूप सुवर्ण पात्र में सो श्रीजी तिस तिस विविध रस कूं भोग करत भये हैं तब भोग के पीछे परोसवे योग्य अत्यंत तृप्त करिवेवारे अत्यन्त योग्य अधर रूप अमृत कूं मुख चन्द्र रूप सुवर्णमय पात्रिका सूं या श्रीजी के पान अर्थ कामदेव प्राप्त करत भयो है तब श्रीजी जाको पान करि रहे हैं । ऐसे वा श्री प्रियाजी के अधर में हू हानि न होती भई है और वा प्रिय श्रीजी कूं हू तृप्ति न होती भई है सो यह महा आश्चर्य है । तासूं यह कामदेव की नवीन ही रचना है । महा भाग्यवान के गुण हू जिनके चरणकमल संबंधी रेणुं कूं प्रणाम करे हैं । ऐसे जे वा प्रिया प्रिय के सखी गण हते जे प्रेम की व्याधी, ताप वारे हैं और सगरी रात्रि भर ही सो अनिरवचनीय महा भाग्यवान जो मणी खचित लीला मन्दिर है वामें जे छिप के स्थित है गवाखा व झरोखा है विनमें मुख जिनों ने धारण कियो है और रत्नखचित जे कपाट हैं विनके छिद्रों में जिनोंने नयन धारण किये हैं, ऐसे विन सखी गणन ने प्राणनाथ श्रीजी कूं जो तैसी रसात्मक प्रियाजी सूं मिश्रित होय रह्यो सो महा रसमय महा लीलामय स्वरूप है सो दर्शन कियो है और वचन कूंजनादि हू सुने हैं और विनकूं आपस मय हू विचार्यो है और कह्यो है और विन परम कृपापात्र अंतरंग सखीगणन की परम्परा सूं जे भक्ति वारे अत्यंत योग्य परम भाग्यवारे और स्त्री पुरुष हैं जे प्राणप्रिया को प्रथम समागम जानके दरसन करिवे कूं वहां आये हैं सो चारों ओर सूं निश्चय होयके जे स्थित है सो विन कृपा पात्रन ने हू करोड़न कामदेव के हू सौंदर्य कूं तिरस्कार करिवे वारी है चरण कमल संबंधी रेणुं की कणिका हू जिनकी, और शोभा रस सर्वस्व के सार के हू सार को जो महासागर है और मुक्ता रत्न के समूह

सूं खचित सुवर्णमय है अंचल जाके ऐसी जो दक्षिण भाग्य में ढरक रही कसूंभी रंग की श्रेष्ठ पाग है वाकूं जो धारण करि रह्यो है और रत्न खचित कूंडलन सूं शोभायमान चंचल और लाल हैं नेत्र जाके और अत्यंत अद्‌भुत कटाक्षमय समुद्रन कूं जो वर्षा करि रह्यो है और रसवारी जे तरुणी नव योवनवारी स्त्री हैं विनके हू समूह के मन के हरण में जो अत्यन्त पीड़ित हैं और चतुर हैं और मिट रह्यो है तिलक जाको और कपोलन में लगि रही है तांबूल की रेखा जाके और भौंरा की पंक्ति जैसे मनोहर शोभायमान होय रहे हैं, घुंघरारी अलकन के समूह जाके और काम के धनुष की शोभा कूं हरिवे वारे जे भ्रू युग्म हैं विनसूं जो अत्यन्त शोभायमान हैं और सुगंधी निश्वास जासूं चलि रह्यो है ऐसे जे नाशावंस हैं विनसूं जो शोभायमान हैं और वधुक के पुष्पन के समूह कूं हू जय करिवे वारे हैं अधर जाके और सुधा के हू विष भाव कूं प्रगट करिवे वारो है अत्यंत मधुर मन्द हास्य जाको और तुलसी मणी माला और गुंजा माला और मुक्ता माला सूं जो शोभायमान है और पुष्ट तैसे विस्तार वारे हृदय स्थल सूं और अत्यंत शोभायमान घोंटू पर्यंत लम्बे भुज दंडन सूं शोभायमान है और जो अत्यंत प्रिय है और विशेष सूं कहे नहीं जाय है समूह जाके और क्षण क्षण में हैं नवीन शोभा जाकी और नयन कूं परम आसेचनक रूप है कहा कि जा दर्शन में तृप्ती को अंत न होये ऐसो आसेचनक रूप है ऐसो जो श्रीजी है सो विन भक्तन ने अनुभव कियो है सो प्रणाम करिवे कूं हू ब्रह्मादिकन कूं हू दुर्ल्लभ जो विन भक्तन के चरणकमल संबंधी रज के लेश कणिका की शोभा है वाकूं हों तो सदैव ही प्रणाम करूं हूं सो या प्रकार के अनिरवचनीय प्रमोद रूप होलिका विहार में सो प्राणपति श्रीजी हर्ष के उज्ज्वल सार परम रस कूं प्राप्त होय रहे अनिरवचनीय सुवर्ण जैसे मनोहर श्रृंगार के यंत्र सूं कामोद्धेक के स्थाई भाव रूप यंत्र सूं जो श्री स्वामिनीजी के अनिरवचनीय कहू रस स्थल में निरन्तर सिंचन करत भये हैं वा सुमुखी प्राणप्रिय की प्राणप्रिया कूं हो शरीर और मन और वाणी सूं निरन्तर ही प्रणाम करूं हूं सो प्रथम समागम रमण सूं हू दूसरे दिन में जा प्रियाजी कूं अत्यन्त शोभायमान विलक्षण ही होतो भयो है सो श्रीजी कूं अत्यन्त ही मुदित करतो भयो है या प्रकार प्रथम समागम की जो प्रिया जी की क्रीड़ा है मैंने कछु सूंचना करी है सो प्रिय की और दिनन की जो क्रीड़ा है सो अत्यंत जे कृपापात्र हैं सो वे कृपा के बल सूं स्वयं हू

जान लेवे सो परम कोमल श्री स्वामिनीजी वा रसिकराय सूं परिहास्यमय वचनन सूं अत्यंत प्रसन्न करी भई हू केवल आश्चर्य कूं प्राप्त होती भई हैं न के सो प्रियाजी हसती हू भई हैं या कमलनयनी प्रियाजी की वा रस लीला सूं करोड़न अमृत के समुद्रन के समूह हू जाके ऊपर न्योछावर होंय सो कोई एक ऐसी अनिरवचनीय दशा प्रगट होती भई है जामें सो प्रियाजी कितनेक तिस तिस अंगन कूं तो लज्जा सूं प्रिय के आगे आच्छादित करती भई है और कितनेक कूं तो प्रेम सूं प्रगट करत भई है सो कामदेव है सो या प्रियाजी की दृष्टि कूं प्रिय श्रीजी के देखवे विना बैठवे नहीं देतो भयो है और लज्जा है सो तो या प्रिय के दिशा के कोणन कूं हू देखवे नहीं देती भई है। तब इन्दीवर श्याम कमलनयनी प्रियाजी की जे वे पक्ष में हती जो लज्जित भई थकी बारंबार ही संकोच कूं प्राप्त होय जाती भई है। तब श्रीजी चुंबन कियो हू मुख को जो या प्रियाजी ने खेंचो नहीं है और वा श्रीजी ने कंठ में जोड़ी जो अपनी भुजा है वाकूं हू जा प्रिया जी ने दूर नहीं कियो है। सो तासूं वा श्रीजी के हृदय में अमृत कूं हू वर्षा करत भई है। जब सों प्रियाजी दोनों भुजान सूं स्तनन कूं आच्छादन कर लेती भई हैं तासूं यह प्रिय श्रीजी भुजान सूं आच्छादित केवल हृदय के वस्त्र अंगिया ऊपर हू हाथ देवे कूं प्राप्त होते भये हैं तब परम चतुर श्रीजी वा वस्त्र के ऊपर सूं हू दोनों कुचन कूं निवड ही रोकते भये हैं प्रथम ही नीवी के प्रति प्राप्त भये या श्रीजी के हाथ कूं सो कमलनयनी केवल न...न ऐसे करत ही सिथल होय रहे अपने हाथ सूं विघ्न कूं करत भई है और उदय होय रहे पुलकन की मिष सूं विन दोनों प्रिया प्रिय के स्वरूपन कूं मिल्यो भयो करिके मिले भये विनके भेद कूं छिपावत ही सो कामदेव पसीना के जलन सूं भेद कूं आच्छादन कर देतो भयो है।

कितनेक दिनन के पीछे आई जे स्वच्छन्द लीला रस की रात्रि है विनमें अत्यन्त मधुर सो हू मुहूर्त-राज प्रगट होतो भयो है के जामें मंद मुसक्यान सूं सुन्दर मुखवारे यह श्रीजी अपनी प्रियाजी कूं उदय होय रहे बड़े उत्साह आनंद के साथ तैसे अपने कंचुकन कूं प्रियाजी कूं पहेरावते भये हैं और तैसे तैसे सगरे अंगन में सजे वा कंचुक कूं दे के प्राणपति सों श्रीजी निरन्तर प्रकंप रोम हर्ष और जल सूं शोभित भये थके सुन्दर मानते भये हैं। अत्यन्त आनन्दित होते भये हैं और तैसी कामनावारी सो प्यारीजी हू वा प्रिय कूं तैसे अपनी अंगिया

आदि कूं पहिरावती भई है तब श्रीजी हू या प्रियाजी के बड़े प्रसाद कूं मानत ही आप वाके निरन्तर ही वा प्रियाजी के वशीभूत होय जाते भये हैं। तब बीड़ी आरोगीये ऐसे प्रिय श्रीजी सूं कहती भई सो प्रियाजी या श्रीजी कूं बीड़ी कूं आरोगावती भई हैं। मेरे कूं मत अरुगाइए आप ही आरोगिये ऐसे कहत भई हू सो उज्ज्वल शोभा वारी प्रियाजी स्वयं तहाँ तैसे ही विराजमान होती भई हैं और अत्यंत उज्ज्वल शोभा वारी अत्यन्त मधुर हू वे रात्रि प्राप्त होय जाती भई हैं जिन रात्रि में स्वयं प्रियाजी ने दियो है रतिरस रूप रमण संबंधी चिह्नन सूं प्रकर्ष जाकूं ऐसे हू वा प्रिय श्रीजी प्रातःकाल दरसन करिके उत्साह सूं अपने दिये रसदान कूं विस्मरण करके सहित रस अभिप्राय के खंडिता रस के अनुभव लिये उपालंभ से वचनन को कहेत भई है के हे प्रिय रात्रि तुमने कहां सुख सूं गुजारी है और प्रभात समय इहां कैसे पधारो हो ऐसे कहत भई हैं और हों तो वा रात्रि कूं हू मन में प्रणाम करूं हू के जा रात्रि में सो कृशोदरी प्रियाजी के संग ही रमण करत हैं और जब प्रियजी कछु कार्यार्थ कहू और ठोर पधारे हैं तब प्रातकाल इहाँ पधारे श्रीजी को दर्शन करिके प्रियाजी कहेत भई हैं के सगरी रात्रि भर जो मोकूं आपने रमण कर्‌यो है तासूं हों तो सदैव ही आपकी दासी ही भई हूं इत्यादि अनंत ही या प्रकार के रस कूं जतायवे वारे रस प्रसंग श्रीजी के कृपापात्रन कूं स्वतः ही स्फुर्त होयगी हों तो आपको दास हूं मोकूं तो विन सगरी रस वार्तान के लिखवे में शक्ति नहीं है और जो तो कछुक लिख्यो है सो तो रस सागर रस लीलाशील श्रीजी को ही बल है सो पूर्ण परमेश्वर भगवान सर्वोपर विराजमान श्री गोकुल प्राणनाथ की यह लीला जिन सर्वोपर विराजमान महा भाग्यवान जीवन के कान में प्राप्त होयगी सो विनमें अमृत कूं वर्षा करेगी। और चिरकाल हृदय में निवास करेगी और विवाह लीला के विचार सूं हू अधिक रसानन्द सूं पुष्ट महामधुर फल कूं फलेगी फलदान करेगी। तासूं यह रस प्रसंग पवित्र करिवे वारो है के भाव कूं शुद्ध करिके जीव कूं प्रभुन के योग्य करिवे वारो है और धन्य है प्रभु हू याके आधीन हैं और मंगलमय हैं सगरे अलौकिक मनोरथन के देवे वारो है। तासूं यह रस प्रसंग निरन्तर ही पाठ करिवे योग्य है और सुनिवे योग्य है और निरन्तर विचारवे योग्य है और वन्दनीय हैं ॥५८॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरा गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले चतुश्वत्वारीशमो तरंग समाप्तम् ॥४४॥ श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ४५ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पेंतालीसमो तरंग लिख्यते ।।४५।।

श्लोक -- **प्रियलीला सुधायामे कलशो रसनामयो भृतो स्त्यारातृ-तृषितोपि केन विरहाच्छोतुः पात्रस्यवत पिषेयंता ।।१।।**

याको अर्थ -- भट्टजी कहे हैं के प्रिये जे श्रीजी हैं वाकी लीला रूप सुधा कूं मेरो रसनामय कलश निरन्तर पूर्ण भर्यो थको है । सो हों तो तृषित ही हूँ तथापि श्रोता रूप पात्र के विना कौन पात्र सूं वा सुधा कूं हों पात्र करूं सो बड़ो खेद है ।।१।।

कोई एक समय में श्री गोस्वामीजी तो द्वारिका के प्रति पधारे हे तब प्रसिद्ध जो म्लेच्छ सार्वभौम महाबली अकबर है वाको कृपापात्र राजा टोडरमल और राजा बीरबल तैसे और हू राजा और विविध साधारण जन हू वे सगरे केवल जन्माष्टमी के उत्सव में प्रभुन के दरशन करिवे कूं मथुराजी में आवते भये हैं । विनमें दुर्ज्जनन के सहित सो मूढ़ बीरबल तो तांबूल कूं खावत ही राजा टोडरमल के निकट आवतो भयो है । तब राजा टोडरमल वाकूं देखके कहतो भयो है के आज तो जन्माष्टमी को दिन है सो तुम कैसे तांबूल खाय रहे हो ? जासूं तुम तो श्री गोस्वामीजी के सेवक हो और श्री गोस्वामीजी के सेवकन कूं तो जन्माष्टमी सप्तमी विद्ध (भेदी) होय सो व्रत में ग्राह्य नहीं मानी है और जो सप्तमी विध्धा न होय सोई ही व्रत में ग्राह्य मानी है ऐसो कह्यो भयो सो दुर्मती कहेवे लग्यो के मोकूं तो पंडितन ने प्रथम दिन में ही कही हती, आज तो वाकी पारणां कूं वे पंडित कहते भये हैं के बुद्धिमानन के मुकटमणी सो राजा टोडरमल तो वाकूं गुप्त क्रोध सहित ही कहवे लाग्यो के श्रीमद् वल्लभजी महाप्रभुजी के पुत्र और श्रीमद् गोकुल सर्वस्व श्री गोकुलनाथजी के पिता श्री गोस्वामीजी जिनके तो महा पंडितन के मुकटमणि हू जाके चरणकमल संबंधी नख के निरांजन कूं करे है सो वे ऐसे नहीं हैं का ?

अपितु वे तो महा पंडितन के मुकटमणीन सूं हू पुंजित श्रीचरण नख वारो

है और जिनके वचनन सूं सगरे ही जगत में दूसरी जन्माष्टमी प्रसर रही है। अपने हस्तकमलन सूं जा श्री गोस्वामीजी के पादत्राणन कूं धारण करिवे हजारन पंडितजन हू जा श्रीजी गोस्वामीजी की उपासना करि रहे हैं ऐसे वे श्री गोस्वामीजी शास्त्रन कूं नहीं जाने हैं और विनसूं कोई और ही शास्त्रन को ज्ञाता सगरे जगत में पंड़ित भयो है सो हमकूं तो संसय नहीं है तथापि, तुम सदृश कितनेक कूं संशय होय तो सगरे पंड़ित श्री गोस्वामीजी के मंदिर में आयके फेर निर्णय करिके यह अष्टमी व्रत में पूर्वाग्राह्य है के पराग्राह्य है। तब बीरबल कहतो भयो है के जाके कहवे सूं मैंने पूर्वा करी है सो तो सन्यासी प्रबोध सरस्वती है और बाकी संमती वारे बुद्धिमान हू हैं वे तो श्री गोस्वामीजी के मन्दिर में नहीं आवेंगे। तब क्रोध सहित टोडरमल कहवे लग्यो के यदि वे श्री गोस्वामीजी के घर में नहीं आवें तो विनके घर में श्री गोस्वामीजी अथवा विनके सेवक कबहू जायगो ? अपितु कोई नहीं जायेगो। तासूं ब्राह्मण कमलाकर भट्ट के घर में पंड़ितन की सभा भई चहिये। तब वाके घर में पंड़ितन सूं शोभायमान सभा होती भई है सो तहाँ सगरे पंडित ही राजा की आज्ञा सूं आते भये हैं। तब राज सम्बन्धी विद्वान राज के कहिवे सूं कृपा सागर श्री गोकुलनाथ श्रीजी के आगे विज्ञापना करत भयो है के कमलाकर भट्ट के घर में पंडितन की जो सभा भई है सो महाराज आप त्रैलोकामणि अपने स्वरूप सूं एक क्षण ही वाकूं शोभायमान करें। यह वचन सुनकर तब अक्षर अक्षर में सुधा के समुद्रन कूं वर्षा करत वा पंड़ितन कूं कहेत भये हैं के काके लिये तहाँ पधारनो है ? तब सो पंड़ित हू श्री प्रभुन के अमृत सार के सर्वस्व रूप वचनामृतन कूं कानू रूप अंजुलिन सूं पान करके प्रभून के आगे विज्ञापना करत भयो है के जन्माष्टमी के निर्णयार्थ तहाँ पधारनो है। इतनो सुनिके सो प्रभु श्रीजी तब बड़े भाई सर्व विद्या में विशारद श्री गिरधरजी कूं और सगरे शास्त्रन के वेत्ता और बड़े बड़े वादीन के मुख मर्जन में कुठार सदृश गुजराती वडनगर जाती वारे अपने सेवक दामोदरदास झा कूं तहां बुलावत भये हैं सो विनके संग सगरे आर्य समाज कूं जो संमत होय सो विचार के बड़े धैर्य वारे मर्यादा के निधि ईश्वर श्रीजी बिन बड़े भाई और दामोदर झा के सहित ही तहाँ पधारते भये हैं। सो ईश्वरन के हू ईश्वर श्री गोकुलपती हू श्रीजी कूं तहाँ पधार्‌यो दर्शन करिके सगरे राजा और पंड़ित दंडवत प्रणामन कूं करत भये हैं। तब

बड़े ऊंचे सिंहासन पे विराजमान भये थके श्री महाप्रभुजी विन अपने सेवकन के संग ऐसे शोभायमान होते भये हैं के नक्षत्रन के सहित चन्द्रमा जैसे होये। तब सगरे राजा और पंड़ित हाथन कूं बांध के आपके आगे जन्माष्टमी के विषय में जे अपुनो संशय हतो वाकूं विज्ञापना करत भये हैं। सो इतने ही प्रसंग में अत्यंत चंचल बुद्धि दुर्मति सोम बोध सरस्वती सन्यासी श्री महाप्रभून के आगे आयके सेवक दामोदर दास जाके प्रति कहतो भयो है के तुम जो पूर्वा जन्माष्टमी कूं त्याग के दूसरी करो हो सो तुमकूं माधवाचार्य को मत प्रमाण है कै नहीं है ? यदि प्रमाण है तो पूर्वा जन्माष्टमी काहे कूं नहीं करो हो ? यदि प्रमाण नहीं है तो तुमारो यह मत जगत सूं विरुद्ध भयो। इतनी सुनत ही दामोदरदास झा कहेते भये हैं के जो माधवाचार्य को मत है सो सगरो ही प्रमाण है अथवा प्रमाण है ऐसो कहेनो नहीं बने है। सो वाको मत विचारवे में जितनो पुराणन के वचनन सूं स्थिर होय युक्त होय वितनो ही प्रमाण है और अन्यथा अप्रमाण है। यदि ऐसे नहीं है तो वाने कह्यो के मातुल को कन्या को व्याह कर्यो चाहिये सो यह प्रमाण तुम मानो हो के नहीं ? यदि तुम मानो तो तुम तैसे काहे कूं नहीं करो हो ऐसे सुनत ही सो प्रबोध सरस्वती तो निरउत्तर होय जातो भयो है। तब सगरे पंड़ितन कूं और दामोदरदास कूं विचार प्रवृत्त होतो भयो है जा विचार में प्रभुन के जो दास दामोदरदास झा हैं सो श्री गोकुलपति प्रभुन के अभिप्राय कूं अनुसरण करिके जन्माष्टमी-**पूर्वावीक्ष्या सरुक्ष स कलामपि विहायनवमी श्रुद्धामु पोब्याव्रत माचरेत् ॥** याको अर्थ -- पूर्वविद्धा जन्माष्टमी यदि नक्षत्र सहित हू होय और यदि सगरी हू होय के क्षय तिथि हू होये तथापि जासूं पूर्व विद्धा है तासूं वाकूं त्याग के शुद्ध नवमी कूं ही निराहार करिके व्रत कूं करे। ऐसे इत्यादि पुराणन सूं के वचनन कूं सगरे इन पंडितन कूं सुनाय के पूर्वा अष्टमी कूं निरास करिके परा अष्टमी कूं ही स्थापित करावतो भयो है और प्रमाण रूप मुहरन सूं के समूहन सूं वा बीरबल के और सगरे वादीन के मुख भंजन कूं करत भयो है।

अब बीरबल कूं पूर्व वृत्तांत कहैं हैं। गढ़ा नगरी में जो साधारण भिक्षुक ब्रह्मदास नाम वारो हतो सो गृहस्थन के घर में जायके तहाँ तहाँ विश्नु पदन को गान करिके अपने उदर पूरण कूं करत तहाँ रहेतो भयो है। कोई एक समय अत्यन्त कृपालु श्री गोस्वामीजी प्रसन्न होयके वाकूं तूल जैसे परम कोमल

अपने ही श्रीअंग के स्पर्श वारे दिव्य कंचुक कूं देते भये हैं वा कंचुक कूं सो पहेरिके बड़ी प्रतिष्ठा कूं प्राप्त होतो भयो है और भारी कविता में हू शक्ति कूं प्राप्त होतो भयो है सो इत-उत भ्रमत ही वा मलेच्छ सार्वभौम अकबर को कृपापात्र सुखदायक सखा होय जातो भयो है । और कविराज पदवी कूं प्राप्त होतो भयो है और वाके प्रीति सूं दिये बीरबल नाम कूं प्राप्त होतो भयो है। अहो ईश्वरन के वा प्रसाद कूं कहां तक हम स्तुति करें, आसन की भूमि कूं प्रणाम करें । ऐसे वा राज सबंध कूं प्राप्त भयो है और वा दुर्जन संग कूं अत्यन्त ही निन्दा करे है तासूं यह उद्‌यतन दूर होयवे वारे बहिरमुखता भाव कूं प्राप्त भयो है या प्रकार अपने दास विशेष दामोदरदास झा द्वारा पंडित मंडली कूं विना यत्न विजय करिके सो ईश्वर श्रीजी पंडित मंडली सूं और विन राजागणन सूं प्रणाम करे भये स्तुति करे भये और सहित आदर के पीछे पहौंचाये भये ही सहित अपने भक्तजनन के ही अपने शोभायमान मंदिर कूं पधारते भये हैं। अब कितनेक दिन गुजरे पीछे श्री विट्ठलनाथजी श्री गोस्वामीजी द्वारिका सूं अपने घर कूं पधारते भये हैं तब या संग के प्रसंग कूं और अपने प्रिय पुत्र श्री वल्लभजी की जय कूं और वा जन्माष्टमी के निर्णय प्रकार कूं सुनते भये हैं । तब सगरे लोगन के ग्रहण करायवे की इच्छा सूं वा जन्माष्टमी के निर्णय विधि कूं लिखते भये हैं । सो वा दिन सूं ही सगरे विद्वान लिखे भये श्री गोस्वामीजी के निर्णय कूं अनुसरण करके ही उत्तम व्रत कूं तैसे ही करे है । सो खर्वन अर्वन पुरुषोत्तम हू जाकी कृपा दृष्टि कूं प्रार्थना करें हैं, ऐसे प्रभुन के यह यद्यपि पराक्रम नहीं है तैसे प्रभुन ने मो सरीखे जीवन के उद्धार अर्थ यह लीला करी है । सो यह लीला तासु वर्णन योग्य है और कीर्तन योग्य है और सहित आदर के श्रवण योग्य है स्मरण योग्य है जासूं आपकी लीला है तासूं मैंने हू व्याख्यान करी है और जो प्रभु अनंत गुण वारे श्रीजी अपनी कृपा के वस सूं तीनों भुवन के पालन उत्पत्ति संहार करे हैं । सो परंपक्ष कूं निग्रह करनो यह आपकूं आश्चर्य नहीं है तथापि जासूं आप मनुष्यानुकरण दिखावे है तासूं यह वर्णन हू होय सके है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरा गोकुल विहारमय तृतीय कल्लोले पंचचत्वारिभस्तरंग समाप्तम् ॥४५॥

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री गोस्वामीजी अत्यंत व्याकुल होय जाते भये है सो संकोच सूं न कहि रहे तैसे व्याकुल श्री गोस्वामीजी कूं जानके अत्यंत दयालु महाप्रभु श्रीजी आपके ताप और श्रमकु दूर करिवे की इच्छा सूं यहां ठहेरवे में कहेते भये है के हे वत्स तुम श्रांत भये हो का तब महाप्रभु हू कहते भये है के हां होतो निरंतर श्रांत भयोहू तब सो सगरे इहां ही ठहरते भये है तब सोफ, धनीया, मुलहेठी, आमला के जीरा सूं सम भाग रचना किये सितोपला सूं मिले भये अपने चूर्णसूं श्री गोस्वामीजी कूं आरोगावते भये है । व चूर्ण के व्याज सूं आपके श्रम ताप कूं दूर कर देते भये है और अधिक धूप सूं भयी व्याकुलता कूं निवृत कर देते भये है और वा श्री गोस्वामीजी के आप श्री महाप्रभुजी स्वयं हू जो कह्यो हतो के हों अत्यंत श्रांत भयो हू तासूं वा श्रम के दूर करवे अर्थ जैसे होय तैसे स्वयं हू वा चूर्णकूं कछुक आरोगते भये है तब श्री गोस्वामीजी तो आनंद निद्राकूं प्राप्त होय जाते भये है पीछे कितनेक क्षणन के अनंतर जागे भये सो श्री गोस्वामीजी वात्सल्य सूं रसोई करवे में उद्यमवारे श्रीजी कूं देखके अत्यंत प्रसन्न होते भये है और स्वयं हू वा रसोई करिवे में प्रारंभ करते भये हैं, तब जासूं नरलीलाकूं अनुकरण करे है तासूं वेग ही रसोई सिद्ध करिकें गिरधारी जी के प्रति निवेदन करिके तब अपने सेवक भक्तन के सहित आरोग के दोनो प्रभु अत्यंत ही प्रसन्न होते भये है । फेर कोउ दिन में या यात्रा में ही शेषसाई कूं दर्शन अर्थ गमन की इच्छावारे अपने काकाजी श्री गोस्वामीजी कूं जानके और मार्ग कूं हू क्लिष्ट जानके तब पिताश्री कूं दयालु श्रीजी कहते भये है के पुराणन में जो वन यात्रा कही है वामें तो शेषसाई के स्थल में गमन नहीं कह्यो है सो या प्रकार के प्रिय पुत्र श्रीजी के वचनामृतकूं श्री गोस्वामीजी सुन करिके पूछते भये है के हे पुत्र, यह तुम भलो जानो हो, कहासूं जानो हो या वचन कूं सुनकर कृपानिधि श्रीजी कहते भये है के हां, हौं जानूं हूं तब श्री गोस्वामीजी वा क्लिष्ट मार्ग सूं निवृत होते भये है, एक दिन संकेत वट रसोयी करते भये है तब प्रभुतो भोजन करिकें उठेहे इतने में निरंतर ही वर्षा होती भई है तब सेवक वैष्णव भक्तनने जो बहुत खीर बनाऊ हती सो पानी के प्रवाह सूं सगरी ही वह जाती भई है के वृथा होय जाती भई है, फेर विनने बड़े यत्नसूं खीचरी करिकें खाई है, सो वादिन में प्रभुनने अपने भोजन में खीर अंगीकार नहीं करी हती सो यदि आपके सेवकजन खीर कूं अणुमात्र हू लेते

तो विनकूं यह लोक, परलोक दोनों ही सगरे बिगड़ जाते यासूं सो सगरे प्रिय मेघन द्वारा वा खीरकूं नाश करावते भये है यासू ही तासूं अधिक वर्षा करत विन मेघन कूं देखके जब मंद हास्य सूं कहेते भये है और आन्योर गाम के निकट निवासवारे हमकूं नहीं देखो हो का ऐसे गोवर्द्धनधर के रूप सूं आपने जो प्रथम हू इन्द्र को मान मर्दन कियो है तो और सगरे मेघनकूं निवारण कियो है तो सो या अभिप्राय कूं सूंचना करत जब श्रीजी तैसे कहते भये है तब यह मेघ हू जानके वेग ही वर्षा सूं निवर्त होयके अदृश्य होय जातो भयौ है और या व्रज यात्रा में ही अत्यंत धूप प्रकटी तब कोउ सेवक ने छत्री धूपखेडी लेकर श्री गोसांईजी के ऊपर छायाकूं करत भयो हे तब तासूं श्री गोस्वामीजी अत्यंत क्रोध करत भये है और कहते भये है के हे दुर्बुध्धे श्री गोकुलाधीश्वर है सो मेरे पुत्र रत्न हैं प्राणन सूं हू अधिक अत्यंत प्रिय है जे सगरे जगत के निस्तार कारण है और सगरे अवतारन के जे अवतारी है विनसूं हूं प्रवर है प्रगट भये करुणानिधान श्रीमान है विनमें या धूप खेडी सूं छाया नहीं करे है सो तो इतनो सुनत ही सो मेरे प्रभु श्रीजीकूं वेगही दौड़ के वा छत्र सूं अत्यंत परिचारण करतो भयो है तब सगरे प्रसन्न होते भये है सो या प्रसंगकूं प्रभुन में भक्त कान्हरदास क्षत्री श्री गोस्वामीजी के श्रीमुख सूं सुनिके श्री गोस्वामीजी के सेवकन में हर्ष सूं सुनावतो भयो है तब वे हू मन शरीर वाणी सूं वा मेरे प्रभु श्रीजी में प्रसन्न होय जाते भये है और श्री गोस्वामीजी अपने सूं वेग ही छत्र कूं दूर कराय के श्रीजी के ऊपर धारण करायो हे तासूं श्रीजी हैं सो सर्वाधिराज है यह सूंचना कियो है वाकूं हू वे श्री गोस्वामीजी के कृपापात्र जानते भये है और कलियुग ने तो सगरे वचनन को पराक्रम नष्ट कर दियो है तथापि शास्त्र प्रमाण सूं और गतानुगत भावसूं जे नर यात्रा में जायवे वंचित ही होयके विनकी यात्रा हू नहीं होये याके अर्थ करुणासागर श्रीजी अपने चरण कमलोके धारण सूं तहां तहां विन विन वनन में सर्व शक्तीवारे सुंदर श्रीजी पुराणनमें यात्रा को कह्यो जो फल है तासूं हू अत्यंत अधिक शक्तीकूं धारण कर देते भये है या प्रकार कलियुग सूं जाके प्राणनष्ट प्राय होयगये हते ऐसे द्वादस वन को व्रज यात्रा की भूमि कूं बीस दिन अपने चरण कमल के धारण सूं जीवन करायके अत्यंत प्रसन्न करके गोकुल की जे चंद्रमुखी हैं विनके नयनों में अपने रूपांमृत समुद्रन की वर्षा करत उज्जवल और सींची है गली जामे और केला के स्थंभ

आदि सूं जो शोभायमान है ऐसे अपनी गोकुल को भक्त गायन करि रहे हैं गुण जाके ऐसे श्री गोकुलपती जी प्रवेश करत भये है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरां गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले द्विपचास तरंग संपूर्णम् ॥५२॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ५३ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ त्रैपनमो तरंग लिख्यते ॥५३॥

श्लोक -- **श्री गोकुलाधीश रवि प्रकर्ष प्रचंड तेजः प्रकर प्रकाशे ये पंकजानिव व समुल्ल संतिन कैरवाणी वतएव धन्याः ॥१॥**

याको अर्थ -- श्री गोकुलाधीश रूप सूंर्य के प्रकर्षरूप प्रचंड तेज के समूह के प्रकाश में जे तो कमल है वे तो निरंतर ही प्रफुल्लित होयके सो वे धन्य है और जे कैरव जैसे है वे तो मुंदेही रहे है, प्रफुल्लित नहीं होय है कबहू गोकुल में अनावृष्टी होती भई है तासूं सगरी प्रजा दिन रात्री ही अत्यंत व्याकुल होती भई है तब विनके उद्वेगकूं देखकर सो करुणासागर श्रीजी पर्जन्य शुक्र के जपन कूं निमित्त करके ही वेगही मेघनसूं अत्यंत ही वर्षाकूं करत भये है जासू सगरी प्रजा आनंदित होय जाती भई है तब घास हू बहुत प्रगट होय जाती भई है और सगरी प्रजा आशीर्वाद करती भई है और प्रणाम समूहन कूं हू करती भई है और महावन में जो सार्वभौमकूं सज्जन अधिकारी हतो सो या प्रकार कूं सुनके प्रसन्न होयके श्रीजी के दर्शनार्थ गोकुलकूं आवतो भयो है तब श्रीजी तो श्रीनाथजी के मंदिर में विराजमान हते सोहू श्री गोस्वामीजी कूं प्रणाम करिकें नम्रतासूं विज्ञापना करत भयो है, सो आपके पुत्र रत्न कहा है के तैसी अवृष्टि में मेघनकूं वर्षा करत जा कृपा संमुद्र के सागर में भर रही सगरी प्रजा और हमहू रक्षा किये है, हे कृपासिंधो हों वाको दरशन कर्यो चाहूं हूं सो वाको दर्शन वेगही करावो या प्रकार तासूं विज्ञापना किये सो श्री गोस्वामीजी श्रीजी कूं आज्ञा करत भये है तब सो श्रीजी हू मंद मंद हसत ही

कहेत भये हैं के मेरे संग वाकूं अथवा और कूं कहा है और या वर्षा के लिये तो बात कहा है ये तो कौतुहल विशेषसूं आश्चर्य विशेष सूं कछु लीला ही है इतनो कहे कर तो हू अपने श्री काकाजी कूं वचन मानके आपने दर्शनामृतसूं चिरकाल पर्यंत सो प्रिय श्रीजी वाको सिंचन करत भये हैं ऐसे फेर हू कितने वर्षन के पीछे श्री गोकुल में अत्यंत अनावृष्टि होती भई है तामें हूं सगरी प्रजा चिरकाल पर्यंत अत्यंत व्याकुल होती भई है तब सो करूणानिधि श्रीजी तो गिरिराज के ऊपर पधारे हते तब सगरे लोकन के मुखसूं निकर्यो हाहाकार रूप सागर चारो तरफ पसर जातो भयो है तबहू श्री गोकुलेश्वर श्रीजी तहां प्रसिद्ध संकर्षण कूंड के ऊपर वा परजन्य सूंक्त कूं जप न करत सो गोवर्द्धन पर्वत पर चढ़िके अपने प्रिय श्री गोवर्द्धन धर को दर्शन करी के दोपहर को समय है धुप बहुत तीक्ष्ण है तब श्रीजी तहांसू आय रहे उतर रहे है इतने में ऐक दुरात्मा सुजातीय अभिमानी आसुरावेसी पापी अबुध नीच सों सगरे अवतारीन में हू श्रेष्ट श्रीजी के प्रति हंसत ही दुष्ट अभिप्राय के सहित ही कहेतो भयो है के उदय होय रही या वर्षा सूं तुम अत्यंत ही भीज जावोगे तुमारे जपसूं प्रगट भये पाप सूं तुमहू वेग भ्रमण करो ऐसे यह दुष्ट तो कहेतो रहयो है और याको मुख कारो करत ही मेघ तो चारो और ही तत्काल ही वर्षा कूं करत भये है, अहो श्री गोकुलेशजी की केसी प्रबल क्षमा है सेहेन है जो याके ऊपर वाही क्षण में गिरिवे कूं इच्छावारे हू वज्रन के समूहकूं निवारण करत भई है परंतु वा दुष्ट ने तो तासू हू अधिक अपराध प्रभुन में दुर्वचन बोल रूप तबहूं कियो है जासूं सो अपराध ही भय होय के याकूं हजारन कल्पकोटि पर्यन्त ही दुस्तर कूं भी पाक के शत अर्बुदन में फेंकेगो और सो अपराध ही वा वर्षा को निमित करिके ही वाके घरन कूं और वाके सदृश दुष्टन के घरन कूं और वाके बंधुन के घरन कूं हू सुन्दर घरन कूं गिराय देतो भयो है । सो या प्रकार के अपने चरित्रन कूं सो श्रीमद् गोकुलेश्वर श्रीजी मेरे में और हू अपने भक्तन में कृपा सहित सुनायकें सर्व सूं अधिक अपने महात्म कूं छिपावत ही कहत भये हैं के जो जो कार्य कबहू हम करेंगे सो सो कार्य श्री गोवर्द्धनधारी भलो ही विना यत्न के सिद्ध करें हैं । सो ऐसे कहेत भये हैं । ऐसो जो श्री गोवर्द्धनधारी रूप सूं ब्रज कूं वर्षा सूं रक्षा करत भये हैं और अनावृष्टि सूं वा ब्रज की रक्षा कर रहे हैं ऐसे वा श्री गोकुलेश्वर कूं हों प्रणाम करूं हूं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्रीमथुरां गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले त्रिपचास तरंग संपूर्णम् ॥५३॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ५४ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ चौपनमो तरंग लिख्यते ॥५४॥

श्लोक -- **कदाचिद् कृष्ण जन्माष्टमीभ्युत्सवे सुमुहाप्रभुः श्रीमद्गोवर्द्धने भक्ता स्वकीयान्करुणार्णवः ॥१॥**

याको अर्थ -- कबहू कृष्ण जन्माष्टमी के उच्छव में सो करुणा सागर श्रीजी श्रीमद् गोवर्द्धन पर्वत में अपने भक्तन कूं दरशन करावत स्वयं हू करत तैसे तैसे विहार करत भये हे। वा रात्रि के चतुर्थ प्रहर में कितनेक भक्तन कूं नंदराय यशोदाजी गोपाल और गोपी वेशवारे बनाय कें यह गोपीनंदन श्रीकृष्ण के प्रागट्य कूं प्राप्त होयके श्रीमन् नंदराय गोपादिक प्रथम जैसे महोत्सव कूं करत भये हैं तैसे ही महोच्छव कूं करत भये हैं। बड़े कुवा के निकट अवली के वृक्ष के तले सो प्रिय श्रीजी गान वाद्यन के शब्दन सूं शोभायमान और अपने स्वरूप सूं शोभित तासूं निरन्तर अधिक महोच्छव कूं करत भये हैं रात्रि के चतुर्थ प्रहर में महोच्छव प्रारम्भ कियो है। नवमी के दिन के पहर दिन आयो है और गिरिराजधरण की राजभोग की आरती हू होय चुकी है वैष्णव बहुत सगरे श्रीनाथजी के मन्दिर सूं बाहिर आये हैं और रामदास भीतरिया हू बाहिर आये हैं और गिरिवरधर के अनोसर होय गये हैं। तब तक हू श्रीजी श्री गोस्वामीजी के संग और अपने सेवकन के संग तैसे भैया वैष्णवन के संग महाउच्छव कूं करत भये हैं। वे सगरे ही चारों तरफ सूं दही, जल, माखन आदि उठाय उठाय के आपस में वर्षा ही करत भये हैं। तहां की जो भूमि है और दो दो घोंटू पर्यंत विनसूं कीचवारी होय के शोभायमान होय रही है और करोड़न वैकुंठन सूं हू अधिक अपने तैसे उत्कर्षन कूं प्रगट करिकें बड़े भाग्यवारे पुरुषन कूं बारंबार नयनन सूं दरशन कराय रही हैं और सो समय हू अत्यंत अधिक

शोभायमान होय रह्यो है । जा अनिरवचनीय भाग्यवान काल में बड़े भाग्यन के संबंध सूं कोई एक यवन ही आय जातो भयो है तब वा यवन में हू श्रीजी दही कूं डारते भये हैं । तब वा अपने पुत्र रत्न श्रीजी कूं श्री गोस्वामीजी कहते भये हैं के हे पुत्र जाके ऊपर तुमने दही डारी है जाकूं जानो हो के यह को है । तब श्रीजी ने हू कह्यो के जानूं हूं के यह मलेच्छ है । तब श्री गोस्वामीजी कहते भये हैं के यह तो योग्य नहीं हतो, याके ऊपर आप प्रसन्न भये हो का ? तब श्रीजी ने हू कह्यो है के हां ऐसे ही होय । तब श्री गोस्वामीजी ने कह्यो है के जासूं यह या महोच्छव में आयो है तासूं याके भाग्य प्रकट भये हैं और तुम तो सर्व प्रकार सूं प्रसिद्ध अधमन के ऊपर प्रसन्न होवो ही हो, यद्यपि शास्त्र में तो कह्यो है के यवन सूं नीच और नहीं है तथापि यह जासूं आपके सनमुख है और भाववारो है और विशेष सूं तो श्री गोवर्द्धनधर के जन्म उत्सव में आयो है जासूं यामें स्वाभाविक कृपा सूं हू प्रसन्न हो, वो भगवान् श्रीजी तो इतनो सुनके हू नम्रता के सागर रूप सो श्री गोस्वामीजी कूं कछु हू न कहते भये हैं । तब रुद्र कूंड में अपने सगरे बंधु वैष्णव सेवकन के संग न्हाय धोय कें तब भोजन करिकें मन और कर्म और वाणी सूं हू भक्तन कूं सुख देते भये हैं । वा उत्सव में दही के भरे घट हते सो पांच सौ तो बाकी ही रहि जाते भये हैं । ऐसो महोच्छव भयो सो या प्रकार नाचत हर्ष सूं गावत त्रैलोकी के मणी रूप अपने स्वरूप सूं शोभायमान जन्मोत्सव कूं गोवर्द्धनधारी के प्रति दिखायके बड़े उत्साह सूं और अपने कौतिक विशेष सूं प्रगट किये । तासूं अलौकिक जे नंदादिकन कूं जय कर रहे हैं विनसूं शोभायमान भये और प्राचीन ब्रह्म कूं जय कर रहे या गोवर्द्धनधर कूं श्री गोकुलाधीश श्रीजी परमानंद समुद्र कूं देते भये हैं वा करुणासागर पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी कूं हों प्रणाम करूं हूं ॥

इति श्री मद् गोकुलेशलीलाया सुधासिंधो श्रीमथुरां गोकुल विहार भये तृतीय कल्लोले चतुःपंचास तरंग संपूर्णम् ॥५४॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ५५ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ पचपनमो तरंग लिख्यते ।।५५।।

श्लोक -- **कदाचन् प्रभु श्रीमद्गोवर्धन गिरौ निजान आध्या बसनु गृहान श्रीमद्विट्ठलेशमते स्थित ।।१।।**

याको अर्थ -- कबहू प्रभु श्रीमद् गोस्वामीजी की आज्ञा में स्थित भये थके ही कितने एक दिन तहाँ श्रीमद् गोवर्द्धनधारी के शोभायमान सुन्दर जगमोहन धाम कूं उत्साह द्वारा करावत ही तहां अपने भक्तन कूं सुखदान करत भये हैं विनमें जे कर्म करिवे वारे हते सो प्रतिदिन रात्रि में श्री गोवर्द्धनधारी के पुरातन होरी उत्सव के विहार कूं प्रसिद्ध करिवे वारे गीत धमारन कूं बड़े हर्ष सूं गान करते भये हैं । और तामें विविध बाजे हू बजावते भये हैं । वामें बंसी है मुरज है, ताल है, झांझ है और उपंगादि है यह बजावते भये हैं और गान करिवेवारे हू सुन्दर स्वरवारे कोमल अलाप वारे मीठे कंठवारे हैं और लघुकर हैं काम हू जलदी करें हैं । अन्तःकरण के हू शुद्ध हैं ऐसे विनके प्रकाश कूं गान कूं अपने भक्त वैष्णवन के सहित मंदिर के ऊपर विराजमान श्रीजी सुनके सो करुणासागर विनके ऊपर प्रसन्न होते भये हैं । तब वा समय में तैसे और समय में हू आप श्रीजी विनकूं महामधुर वचन सूं प्रशंसा करत भये हैं और विन काम करिवे वारेन में जितनो कार्य हूतो सो सगरो हू मुख्य सिरिया नाम वारे कार्यकर ने सिद्ध कर दियो है सो श्रीजी हू विन बुद्धिमानन सूं गानादिक सुनत ही वितने पर्यंत तहाँ ही विराजमान होते भये हैं सो आप विनके समीप विराजमान होयके ही श्री गोवर्द्धनधारी के सुन्दर जगमोहन धाम कूं सिद्ध करावते भये हैं । सो जगमोहन हू अत्यंत शोभायमान होतो भयो है तासूं सो श्री गिरिधारीजी और श्री गोस्वामीजी और आपके भक्त तैसे और हू सगरे ही जन प्रसन्न होते भये हैं । तब वाधवाख्य दुर्ग को राजा वघेल वंश में प्रगट भयो बुद्धिमान रामचन्द्र नाम वारो सो मलेच्छ सार्वभौम अकबर कूं मिलन को निमित्त करके फतेहपुर में आवतो भयो है तब वाकूं मिलिके और वेग ही वासूं अपने

कूं छुड़ाय के कबहू दोनों नयन रूप अंजुलीन सूं श्री गोकुलेश जी के रूपामृत रूप महासागर कूं पान करिवे अर्थ बहुत भाग्यवारो सो श्री गोकुल कूं प्राप्त होतो भयो है। तब दो घड़ी दिन शेष रह्यो हतो सो श्रीजी के काका श्री गोस्वामीजी वा राजा के सत्कार करवे कूं श्रीनाथजी के मंदिर सूं बाहिर पधारके अपने सभा घर में विराजमान होते भये हैं। तब गजराज के ऊपर चढ्यो भयो सो राजा रामचंद्र जब आवतो भयो है सो जब वाके जन जिनके ऊपर चढ़े है ऐसे विनके हाथीन के समूहन सूं सो श्री गोकुल पर्वतन के समूहन सूं मिले जैसे होय तैसे ही शोभायमान होती भई है तब वा कौतिक में जिनकूं चित आशकत भयौ है, ऐसे जे श्री गोस्वामीजी के और सगरे पुत्र हते सो श्रीनाथजी के मंदिर के कार्यन कूं त्याग के ही श्री गोकुलेशजी के विना सगरे ही बाहिर आते भये है तब श्री गोस्वामीजी हू विनकूं वेगसूं बाहिर आयो देखिके पूछत भये है, जो तुम सगरे बाहिर चले आये हो तो भीतर श्रीनाथजी के मंदिर में को है सो श्री गोस्वामी जी के वचन कूँ सुनिके सो सगरे मग्न होयके हाथन कूं बाँधि के विज्ञापना करत भये है के भीतर तो ऐक श्री वल्लभजी ही है, सो सुनके श्री गोस्वामीजी अत्यंत हर्षकूं प्राप्त होय जाते भये है सो जहा ऐकहू यह श्रीजी चतुरवर विराजमान होय तो तहाँ करोडन और सूं कहा है और जहाँ यह चतुरवर श्रीजी न होंय तो तहां तैसे अन्य करोडन सूं हू कहा है सो श्री यशोदाघाट के ऊपर सो बुद्धिमान रामचंद्र राजा हस्ती सूं उतर के पनही कूं त्याग के नम्र होय रहे अपने सेवक मंत्री आदिन सूं सहित ही सो राजा श्री प्रभुन के दर्शन की इच्छावारो सो सभा घरमें आवतो भयो है तब और पुत्रन सूं मिले भये श्री गोस्वामीजी को दरशन करि के दंडवत प्रणाम कूं करत भयो है फेर वाकूं श्री गोस्वामीजी आदर सतकार करत भये है और कुशल समाचार हू पूछत भये है तब सो राजा साक्षात विज्ञापना में संकोच कूं करत अपने प्रधान अधिकारी रूषिकेश के मुखसूं विज्ञापना करावत भयो है, आपको जो पुत्र रत्न सुंदरवर श्रीमद्गोकुलाधीश्वर प्रभु है जो आनन्दमय सर्वांगसुंदर है और पुर्णचंद्र तुल्य श्री मुखवारे है और जे रसके सागर है और गुणनसूं हू उदार है और करोड़न कामन कूं विजय करिवे वारे और क्रतज्ञ है करुणासिंधु है और जो भक्तन के ऊपर अनुग्रह करिवे में अत्यंत तत्पर है सगरी विधान के आश्रय है और सगरे धर्मन के धुरंधर है और जो भक्तन के

नेत्र रूप क्षेत्र में सुख के समुद्रन कूं वर्षा कर रही जो श्री विग्रह संबंधी शोभा है ताकर असार संसार कूं हू सार रूप कर रहे या प्रकार सूं यह रुषिकेश कहे रहयो है तब ही पूर्णचंद्र करोडन सूं हू शीतल है जाकी किरण ऐसे सो करुणासागर ईश्वर भाग्यवान श्री गोकुलपती जी वा राजा रामचंद्र के भीतर के हू अत्यंत उज्जवल तापकूं दूर करत ही तहां प्रगट होते भये है के पधारते भये है तब सो राजा हू बारंबार दंडवत प्रणामन कूं करिके और वा सुंदर वर श्रीजी को बारंबार दरशन करिके और विज्ञापना करवे योग्य अपने मनोरथ कूं द्रष्टि सूं ही विज्ञापना करिके सो गूढ़ हृदय को हू जानवे वारे श्री गोकुलपती के मंद मुसकान सूं ही विदा कियो भयो सो भाग्यवानो में श्रेष्ठ राजा या श्रीजी के श्रीमुख कमल में अत्यंत आशकत भयो थको अपनी द्रष्टिकूं बड़े बड़े यत्न सूं हू छुड़ाय के अपने देशन के प्रति जातो भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले पंचपनमो तरंग संपूर्णम् ॥५५॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ५६ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ छपनमो तरंग लिख्यते ॥५६॥

श्लोक -- **बूदीन गर्या राजा यः श्री मान्सुर्जन इत्यलं प्रसिद्धः संकाचिद्वै द्रष्टु गोकुनायक ॥१॥**

याको अर्थ -- बूंदीनगर को जो श्रीमान सर्जन ऐसे अत्यंत प्रसिद्ध राजा हतो सो कबहू श्री गोकुलनायक श्रीजी के दर्शन करिवे लिये गोकुल में आवतो भयो है तहाँ आयके वा कृपा सागर श्रीजी को दर्शन करत भयो है और बारंबार प्रणाम करत भयो है और परिक्रमा हू करतो भयो है । और बहुत प्रकार सूं प्रभुन की स्तुति हू करत भयो है तब मंद मुस्कान करत वा श्रीजी सूं अभिनंदन सत्कार कर विदा कियो भयो सो राजा कृतार्थ भयो थको वेगही अपने देश में जातो भयो है सो हाड़ा वंश में प्रगट भयो थको राजा जो बड़ो शूर है और

प्रतिष्ठित राय भोज जाको पुत्र है और राय रत्न जाको पौत्र है ऐसो सो राजा पिरोहित के मुख सूं वा दामोदर दासी कूं बुलावतो भयो है के जाके अत्यंत श्रेष्ट गुण और उत्कृष्ट भाग्य मेने थोड़े से श्लोकन सूं प्रथम सूंचना किये है जो ब्राह्मणी है और अत्यंत प्रसिद्ध है और बड़े महात्म्यवारी है और राणा शब्द सूं प्रसिद्ध जो उदयपुर को राजा है वाकूं और वाके पुत्र पुत्रादि और प्रधानमंत्री सेवकादिकन कूं हू सर्व प्रकार सूं मान्य है और जो श्रीजी के दास्य सूं निरंतर ही कृतार्थ है सदैव ही बड़े आदर वारी है ऐसी सो दामोदर दासी जी वा राजासूं बुलाई भई है, श्रीजी कूं त्याग के वाके निकट जायवे में जैसे सुवर्ण पर्वत में चढ़यो भयो मदिरा पान की भूमि में जायवे की इच्छा नहीं करे है तैसे इच्छा कूं हू न करती भई है सो गोकुलेश रूप महानिधि के सेवक महात्मन को राजादि रूपक पर्दन में बल बुद्धी हू न करनी यह युक्त है तब सो दामोदर दासी प्रभुन के आगे विज्ञापना करती भयी है तबसो श्रीजी हू आज्ञा करत भये है के यह राजा धर्मीष्ट है और भलो है अनुकूलताके योंग्य ही है सो तहां गमन में दोष कहा है । दोष है तो वासु पदार्थन के ग्रहण में ही दोष है या प्रकार करुणा सागर श्रीजी वाकूं आज्ञा करत भये है तब आपकी आज्ञासूं सोहूं तहां पधारती भई है सो तहां पधारके दर्शनदांन सूं वा राजा कूं आनंदित करत भई है सो वाके दर्शनानंद के समूह सूं पूर्ण है अतः करण जाको ऐसो सो राजा हू भक्ती सूं याके चरणनकूं प्रणाम करिके अपने भाग्यन की स्तुति करत भयो है सो यह श्री गोकुलेशजी के दास्य सूं धन्य है या गौरव सूं याके आगे सुवर्ण मणी मुक्तादि सामिग्री और वस्त्रन के समूहन कूं तैसे और हू उत्कृष्ट वस्तु कूं उपायन करत भयो है तब श्री गोकुलपति के चरण कमल संबंधी रस के पांन सूं कृतार्थ भयी थकी सो दामोदर दासी हू वे सगरे सूं हू अधिक पदार्थन कूं तृण जैसे हू न मानत हाथन कूं बांधके बहुत वार प्रार्थना करी भई हू सो अणुमात्र हू न लेती भई है और वा राजा के प्रति हू कहेती भई है के श्रीमद् गोकुल सर्वस्व के जनक कृपासागर श्री गोस्वामीजी सगरो अर्थ मोक्ष दियो चाहे है । हो तो श्री गोकुलेशजी के कृपा द्रष्टि के लाभ सूं पूर्ण हू तासूं अणुमात्र हू कछु अमूल्य लौकिक वस्तु अथवा अलौकिक वस्तु हू नहीं लेवुं हूं, राजा की अत्यंत प्रार्थना सूं सो दामोदर दासी जी उछल्लित होय रही अपनी कृपा के अनुकूल होय के कोइ एक साड़ी ले लेती भई है, सो वा राजा की निरदोष

स्त्री हती सो सगरीहू या महाशय श्री दामोदर दासीजी कूं प्रणाम करत भई है और वे सगरी हू अपने-अपने कृतार्थ के अर्थ उत्तम वस्त्रादिकन कूं वा प्रभुन की दासी के आगे धारण करती भई है सो दामोदर दासी तो कछु हू न लेती भई है, अत्यंत विनकूं अलौकिक सो सो पदार्थ दे करिके इहां प्रभुन के घरनकूं पधारती भई है सो तहां आयके श्री गोकुलाधीश कूं मुख कमल अद्‌भुत रस सागरन कूं अपने नयनरूप भृंगराज के प्रति पान करावत भई है सो यह श्री गोकुलाधीशजी की दासी दामोदर दासी जाको उत्तम चरित्र है याकूं जो सुने है अथवा पढ़े है सो कृती ब्रह्मादिकन कूं जाकूं कणहू दुर्ल्लभ है ऐसे सगरे पुरुषार्थन सूं अत्यंत अधिक अपेक्षा रहित स्वतंत्र रसरूप प्रभुन के दास्य कूं सो प्राप्त होय जायगो ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले षटपंचासमो तरंग संपूर्णम् ॥५६॥ श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ५७ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ सतपंचासमो तरंग लिख्यते ॥५७॥

श्लोक -- **कदाचित विट्ठल हरि श्रीमतो गोकुलात्स्वयं ॥ श्री मद्गिरीद्र धरण दर्शनार्थ व्रजय प्रियमु ॥१॥**

याको अर्थ -- कबहू श्री गोवर्द्धन धरण कै दर्शनार्थ श्री गोकुल सूं पधारत ही अपने प्रिय पुत्र रत्न प्रवर श्री वल्लभजी कूं कहेते भये है के धनवंतरी नामसूं और कोकिला नाम सूं प्रसिद्ध पुष्प है विनके रससूं रगे भये वस्त्र कूं अमूल्य कंचुक अपने श्री हस्त सूं सिद्ध करिके श्री गोवर्द्धन धारी के पहेरवे के लिये शुभ मंगलवारे तुम वेगही श्री गोवर्द्धन पर्वत में पठावोगे ऐसे कहेके श्री गोस्वामीजी श्री गोवर्द्धन पर्वत में पधारे है, पछे श्री गोकुलधिपति श्रीजी हू श्री गोवर्द्धनधारी के अर्थ तैसे पुष्पन के रससूं अपार शोभावारे तैसे कंचुक कूं सिद्ध करिके श्री गोवर्द्धन परवत में श्री गिरिराजजी ऊपर पठावते भये है और परम विचारवारे श्रीजी विचार हू करत भये है के कंचुक तो बहुत यत्न सूं आछो भयो है परंतु

संकीर्ण कहा सकुचित भयो है के छोटो भयो है सो अब तो जो भयो सो भयो और न भयो तो नहीं होय है या प्रकार अत्यंत विचार के श्रीजी मौंन गहि विराजमान होते भये है तब पहैरायवे के अवसर में ही पुरुषोत्तम पुत्र श्रीजी ने पठायो सो कंचुक पहोचो है सो श्री गोस्वामीजी कूं देखके अपने हाथन सूं बड़ो आदर सूं लेकर यह छोटो ही कंचुक है वागो है श्री गोवर्द्धन धारी के पहेरायवे में योग्य नहीं है ऐसे चित में संदेह करत ही सो श्री गोस्वामीजी अपने प्राणनसूं हू अधिक प्रिय श्री गोवर्द्धनधर कूं पहेरावते भये है और श्री गोवर्द्धन धर हू श्री गोकुल मंगल श्रीजी के संबंध सूं पुर्ण होय रहो लोकातीत वाकी शक्ती सूं और उछल्लित होय रहे प्रेम सूं कंचुक वागे कूं आछीरीत सूं ही पहेरते भये है तब पहेरवे में आछे सजे भये वा श्याम कंचुक श्याम वागे को दर्शन करिके सहित आश्चर्य को बड़े प्रसन्न होयके श्री गोस्वामीजी श्रीजी के प्रति तबही पत्र कूं लिखते भये है के --

''श्याम कंचुक निदर्शने न मन्मान सेप्यणुतरे तिमहान्सः गोकुलैक जन जीवन मुर्तीर्मास्यति स्वकृपयैव कृपालुः ॥१॥ अध श्याम कंचुक परहित भासी ततच्छो भाद्वष्टैवपि पद्यते ॥२॥''

गोकुल है मुख जनदास और जीवन मूर्ति जाकी अथवा गोकुल के मुख्य जन दास और जीवन मूर्ति स्वयं साधन फल रूप जे ऐसे श्रीजी है सो यद्यपि अत्यंत बड़े है तोहू जैसे श्याम कंचुक श्याम वागो छोटो हू हतो वामें समाये है वाकूं आछो पहिर लियो है तो याके द्रष्टांत सूं यद्यपि मेरो मन अत्यंत हू सुक्ष्म है तोहू अपनी कृपासूं हू सो कृपालु वामें समाय जायगे ही के वामे निवास करेगे ही आज श्याम वागो पहेरायो है सो शोभा तो देखे ही बने है इतने अक्षरन सूं मिले भये पत्र कूं अपने पुत्र श्री गोकुल राज के प्रति पठावते भये है या प्रकार सूं प्रभुन कूं सो पत्र श्री गिरवरधारी जी कूं दिन समय में जो विश्राम को समय है जब गुजर ही रहयो है तो तबही प्राप्त भयो है सो या पत्र को दर्शन करिके ही या प्रिय श्री गोवर्द्धनधारी की या शोभा को दर्शन करवे अर्थ ही वेग ही प्रस्थान कूं करत भये है सो अत्यंत दयालू श्रीजी महादयालु श्री गोवर्द्धनधारी की वा शोभा कूं जायके दर्शन करते भये है सो प्रफुल्लित होय रहयो जो कमल है वाकी हू शोभा सर्वस्व कूं हरिवे वारो है सुंदर श्री मुख जाको ऐसे जो श्रीजी हे सो प्रेम रस रूप सागर में चिरकाल अवगाहन सूं उज्वल

होय रहे और शोभा के समुद्रन कूं वर्षा कर रहे जे जा श्री गोवर्द्धनधर के कटाक्ष है विन सूं अलंकृत भये थके सो श्रीजी अपने कूं वैसे ही अलंकृत मानते भये है और सो श्री गोकुलपति अत्यंत प्रिय अत्यंत कृपा सूं भृत्यन में परमाण रूप अत्यंत तुच्छ भृत्य मेरे प्रति अत्यंत प्रसन्न होय के और सगरे भक्त वैष्णव सेवकन के सुनत ही या वार्ता कूं कहते भये है सो अधिक मंद मुसकान रूप मधुर अमृत के समुद्रन कूं वर्षा कर रहे वा श्री गोकुलपति के श्री मुख सूं और वा समय कूं और विन भक्तन कूं और परार्द्धन अयुक्त तरंग आवर्तन के समूहन सूं मिले भये वा श्रीजी के और आपके भक्तन के विन प्रेम के समुद्रन कूं और वा माधुर्यन के सारन सूं सिंचित होय रहे है सगरे अंग जिनके ऐसे वा आप श्रीजी कूं मन, और वचन और शरीर सूं वंदना करूं हूं जिनके चरण कमलन की रज ब्रह्मा महादेव कूं हू दुर्ल्लभ है और इन्द्र उपेद्रदिकन कूं हू दुर्ल्लभ है और विन निकृष्ट सगरे जनसूं हू अत्यंत निकृष्ट मोकूं कहा प्राप्त होय परंतु यह मेरे पर श्रीजी की परम असाधारण निरूपाधिक कृपा ही है जासूं मोकूं सुर्ल्लभ भयो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले सप्तपंचासमु तरंग संपूर्णम् ॥५७॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ५८ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ अष्टपंचासस्तरंग लिख्यते ॥५८॥

श्लोक -- **कदाचिद्गोकुलाधीशः श्री विट्ठलहरे पितुः महात्म्यं वहूधाशसंभात्म भक्तानंनदयत् ॥१॥**

अर्थ -- कबहू श्री गोकुलाधीशजी अपने काकाजी श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी के महात्म्य कूं बहुत प्रकार सूं कहत ही अपने भक्तन कूं आनंदित करते भये हैं। या अवसर में खंभालिया ग्राम में रहिवेवारो श्रीजी कूं भृत्य कल्याण भट्ट हैं सो प्रभून के आगे प्रणाम कूं करिके विज्ञापना करत भयो है के हे महाराज !

हे प्रभो ! श्रीमान् आपके पिता श्री गोस्वामीजी को जो स्वरूप है और महात्म्य है सो तो आप सर्व प्रकार सूं जानो हो और आपको जो स्वरूप है और तैसो महात्म्य है वाकूं श्री गोस्वामीजी ने जान्यो है कै नहीं जान्यो यह मोसूं कृपा सूं जताईये । या प्रकार सो करुणासागर भक्तवत्सल भगवान् गुणसागर श्रीजी अत्यंत भक्ति वारे वा भट्टजी सूं विज्ञापना करे भये ही अत्यंत प्रफुल्लित श्रीमुख सूं कहते भये हैं के कबहू श्री तातचरण श्री गोस्वामीजी श्री गिरिराज सूं इहां श्री गोकुल में पधारे हैं तब हों आपकूं तिस तिस विधि सूं परिचरण करते भयो हूं । तब तांबूल आरोगायवे के समय में पीकदान कूं ही अपेक्षा करतो भयो हूं सो पीकदान तो कछुक दूर ही पड़्यो हतो तब राघो भट्ट नाम ब्राह्मण कूं हों कहेतो भयो हूं के वा पीकदान कूं मेरे निकट धरे । तब सो ब्राह्मण तैसें वा पीकदान कूं निकट धारण करत कोऊ श्लोक कूं पढ़त ही जगत गुरु तातचरण श्री गोस्वामीजी के आगे विनय करतो भयो है के हे प्रभो या श्लोक को व्याख्यान मोकूं कृपा करिके जतायें । तब श्री गोस्वामीजी कहेते भये हैं या श्लोक को व्याख्यान तो प्रथम ही मैंने तुमकूं सुनायो हतो और मेरे प्रवर पुत्र प्रिय श्रीमद्गोकुलाधीश्वर जी सूं हू तुमने पूछो हतो सो वा श्री गोकुलपति ने हू तुमारे आगे वाको व्याख्यान कियो हतो । सो यह वचन सुनिकें सो अत्यंत ढीठ राघो भट्ट ब्राह्मण श्री गोस्वामीजी के आगे कहेतो भयो है के कबहूं समय में मैंने श्री गोकुलेशजी सूं यह श्लोक पूछो हतो सो आप श्री वल्लभजी हू याको व्याख्यान करते भये हे परन्तु सो श्रीजी के कहवे में वाके अर्थ कूं वोध मोकूं नहीं भयो है । तब श्री गोस्वामीजी कहेते भये हैं के मूर्ख यदि श्री गोकुलेशजी ने व्याख्यान कियो है तामें तुमकूं बोध नहीं भयो तब हौं व्याख्यान करूं कि अथवा कोऊ और व्याख्यान करे तो तुमकूं कैसे बोध होयगो । जासूं जाको विचार कठिन होय ऐसे अर्थ के बोध में मेरे पुत्रवर प्रिय श्री गोकुलपति कूं शक्ति है ऐसी शक्ति और काहू कूं है । अपितु काहू कूं हूं नहीं है । जासूं सो श्री वल्लभजी तो सगरे गुणन सूं पूर्ण हैं और सगरी समर्था के सागर हैं और सगरे अर्थन के पारंगामी हैं और कृपा सागर के हू सागर हैं सो वा श्री वल्लजी के सदृश कोऊ नहीं है और न होयगो और न कोऊ भयो है । ऐसे विन श्री गोस्वामीजी के वचन सुनकर सो ब्राह्मण राघो भट्ट मौन होय जातो भयो है । या प्रकार श्री गोकुलाधीशजी के श्रीमुख कमल सों गिरे भये अमृत समुद्रन के समुद्रन

कूं पान करिकें सो कल्याणभट्टजी वा श्रीगोकुलेशजी के स्वरूप के महाचिन्तन रूप रत्न वारे हैं रत्नाकर, तामें एसो परमानन्द कूं प्राप्त होय जातो भयो है तैसे और हू जे महाप्रभून में भक्ति वारे बड़े भाग्यवारे तहां स्थिति हते सो वे हू परमानंद कूं प्राप्त होय जाते भये हैं । सो सम्पूर्ण पुरुषोत्तम जे श्री गोकुलेशजी है सो कबहू हू अपने स्वरूप कूं अथवा माहत्म्य कूं के गुणन कूं कोऊ के आगे ही प्रकाश नहीं करे है सो ईश्वरन के हू ईश्वर अपने परम कृपापात्र के आगे हू अपने स्वरूप माहात्म्य गुणन कूं छिपावे ही है और सर्व प्रकार सूं सदा अपने प्रिय श्री गोवर्द्धनधर के और अपने पितामह श्री आचार्यजी श्री महाप्रभु जी श्री वल्लभाचार्यजी के और तैसे श्री गोस्वामीजी के ही स्वरूप माहात्म्य गुणन कूं और महाभाग्यवान जे श्री आचार्यजी के और श्री गोस्वामीजी के अनन्य परम कृपापात्र हैं और हू जे कृपापात्र अंतरगत भगवदीय हैं विनके ही स्वरूप गुण महिमा कूं प्रगट करिवे कूं साक्षात् गुण सागर भगवान श्रीजी प्रगट भये हैं और अपनो नहीं प्रकाश करे हैं तथापि सो कृपानिधि आपके जे स्वरूप माहात्म्य गुण हैं सो सूंर्य जैसे स्वतः हैं या लोक में और परलोक में हू अत्यंत प्रकाशमान होय है जो तो या प्रकार कल्याण भट्टजी में गुण सागर प्रभूनने अपनो स्वरूप माहात्म्य गुण प्रकाश कियो है । सो तो केवल आपकी कृपाशक्ति सूं ही वामें कर्‌यो है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिन्धो श्री मथुरा गोकुल विहारमये तृतीय कल्लोले अष्टपंचासस्तरंगः ॥५८॥

॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ५९ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ नवपंचासमो तरंग लिख्यते ॥५९॥

श्लोक -- **पुत्ररत्न वर स्यैवंवि धैरस्य महागुणैः श्रीमद् गोकुलजी तातो स्द्‌भुत्ममिर्दिवा निशं ॥१॥**

याको अर्थ -- श्रीमद् गोकुल के जीवनकर्ता या प्रिय पुत्र रत्न प्रवर श्री

वल्लभजी के इत्यादिक महागुणन सूं और दिनरात्र प्रकाशित होय रही तैसी तेसी लीला सूं और सर्व के ऊपर अत्यंत प्रकाशमांन होय रहे तैसे स्वरूप सूं श्री विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी को जो प्रेम है सो परम काष्टा कूं प्राप्त होय जातो भयो है, अत्यंत अलौकिक होय जातो भयो है तैसे परिपक्व हूं होय जातो भयो है और कृपा के आधीन भये थके जो श्रीमान पुरूषोत्तमन के मुगटमणी श्रीमद् गोकुल के सर्वस्व श्रीजी है सो ऐसे प्रपंचमे हू लोकन के नेत्रों के प्रतीक्ष अपने कूं तो राखे है परंतु अपने में जो परम काष्टा कूं प्राप्त में या सर्वदा प्रेम कूं करि रह्यो ऐसो अपनो कोउ भक्त है वाकूं सो करुणा सागर श्रीजी कबहू कबहू लोकन के नेत्रों के ततक्षण ही राखे है जा श्री गोस्वामीजी के प्रति श्री गोकुलेशजी सबंधी विशेष, ताद्रश प्रेम के स्वभावने अपने चित्त के सदश सगरेन के चित्त कूं करिवे में या अलौकिक सामर्थ कूं दियो है ऐसे असाधारण समर्थावारे श्री गोस्वामीजी कूं विचित्र लीला सूं कौतिक और रसिकन के शीरोमणि जो यह श्री गोकुलेश जी चाहना करे रूचे तो वा श्री गोस्वामीजी के प्रति सगरे जीवन के एक चित्त तासूं कहा है यासूं श्री गोकुलेशजी में जो ताद्रश प्रेम है ता करि अत्यंत पूर्ण होय रहे जे अपने पिता श्री गोस्वामी है, सो लौकिक साधारण जनों की द्रष्टि स्पर्श के योग्य नहीं है यह विचार के सो करूणा सागर श्रीजी जब विनकूं अंतरध्यान करिवे की इच्छा करत भये है तब आपकी इच्छा को अनुसरण करिके सो श्री विट्ठलनाथ प्रभु श्री गोस्वामीजी हू विन लौकिक जनन को मोह करिवे की इच्छा करत श्री गोवर्द्धन पर्वत में कछुक अपनी अस्वस्थता कूं अभिनय दिखावत भये है तब तहां श्री गोवर्द्धन गिरिराजजी में आपकी बेटी शोभाजी हू तहां हती और श्रीमद् गिरधर आदि पुत्र हू तहां हते और तहां श्री गोकुलाधीशजी के दरशन की इच्छावारे भये थके सो श्रीमद् वल्लभनंदन श्री गोस्वामीजी श्रीजी कूं वेग ही बुलावते भये है तब पधारे भये श्री वल्लभजी कूं आलिंगन करिके शोभायमान उछल्लित होय रहयो है रोम हर्षसूं कंचु जामें ऐसे सो श्री गोस्वामीजी श्री जी के दर्शन सूं प्रगट भये प्रेम आनंद के आंसू कूं नेत्रन सूं वर्षा करत ही सगरी संपदा गुणन सूं मिले भये और दीनता सूं नम्र अपने प्रिय पुत्र कूं कहते भये है के हे तात हे गुणसागर ऐसो कहा है जो तुम नहीं जानो हो, मेरो लौकिक अलौकिक सगरो ही तिहारे आधीन है और गिरधारीजी कूं सेवा मार्ग और परिवार और

तैसे कुल यह सगरो तिहारे ही आधीन है तासूं मैंने मस्तक सूं आदर कियो जो यह पाग है और तुम याकूं धारण करो और श्रीमद् गोवर्द्धनाधीशजी की सेवा कूं हू अत्यंत निर्वाहा करोगे और हों तो लौकिक मर्यादा के अनुसरण करत अंतर ध्यान होवुगो मेरे भक्त सेवक और मेरो कुल और मेरे पुत्रन की और मेरी हू तैसे सगरे जगत की हू तुम ही गति हो, ईश्वर हो तुम सूं और परकूं नहीं जानू हूं तुम ही सर्व के जीवन मूल हो या प्रकारसूं कहे कर उछल्लित होय रहे प्रेम के समुद्रन कूं हू समुंद्र जामे और बड़े भाग्यवानो के गुण हू जाके चरण कमलो कूं वंदना करे है सो ऐसे परम चतुर बुद्धिमान श्री गोस्वामीजी या पुत्ररत्न श्री वल्लभजी के श्री मस्तक में अपने पाग कूं अपने हाथसूं बांधते भये है, तब या महाप्रभुन की जो इच्छा हती तहां आवरण कूं कर देती भई है जासूं वे साधारण लोक वा श्री गोस्वामीजी कूं न देखते भये है । किंतु जासूं जिन जीवो के व्यामोह करिके अर्थ सो महा प्रभुन की इच्छा सर्व प्रकार सूं आवरण कूं दरशन करावती भई है सो लोक हू वा आवरण कूं हू देखते भये है तब गिरधरादि पुत्र यथा योग्य लौकिक वैदिक रीति कूं निवर्त करिके अपने घरकूं प्राप्त होते भये है श्री गोकुल में प्रथम जैसे ही श्री गोवर्द्धनधर के स्वरूप कूं भक्त सूं दिन रात्रि ही सेवा करत विराजमान होते भये है, श्रीमद् गोकुल सर्वस्व श्रीजी के प्रभाव सूं विनकूं तब लौकिक में के वैदिक में कछु हू कबहू ही नहीं होतो भयो है सो करुणासागर श्री महाप्रभुन के गुणन सूं चार वर्ष पर्यंत ही यह सगरे भ्राता सुख सूं ही निवास करत भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले उनषष्टितमु तरंग संपूर्णम् ॥५९॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ६० मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ साठमो तरंग लिख्यते ।।६०।।

श्लोक -- **यदां तर्धि त्सवोयाताः श्रीमद् गोस्वामिन स्तदापुत्र गिरिधरं स्वस्यर हत्या हू यते ब्रूवन ।।१।।**

याको अर्थ -- जब श्री गोस्वामीजी अंतरध्यान की इच्छा वारे होय के गिरिराजजी पर पधारे तब अपने पुत्र गिरधरजी कूं ऐकांत में बुलाय के कहेते भये है के या श्री वल्लभजी कूं जो प्रथम पुत्र होये वाको नाम तुम श्री गोपाल ऐसो प्रसिद्ध करनो और पंच शब्द बाजे हू बजावने, या बात कूं सुनकर श्री गिरधर जी तुरन्त ही विराजमान होते भये है और काहू अपने पुरूष के आगे हू प्रकाश ना करते भये है तब कछुक काल के गुजरने पर श्री महाप्रभून कूं सगरे श्रेष्ट लक्षणवारो पुत्र प्रगट होतो भयो है सो वाके जन्म में प्रभुन के प्रभाव सूं प्रेरणा करे भये प्रेमी जनोने श्री गोस्वामी जी के आज्ञानुसार ही बाजे बजवावते भये है और जब वाको नाम करण को समय भयो तबहूं यह गिरधरजी बिना प्रयोजन के ही सभा सूं उठि के चले जाते भये है सो तैसे ईश्वर अपने पिता श्री गोस्वामीजी की तैसी आज्ञा कूं यामें उल्लंघन कर रहे जे है विनकूं मुल विद्वान लोक स्वयंहू विचारे और हमतो निरूपाधिक जिनको मन है और जे सगरे श्रेष्ठ गुणनसूं शोभायमान है और सर्व प्रकार सूं निरदोष है और जे सगरे मंगलो के करवे वारे है और श्रेष्ठशील के अनुकूंल चलवेवारे है ऐसे जे श्री गोकुलाधीशजी है विनके ही भृत्य है सो निरूपण करिवे में आपकी कृपासूं समर्थ है तथापि विद्वान वाको कारण स्वयं विचारेगे सो जब सभा सूं गिरधरजी तो चले गये है और सभावारे स्त्री पुरुष तो मंगलमय पाठन कूं कर रहे है, नामकरण की अपेक्षा है तब सो सर्वज्ञ प्रभु ईश्वर पुरुषोत्तम श्री गोकुलप्रभु हू श्री गोपाल ऐसो नाम कहत भये है के याको श्री गोपाल ऐसो नाम धरदेवो ऐसो जब नामकरण होय गयो है तब वेग ही गिरधरजी आयके पूछ के और तेसो नाम सुनके अत्यंत विस्मय होय जाते भये है तब आपके आगे ऐकांत में जैसे श्री गोस्वामीजी ने

प्रथम कह्यो हतो सो प्रगट करते भये है तब दरशन करिवे वारे जनन कूं आनंदित करत सो बालक मधुर ते जनसूं मिले भये ही चंद्रमा जैसे ही दूसरे क्रम-क्रम सूं बढ़ते भये है । बड़े भये जा श्री गोपालजी की महाप्रभुन से अनिरवचनीय सेवाकूं देखके चतुर बुद्धिवारे आपके जे भक्त हते सो स्वयं पधारे श्री वीट्ठलेशजी श्री गोस्वामीजी हू जाकूं मानते भये है के सो जे श्री गोस्वामीजी अपने कूं अत्यंत सेवा कर रह्यो जो पुत्र रत्न पुरुषोत्तम प्रवर परिपूर्ण श्रीजी हते विनकूं प्रेमसूं सेवा करन अर्थ और जो जीव श्री गोकुलेशजी की सेवासूं हूं कृतार्थता नहीं है यह जीवन में प्रगट ही जतायवे के अर्थ श्री गोपाल लाल रूप सूं ही श्री गोस्वामीजी प्रगटे है ऐसे मानते भये है, जैसे श्रीमद् गोकुल रत्न श्रीजी की भक्ति भावना श्री विट्ठलेश प्रभुन में हती सो तैसे ही या श्री गोपाल जी की भक्ति मेरे प्रभु श्रीजी में अत्यंत ही बढ़ जाती भई है और जैसे श्रीमद् विट्ठलनाथ श्री गोस्वामीजी कूं वात्सल्य या श्री गोकुलाधीश्वर श्री जी में हतो तैसे ही श्री महाप्रभुन की हूं वात्सल्यता या श्री गोपालजी में बढ़ जाती भई है और वा श्री गोपालजी ने बाल अवस्था में हू श्री महा प्रभुन की आज्ञा कबहू उल्लंघन नहीं करी है और न तो कोउ कबहू सेवा में सिथिल भयो है और जो या महाप्रभुन ने अपने मन में विचार्यो है सो या प्रभु श्री गोपाल जी ने सो भलो सिद्ध भयो ही, आगे विनय कियो है और चपलता के रससूं मिले भये सोहार्द कूं स्वप्न में हू इनने दूर नहीं कियो है और यद्यपि यह देखवे के तो बाल हते तथापि वृद्धन सूं हूं चतुर हते सो याने माता-पिता की आज्ञा कबहू नहीं उल्लंघन करी है, सो और लोक शास्त्रनकूं पढ़े अथवा पढ़ावे परंतु तत्वकूं तो सो श्री महाप्रभुन में अत्यंत भक्तीवारो श्री गोपालजी हू प्राप्त भयो है यद्यपि समुद्रन कूं मथन तो देवता असुरनने मिली के कियो हतो तो परंतु लक्ष्मी तो अच्युत विष्णु भगवान कूं हीं प्राप्त भई है ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले षष्टी तरंग संपूर्णम् ॥६०॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ६१ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ इकसठमो तरंग लिख्यते ।।६१।।

श्लोक -- **अथाग्रजो गिरिधरो गोकुलेश महाप्रभो समुत्कर्ष बहू विध तत्र-तत्र तथा-तथा ।।१।।**

याको अर्थ -- अब अग्रज जो बड़ो भैया गिरधरजी है सो श्री गोकुलेश महाप्रभुन को जो तहां तहां तैसे तैसे सगरे लोकन में प्रसिद्ध भयो सगरेन सूं सर्व प्रकार सूं अधिक उतकर्ष है वाकूं देखवे में न समर्थ होय के वा श्री गोकुलाधीश्वर सूं न्यारे स्थिर होयवे कूं इच्छा करत सो हमारे प्रभुन को भक्त जो पवा त्रिवाडी है वाकूं बुलाय के अब भैया है सो भिन्न भिन्न वारे होये गये है सो आपस में विरोध न होय जाय तासूं प्रीति की इच्छावारेन कूं सदा मिलि के रहेनो युक्त नहीं है तासूं सगरे भैया न्यारे न्यारे होय जाय यह मेरी संमति है । सो तुम यह मेरो वचन विन सगरे भैयान के प्रति तैसे जायके समझावो, जैसे हम सगरे ही न्यारे न्यारे आपस में प्रीति में स्थिति रहे आवे तब सो पवा त्रिवाडी जायके सगरे भैयानकूं और या पुरुषोत्तम श्रीजी कूं हू वा गिरधारी जी के वचन सुनावतो भयो है सो और तो सगरे सुनके ही ऐसे कहते भये हैं के ठीक है ऐसे न्यारे ही होये और यह करुणा नम्रता के सागर हमारे महाप्रभु तो कहते भये हैं के हे धीमन तुम जायकें बड़े भैयान कूं विज्ञापना करो के कासूं न्यारो होवने चाहना करे हैं मिलके ही रहे आवें तामें यह जो आज्ञा करेंगे हौं तो तैसे ही करूंगो सो मोकूं तो तुम सूं न्यारो होयकें रहेनो नहीं रुचे है। ऐसे सर्व के हित अभिलाखा प्रभुन के तैसे वचन कूं सो पवा त्रिवाडी गिरधरजी कूं सुनावतो भयो है के सगरे भैया तो तिहारे कहवे सूं न्यारे होय हैं, श्री वल्लभजी तो तुमसूं न्यारे होयवे की इच्छा नहीं करें हैं । या वचन कूं सुनकर सो गिरधरजी कहते भये हैं हों तो या श्री वल्लभजी कूं ही न्यारो करूं हूं । जासूं याके अधिक दान करिवे कूं हौं नहीं सहन कर सकूं हूं । जासूं यह श्री वल्लभजी सर्वदा ही सगरेन के प्रति असंख्य अप्रमाण अमूल्य हू तिस तिस न देवे योग्य वस्तु

कूं हू दे देवे है और यह पात्र है और यह पात्र नहीं है ऐसे पात्रापात्र को विचार हू नहीं करे है, जैसे कैसे हू थोरो सोहू एक वार हू जो जन दंभ सूं या लोभ सूं या कपट सूं याके अनुकूंल चले है वाके प्रति तो यह वाकी वांछा सूं हू अधिक दे देवे है। कृतघ्न होय के दुष्ट कर्मा होय के पतित होय के अत्यंत शठ हू होय मूर्ख हू होय याके आगें आवे तो विनकूं हू तिरस्कार नहीं करे है और किसी के अधिक अपराध कूं हू नहीं गिणे है। और यद्यपि वाको दोष सर्व प्रकार सूं प्रगट हू होय तोहू अंगीकृत होय तो वाकूं यह कदाचित हू कोऊ प्रकार सूं हू त्याग नहीं करे है। कबहू कहूं स्थल में हू और कहूं प्रकार सूं हू को जन कछु ही याकी सेवा करें तो तासूं यह अत्यन्त ही वाके वश में सर्व प्रकार सूं होय जाय है और अधम जीवन में हू यह कठोर नहीं होय है और बारंबार देकर हू यह सर्व प्रकार सूं भूल जाय है और कोऊ द्वेष हू करे तो हू वाके ऊपर दया सूं कबहू भी कोप नहीं करे है और दीनजनन में हू अत्यन्त प्रसन्न होय जाय है और वाके बन्धु ही होय जाय है और जाको कछु ही नहीं होय और कोऊ हू संबंधी न होय और जाकूं ग्रहण हू नहीं करे वाके तो यह सर्वरूप ही होय जाय है और जो कुचैल होय के मलिन होय के क्रष होय के सर्व लोक में निंदित होय और कछु हू नहीं कर सके ऐसे हू जन को यह अत्यंत आदर करे है और जो दुष्टबुद्धी जन मिथ्या हू कहें के हूं तो तिहारो हूं वाकूं यह सदैव ही पावन करै है और वाकी दुष्टता कूंहूं नहीं जाने है। तैसे और जीव को छिद्र कूं कदाचित हू नहीं देखै है और दरिद्री हू होय यदि याको आश्रित होय के तो वामें याकी प्रीति कबहू नहीं घटे है और कोऊ याकी स्तुति करे तो यह अत्यन्त संकोच करे है और कोऊ निन्दा करे तो हू क्रोध नहीं करे है और तिस तिस उत्कर्ष सूं याकूं अहंकार हू नहीं होय है और अपने स्वरूप कूं नहीं विचारे है के हम कौन हैं और यद्यपि तारतम्य हू स्पष्ट है तथापि तुच्छ जीव में अनुराग करे हैं यह और ऐसे और हू याके बहुत दोष हैं जे जगत में प्रसिद्ध हैं विनकूं हों सहेन नहीं कर सकूं हूं या प्रकार याके वचन कूं सो पवा त्रिवाडी सुनकर अपने हृदय में विचार करते भये हैं के यह तो सगरे जगत कूं आनंद देवे वारे मेरे प्रभु के गुण ही हैं और याके हृदय में कैसे दोष रूप सूं स्फुरे हैं अथवा या हमारे प्रभुन की मायाशक्ति बुद्धिवारेन कूं हू भ्रमाय रही है तब सो पवा त्रिवाडी प्रगट ही या गिरधरजी

कूं कहतो भयो है के सो श्री वल्लभजी तिहारे छोटे भैया स्वयं तो तुमारे सूं न्यारे नहीं होंयगे जासूं अत्यंत दयालु हैं । सो यदि तुम हू वाके अत्यन्त प्रिय श्रीनाथजी नाम वारे श्री गिरधारी जी कूं न्यारे घर में पधराय देवो तब तो वाके अनुसार सो वल्लभजी न्यारे होय जायगे । सो या प्रकार के वचन कूं सुनकर सो महाप्रभुन को अग्रज बडो भैया गिरधरजी तब पिता श्री गोस्वामीजी की बैठक में श्री गिरधारीजी के श्रीनाथजी स्वरूप कूं स्वयं हू पधराये के वा श्री वल्लभजी कूं ऐसे कहेतो भयो है के तुम इहाँ रहो । और या श्री वल्लभजी कूं पिता कूं धन तो कछु ही नहीं देतो भयो है और वा सगरे कूं स्वयं हू ग्रहण कर जातो भयो है और श्री गोस्वामीजी के सगरे रुण कूं हू हौं निवर्त करूंगो । ऐसे ही केवल कहेतो ही भयो है संवत् १६४६ माघ मास शुक्लपक्ष पंचमी तिथि में पहिरवे को वस्त्र मात्र है, शेष जाकूं ऐसे श्री वल्लभजी कूं तैसो सो गिरधरजी न्यारो कर देतो भयो है । तब शत करोड़न लक्ष्मी जाके चरण कमलन की सेवा करें हैं ऐसे सो यह श्रीजी पितृ चरण श्री गोस्वामीजी की बैठक अपने अमूल्य रत्नरूप स्वरूप सूं शोभायमान करत भये हैं । तब सगरे अधिकारी और कोषाध्यक्ष और भक्त तैसे और हू तैसे दास सेवक स्त्री पुरुष सगरे ही वा गिरधारीजी कूं त्यागके ही इहां प्राप्त होय जाते भये हैं । तब श्री महाप्रभुजी श्री गोस्वामीजी को जो यह वचन हतो के अपने सेव्य श्रीजी के स्वरूपन की सेवा कूं निर्वाह हू तेरे ही आधीन है । वाको स्मरण करिकें विन सगरे अधिकारी आदिकन कूं धैर्य देकर अपनी शपथ देकर विनकूं मनायकें श्री गिरधारीजी के नवनीत प्रियारूप की सेवा में पठावते भये हैं और तैसे और भैयान की सेवा में हू तैसे विनके सेव्य श्री गिरधारीजी के स्वरूपन की सेवा में हू विनकूं सो परम चतुरवर श्रीजी पठावते भये हैं और चापा नाम वारो अधिकारी तो बहुत प्रकार सूं पठायो भयो हू वे बड़े भैया गिरधरजी के अथवा और के अधिकारी घर में नहीं जातो भयो है सो वा चांपा भाई के प्रति गिरधरजी ने सहित अभिप्राय के ऐसो वचन कह्यो हतो के तुम जो मेरे घर में सेवा के अर्थ नहीं ठहेरो हो सो तामें यह कारण है तुम श्री गोकुलाधीशजी के घर में स्थिति होयके चार जाके डंडा हैं ऐसो अमूल्य सुन्दर शकट है वाके ऊपर चढवे सूं अभिमान के सहित जो समाज संबंधी परमानंद के समूहन के दिन रात्रि ही योग हैं वाकूं कियो चाहो हो सो यह सगरो सुख भोग तिहारो हम सगरे ही देखेंगे

तब आप के भक्त और स्त्री पुरुष तैसे जे अधिकारी हैं और रसोईया हैं कोशपति हैं तैसे अभ्यंग करायवे वारे और न्हावायवे वारे और जल घरीया माला करिवे वारे हैं और जे शकट के अधिकारी हैं तैसे जे गैयान के खरिक अधिकारी हैं और घुड़साल के अधिकारी हैं और जे वस्त्रन के अधिकारी और जे दासी हैं दास हैं तैसे जे पहरेदार हैं और हू जे तैसे अनेक वे जन हैं सो वे सगरे ही प्रभुन के चरणकमलों में प्रणामन कूं कर करके ही बड़े प्रेम सूं प्रेरणा करे भये ही तिस तिस वस्तु कूं आपके चरणन में भेंट करते हैं और अपने जन्म कूं नयनन कूं और मस्तक कूं और बुद्धी तैसे उद्यम अपने भाग्य और सगरे अंगन कूं बारम्बार ही सराहना करत भये हैं और प्रभुन में भक्ति वारो परम बुद्धिवान भाग्यवानों में मुख्य जो देवरात नाम जो द्वारपाल है सो या प्रकार के प्रसंग में अपने घर कूं समर्पण करतो भयो है। तब कृपासागर श्रीजी हू वाकूं अपनी बैठक रूप सूं शोभायमान करत भये हैं और या प्रसंग में बुद्धिवान् भाग्यवान् और प्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीजी में भक्ति वारो कोऊ गोपाल हतो सो बड़े यौवन अवस्थावारे अमूल्य गुण वारे बैलन कूं श्रीजी के बैलन में छिपिके ही न्यारे स्थापन करत भयो है और अधिकारी चांपा भाई हतो सो आगरा में जाय के सुन्दर लक्षन वारे सुन्दर उत्तम नीला नाम वारे घोड़ा कूं अष्टा विशंती सुवर्ण मुद्रा सूं प्रभुन के अर्थ मोल लेतो भयो है। तैसे वेग चलिवे में अत्यन्त चतुर लटकन नाम घोड़ा कूं सप्तविशंती संख्या सुवर्ण मुद्रा सूं श्री गोकुलाधीश्वर महाप्रभुन के अर्थ मोल लेतो भयो है सो तहां सूं लायके घोड़ा प्रभुन कूं दिखावतो भयो है। प्रभुन कूं प्रसन्न करतो भयो है तब प्रभुन की कृपा सूं सिद्ध भई महा संपदा सूं सेवित भयो थको और अमूल्य सुन्दर श्रेष्ठ शकट के ऊपर चढ्यो भयो और अमूल्य जे सुन्दर पाग कमरबंध कंचुक है, धोती है, उपरेना है विनसूं शोभायमान भूषणन सूं हू अत्यंत अलंकृत भयो थको सूंर्य जैसे बड़े तेज वारो और प्रभुन के असंख्य सेवकन सूं मिल्यो भयो सो अधिकारी चांपा भाई जी इत उत चलत ही प्रभुन के जे छोटे तुच्छ अथवा बड़े द्वेषी हैं विन सगरेन के नयनन कूं अपने स्वरूपात्मक अग्नि सूं अत्यन्त जलाय देतो भयो है ॥६१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले एकषष्टीतम् तरंग संपूर्णम् ॥६१॥ श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

।। तरंग ६२ मों ।।

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ बासठमो तरंग लिख्यते ।।६२।।

श्लोक -- **शंकरस्तु कृपापात्रं श्री विट्ठल हरेरत्नं भक्त प्रभावति वरामग्रणिरधि कारणां ।।१।।**

याको अर्थ -- श्री गोस्वामीजी को जो कृपापात्र अत्यंत भक्त शंकर है सो तो प्रभुन में हू अत्यंत भक्ति वारो है और अधिकारीन में मुख्य है सो तो प्रथम ही जानतो भयो है के यह महाप्रभुन के भ्राता सगरे ही श्री महाप्रभुन की महिमा कूं सहन न करत आप सूं न्यारे होय के रहेंगे और यह श्रीजी तो विनमें अपने श्रेष्ठ गुणन के स्वभाव सूं अत्यन्त दयालु ही हैं सो विन भैयान के सर्व कार्य के समाधान के अर्थ कितनेक और दासन कूं हू पठावेंगे वामें सो विनके कार्यन में यदि मोकूं हूं पठावे तो मोकूं तो सर्वस्व नाश सूं हू अधिक पीड़ा होय और जो मेरे प्रभु मोकूं आज्ञा करें वाकूं तो उल्लंघन करिवे कूं समर्थ नहीं हों तासूं होयवे वारे या उपद्रव सूं प्रथम ही कछु उपाय करूं तो मोकूं उचित है सो शंकर है सो विचार के प्रभुन कूं न जताय के छिपके ही श्री गोकुल सूं जातो भयो है सो चतुर शंकर कितनेक दिन व्रन्दावन में निवास कूं करत भयो है सो अत्यन्त गूढ़ आशय वारो चतुर शंकरजी कितनेक लोकन कूं यह जतावतो भयो है के श्री पुरुषोत्तम के चरण कमलों के निकट रहिवे की मेरी इच्छा है सो सुधे बुद्धिवारे सो श्री महाप्रभुन के निकट जायके प्रभुन कूं विज्ञापना करत भये हे के आपको कृपापात्र जो शंकर है सो और देश जाने की इच्छा कर रह्यो है और हू हौं पुरुषोत्तम के चरण कमलों के निकट ही रहूंगो ऐसो हू वाको दृढ़ संकल्प है सो सुनिके मंद हास्य सूं अपने श्रीमुख कूं शोभित करिके तब अपने कोउ सेवक कूं पठाय के वाकूं बुलावते भये हैं सो तो आपकी आज्ञा के आधीन हैं तहाँ आयके वा प्रभुन कूं प्रणाम करिके नम्र मुख होयके बैठ जातो भयो है और कहेतो भयो है के आज्ञा करिये कहा है । तब करुणासागर सो श्रीजी तो वाको समाधान करत ही और मंद मंद हंसत जो श्री मुख है वासूं

प्रगट होय रही जो दंतन की किरण धारा वारी सुधा है याके ताप रूप अग्नि कूं सिंचन करत शांत करत ही वाणी रूप मुकतान कूं वाके ऊपर वर्षा कूं करत भये हैं के तुम काहे कूं मोकूं न कहिके और ठिकाने चले गये हो और तुमने काहे कूं यह अचानक वैराग्य धारण कियो है और कहो के काहे कूं तेरी इच्छा और देश में जाने कूं उच्छलित भई है सो इहां सूं जायके तहां कहा करिवे की इच्छा करे है विन प्रयोजन के तुम कूं श्री गोकुल त्यागनो संभव नहीं है जासूं तुम तो श्री गोस्वामीजी में और मेरे में हू अत्यंत स्नेह वारे हो सो तुम तो हमारे ही हो। ऐसे तुमकूं तो सदैव ही इहां ही रहेनो उचित है या प्रकार वा भगवान श्रीजी ने वाणी रूप मुक्तान की वर्षा करिके अत्यंत अलंकृत भयो थको दोनों नयनन सूं हर्ष के जलन कूं वर्षा करत वा प्रभुन सूं पूछ्यो भयो हू और तैसे तैसे उपालंभ दियो है प्रेम प्रवाह सूं भीज्यो भयो सो शंकर कछु कहिवे में समर्थ न होतो भयो है। कछुक काल अनंतर सो शंकर अपने कूं मन सूं रोककर हाथन कूं बांधके नरम होंयके प्रभुन के आगे विज्ञापना करतो भयो है के हे श्री महाप्रभो सर्वज्ञन के गुण हू श्री आपके चरणकमलन कूं वंदना करें हैं ऐसे परम सर्वज्ञ आप हो सो आप तो सगरेन कूं ज्ञान के देवे वारे हो सो आप कूं कहा जतावुं सो हों तो आपको हूं ऐसे मेरे अन्यत्र जायवे में हेतु कूं नहीं जानो हो, हे प्रभो अत्यंत धैर्यवान होयके ही आप श्री की कृपा विना ठहेर सके है सो क्षणभर हू इहां तो आपकी कृपा ही ठहरावे है, हे प्रभो आपकी कृपा सूं आपके प्रभाव सूं आपके चरणन सूं गिर्‌यो जो जीव हैं वाकूं कहा कैसे कब कहां सूं प्रीति होय किंतु कबहू कहूं हू वाको चित्त प्रसन्न नहीं होय है, हे प्रभो यह निश्चय है के श्री आपके चरणकमलन सूं अत्यंत राग को परमपद और कछु हू कोऊ कूं है अथवा योग्य है किन्तु कदाचित हू नहीं है यासूं हू हों श्री गोवर्द्धन पर्वत में हू नहीं गयो हूं। हे प्रभो आप सूं गिरयो जो जीव है वाकूं कहां तहां के कहूं और ठौर में सुख होय है अपितु कछु हू नहीं होय है। हे प्रभो और देश में तो मेरी जायवे की इच्छा रंच हू नहीं है और मेरे तो चित्त में सदैव ही श्री पुरुषोत्तमन के चरणकमल के निकट रहिवे की इच्छा वर्तमान रहे है सो पूर्ण होय तो आपसूं ही होयगी सो हे पूर्ण पुरुषोत्तम मेरे किये भये असंख्यात हू अपराधन कूं आप नहीं विचारोगे। सो तैसे अपने महात्म्य कूं हू देखके हे करुणासागर मोकूं तैसे उद्धार करोगे कै

जैसे श्री आपके चरण कमलों की सेवा सूं थोरो सो ही गिरि के अन्यत्र नहीं जावुं । हे प्रभो तुमकूं जाने हूं परब्रह्म कहे हैं और तुमकूं हू सगरे पुरुषोत्तम जानें हैं और सगरी समर्था वारे और सगरी समर्था के दान करिवे वारे हू तुमकूं सगरे भक्त जानें हैं, सो या प्रकार की याकी विज्ञापना कूं सो परमेश्वर श्रीजी सुनके हसत हैं श्रीमुख जिनको ऐसे सो श्रीजी याके मनोरथ कूं पूरण करत भये हैं और वा भक्त कूं सदैव ही अपने श्री चरणकमलों के तल छाया में ही के निकट ही राखते भये हैं और वाकूं और कहूं ठौर में हू नहीं भेजते भये हैं ॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीलाया सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले द्विषष्टितम स्तरंग संपूर्णम् ॥६२॥

श्री श्री श्री श्री श्री

कल्लोल जी त्रीजो

॥ तरंग ६३ मों ॥

श्री श्री गोकुलेशो जयति

अथ तिरेस्सठमो तरंग लिख्यते ॥६३॥

श्लोक -- अथ श्री मथुरायांये विहारागोकुलेशितुः येच श्री गोकुलेतस्यतन्मये सुन्दरे भृशं ॥१॥

याको अर्थ -- मथुरा में जे श्री गोकुलेशजी के विहार है और श्री गोकुलेशमय परम सुन्दर श्री गोकुल में जे श्री गोकुलेशजी के विहार हैं तीसरे कल्लोल में कहे हैं तामें प्रथम चार कल्लोलन सूं या श्रीजी के दर्शन की इच्छा सूं श्री गोवर्द्धनधरजी कूं मथुरा में आवनो कह्यो है । तामें प्रथम तरंग में वाकी प्रिया श्री राधाजी के वचन कहे हैं, दूसरे तीसरे तरंग में प्राणनाथ के रस सूं मिल्यो भयो उत्तम रूप श्री गोवर्द्धनधर जी को वचन कह्यो है । और चतुर्थ तरंग में मिलाप के माधुर्य को वर्णन कियो है और पंचमादि सूं छब्बीस तरंगन में उछल्लित रस वारी श्रीजी की विवाह लीला कही है । सो तामें पंचमे तरंग में तैसे रूप वारे श्री गोकुलपति को दरशन करिके कन्या के योग्य वरमें उत्साह वारे वेणा भट्ट कूं जो हर्ष और विषाद भयो है सो कह्यो है और छटे तरंग

में तो वा स्वामिनी जी की मातुलानीजी कूं भट्टजी सूं प्रसंग और भट्टजी कूं श्रीजी के मतुलनी सूं जो संवाद है और विवाह को निर्धार है सो कह्यो है और सप्तमे तरंग में कन्या की प्रार्थना अर्थ वेणा भट्ट के घर में गमन कूं कह्यो है और आठमे तरंग में अलंकार आदि की सिद्धि कूं कहेते भये हैं और नवे में तो तैसे निश्चय तांबुल की सिद्धि अर्थ गमन कूं कहेते भये हैं और दसमें तरंग में तहां निश्चय तांबुल कूं कहेतो भयो हू और एकादसमे तरंग में आभ्युदार्यक और अंकुर अर्पण कूं कह्यो है और द्वादसमे तरंग में तो ज्ञाति संग भोजन कह्यो है और त्रयोदस में जैसे मृगनयनी स्त्रीजनों ने मंगल कृत्य कियो है सो और प्राणेश श्रीजी कूं तैसे मंगल स्नान अलंकार आरती आदि करी है सो कह्यो है और चतुर्दश तरंग में विवाह के अर्थ शुभ प्रस्थान की माधुरी कही है और षोडशमे तरंग में होम भोजनन सूं विवाह को वर्णन कियो है सप्तदसमे तरंग में और अष्टादसम और एकोनविशमे में सुन्दर हरिद्राक्रीडनादि कूं कह्यो है और वीसमें तरंग में पूंग क्रीड़ा आनंद रूपवारी कही है और लौकिक नागवल्ली नाम हू कर्म उत्सव सहित कह्यो है और एकवीसमे हस्ती के ऊपर चढ़िवे में जो माधुरी है सो कही है और बाबीसमे तरंग में श्री प्राणनाथजी के गृह के प्रति प्रस्थान कह्यो है और तेवीसमे तरंग में घर में प्रवेश कह्यो है और चौबीसमे तरंग में दायजा को अर्पण करनो कह्यो है और पच्चीसमे तरंग में भट्टजी ने जैसे अपनी कन्या कूं शिक्षा करी है और छबीसमे तरंग में स्त्रीजन को नृत्य और उपायन निधान और भोजन हू कह्यो है और सप्तबीसमे तरंग में विश्राम में भक्तन की नाना विधि सेवा वर्णन करी है और उत्साह सहित भक्तन को संवाद हू कह्यो है और अठाविसमे तरंग में प्रिय श्रीजी के विवाह लीला के श्रवणादिक के फल कहे हैं और उनतीसमे में प्रभुन ने जैसो अपनी विवाह लीला कही है सो कही है और तीसमे तरंग में जे जे .रूपा बाई ने विवाह लीला गान करी है और भक्तन ने उत्सव कियो है, भेट करी है फेर गोकुल में पधारे हैं तहां भेटा भयो है विनको वर्णन है यासूं आगे चौदह तरंगन सूं संगम कूं रस सागर कह्यो है और तामें एकतीसमे तरंग में प्रियाजी को और वाकी सखी को रस रूप संवाद कह्यो है और बत्तीसमे तरंग में स्वप्न में संयोग और पुण्य कूं उदय कह्यो है और तेतीस में श्री बहूजी के पधरायवे में श्रेष्ट महूर्त को निर्णय और चौंतीस में प्रभुन के घर में उच्छव

और श्वसुर के घर में शोभादिकन कूं श्री बहूजी के पधरायवे कूं पधारनो कह्यो है और पेंतीस में पिता के घर सूं श्री बहूजी प्रभुन के घर में पधारी हैं उत्सव कह्यो है सो कह्यो है और छतीस में श्री बहूजी कूं मंगल स्नान और उत्सव लोकन को मिलनो कह्यो है सेंतीस में ज्ञातीय वारेन को उत्सव प्रभुन के घर में और वेणा भट्ट के हू घर में और कन्या कूं अलंकार और दायजा कूं देनो कह्यो है और अडतीसमे तरंग में पारिर्वहन कूं प्रभुन के घर में वेणा भट्ट जो ले आये हैं और बड़ो उत्सव भयो है, पुण्याह वाचन भयो है याकूं भोजन आरती मंत्राक्षत दान वेणा भट्ट कूं विदा करनो कह्यो है और उनतालीसमे तरंग में बंधु संग भोजन भेट और स्त्रीन ने जैसे लीलाघर सजायो है सो और वरवधुन ने जैसे जैसे श्री गोस्वामीजी के चरण कमलों कूं प्रणाम करी है सो कह्यो है और चालीसमे तरंग में प्रिय कूं वे विलास कहे हैं और अपनी रसात्मक स्त्रीन के उज्ज्वल समय वचन कहे हैं और विनको तैसे उत्साह हू कह्यो है और एकतालीसमे तरंग में तो विनको प्रभु ने जैसे समाधान कियो है सो और सखी कूं श्री प्रियाजी के प्रति पठावनो और प्रियाजी में स्त्रीन के वचन और सखीन को वचन कह्यो है और बेतालीसमे तरंग में प्रियाजी कूं उठनो और सखी कूं रस के अर्थ जैसे संभावना करनो कह्यो है और त्रेतालीसमे तरंग में वा प्रियाजी कूं रसलीला घर में प्रवेश कह्यो है और चौवालीसमे तरंग में रसात्मक लीला कही है और पेंतालीसमे तरंग में पंडितन कूं जय करनो सप्तम वेध रहित कृष्णजन्माष्टमी व्रत कूं स्थापन करनो कह्यो है और छेतालीसमे तरंग में बीरबल कूं विकल करनो और सेंतालीसमे तरंग में बसंत पंचमी को अद्‌भुत उच्छव कह्यो है और तासूं आगे होली क्रीड़ा को उच्छव है और ओगणपचास तरंग में कह्यो है यासूं आगे पंचासवे तरंग में भट्ट नारायण के घर में गमन कूं कहते भये हैं और एक पचासमे तरंग में तहां जीवदा को गर्दभ कूं प्रवेश करनो और लोकन ने जैसे नारायण भट्ट कूं हांसी करी है सो कह्यो है और द्विपचासमे तरंग में पिता श्री गोस्वामीजी के संग जैसे वन यात्रा करी है तामें जैसे श्री गुसांईजी ने श्रीजी के ऊपर छत्र करायो है सो कह्यो है और तासूं आगे त्रिपचासमे तरंग में अनावृष्टि कूं निवर्त करिवो कह्यो है और तासूं आगे चतुर पचासमे तरंग में कृष्ण जन्माष्टमी कूं गोवर्द्धन परवत में प्रात समय जैसे महोच्छव कियो है सो कह्यो है और पंचपचासमे तरंग में जैसे

जगमोहन कूं बनायवे वारेन ने होरी लीला को गान कियो है और तासूं प्रभुन कूं प्रसन्न हौवनो और जगमोहन कूं बनावनो और रामचन्द्र राजा पर जैसे प्रभुन ने कृपा करी है और छेपंचासमे तरंग में बुदी नगरी के स्वामी सुर्जन राजा श्रीजी के दर्शन अर्थ आयो है तहां दामोदरदासी कूं विचित्र चरित्र कह्यो है और सतावनमे तरंग में श्याम वागे को रचनो और अठावन तरंग में प्रभुन को उत्कर्ष और कल्याण भट्ट ऊपर कृपा कूं प्रगट करनो कह्यो है और उनसठ में श्री गोस्वामीजी ने श्रीजी के पुत्र रत्न श्री गोपालजी को प्रागट्य कह्यो है एक साठमे तरंग में गिरधरजी की इच्छा सूं न्यारो होवनो स्वतंत्र होय के रहेनो और चांपा भाईजी कूं गिरधरजी के घर में कहने पर हू न जानो और यासूं आगे या भय सूं शंकर कूं वृन्दावन में जानो और तासूं इहां आवनो और शत्रुन ने सात्वन करनो और अपनी सेवा में राखनो कह्यो है और याके आगे तरंगार्थन कूं संक्षेप सूं अनुक्रमणिका कही है सो हे रसिक यह श्रीजी कूं जो चरित्र वर्णन है सो जे रस के स्वरूप प्रकाशमान श्रीजी में चित्त कूं धारण करें हैं विनकूं श्री गोकुलप्रिय श्रीजी की प्राप्ति को साधन है और परम फल रूप है और सर्व भक्तन कूं सर्वइष्ट कूं देवे वारो है और धन्य है, पावन है परम मंगलरूप है रसिका अववक्ष्यमांण जो श्रीजी को चरित्र है जाकूं आगे वर्णन करूं हूं वाकूं हू परम आदर सूं सुनो ॥५१॥

इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिन्धो श्री मथुरां गोकुल विहार मये तृतीये भावाक्रतत्कृपा वलतुं ॥ इति श्रीमद् गोकुलेश लीला सुधासिंधो श्री मथुरा गोकुल विहार मये तृतीय कल्लोले त्रिष्ट तरंगनेन चिल भरेण भाषा यदी दर्शित ॥ समाप्तम् ॥

श्री १०८ गोस्वामी श्री रमणलालजी महाराज श्रीनी परम कृपाथी आ ग्रंथ नी प्रति रुकमनबाई खंजानचन भाभोना ग्रंथ मांथी संवत् २०३४ ना आसो सुदी १ ना प्रति करी जे वांचे तेने देसाई गोकुलदास हिमतलाल के सविनय बे हाथ जोड़ी विनय सहित जय जय श्री गोकुलेश ॥

□□□